गांधीजीकी साधना

रावजीभाओी मणिभाओी पटेल

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

गोखले – मेरे राजनीतिक गुरु

लेखक : **गांधीजी**

गांधीजीने श्री गोखलेमें भारतके आदर्श सेवकके दर्शन किये, यहां तक कि अुन्हें अपना राजनीतिक गुरु माना और अुनके जीवन तथा मिशनके अनुसार भारतके राजनीतिक क्षेत्रमें अपने जीवन और कार्यको ढालनेका प्रयत्न किया। जिस चीजने गांधीजीको अपने गुरुके प्रति सबसे ज्यादा आकर्षित किया, वह थी धार्मिक भावनासे राजनीतिक कार्य करनेका अुनका आग्रह। हमारा विश्वास है कि ये लेख और भाषण अुन सब लोगोंके लिअे प्रेरक सिद्ध होंगे, जो भारतको दिनोंदिन अधिक प्रगतिके पथ पर बढ़ा हुआ देखना चाहते हैं।

कीमत ०.५० डाकखर्च ०.२५

मंगल-प्रभात

लेखक : **गांधीजी**; अनु० **अमृतलाल नाणावटी**

सन् १९३० में गांधीजी यरवडा जेलमें थे। वहांसे वे प्रत्येक मंगलवारको आश्रमके व्रतों पर विवेचन लिखकर साबरमती आश्रमके सदस्योंको भेजा करते थे। अिसमें सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह आदि आश्रम-व्रतोंका गांधीजी द्वारा किया हुआ सरल और सुबोध विवेचन पाठकोंको मिलेगा। अिस हिन्दी अनुवादमें सिर्फ अुर्दू जाननेवालोंकी सुविधाके लिअे आसान अुर्दू शब्द भी दिये गये हैं।

कीमत ०.३७ डाकखर्च ०.१३



गांधीजीकी साधना

रावजीभाई मणिभाई पटेल

अनुवादक
रामनारायण चौधरी

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-१४

प्रथम आवृत्ति ३०००

रु० ३·००

अप्रैल, १९५९

जहां जगतके कल्याणकी
साधना हुअी
अुस पुण्यभूमिको

निवेदन

सत्याग्रहकी दूसरी लड़ाओीके कैदीकी हैसियतसे मुझे सन् १९३२ के अप्रैल महीनेमें साबरमती सेंट्रल जेलसे बिसापुर जेलमें बदल दिया गया। वहां परिचित और अपरिचित बहुतसे मित्र थे। धर्मशाला जैसी बैरकोंमें ८० से १०० आदमी रहते थे। रातको ब्यालूके बाद बातचीत होती थी। कुछ मित्रोंने दक्षिण अफ्रीकाकी, वहांके सत्याग्रह-आन्दोलनकी और फिनिक्स आश्रमके जीवनकी बातें पूछीं। मैंने सारी बातें दिलचस्पीके साथ सबको सुनाअीं। तीन-तीन चार-चार दिन तक रातको देर तक जागकर सब लोग रसपूर्वक मेरी बातें सुनते रहते। अिस कथाके बारेमें दूसरी बैरकोंवाले भाअियोंको मालूम हुआ। मुझे वहांका बुलावा भी मिला। अिस तरह अेक-अेक करके कोअी चार बैरकोंके भाअियोंने मेरी कथा सुनी। स्वर्गीय श्री फूलचन्दभाअी बापूजी शाहको यह कथा बहुत पसन्द आअी। अुन्होंने मुझसे आग्रह किया कि मैंने जो बातें मित्रोंसे कहीं, अुन्हें मैं अपनी भाषामें लिख डालूं। लेकिन मेरे पास समय कहां था? सुबहके छह बजेसे शामके छह बजे तक जेलके रसोअीघरकी देखभाल मेरे जिम्मे थी। और बैरक बन्द हो जानेके बाद तो थका-मांदा होनेके कारण आराम लेनेकी अिच्छा होती थी। परन्तु स्व० फूलचन्दभाअीने मुझे छोड़ा नहीं; लिखनेके साधन लाकर मुझे दे दिये। दक्षिण अफ्रीकाकी बातें और फिनिक्सके पूज्य महात्माजीके जीवनकी बातें लिखना आसान नहीं था। वे सत्यसे जरा भी दूर नहीं होनी चाहिये। अिसके सिवा, महात्माजीके कितने ही जीवन-प्रसंगोंका वर्णन भी अुसमें आता। अुनका वर्णन करनेमें मुझे बहुत सावधान रहनेकी जरूरत थी। 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' के दोनों भाग, 'आत्मकथा' के दोनों भाग आदि पुस्तकें मैंने जुटा लीं। अुन्हें मैं पढ़ गया और बादमें लिखने बैठा। अिस तरह अनियमित समय निकालकर ये प्रकरण मैंने लिख डाले। सन् १९३३ के नवम्बरमें जेलसे निकलनेके बाद पूज्य गांधीजीसे मिलने मैं वर्धा गया, तब लिखे हुअे प्रकरणोंकी बात मैंने अुनसे कही। अुन्होंने अिस रचनाको देखनेकी अिच्छा प्रगट की और सूचना दी कि अुनके देखे बिना मैं अुसे न छपवाअूं। रचनाकी

मूल प्रति मैंने अुन्हें सौंप दी। लगभग दो वर्ष तक वह रचना अुनके पास पड़ी रही। पिछले साल ८ जुलाअीको अुन्होंने मुझे अचानक सेगांव बुलवाया। चार-पांच दिनमें जैसे-तैसे समय निकालकर अुन प्रकरणोंमें से जो प्रकरण अुनके निजी जीवनके सम्बन्धमें, कुछ प्रवृत्तियोंके सम्बन्धमें और साथियोंके जीवनके विषयमें थे अुन्हें मैं अुनके सामने पढ़ गया। कुछ प्रसंगोंके बारेमें अुनसे स्पष्टीकरण कर लिया। लिखे हुअे प्रकरणोंमें से दो प्रकरण निकाल देनेकी और दूसरोंमें कुछ कमी-बेशी करनेकी मुझे सूचना मिली। स्वर्गीय अिमामसाहब बावजीरकी बात अुन्हींने जैसी मुझे बताअी अुस परसे मैंने वह प्रकरण लिखा। दक्षिण अफ्रीकाके साथियोंमें से मिस श्लेशिन सम्बन्धी अेक मनोरंजक प्रकरण पूज्य बापूजीने निकलवा दिया और सुझाया कि अुस प्रसंगका वर्णन करनेके लिअे मुझे अुन बहनसे ही प्रार्थना करनी चाहिये। अैसा न हो तो शायद मैं अुन बहनके साथ न्याय नहीं कर सकूंगा। मैंने अुन बहनसे वह दिलचस्प प्रसंग लिख भेजनेकी बिनती की। मगर मेरी बिनती अुन्होंने स्वीकार न की। अिन प्रकरणोंमें जो हकीकतें लिखी गअी हैं अुनकी सचाअीके बारेमें और भी निश्चित होनेके लिअे श्री छगनलाल गांधीके पास ये प्रकरण भेजनेकी सूचना मुझे बापूजीने की। अुस सूचना पर मैंने तुरन्त अमल किया। श्री छगनलाल गांधीने भी अिनकी जांच-पड़ताल कर ली।

अिस तरह अिन प्रकरणोंमें पूज्य गांधीजीके जीवन-प्रसंग और अुनके साथ गुंथी हुअी हकीकतें मेरी यादके आधार पर लिखी गयी हैं। अुनकी सचाअीके बारेमें यथाशक्ति सावधानी रखी गअी है। जेलमें ये प्रकरण लिख लेनेके बाद मेरे स्नेही श्री नरहरिभाअी परीख और श्री गोकुलभाअी भट्टने मेरी रचनामें रही भाषाकी अशुद्धि और अव्यवस्थित हिज्जोंको सुधारा। पूज्य गांधीजीका कुछ प्रकाशित और अप्रकाशित पत्र-व्यवहार मेरे पास था। अुसका समावेश भी अुससे सम्बन्ध रखनेवाले प्रसंगोंमें मैंने कर दिया है।

अिन प्रकरणोंके अेकत्र समूहको क्या नाम दिया जाय, यह प्रश्न भी मेरे सामने था। अिसमें श्री नरहरिभाअी, श्री किशोरलालभाअी और श्री काकासाहबने मेरी मदद की। 'गांधीजीका तपोवन', 'सत्याग्रहका पौधा', 'स्वराज्यकी साधना', 'स्वराज्यकी पूर्व-तैयारी', 'दक्षिण अफ्रीकामें २१ वर्ष' और 'गांधीजीकी साधना' आदि अनेक नाम सुझाये गये। अिनमें 'गांधीजीकी साधना' मुझे सब तरहसे अुपयुक्त नाम लगा। अिस प्रकार अिस पुस्तकके

तैयार होनेमें अनेक स्नेहियोंका प्रयत्न रहा है। अुसके लिअे मैं अिस स्थान पर अुनके प्रति आभार प्रदर्शित न करूं तो मेरा अविवेक होगा। और अिस पुस्तककी प्रस्तावना लिखना स्वीकार करके श्री काकासाहबने मुझे अत्यन्त अृणी बनाया है।

गांधीजीके वसीयतनामेवाले प्रकरणमें मूल पत्र पहले हाथमें न आनेके कारण अुस पत्रका सार लिखनेका मैंने अुल्लेख किया है। परन्तु बादमें मूल पत्र मिल जानेसे वह पूरा दे दिया गया है। आशा है मित्रगण अुतनी भूल सुधार लेंगे।

मैं जानता हूं कि अिस पुस्तकमें बहुतसे दोष हैं। मैं लेखक या साहित्यका शौकीन नहीं, दिलमें जो अुठी अुसी भाषामें मैंने अिसे लिख डाला है। अिस-लिअे अिसमें जो भूलें रह गअी हैं, अुनके लिअे मुझे क्षमा करनेकी विद्वान पाठकोंसे मेरी प्रार्थना है। अिस पुस्तककी बड़ी कमी तो यह है कि गांधीजीके जीवनके लिखने जैसे कअी प्रसंग अभी अधूरे रह गये हैं। यह पुस्तक हिन्दुस्तानकी जनताको रुचिकर लगी तो अिसके दूसरे संस्करणमें वृद्धि करनेकी मैं कोशिश करूंगा। अभी तो अिसीसे सन्तोष कर लेनेकी पाठकोंसे मेरी बिनती है।

सेवा-मन्दिर, नड़ियाद,
आषाढ़ सुदी ७, १९९४

रावजीभाअी मणिभाअी पटेल

दूसरी आवृत्तिके निवेदनसे

अिस नये संस्करणमें पूज्य बाके अवसानके बाद अेक प्रश्न अुपस्थित हो गया था, जिसके सम्बन्धमें सफाअी देना जरूरी है।

दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहकी आखिरी लड़ाअीमें पू० बा शरीक हों, अिसके लिअे बापूजीने कोशिश की थी। पुस्तकके 'शुभ आरंभ' नामक प्रकरणके बारेमें थोड़ी सफाअी देनेकी जरूरत है। 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' में अिस सम्बन्धमें बापूजीने कुछ और ही लिखा है। अुन्होंने लिखा है कि "सत्याग्रहकी लड़ाअीमें स्त्रियोंको शामिल करनेका विचार होने पर श्री छगनलाल गांधीकी पत्नी काशीबहन और श्री मगनलाल गांधीकी पत्नी संतोकबहनसे मैंने पहले बात की और अुन्हें तैयार किया। बादमें बा अुसमें शामिल हुअी।" परन्तु ये प्रकरण प्रकाशित करनेसे पहले मैं अिन्हें बापूजीके सामने पढ़ गया था। अुस समय मैंने बापूजीकी स्मृतिकी भूलके बारेमें अुनका ध्यान खींचा था और अूपरके प्रकरणके बारेमें मैंने अुन्हें विश्वास दिलाया था। बापूजी भी असमंजसमें पड़े। अुन्होंने पू० बाकी गवाही परसे अिस बारेमें फैसला करनेका निश्चय किया। अुन्होंने बाको बुलाया और हम दोनोंकी बात अुनके सामने रख दी। बाने बताया: "रावजी-भाअीकी सारी बात सच है। यह तो मुझे अितना स्पष्ट याद है जैसे कल सवेरे ही हुआ हो।" अिस परसे बापूजीने कहा: "तब तो मेरी याददाश्तकी भूल हुअी है। अुस पुस्तक (द० अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास) के नये संस्करणमें वह भूल सुधारनी होगी।"

साबरमती-मन्दिर, अहमदाबाद, **रावजीभाअी मणिभाअी पटेल**
मार्गशीर्ष बदी १२, २०००

पार्श्वभूमि

दक्षिण अफ्रीकाकी विजयके अन्तमें वहांका काम समेट कर गांधीजी विलायत चले गये थे और फिनिक्स आश्रमके तमाम भाअियोंको अुन्होंने हिन्दुस्तान भेज दिया था। गांधीजीके आने तक अिन सबकी देखभालका काम मि० अेन्ड्रूजने अपने पर ले लिया था। फिनिक्स-दलके लोग पहले कांगड़ी गुरुकुलमें थोड़े दिन रहे और बादमें कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुरके शान्तिनिकेतनमें आये। अिसी अर्से (सन् १९१४) में मैं भी शान्तिनिकेतन जा पहुंचा। अिसलिअे स्वाभाविक रूपमें ही मैं फिनिक्स-दलके लोगोंमें मिल गया। वहां सुबह-शाम मैं प्रार्थना कराता, अपनी हिमालय-यात्राकी बातें सुनाता और शामके समय अिन लोगोंके साथ ही खाता और सुबह-शाम जमीन खोदनेमें या अैसे ही और कामोंमें भाग लेता था। अैसे वातावरणमें फिनिक्सकी मंडलीके मुखिया श्री मगनलालभाअी गांधीसे मेरा परिचय हुआ। दक्षिण अफ्रीकाकी लड़ाअी अुनके लिअे ताजी ही थी। अिन आश्रमवासियोंने असाधारण विजय प्राप्त करके देशके लिअे अेक नया रास्ता खोला था। सिर्फ राजनीतिक क्षेत्रमें ही नहीं, परन्तु जीवनके सारे अंग–प्रत्यंगोंमें विशेष पद्धतिसे रहनेके प्रयोग वे कर रहे थे। अैसे वायुमंडलमें रोज शामको और कभी कभी रातके बारह बजे तक मैं श्री मगनलालभाअीके मुंहसे बापूजीकी बातें सुना करता था। कोअी कट्टर सनातनी जिस श्रद्धासे रामायण और महाभारत सुनता है, अुसी श्रद्धासे मैं यह कथा सुनता था। मगनलालभाअी अपने स्वभावके अनुसार अपनी बातें अेक तरहसे कहते थे। मगनभाअी पटेल दूसरी तरहसे कहते थे। देवदास, रामदास और प्रभुदास तीसरा ही सुर छेड़ते थे। सब जेलमें जानेके लिअे ट्रान्सवालमें कैसे घुसे? श्री मणिलाल मिस्टर लैल कैसे हो गये? सन्तोकबहनने क्या क्या किया? छोटेसे रामदासने जेलमें अुपवास करके गोरोंको कैसे चकित किया? स्वार्थत्यागपूर्वक जेलसे बाहर रहे हुअे श्री मगनलालभाअी छोटेसे देवदासकी मदद लेकर हजारों आदमियोंको कैसे संभालते थे? सुरेन्द्र मेढ़ और प्रागजीभाअी जेलमें कैसे तिकड़म करते थे?

मि० पोलाक और मिस श्लेशिन, मि० वेस्ट और मिस वेस्ट, मि० कैलनबैक और मि० रीच कैसे लोग हैं? जेलमें और अदालतमें दुभाषियेका काम करते हुअे अदालतकी तरफसे पतिका अपनी पत्नीसे यह सवाल पूछना कि तुम्हारी शादी हुअी या नहीं कितनी मजेदार बात थी? बापूजी और जनरल स्मट्स अेक-दूसरेको छकानेकी कैसी कोशिश करते थे? सर बेंजामिन रॉबर्ट्सनने दक्षिण अफ्रीकामें आकर क्या किया? गोखलेजीका वहां क्या असर हुआ? ओलिविया श्राअिनर नामकी बहन कौन और कैसी थीं?—अैसे अैसे अनेक किस्से और रेखाचित्र सुननेको मिलते थे। मेरे लिअे फुरसतकी अिन कहानियोंमें से दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास जीवित हो गया।

गांधीजीकी 'आत्मकथा' से अुनका लिखा हुआ 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' अधिक विस्तृत और अधिक रोमांचकारी है। परन्तु गांधीजीने अपने अितिहासमें जो नहीं लिखा अैसा बहुत-कुछ अिस अितिहाससे पहले ही मुझे शान्तिनिकेतनकी अिस निशीथ-कथासे मिल गया था। गांधीजीकी 'आत्मकथा' और 'सत्याग्रहका अितिहास' देखनेके बाद मेरे मनमें कअी बार यह विचार अुठता था कि अुनकी पूर्तिके तौर पर जो छोटी-छोटी बातें मैंने शान्तिनिकेतनमें सुनी थीं अुन्हें कोअी अिकट्ठी करके लिख दे तो देशको बड़ा लाभ हो। मगर मैं किससे कहूं? मगनलालभाअी तो अैसा कुछ लिखनेवाले थे नहीं। मणिलाल दक्षिण अफ्रीका गये हुअे थे। रामदास निवृत्तिमार्गी, देवदास आगे और आगे दौड़नेवाले और प्रागजीभाअी हाथ आनेवाले जीव नहीं थे। अिसलिअे मैंने प्रभुदासको ही ललचाना पसन्द किया। प्रभुदासने बचपनकी बातें याद कर-करके कुछ प्रकरण लिख डाले और मैंने अुनका कामचलाअू नाम दिया 'तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य'। मगनलालभाअी अुन्हें अूपर-अूपरसे देख गये। देवदासने अुन्हें जांच लिया। आजकल ये प्रकरण प्रभुदासकी तरफसे 'जीवनका प्रभात' शीर्षकसे 'कुमार'* में छप रहे हैं। बचपनके स्मरणोंकी ये टिप्पणियां गांधीजीकी अुस समयकी साधनाका तादृश चित्र अुपस्थित करती हैं और खूब गहरी हैं। परन्तु मुझे कल्पना नहीं थी कि कोअी मगनलालभाअीकी तरह ही लिखनेवाला तैयार हो जायगा। अिसलिअे नवजीवनकी तरफसे जब अिस प्रस्तुत पुस्तकके प्रूफ देखनेको मिले तब मुझे बहुत आनन्द हुआ। तुरन्त मनमें यह समा गया कि अिसीमें गांधीजीकी साधना हमें मिलेगी।

---

* गुजराती मासिक।

सारी पुस्तक पढ़नेके बाद अिसमें अेक ही कमी मालूम होती है और वह है गांधीजीके पत्रोंकी। अिसमें रावजीभाअीने कहीं-कहीं थोड़े पत्र दिये हैं और वे कीमती हैं; परन्तु हमें यह न भूलना चाहिये कि गांधीजीका मानस अुनकी सार्वजनिक रचनाओंमें जितना व्यक्त हुआ है, अुससे भी अधिक अुनके पारदर्शक, प्रेमपूर्ण, अंतर्मुखी और सच्चे हृदयसे लिखे गये पत्रोंमें प्रगट हुआ है। गांधीजीके सारे पत्र अिकट्ठे करके छापे जायं, तो वह संग्रह शायद अुनकी सार्वजनिक रचनाओं और भाषणोंसे भी बढ़ जायगा। और अुसमें गांधीजीका मानस निर्मल दर्पणकी तरह पूर्णरूपसे प्रतिबिम्बित हुआ हमें मिल जायगा।

गांधीजीकी साधनाका माहात्म्य ही अितना बड़ा है कि अुसकी नोंध रखनेवाले लोग आश्चर्यजनक ढंगसे निकल आते हैं। शायद युगपुरुषोंका यह कुदरती अधिकार ही है।

अनेक प्रयोग करके और अनेक प्रकारसे चिंतन करके दृढ़ बनाये हुअे विचारोंका शब्द-संगठन अवश्य कीमती वस्तु है; परन्तु ये ही विचार और आदर्श संकुचित प्रयोगके कच्चे स्वरूपमें जब हमारी नजरके सामने खड़े होते हैं, तब अुनका महत्त्व और अुनका आकर्षण कुछ और ही होता है। दक्षिण अफ्रीकाकी साधना भारतवर्षकी विशाल तपस्याकी प्रयोग-भूमि कहलायेगी। वहांके ग्रीन रूम (नेपथ्य) में जो तैयारी हुअी, अुसीको व्यापक रूपमें गांधीजी पिछले पच्चीस वर्षसे राष्ट्रके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।

गांधीजीकी 'आत्मकथा' या अुनके सत्यके प्रयोगोंका वर्णन विश्व-साहित्यमें अपना स्थान ले चुका है। अुनकी शैली पर देश-देशांतरके लोग मुग्ध हैं। अनेक साधकोंने अुससे प्रेरणा प्राप्त की है। फिर भी कहना पड़ता है कि कअी तरहसे अिस ग्रंथसे हमें पूरी तृप्ति नहीं होती। सत्यनिष्ठ गांधीजीने जितना लिखा है, अुतना तो सब यथार्थ ही है। परन्तु अुनसे हम जो जानना चाहते हैं, वह सब अिसमें आ गया है अैसा नहीं कह सकते। जीवनका आदर्श निश्चित करनेसे पहले मनमें जो 'भवति न भवति' चलता है, जो मनोमंथन सारे जीवनको प्रक्षुब्ध कर डालता है, अुसका वर्णन अिस 'आत्मकथा' में कहीं नहीं मिलता। अमुक घटना हो गअी अिसलिअे मैंने यह निश्चय किया — अिस तरह गांधीजी लिख डालते हैं। परन्तु अुस निश्चय पर पहुंचनेसे पहले कितनी बौद्धिक कठिनाअियोंमें से अुन्हें गुजरना पड़ा, कितने संकल्प-विकल्प करने पड़े, अिसका

अुल्लेख कहीं नहीं मिलता। और निर्णय हो जानेके बाद भी शरीरको, अुसकी आदतोंको, चित्तवृत्तिको और वासनाओंको अुस दिशामें मोड़नेमें कितनी मेहनत करनी पड़ी, कितनी घाटियां पार करनी पड़ीं और अुसके लिअे आत्मशक्ति पैदा करनेमें हार-जीतके कितने अुतार-चढ़ावोंमें से गुजरना पड़ा, यह सब अुन्होंने कहीं नहीं लिखा है। मानो निश्चय और सिद्धिके बीच कोअी अन्तर ही न था। और अैसा ही हुआ हो तो भी अितनी प्रबल संकल्प-शक्ति पैदा करनेके लिअे अुन्होंने क्या क्या किया, यह तो हमें मिलना ही चाहिये।

पहलेसे ही गांधीजीके साथ रहनेवाले और गांधीजीकी सारी जीवन-प्रेरणा समझनेवाले कुछ साथियोंने निरीक्षण करके गांधीजीका आन्तरिक चरित्र लिख दिया होता, तो वह अुनकी 'आत्मकथा' पर प्रकाश डालनेवाला अेक महाभाष्य हो जाता। और दुनियाने अैसे ग्रंथका अुनकी 'आत्मकथा'से भी अधिक स्वागत किया होता। परन्तु यह कार्य अैसा कोअी 'अपर गांधी' ही कर सकता था, जिसकी विभूति गांधीजीकी विभूतिके बराबर हो। अिसके अभावमें साधारण श्रेणीके लोगोंमें से जो गांधीजीके साथ रहे और श्रद्धा तथा निष्ठाके साथ जिन्होंने गांधीजीके कार्यमें भाग लिया है, अुन्हें अपने-अपने अनुभवकी जानकारी मानव-हितके लिअे शब्दबद्ध करनी चाहिये। और गांधीजीकी फुरसतका लाभ मिले तो अुनसे अुसकी जांच करवा लेनी चाहिये। अिस दृष्टिसे देखने पर रावजीभाअीने यह साधन-ग्रंथ लिखकर हमारी अुत्तम सेवा की है और गांधीमत तथा गांधीकार्यका अध्ययन करनेवालोंके लिअे कीमती सामग्री प्रस्तुत की है।

हम लोग अितने बेपरवाह न होते, तो किसी न किसीने पूज्य बाके चरणोंमें बैठ कर अुन्हींसे सवाल पूछ-पूछ कर अुनसे मिल सकनेवाली जानकारी अिकट्ठी कर ली होती; 'आत्मकथा'में और 'सत्याग्रहके अितिहास'में जिन-जिन लोगोंका जिक्र आता है अुनके पास पहुंच कर अुनके तत्कालीन संस्मरणोंको विस्मृतिके प्रवाहमें बह जानेसे बचा लिया होता। जिन्होंने मनुष्य-जातिके अुद्धारका अिस युगका अेकमात्र मार्ग ढूंढ़ निकाला है, अुनकी जीवन-साधना की अेक अेक विगत भी यथासंभव हमें अेकत्र कर लेनी चाहिये। चीन और जापान, अिटली और जर्मनी, अिंग्लैण्ड, अमेरिका और फ्रांस, रूस और स्पेन आदि देशोंकी आजकलकी हालत देखनेसे सहज ही खयाल हो सकता है कि मनुष्य-जाति विनाशके किनारे पर कैसे पहुंची है। अैसे समय आत्मा

पर अटल विश्वास रखकर जिन्होंने आशाकी अेकमात्र किरण दुनियाके सामने रखी है, अुनकी जीवन-साधना केवल व्यक्तिगत महत्त्वकी नहीं बल्कि सामाजिक महत्त्वकी वस्तु है, यह हमें जानना चाहिये।

सत्याग्रहका रहस्य जाननेकी अिच्छा रखनेवाले, दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहके अितिहासका अध्ययन करना चाहनेवाले और गांधीजीके जीवनकी गहराअीमें अुतरनेकी अिच्छा रखनेवाले सभी लोगोंको यह पुस्तक अवश्य ही पढ़नी चाहिये। शक लोगोंके सामने जूझकर देशको स्वतंत्र करनेवाले शालिवाहन राजाके बारेमें यह दंतकथा प्रचलित है कि अुस राजाके पास अेक अद्‌भुत रसायन था; वह अपने कुम्हारके यहां जाकर मिट्टीके सिपाही बनाकर अुस रसायनसे अुन्हें जिन्दा कर लेता था और लड़ाअीमें अुनका अुपयोग करता था। अिस दंतकथाका रहस्य हम चाहे जो समझें। परन्तु गांधीजीके पास हम अैसा अेक रसायन अवश्य देखते हैं, जिससे वे मिट्टीके आदमियोंसे तेजस्वी आत्म-परायण सिपाही तैयार कर सके हैं। अतः प्रत्येक शिक्षकको अनिवार्य रूपमें यह ढूंढ़ निकालना चाहिये कि गांधीजीकी अिस कला या कीमियाका रहस्य क्या है। चारदीवारीके बीच छोटे-बड़े बच्चोंको लेकर बैठ गये और अुनमें थोड़ी-बहुत जानकारी भर दी या अुन्हें भाषा-प्रवीण बना दिया, यह सच्ची शिक्षा नहीं है। परन्तु आबालवृद्ध स्त्री-पुरुषोंको जीवनके द्वारा शिक्षा देकर अुनके भीतरका सुप्त दैवी अंश जाग्रत करना, अुन्हें अपने अमृत अुत्तराधिकारका भान कराना और अैसी सज्जनता, अैसा पराक्रम और अैसी शान्ति अुनके जीवनमें पैदा करके बताना जिसकी कल्पना भी नहीं हो सकती, अिसीका नाम सच्ची शिक्षा है। अैसे शिक्षक अब तक दुनियामें दस-बीससे ज्यादा शायद ही हुअे होंगे। अिन सबमें गांधीजीकी विभूति विशेष रूपमें सामने आती है। अपने ही जीवन-कालमें करोड़ों आदमियोंवाले संपूर्ण राष्ट्रको हाथमें लेकर अुसके अैतिहासिक अमिट दुर्गुणोंको जानते और अनुभव करते हुअे भी अुसकी जनता पर विश्वास रखकर अुन्होंने जो अेक बड़ा व्यापक प्रयोग करके दिखाया है, अुसकी मिसाल विश्वके अितिहासमें दूसरी नहीं मिलती। अिस प्रयोगके आरम्भमें जिन्हें प्रौढ़ विद्यार्थी बननेका सम्मान मिला है, अुन्हींमें से अेक जीवनार्थीके अनुभवका यह वर्णन है।

गांधीजीका माहात्म्य, अुनके कार्यका स्वरूप और अुसका विस्तार लोगोंके सामने है। परन्तु गांधीजीकी अपनी जीवन-साधना और साथ ही दूसरोंका

गांधीजी जबसे हिन्दुस्तानमें आये हैं, तबसे हिन्दुस्तान गांधीजीकी साधनाके पीछे चलनेकी कोशिश करता रहा है। यह साधना जारी रखी जाय तो अुसके अन्तमें क्या क्या मिल सकता है, अिसकी झांकी भी भारतने कर ली है। परन्तु दुर्दैवसे अब साधना-निष्ठा कुछ मन्द पड़ गअी है। तत्त्वदर्शन अस्पष्ट हो गया है। श्रद्धा डगमगा गअी है। अैसे समयमें आशा है गांधीजीकी यह साधना गफलतमें पड़े हुओंको सावधान करेगी और अनजान लोगोंको नअी दृष्टि प्रदान करेगी।

पूना, **दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर**

१–३–’३९

अनुक्रमणिका

तीसरा भाग

गांधीजीकी साधना

पहला भाग

१

दक्षिण अफ्रीका

पृथ्वीके पांच खंडोंमें अफ्रीका अेक विशाल खंड है। सारा खण्ड कुदरतकी बख्शिशोंसे भरपूर है। नील नदी तो मिस्रका गौरव मानी जाती है। मिस्रके लोग नील नदीके नामका गुणगान करते हैं, अुसे देवत्व प्रदान करते हैं, अुसकी पूजा करते हैं। मिस्रके राष्ट्रीय गीतोंमें नीलका नाम बोलते ही मिस्र-वासियोंको रोमांच होता है। अुसके नामसे देशभक्तिकी बाढ़ आ जाती है और अुसकी गोदमें मिस्रवासी अपना सर्वस्व अर्पण करते हैं। खण्डके पूर्वी किनारे पर तो मिस्रके पूर्वी किनारेसे लगाकर ठेठ केप आफ गुड होपके अन्तरीप तक कुदरतने मानो हरा गलीचा बिछा दिया हो, अैसा सुन्दर और सुखद दृश्य नजर आता है। मीठे फल-फूलोंसे लदी हुअी सुन्दर वाटिकाअें देख-देखकर हमारी आंखें तृप्त हो जाती हैं। पूर्वी अफ्रीकाके भीतरी हिस्सेमें विक्टोरिया न्यांजा और अल्बर्ट न्यांजा नामके दो विशाल और सुन्दर सरोवर हैं और अुनके आसपासका हराभरा प्रदेश जीवमात्रको आह्लाद देता है। अिस खण्डकी कुदरती बख्शिशोंमें जैसी विशेषता है, वैसी ही वनभूमिमें भी है। वनभूमिमें रहनेवाले वनराजकी गर्जना अुसके गौरवमें वृद्धि करती है। हाथियों और हथनियोंके झुंड छोटे-छोटे सरोवरोंमें जलक्रीड़ा करते हुअे जहां-तहां पाये जाते हैं।

दक्षिण अफ्रीकाकी रमणीयता तो अनोखी ही है। अुसके अुदरमें क्या नहीं है? मिठासका भूखा कोअी मानव पृथ्वीतल पर भटकता भटकता निराश हो गया हो, परन्तु यहां अुसकी भूख मिट जायगी। यहां मनचाही मिठास पाकर वह प्रसन्न हो जायगा। अभी तो यहांकी जमीन जितनी चाहिये अुतनी तैयार भी नहीं की गअी है। अैसे किसान अुसे काफी संख्यामें मिले नहीं हैं, जो अुसके पेटमें अपने बहुमूल्य पसीनेका खाद देकर अुसे पूरी तरह अुपजाअू बनायें। फिर भी आम, केले, अनन्नास, पपीते, नारंगी और संतरे, सीताफल, रामफल और सेबसे लेकर स्वादिष्ठ अंगूर तक यहां बहुतायतसे पैदा होते हैं। दुनियाके और किसी हिस्सेमें फलोंके लिअे शायद ही अितनी अनुकूल भूमि और आबोहवा होगी। फिर और क्या चाहिये? सोना वहां होता है, हीरा वहां

मिल सकता है! कोयला भी वहां होता है! जमीन समतल नहीं है, परन्तु अुपजाअू है। अुसमें भी नेटाल प्रान्त तो अलौकिक है। समुद्रके किनारे होने पर भी वह सूखी और सामान्य ठंडी हवावाला, बगीचों और झाड़ियोंसे भरा हुआ देश है।

नेटाल, ट्रान्सवाल, केप कालोनी और आरेंज रिवर फ्री स्टेट, अिन चार प्रान्तोंसे दक्षिण अफ्रीका बना है। ये चार प्रान्त 'यूनियन आफ साअुथ अफ्रीका' नामक राज्यसंस्थाके अधीन हैं। अिन चारों ही प्रान्तोंके प्रतिनिधित्ववाली संयुक्त राज्य सभा अुसका राजकाज चलाती है। यह राज्य सभा 'यूनियन पार्लियामेण्ट' के नामसे प्रसिद्ध है। दक्षिण अफ्रीका 'रिपब्लिक'–प्रजासत्ताक–नहीं माना जाता। वह ब्रिटिश साम्राज्यका अेक भाग समझा जाता है। फिर भी ब्रिटिश राज्यकी सत्ता वहां नाममात्रको ही है। यह नाममात्रकी सत्ता दक्षिण अफ्रीकाकी जनताके हितमें बाधक नहीं है, बल्कि वहांकी जनताको अुससे लाभ ही होता है। दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासी सीदी (हब्शी) लोग हैं। हुकूमतकी बागडोर जनरल स्मट्स और हरजोग जैसे डच लोगोंके हाथमें है। व्यापारका धन अंग्रेज लोग लूटते हैं। और साथ साथ हिन्दुस्तानी लोग भी धन कमानेके लिअे वहां बसे हुअे हैं। अिस पचरंगी आबादीके बारेमें हम आगे विचार करेंगे।

२

दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासी – जूलू

दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासियोंको अमरीकाके हब्शियोंकी तरह खास नाम लेकर नहीं पुकारा जाता। गोरी और दूसरी जनता अुन्हें काफिर कहती है। परन्तु यह संबोधन अपमानसूचक होनेके कारण सार्वजनिक रूपमें अिसका अुपयोग नहीं होता। अुन्हें खुद यह नाम सुनकर अपमान महसूस होता है। सरकार अपने कामकाजके लिअे 'नेटिव' शब्दका अुपयोग करती है। गोरे और हिन्दुस्तानी घरेलू भाषामें अुन्हें काफिर कहते हैं। नेटाल प्रान्तके मूल निवासियोंके लिअे वहांके अेक जूलू नामके प्रदेश परसे जूलू संज्ञा काममें ली जाती है। अिस प्रकरणमें मैं नेटालके मूल निवासियोंके सम्बन्धमें लिखना चाहता हूं, अतः अुनके लिअे जूलू शब्दका प्रयोग करना ठीक

है ; जहां जहां पाठक जूलू शब्द पढ़ें, वहां वहां समझ लें कि वह सारे दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासियोंके लिअे काममें लिया गया है।

हिन्दुस्तानके कितने ही भागोंमें बसनेवाली भील जाति, सूरतकी तरफकी कालीपरज (जिसे आजकल रानीपरजके नामसे पुकारते हैं) और अिसी तरहकी दूसरी जातियोंमें बहुत साम्य है। जूलू लोग मानते हैं कि वे और अमरीकाके हब्शी अेक ही जातिके हैं और अिसलिअे यह मान लेना चाहिये कि अुनकी खासियतों, रिवाजों और मान्यताओं वगैरामें सादृश्य होगा। परन्तु सूरत जिलेके रानीपरज लोगोंकी और भील जातिकी खासियतों, मान्यताओं, विवाहके रीति-रिवाजों और संगीत आदिकी पद्धतिमें और अिस जूलू जातिकी खासियतोंमें बहुत साम्य है। दक्षिण अफ्रीकाके मेरे निवास-कालमें मैंने अिस जूलू जातिके बारेमें काफी जान लिया है और अुसे जान लेनेके बाद मुझे अिस सारी जातिके प्रति आदर अुत्पन्न हो गया है। संसारकी जातियां आज तो अुत्क्रान्तिके पथ पर अग्रसर हो रही हैं। प्रत्येक जाति प्रगतिके मार्ग पर कूच कर रही है। आज जंगली मानी जानेवाली जूलू जाति कभी न कभी संसारकी महान जातियोंमें अपनी गिनती करायेगी। क्योंकि यह जाति भी प्रगतिके मार्ग पर बढ़ती चली जा रही है। फिर भी आज सभ्य होनेका दावा करनेवाली जातियां जिस जूलू जातिको जंगली जाति मानती हैं, अुसके बारेमें हम सच्ची जानकारी प्राप्त कर लें तब हम जरूर विचारोंके चक्करमें पड़ जाते हैं तथा सोचने लगते हैं कि हम सभ्य कैसे और वे जंगली कैसे? अिसमें पाठकोंको थोड़ा धीरज रखना पड़ेगा। यहां हमें कुछ तफसीलमें जाना पड़ेगा।

जूलू लोग आज भी ज्यादातर जंगलमें ही रहते हैं। दक्षिण अफ्रीकामें राज्य करनेवाली गोरी जातिने जहां जहां छोटे या बड़े गांव बसाये हैं, वहां घर बनाकर रहनेवाला जूलू शायद ही मिलेगा। और जो मिलेगा वह अीसाअी बन गया होगा। अीसाअी पादरीयोंने अिस जातिमें पैर फैलाकर अुसके दो भाग कर दिये हैं :– (१) नंगे जूलू; (२) कपड़े पहननेवाले जूलू।

नंगे लोग जंगलमें ही रहते हैं। वे बिलकुल नग्न तो नहीं रहते। स्त्री और पुरुष मर्यादा ढंकनेके लायक ही कपड़े या दूसरे साधन काममें लेते हैं। जहां जहां गोरे लोगोंकी बस्ती होती है, वहां अैसी असभ्य (अर्धनग्न) हालतमें जानेकी अुन्हें कानूनसे मनाही कर दी गअी है। अिसलिअे बाजारसे

चीजें लाने, कचहरीके काम निबटाने या और किसी कामसे अैसे प्रदेशोंमें जंगलवासी जूलू लोग कपड़े पहनकर जाते हैं। कुंवारी कन्याअें लहंगेके बजाय १२ से १८ अिंच पनेका अंगोछा काममें लेती हैं और छाती ढंक जाय अैसे चौकोर कपड़ेके टुकड़ेसे छाती ढंक लेती हैं। विवाहिता स्त्रियां बैलके चमड़ेका लहंगा पहनती हैं और कन्याओंकी तरह कपड़ेके बड़े टुकड़ेसे छातीका भाग ढंक लेती हैं। पुरुष बस्तीमें तो पतलून और कोट या कमीजसे अपना बदन ढंककर चलते हैं और जंगलमें बाघके चमड़ेसे अपनी मर्यादा ढंकते हैं। ये नंगे लोग अीसाअी बने हुअे नहीं होते। अीसाअी बने हुअे जूलूओंमें पुरुष यूरोपीय पोशाक पहनते हैं और स्त्रियां मलाअी पोशाक पहनती हैं। गैर-अीसाअी जनताकी यह मान्यता है कि पोशाकमें गोरोंकी नकल करना, गिरजोंमें विश्राम-दिवस यानी रविवारके दिन टीपटाप करके जाना, गोरोंके बावर्ची या कार-कुनके रूपमें नौकरी करना, शराब और व्यभिचारकी छूट प्राप्त करना, अैश-आराम और भोग-विलासमें निर्बल बनना और जीवनमें नीति-अनीति या धर्म-अधर्मकी चिन्ता न रखना—ये अीसाअी धर्म स्वीकार करनेवालोंकी खासियतें हैं। नंगे जूलू अपने अीसाअी बने हुअे भाअियोंको शंका और तिरस्कारकी नजरसे देखते हैं। गैर-अीसाअी जूलू स्त्रियों और अीसाअी जूलू स्त्रियोंके झगड़े मैंने सुने हैं; और सुननेके बाद जिज्ञासाके खातिर और कभी कभी मजाकके खातिर मैं गैर-गीसाअी जूलू स्त्रीसे पूछता था "तुमने अुस बहनको ताने मारे, परन्तु कुछ भी हो, वह सभ्य है और तुम जंगली हो। तुम अुसे अैसा कैसे कह सकती हो?" मेरा अुलाहना सुनकर वह बड़े गर्वसे जवाब देती "कौन सभ्य है? कैसी सभ्यता? वेश्याकी तरह कपड़े पहनकर नखरे करना, विलायती शराब पीकर पागल बनना, जबानकी चालाकीसे काम लेना, व्यभिचार करनेकी छूट प्राप्त करना और फिर गिरजेमें जाकर भोला मुंह बनाकर भगवानको फुसलाना, क्या सभ्यताके यही लक्षण हैं? अैसे लोग सभ्य कहलाते हों तो हमें वैसे नहीं बनना है। हमें अपना जंगलीपन ही मुबारक हो!"

अूपरकी चतुराअीभरी दलील सुनकर मैं तो चकरा जाता था। फिर भी अुस बहनसे और बातें सुननेकी खातिर मैं अुसका खंडन करके कहता: "तुम लोग तो अीर्षालु हो। ये लोग तुमसे कितने ज्यादा साफ और सभ्य दिखाअी देते हैं? तुम लोगोंके कपड़े कितने गंदे और अरंडीके तेलमें भीगे हुअे होते हैं

और तुम्हारे शरीरसे भी अुस तेलकी बदबू आती है। तुम्हें न तो बोलनेकी तमीज है, न कपड़े पहननेकी तमीज है और न शहरी जिन्दगीको तुम समझती हो।" जैसे मेरी बात सुनकर व्याकुल हो जाती हो, अिस प्रकार वह बोल अुठती, "कोअी हर्ज नहीं, कोअी हर्ज नहीं। भले ही वे सुन्दर दीखनेकी कोशिश करें, भले ही वे बाहरी जीवनमें स्वच्छ दीखती हों, भले ही अुन्हें शहरमें रहना आता हो। परन्तु अुनके अन्तःकरण कितने काले हैं? तुम जानते हो वे कितने अधम और अनीतिपूर्ण हैं? हमारे शरीरसे चाहे बदबू आती हो, परन्तु हमारा हृदय कितना शुद्ध है। हम अपने भगवानसे डरते हैं; अुसे धोखा नहीं देते।"

यह स्पष्ट अुत्तर सुनकर भी मुझे संतोष न होता, तो मैं और भी स्पष्टताके खातिर अुससे जिरह करता: "नीति-अनीति तो थोड़ी बहुत सभीके साथ लगी हुअी है। अुससे बिलकुल निर्लेप तो किसीको देखा नहीं। तुम अुन लोगोंके चरित्र पर आक्षेप करती हो, परन्तु क्या तुम लोगोंमें सभी शुद्ध होंगे? बुराअी तो तुम लोगोंमें भी होगी।" मेरा कहना पूरा होनेसे पहले ही वह बोल अुठती: "हां, हां, तुम सच कहते हो। हममें भी बुराअी तो होगी। परन्तु नब्बे फी सदी बुराअी अुनमें और दस फी सदी बुराअी हममें होगी। अितना फर्क है। वे भी दस-पांच साल पहले हमारे भाअी-बन्द थे। अब भी वे हमारे भाअी-बन्द ही हैं। मैं अुन पर आक्षेप नहीं करती। मेरा आक्षेप तो जिसे तुम सभ्यता कहते हो अुस पर है।"

अिस निरक्षर, अज्ञान और जंगली मानी जानेवाली स्त्रीसे सभ्यता और असभ्यताका निरूपण सुनकर मैं तो ताज्जुबमें पड़ जाता। अैसी मान्यता और दलीलें मैंने बहुत-सी गैर-अीसाअी स्त्रियोंसे सुनी थीं। और बारीकीसे जांच करने पर मालूम हुआ है कि अुनमें अतिशयोक्ति नहीं थी। अच्छे-बुरे लोग तो सभी जातियोंमें होते हैं। परन्तु यह सभी जगह देखा गया है कि जूलू लोगोंमें अीसाअी बन जानेके बाद अधिकतर लोगोंका जीवन अिस प्रकार कलंकित हो जाता है। जहां धर्म-परिवर्तन करना ही मनुष्यका मुख्य हेतु होता है, वहां धार्मिकता लोगोंमें कम ही पैदा होती है। अितना ही नहीं, धर्म बदलनेवाले लोग परधर्मावलम्बी समाजके प्रचलित दोषोंके शिकार बन जाते हैं। अीसाअी बने हुअे जूलू लोगोंकी अैसी ही दयनीय दशा है।

३

जूलू कौमकी राजनीतिक स्थिति

जूलू दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासी हैं; वह अुनकी जन्मभूमि है। वहां रहना, वहांका राज्य करना और वहांका सारा वैभव भोगना अुनका जन्मसिद्ध अधिकार है; परन्तु पश्चिमकी भूखी जातियां वहां जा पहुंची। अुनका रंग गोरा होनेके कारण ही अुन्होंने अैसा मान लिया है कि अिस पृथ्वीतल पर और सूर्य-मंडल पर भी अुन्हींकी सत्ता होनी चाहिये; अुन्हींका बोलबाला होना चाहिये। अमरीकामें वे लोग जब स्थायी हो गये तो अपनी बेगार करानेके लिअे दक्षिण अफ्रीकाके निवासियोंको अपने गुलाम बनाकर ले गये और यहां जो लोग रहे अुन पर यहां आकर बसे हुअे गोरे लोगोंने अपना आधिपत्य जमा लिया। स्वाभाविक रूपमें ही मानवोंके मनमें यह अभिलाषा पैदा होती है कि हमारी सेवाके लिअे या हमारे साथ जो जाति रहती है, अुसकी भलाअी और अुन्नतिके लिअे कोशिश करनी चाहिये। परन्तु अिन गौरांग जातियोंके हृदयमें अैसी कोअी मानव-भावनाका अुद्भव ही नहीं हो सका। अुन्होंने अपना स्वार्थ साधना शुरू कर दिया। अितना ही नहीं, जिस घरके वे मालिक बन बैठे हैं, अुसके मूल स्वामीको अुन्होंने अूपर न अुठने दिया। पचासों वर्ष हो गये, फिर भी मूल जातियोंकी शिक्षाका अुन्हें खयाल तक नहीं आया। मामूली पुलिसके सिपाहीसे अूंचे दर्जेकी नौकरीके लिअे भी अुनमें से किसीको नहीं रखा जाता, तब न्याय-विभाग, शिक्षा-विभाग और गृह-विभागकी तो बात ही क्या की जाय! अुन्हें लाठी या खेतीके लिअे जो औजार अुपयोगी हों अुनके सिवा अन्य कोअी हथियार भी रखनेकी अिजाजत नहीं है। किसी सरकारी नौकरीमें मैंने अेक भी जूलू नहीं देखा। वहांके गोरे लोगोंको शायद शंका होगी कि ये लोग मानव-जातिके हैं या तुच्छ पशु-पक्षी हैं? गांव-गांव म्युनिसिपैलिटियां होंगी, परन्तु अुनका लाभ जूलूओंको क्यों मिलने लगा? अिन लोगोंके लिअे किसी जिलेमें किसी जगह सरकारी दवा-खाना मैंने नहीं देखा। फिर भी अेक साल जानवरोंमें चेचकका रोग फैला तब अुसकी छूत लगनेके बहाने जंगलमें रहनेवाले जूलू लोगोंके हजारों जानवरोंको

गोलीसे मार दिया गया। अिस तरह सैकड़ों साधन-सम्पन्न जूलू थोड़े ही दिनमें साधनहीन बन गये।

सरकारको अुनके लिअे कुछ करना नहीं पड़ता। वे अपनी रक्षा आप कर सकते हैं, अिसलिअे पुलिस विभागको किसीसे अुनकी रक्षा करनी नहीं पड़ती। फिर भी सरकार अुनसे फायदा बहुत अुठाती है। वह अुनमें से पुलिसके सिपाहियोंकी भरती करके अुन्हें खास तौर पर गोरोंकी रक्षा लिअे रखती है। जूलू लोगोंको कर तो देना ही पड़ता है। फिर भी अितनेसे गोरी सरकारको सन्तोष नहीं हुआ। अुसने फी आदमी अेक नया कर लगा दिया। अिसका हेतु अेक ही था। किसी भी तरह जूलू लोगोंको तंगदस्ती और कंगाल हालतमें रखना। कर या किसी भी कानूनके अमलके नीचे अुन्हें हमेशा दबाकर रखना। आज तक वहांकी सरकार अैसे दुष्ट हेतुवाला व्यवहार ही जूलू जातिके प्रति रखती है। सन् १९०४ में वहांकी सरकारने जूलूओं पर जब मुण्ड-कर लगाया, तो अुस जातिमें भारी असंतोष पैदा हुआ। जंगलके किसी केन्द्रमें पुलिस सार्जण्ट कर अुगाहने गया, वहां जूलू लोगोंने अुसे काट डाला। अितना कारण गोरी जातिके लिअे काफी था। अिसे गोरी जाति और सरकारने बड़ा रूप दे दिया। अुसे जूलू-विद्रोह मान लिया। फौजी स्वयंसेवक सेनामें भरती हुअे नौजवानोंको तुरन्त अिकट्ठा कर लिया गया। जमा हुअे नौजवानोंके दिलोंमें अब तक जूलूओंके प्रति तिरस्कारका भाव ही पोषित किया गया था। अुनके हृदयोंमें अपने घरके पालतू कुत्तेके बराबर भी जूलू मानवकी गिनती न थी। अैसे नौजवानोंके दल नेटालका जूलू-विद्रोह दबानेको निकल पड़े। सत्ताके नशेमें चूर अिन गोरे सैनिकोंने सैकड़ों नहीं हजारों जूलूओंका शिकार किया, मानो वे मनुष्योंका शिकार करनेका ही अवसर ढूंढ़ रहे हों। गांधीजी अिस जूलू-विद्रोहमें घायल होनेवालोंकी सेवा करनेकी अिच्छासे स्वयं-सेवकोंकी अेक टोली लेकर गये थे। अुन्होंने खुद बताया है कि वह जूलू-विद्रोह जैसा बिलकुल नहीं था। अिस बहानेसे जूलू जाति पर गोरोंको आतंक जमाना था। और गोरी सरकारने अपने अत्याचारोंसे भयंकर आतंक फैलाया। घायलोंकी सेवा करनेवाली टोलीको अेक भी गोरे घायलकी सेवा करनेका मौका नहीं आया। जो घायल हुअे या मारे गये, वे केवल जूलू ही थे। गोरोंकी हथियारबन्द टोलीको देखकर अुसका आश्रय लेनेके लिअे जानेवाले जूलूओं पर भी बिना हिचकिचाहटके अुस टोलीने गोली चलाअी और कितनों ही को

निर्दयतासे मार डाला या घायल कर दिया। अिस तरह मिला हुआ मौका चूकनेवाली गोरी जाति नहीं थी। अिस प्रकार दक्षिण अफ्रीकाके सब प्रान्तोंका राज्यशासन वहांकी मूल जातिके खूनसे सनकर कलंकित बन गया है।

४

दक्षिण अफ्रीकाका औपनिवेशिक स्वराज्य

दक्षिण अफ्रीकामें रहनेवाले हिन्दुस्तानी लोगोंके बारेमें कोअी विचार करनेसे पहले हम वहांकी राज्यसत्ता पर अेक नजर डाल लें। दक्षिण अफ्रीकाके चार प्रान्तोंमें से नेटाल, केप कालोनी और आरेंज रिवर फ्री स्टेट—ये तीन प्रान्त अंग्रेजोंके अधिकारमें थे। ट्रान्सवाल प्रान्त डच लोगोंके पास था। डच लोग हालैण्डके मूल निवासी हैं। वे भी ट्रान्सवालमें 'सेटलर्स' के रूपमें गये थे और बादमें अुन्होंने अपनी सत्ता वहां जमाअी थी। परन्तु वे वहांकी भूमिके सगे पुत्र बनकर रहे; किसान बन गये और ट्रान्सवालकी अुन्नति और समृद्धिमें अपनी अुन्नति और समृद्धि मानने लगे। ट्रान्सवालके लगभग चारों ओर अंग्रेजी सत्ता थी। अुनकी आंखोंमें ट्रान्सवालका स्वतंत्र राज्य खटके बिना कैसे रहता? और अंग्रेज व्यापारके लिअे तो घुस ही गये थे। सोनेकी खानें वहां ट्रान्सवालमें अंग्रेज व्यापारियोंने खोजी थीं और अंग्रेज कंपनियोंने अिन खानों पर अपना स्वामित्व जमा लिया था। फिर भी राजसत्ता डच लोगोंकी होनेके कारण सोनेकी खानोंका धंधा मनमाने ढंगसे बढ़ानेमें अंग्रेजोंको अनेक कठिनाअियां महसूस हुअीं। जिस भूमिमें ये खानें हैं अुस भूमिका स्वामित्व मिलने पर ही अुनका पूरा लाभ अुठाया जा सकता है, यह बात मि० चेम्बरलेन जब दक्षिण अफ्रीका आये तब अुन्हें सूझी। अुन्होंने ट्रान्सवाल प्रान्त लेनेके लिअे पार्लियामेंटको अुकसाना शुरू कर दिया। परन्तु प्रश्न यह खड़ा हुआ कि ट्रान्सवालके साथ किस कारणसे लड़ाअी मोल ली जाय। परन्तु राजनीतिज्ञोंको कारणोंकी क्या कमी! 'तू नहीं तो तेरा बाप होगा,' अेसी भेड़िया-वृत्ति तो अुनमें होती ही है। अुन्होंने लड़ाअीके कितने ही कारण ढूंढ़ निकाले। अुनमें से अेक कारण यह भी था कि ट्रान्सवालकी डच हुकूमत वहां रहनेवाले हिन्दुस्तानियों पर जुल्म करती है। परन्तु सच्चा कारण तो यह था कि सोनेकी खानोंके लिअे अुनकी

नीयत बिगड़ गअी थी। यह बोअर-युद्ध लगभग तीन साल तक चला। लार्ड राबर्ट्स प्रधान सेनापति थे। हिन्दुस्तानी फौजने भी वहां अपना खून बहाया। लड़ाअीमें कितने ही हत्याकाण्ड किये गये। और अुन हत्याकाण्डोंमें अंग्रेज फौजने निर्दोष डच स्त्रियों और बच्चोंकी निर्मम हत्याअें कीं। बहादुर होने पर भी मुट्ठी भर डच लोग आखिर राक्षसी ब्रिटिश सल्तनतके सामने कहां तक टिकते? फिर भी तीन सालमें डच लोगोंकी बहादुरीसे ब्रिटिश साम्राज्य थक गया। अन्तमें दोनों पक्षोंमें सुलह हुअी। ट्रान्सवाल प्रान्तने ब्रिटिश साम्राज्यका आधिपत्य स्वीकार किया और अुसे साम्राज्यके अुपनिवेशके रूपमें स्वीकार किया गया। अुस समयसे अिन तीन प्रान्तोंमें ट्रान्सवाल भी मिल गया। सन् १९१० तक अिन चारों प्रान्तोंका शासन स्वतंत्र रूपसे होता रहा। सन् १९१० में दक्षिण अफ्रीकाका संघराज्य बना। अुसके मुख्य अधिकारी जनरल स्मट्स और जनरल बोथा वगैरा डच लोग रहे। चारों ही प्रान्तोंके प्रतिनिधियोंकी संयुक्त राज्य-सभा अपने मंत्रिमंडलके जरिये सारा शासन करती है। अुस मंत्रिमंडल या राज्य-सभाकी सत्तामें हस्तक्षेप करनेका बड़ी सरकारको कोअी अधिकार नहीं है। साम्राज्यकी ओरसे अेक प्रतिनिधि वहां रहता है। वह दक्षिण अफ्रीकाका गवर्नर जनरल कहलाता है। राज्यसभा जो जो कानून बनाती है, अुस पर वह नियमानुसार केवल हस्ताक्षर करता है। अुस प्रतिनिधिका वेतन बड़ी सरकार देती है।

अिस तरह बड़ी सरकारकी सत्ता दक्षिण अफ्रीकामें नाममात्रकी ही है। यूनियन जैक वहांका राज्य-ध्वज माना गया है। अिसके बदलेमें ब्रिटिश सरकार दस हजार गोरी सेना दक्षिण अफ्रीकामें रखती है। अिस फौजका सारा खर्च अिंग्लैण्डके खजानेसे दिया जाता है। अितने पर भी अुसका अुपयोग दक्षिण अफ्रीकाकी सरकार अपनी जनताके हितमें जरूरत पड़ने पर कर सकती है।

हमारे मनमें सहज ही प्रश्न अुठ सकता है कि अिंग्लैण्ड अिस तरह घाटा सहकर भी दक्षिण अफ्रीकामें नाममात्रकी सत्ता किस लिअे रखता होगा? अिसमें अिंग्लैण्डको क्या लाभ? अैसे प्रश्नोंका हल बड़ा गहरा है। दोनों पक्ष अिसमें अपनी अपनी मर्यादा समझकर अेक-दूसरेका लाभ अुठाते हैं। दक्षिण अफ्रीकाकी जनता यह मानती है कि अिंग्लैण्डका झंडा वहां रहे तो अिसमें अुसका कोअी नुकसान नहीं है। वह दक्षिण अफ्रीकाके हितमें बाधक नहीं

बन सकता। और जब बाधक बनेगा तब घड़ी भरमें अुसे अुतारकर फेंक देनेकी शक्ति अुसमें है। अुस हालतमें अिंग्लैण्ड चुपचाप बैठे रहनेके सिवा और कुछ नहीं कर सकता। अिसके सिवा ब्रिटिश साम्राज्यकी हिस्सेदारीकी छायामें ब्रिटिश साम्राज्यमें और दूसरे देशोंमें भी दक्षिण अफ्रीकाके लोग व्यापारका और बसनेका लाभ अुठा सकते हैं। दूसरी तरफ अिंग्लैण्ड अिस तरह मनका संतोष कर लेता है कि अैसे अुपनिवेशोंके समूहसे बने हुअे साम्राज्यकी छाया तले वह विदेशी राज्योंके साथ अपनी प्रतिष्ठा बनाये रख सकता है। अिंग्लैण्डकी बढ़ती हुअी आबादी और अुद्योगोंके लिअे अुपनिवेशोंमें सुन्दर स्थान मिलता है। दक्षिण अफ्रीकामें होनेवाले विदेशी आयातमें अिंग्लैण्डको बिना रोकटोक दूसरे देशोंसे ज्यादा तरजीह मिल सकती है। अिस प्रकार अिंग्लैण्डके मालका विशाल बाजार खुला रहता है। दक्षिण अफ्रीकाके लिअे तो सभी बराबर हैं। जो चीज जरूरी होते हुअे भी वहां तैयार नहीं होती, वह अिंग्लैण्डसे आये या जर्मनीसे आये या और किसी देशसे आये, अिसमें अुसका कुछ बिगड़ता नहीं। अिस प्रकार अेक-दूसरेके स्वार्थपूर्ण हेतु अैसी राजनीतिमें घुसे होते हैं। अिन स्वार्थोंकी और अपनी-अपनी मर्यादाकी दृष्टिसे समझ-बूझकर दोनों पक्ष व्यवहार करते हैं। तथापि अिसमें अेक बात तो निश्चित है कि जब अिंग्लैण्ड जरा भी दक्षिण अफ्रीकाके हितके विरुद्ध जायगा तब दक्षिण अफ्रीका तुरन्त ही साम्राज्यका जुआ अुतार फेंकेगा। अैसा करनेमें अुसे कोअी रोक नहीं सकेगा। आजकल हिन्दुस्तानके लोग राष्ट्रीय कांग्रेसके जरिये दक्षिण अफ्रीका जैसा जो औपनिवेशिक स्वराज्य मांगते हैं वह अैसा ही औपनिवेशिक स्वराज्य होगा। जब जरूरी मालूम हो तब साम्राज्यके सम्बन्धसे अलग होनेके अधिकारवाला स्वराज्य ही औपनिवेशिक स्वराज्य है। आजकल दक्षिण अफ्रीकाको अैसा ही स्वराज्य मिला हुआ है।

अब यह देखें कि दक्षिण अफ्रीका अपने औपनिवेशिक स्वराज्यमें अपने मुल्कके हितकी किस तरह रक्षा करता है।

वहांकी जमीन अुपजाअू है — बहुत अुपजाअू है। बरसात बहुत अनुकूल है। चौमासेमें, जाड़ेमें और गरमीमें भी वहां बरसात होती रहती है। खेती अच्छी होती है, फिर भी वहांकी जमीन पर कोअी लगान नहीं है। साधारण किसान पर तो कर जैसी कोअी चीज होती ही नहीं। बड़े किसानों पर आय-कर होता है। और वह आय-कर निश्चित आय पर

लिया जाता है। खास तौर पर किसानोंके साथ सरकारी अफसरों और छोटे कर्मचारियोंका विशेष सम्बन्ध न होनेसे किसान अुनके जुल्मोंसे बचे रहते हैं। वे अिसी कोशिशमें लगे रहते हैं कि अुनकी जमीन अधिक अुपजाअू कैसे बने।

खेती नहरोंसे बहुत समृद्ध होती है। परन्तु अिस पहाड़ी देशमें नहरोंका अुपयोग नहीं हो सकता। अिसलिअे वहांकी सरकार किसानोंको यह लाभ नहीं दे सकती। फिर भी अिसके अलावा दूसरे बहुत लाभ वह किसानोंको पहुंचाती है। किसानोंको अच्छा बीज प्राप्त करनेमें कअी सुविधाअें देती है। खेती-विभाग लोगोंका रुपया बरबाद करके निष्फल प्रयोग नहीं किया करता। परन्तु सालमें अेक दो बार खेती-बाड़ीका प्रदर्शन करके किसानोंका अुत्साह बढ़ाता है। अुनको आर्थिक सहायता देता है। यह तो खेती-विभागकी तरफसे मिलनेवाली मदद हुअी। अब यह देखें कि किसानोंको अप्रत्यक्ष रूपसे और कितनी सहायता मिलती है।

जो फसल दक्षिण अफ्रीकामें पैदा हो सकती है वह सरकार वहांके किसानोंसे पैदा कराती है। अैसी पैदावार विदेशोंसे आकर देशकी पैदावारसे स्पर्धा न करे, अिसके लिअे सरकार विदेशी माल पर जकात लगाती है। वह जकात कितनी लगाअी जाती है, अिसके अुदाहरण मैं नीचे देता हूं।

जो तम्बाकू वहां पैदा होने लगी, वह बिलकुल हलकी किस्मकी थी। फिर भी सरकारने अुस मालका स्वागत किया। आम तौर पर अिस तम्बाकूका बाजार-भाव चार या पांच पेनी फी रतल होगा। परन्तु विदेशी तम्बाकू वहां जाय तो अुस पर जकात ही फी रतल पांच शिलिंग ली जाती है। अिसलिअे बाहरकी तम्बाकू वहां किसी भी तरह नहीं पुसाती।

वहां जो गन्ना होता है अुसकी शक्कर बनती है। आम तौर पर अुस शक्करका भाव सौ रतलकी बोरीका आठसे दस शिलिंग होता है। अुसकी स्पर्धामें मोरीशसकी शक्कर आ सकती है। परन्तु बाहरकी शक्कर दक्षिण अफ्रीकाके बन्दरगाहमें घुसते ही अुस पर अितनी अधिक जकात लगाअी जाती है कि वह बीससे बाअिस शिलिंगकी सौ रतल पड़ती है। अिसलिअे दस-पांच वर्षमें कभी बरसातकी भारी कमीके कारण वहां गन्नेकी फसल न हो, तो ही विदेशी शक्कर अन्दर आ सकती है। अिस प्रकार खेतीकी हर पैदावारका सरकार विदेशी पैदावारसे संरक्षण करती है। वहां रेलवे सरकारकी है।

अुसके जरिये भी वहांकी पैदावारको बहुत प्रोत्साहन मिलता है। रेलवे रसीद पर माल भेजनेवाला यह प्रमाणपत्र दे कि अुसका माल दक्षिण अफ्रीकामें पैदा हुआ है, तो मालके रेलभाड़ेमें असाधारण फर्क पड़ जाता है। अुदाहरणके लिअे चावलकी दो सौ रतलकी बोरी डरबन स्टेशनसे बावन मील दूरके किसी स्टेशनको भेजनी हो, तो अुसका रेल-भाड़ा दो शिलिंग होता है। परन्तु मक्काकी दो सौ रतलकी बोरी जोहानिसबर्गसे चार सौ मील दूरके स्टेशनको भेजनी हो तो अुसका भाड़ा आठ पैंस होता है। अिस भारी फर्कका कारण सिर्फ यही है कि चावल विदेशकी पैदावार है। चावल देशमें पैदा नहीं होता, अिसलिअे मजबूर होकर बाहरसे मंगाना पड़ता है, परन्तु बन्दरगाहकी जकात और भारी रेल-भाड़ा लगाकर देशमें पैदा होनेवाले दूसरे अनाजका सरकार संरक्षण करती है। केप कालोनीमें बढ़िया अंगूर ढेरों पैदा होते हैं। जोहानिस-बर्गमें अुसके लिअे अच्छा बाजार है। अिसलिअे रेलवे अुन अंगूरोंको अितने थोड़े भाड़ेमें जोहानिसबर्ग ले जाती है कि केप टाअुनमें और चार सौ मील दूर जोहानिसबर्गमें वे अेक ही भाव बिकते हैं। ये सब बातें दक्षिण अफ्रीका कर सकता है, क्योंकि वहां स्वराज्य है। स्वराज्य हरअेक दुःखकी रामबाण दवा है।

५

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी — १

अिंग्लैण्डके साहसी लोग नेटालमें आये और बस गये। अुन्होंने देखा कि नेटालकी भूमिमें अनेक प्रकारकी फसलें पैदा हो सकती हैं। परन्तु जमीनमें जंगल बहुत है। अुसे साफ करना चाहिये। अिसी तरह जमीनको तोड़ना चाहिये और फसलें पैदा करनी चाहिये। यह अेक हाथसे नहीं हो सकता था। आकर बसनेवाले लोगोंको थोड़ी-सी जमीनके मालिक बननेसे संतोष नहीं हो सकता था। अुन्हें तो जमीनके बड़े बड़े फार्म चाहिये थे। परन्तु अुनमें मजदूरी कौन करे? खेतीके काममें तो स्थिरतासे सख्त मेहनत करनेवाले चाहिये। दक्षिणी अफ्रीकाके जूलू लोग स्थिरतासे काम कर सकनेवाले साबित नहीं हुअे। जब तक गुलामीका कानून मौजूद था तब तक कानूनके जोरसे गोरे जरूरी काम जूलू मजदूरोंसे जबरन करा लेते थे। परन्तु गुलामीका कानून रद होने पर जूलू मजदूरोंने

स्थिरतासे काम नहीं दिया। असलिअे गोरे निवासियोंने बड़ी सरकारके मारफत चीनसे मजदूर जुटानेका प्रबन्ध किया। परन्तु थोड़े ही समयमें अुन्होंने देखा कि ये मजदूर जमकर काम नहीं कर सकते, असलिअे अुन्हें वापस भेज दिया। अब अुनकी नजर हिन्दुस्तानकी तरफ गअी। हिन्दुस्तानके लोग खेती करनेवाले ठहरे और गरीब मजदूर खेती जानते ही हैं। हिन्दुस्तानसे काफी मजदूर मिल भी सकते थे। असलिअे नेटालका अेक शिष्ट-मंडल भारत-सरकारके पास हिन्दुस्तान आया। अुसने भारत-सरकारके साथ सलाह-मशविरा करके यहांसे गिरमिटिया* मजदूर जुटानेके लिअे बाकायदा महकमा खोलनेकी भारत-सरकारसे मंजूरी ले ली। मंजूरी देने और लेनेवाले मौसेरे भाअी ठहरे, असलिअे भारत सरकार अिनकार तो क्यों करने लगी? अैसी शर्तें तय हुअीं जो नेटालके जमींदारोंके अनूकूल हों। नेटालमें जो हिन्दुस्तानी मजदूर जाते, अुनकी रक्षा करनेवाला अेक विभाग सन् १८६० में खोला गया। अुसके मुखियाको 'प्रोटेक्टर ऑफ् अिंडियन अिंडेन्चर्ड लेबरर्स'–हिन्दुस्तानी गिरमिटिया मजदूरोंका रक्षक कहा गया। अिस विभागका खर्च नेटालका कृषि-विभाग अुठाता था और रक्षककी नियुक्ति भी वही करता था। असलिअे अिन गरीब अर्ध-गुलामीकी हालतमें गये हुअे हिन्दुस्तानी मजदूरोंका कैसा रक्षण होता होगा, अिसका अन्दाज हम आसानीसे लगा सकते हैं। अिन गिरमिटिया मजदूरोंका अेक कानून बनाया गया।

नेटालके जमींदारोंके अेजेंट हिन्दुस्तानमें मजदूर अिकट्ठा करते थे। हिन्दुस्तानके बड़े शहरोंमें अिन मजदूरोंकी भरती करनेके दफ्तर खोले गये। अिन दफ्तरोंकी तरफसे नियुक्त किये गये अेजेंट घूमते ही रहते थे। मेलोंमें, रेलगाड़ियोंमें या शहरोंमें भूखके मारे मजदूरी या धंधा खोजनेवाले स्त्री–पुरुषोंसे मुलाकात हो जाने पर अेजेंट अुनसे खोद-खोद कर पूछते, अुनके मनकी बात निकलवाते और फिर लालच देते: "तुम्हें रुपया कमाना हो तो नेटालमें अच्छा मौका है। वहां सोनेकी खानें हैं। अुनमें काम करनेको मिलेगा, मजदूरी भी सोनेके सिक्केमें ही मिलेगी। सोनेके पासे भी मिलेंगे। गन्नेके खेतोंमें वहांके जंगली लोग काम करते हैं; अुन पर देखरेख रखनी

* मजदूरोंके लिअे जो अिकरार-नामा करना पड़ता है, अुसे अंग्रेजीमें 'अेग्रीमेंट' कहते हैं। अिस 'अेग्रीमेंट'का हिन्दी अपभ्रंश 'गिरमिट' हो गया। अिस तरह 'गिरमिट' करके जानेवाले हिन्दुस्तानी मजदूर 'गिरमिटिया' कहलाये।

होती है। वहां अितना ज्यादा वेतन मिलता है कि दो-चार बरसमें तो रुपयोंकी दो-चार थैलियां लेकर स्वदेश भी लौट सकते हैं। लौटते समय या वहां जाते समय तुम्हें अेक पाअी भी खर्च नहीं करनी होगी।" वगैरा लालच देकर वे अनेक युवक–युवतियोंको तैयार करते थे और खुद मानो अुनकी मदद करनेवाले और रास्ता बतानेवाले कोअी हितैषी हों अिस तरह परोपकारी फरिश्ते बनकर भोले-भाले लोगोंको बड़े शहरोंके अिस विभागके भर्ती-केन्द्रोंमें ले जाते थे। वहां अुनकी आव-भगत जरा अच्छी होती थी। थोड़े मजदूर अिकट्ठे हो जाते तो अुन्हें मजिस्ट्रेटके पास ले जाते थे। मजिस्ट्रेटके सामने अिकारारनामे पर अुनके अंगूठेकी निशानियां ली जाती थीं। बस, मामला खतम। वहांसे अुन्हें बन्दरगाहके मुख्य स्थान पर ले जाया जाता था। वहां अुस अेजेंटका मुंह भी नहीं दिखाअी देता था। वह स्थान मानो कैदखाना होता था। वहांसे अिन मजदूरोंकी बुरी दशा शुरू होती। वहां अुन्हें अपनी सच्ची हालतकी कुछ कल्पना होने लगती थी। परन्तु किससे कहें? कौन सुने? अिस तरह दो-चार दिन बीतते कि तुरन्त नेटाल जानेवाले जहाज पर अुन्हें सवार करा दिया जाता। जहाज पर अुन पर क्या क्या बीतती होगी, अिसकी तो कल्पना ही की जा सकती है। नेटालके डरबन बन्दरगाह पर अुतरनेके बाद अिमीग्रेशन-बोर्ड अुन मजदूरोंको जमीदारोंमें बांट देता था। पांच सौ में तीन सौ पुरुष और दो सौ स्त्रियां होती थीं अुनमें कुछ विवाहित जोड़े होते थे। बाकीके लोगोंको अलग अलग मालिकोंमें बांट दिया जाता था। जिसकी जैसी तकदीर। हिन्दुस्तानी स्त्रियां विपत्तिके मारे अिस लालचमें फंस जाती थीं, परन्तु नेटाल पहुंचनेके बाद कहां जातीं? अेक महीनेकी महासागरकी यात्रा करनेके बाद तो जहाजसे अुतरती थीं, अब वापस कब जायें? वापस लौटकर भी कहां जायें? कहां जात-पांत, कहां समाज और कहां सगे-सम्बन्धी? सबसे बिछुड़ी हुअी, हजारों मील दूर भिन्न वातावरणमें, भिन्न संस्कारोंमें और भिन्न परिस्थितियोंमें आ फंसी हों, तब अुनके लिअे अेक ही रास्ता रह जाता था। वह यह कि परिस्थितिके अनुकूल बनकर रहें। और वे बहनें अैसा ही करती थीं। अपनी नअी दुनिया और नया संसार वे बसाती थीं। कोअी ब्राह्मणकी लड़की चमारके साथ, कोअी बनियेकी बेटी मीनेके साथ, कोअी कोलीकी लड़की ब्राह्मणके साथ, अिस तरह अुनका संसार बसता था।

अिस तरहके जोड़ोंको और दूसरे अकेले पुरुषोंको नेटालके जंगलोंमें, जहां अुनके लिअे झोंपड़े बनाये जाते थे ले जाया जाता था। वहांके अुनके दुखड़ोंका

वर्णन कौन कर सकता है? वर्णन करनेकी शक्ति हो तो दुखड़े भोगनेवाला ही कर सकता है। स्त्री-पुरुष सुबहसे शाम तक ग्यारह-बारह घंटे सख्त मेहनत करते थे। सख्त गर्मीमें या बरसातकी झड़ियोंमें गोरे मुनीमोंके कोड़ोंकी मारके डरसे मनसे या बेमनसे, हो सके या न हो सके, मजबूरन अुन्हें मजदूरी करनी पड़ती थी। और अिसके बदलेमें अुन्हें मिलता क्या था? हर हफ्ते पांच सेर मक्कीका आटा और हर महीने दस शिलिंग वेतन। शिकायत किसी भी हालतमें नहीं हो सकती थी। मजदूरोंमें से ही कोअी थोड़ा बुद्धिशाली पर साथ ही स्वार्थी और चालाक होता, तो अुसे जमादार बना देते थे। अैसे जमादारोंकी मददसे सैकड़ों मजदूरोंको काबूमें रखा जाता था। हिन्दुस्तानमें जैसे कैदियोंसे ही जेल चलते हैं, वैसे वहां भी अिस तरहके स्वार्थी और बदमाश मजदूरोंको जमादार बनाकर अुनके जरिये, और जरूरत पड़ने पर खुद जुल्म करके, मालिक अुनसे बहुत ज्यादा काम लेते थे। कितना ही जुल्म क्यों न हो, परन्तु जुल्म करनेवालेकी अिजाजतके बिना मजदूर बस्तीकी हद छोड़कर अदालतमें भी शिकायत करने नहीं जा सकते थे। अिजाजतकी चिट्ठीके बगैर कोअी चला जाय तो अुसे बिना किरायेकी कोठरीमें बैठना पड़ता था। अैसी गुलामीकी दशामें अुन्हें अपना जीवन बिताना पड़ता था। अिस प्रकार लगभग तीस-बत्तीस बरस बीत गये। अिस बीच हिन्दुस्तानियोंकी आबादी भी बढ़ गअी। गिरमिटके नियमानुसार पांच बरस सुख-दुःख अुठाकर पूरे करने पड़ते थे। अुसके बाद वे मजदूर वापस गिरमिटमें चले जाते तब तो कोअी हर्ज नहीं था, लेकिन सभी तो फिरसे गिरमिटमें जाते नहीं थे। कितने ही स्वतंत्र किसानके रूपमें रहते थे। और बुद्धिशाली हिन्दुस्तानी किसान खुशहाल हो, यह गोरोंकी आंखमें खटकता था। अिसलिअे पहले तो अुन्होंने यह आन्दोलन करना शुरू किया कि गिरमिटिया हिन्दुस्तानियोंके पांच बरस पूरे हो जायं और वे दूसरा गिरमिट न लिख दें, तो अुन्हें तुरन्त हिन्दुस्तान वापस चला जाना चाहिये। परन्तु अिकरारनामेकी शर्तोंके अनुसार अैसा नहीं हो सकता था, क्योंकि यह भारत-सरकारके साथ हुअे हिन्दुस्तानी मजदूरों-सम्बन्धी अुनके अिकरारनामेके विरुद्ध था। अिसलिअे अुन्हें वापस भेज देनेकी अुनकी कोशिश बेकार साबित हुअी। परन्तु नेटालकी धारासभामें वहांकी सरकारने अैसा कानून पास किया कि गिरमिट पूरी करनेके बाद जो गिरमिटिया हिन्दुस्तानी अपने देश वापस न जाकर नेटालमें स्वतंत्र रहना चाहें अुन्हें हर साल पच्चीस पौंड यानी तीनसौ

पचहत्तर रुपया मुंड-कर देना होगा। यानी अेक कुटुम्बमें स्त्री-पुरुष दो हों तो दोनोंको मिलाकर ७५० रु० हरसाल मुंड-करके रूपमें सरकारको देना चाहिये। अितना भारी कर कोअी हिन्दुस्तानी नहीं दे सकता था। असलिअे हिन्दुस्तान वापस जानेके सिवा अुनके लिअे और कोअी चारा न रहता। लेकिन अैसा कानून बनानेमें अुनके लिअे भारत सरकारकी मंजूरी लेना जरूरी थी। अुस वक्तके वाअिसरायने अिस भारी करकी मंजूरी नहीं दी। अन्तमें समझौतेकी बातचीत होकर तीन पौण्ड मुण्ड-कर लगाया गया। यह कर सन् १८९४ में लगा। अिसके बुरे परिणाम और अिससे भोगनी पड़ती पीड़ा गिरमिट-मुक्त हिन्दुस्तानी मजदूरोंके लिअे असह्य थी। यह कर न दे सकनेके कारण अैसे सैकड़ों हिन्दुस्तानियोंको जेलमें रहना पड़ता था। सैकड़ों वापस गिरमिटमें चले जाते थे। सत्तर-अस्सी बरसकी कितनी ही बूढ़ियां मजदूरी करके कर देने लायक रकम पैदा न कर सकनेके कारण बुढ़ापेमें जेलमें सड़ा करती थीं और कितनी ही बहनें अैसा भयंकर कर चुकानेके पैसे जुटानेके लिअे अपनी लाज लुटवाती थीं। जब यह कर लगाया गया, तब गांधीजी डरबनमें रहते थे। अुन्होंने यह कर न लगानेकी सरकारसे बहुत बिनती की, परन्तु सब व्यर्थ गअी।

अिस प्रकार गिरमिटिया हिन्दुस्तानी गिरमिटसे छूटकर तीन पौण्डका कर देकर भी स्वतंत्र होकर रहे। अैसे स्वतंत्र हिन्दुस्तानियोंकी संख्या दिनोंदिन बढ़ती गअी। अुनमें से कुछ अीसाअी भी हो गये और अुनके बच्चे मिशन स्कूलोंमें मिलनेवाली शिक्षा लेने लगे।

६

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी — २

पिछले प्रकरणमें हमने देखा कि हिन्दुस्तानी मजदूरोंको दक्षिण अफ्रीकामें किस तरह ले जाया जाता था। अब हमें यह देखना है कि हिन्दुस्तानी व्यापारी और दूसरे लोग वहां कैसे गये। हिन्दुस्तानी मजदूरोंकी आबादी होने पर वहां हिन्दुस्तानी व्यापारियोंकी भी जरूरत जान पड़ी। शुरूमें तो हिन्दुस्तानी व्यापारियोंको निमंत्रण दिया गया। लगभग अुसी सालमें बम्बअीसे कुछ मुसलमान व्यापारी वहां गये। सूरतकी तरफके और काठियावाड़के मुसलमान व्यापारी वहां जाकर बस गये और अुन्होंने व्यापार करना शुरू किया।

अुनके पीछे धीरे धीरे दूसरे व्यापारी भी गये। जो व्यापारी शुरूमें गये, वे साहसी तो थे परन्तु अपढ़ थे। अिसलिअे अुन्हें अंग्रेजी पढ़े-लिखे बाबुओंकी जरूरत पड़ी। अिस प्रकार अंग्रेजी पढ़े-लिखे बाबू भी वहां पहुंचे। अुत्तर हिन्दुस्तानके और मद्रासकी तरफके गिरमिटिया मजदूरोंको कलकतिया और मद्रासी कहा जाता और व्यापारियों तथा बाबुओंको बम्बैया कहा जाता था। गोरे लोग अिन सबको 'कुली' मानते। गिरमिटियोंमें भी बड़ा हिस्सा मद्रासकी तरफका था। मद्रासी नामके अन्तमें 'स्वामी' आता, अिसलिअे गोरे सभी हिन्दुस्तानियोंको 'कुली' के अर्थमें 'स्वामी' के अपमानभरे संबोधनसे पुकारते थे। यह अपमान रुपया कमानेका हेतु रखनेवाले व्यापारियोंको बहुत नहीं खटकता था। परन्तु धीरे धीरे अुन्हें भी अपने स्वाभिमानका भान हुआ। सन् १८९३ में गांधीजी वहां गये, तब तक बहुतसे व्यापारी वहां जम चुके थे, अपनी जायदादें भी अुन्होंने खड़ी कर ली थीं और धीरे-धीरे गोरे व्यापारियोंसे व्यापारमें वे स्पर्धा भी करने लगे थे। अपने मिलनसार, अुद्योगी और मितव्ययी स्वभावके कारण हिन्दुस्तानी व्यापारी वहांके गरीब गोरे लोगोंमें और वहांकी जूलू जातिमें भी गोरे व्यापारियोंसे ज्यादा प्रिय बन गये। जैसा अुनका सादा किफायती जीवन, वैसा ही अुनके व्यापारमें खर्चका बोझ भी कम था। अिसलिअे हिन्दुस्तानियों और जूलू जातिके साथका व्यापार तो खास तौर पर हिन्दुस्तानी व्यापारियोंके हाथमें ही रहा।

अेक और महत्त्वकी बात यहां कह देनी चाहिये। जो हिन्दुस्तानी मजदूर गिरमिटसे मुक्त हुअे, अुन्होंने जमीनके छोटे छोटे टुकड़े लेकर फल-फूलकी बाड़ियां लगा लीं। नतीजा यह हुआ कि अब सारे नेटालमें फलोंके बगीचे ही हिन्दुस्तानियोंकी सम्पत्ति नहीं हैं, बल्कि नेटाल और ट्रान्सवालमें फलोंका व्यापार भी हिन्दुस्तानियोंके हाथमें है।

अिस तरह जैसे जैसे हिन्दुस्तानी लोग स्थिर बनकर सादे और अुद्योगी जीवनसे सम्पन्न होते गये, वैसे वैसे अुनके प्रति गोरोंका द्वेषभाव बढ़ता गया। शुरूमें हिन्दुस्तानियोंको काले, मैले, गंदे, केवल कुलीका धंधा करनेवाले और लगभग जंगली मानकर गोरोंने अुनके साथ तिरस्कार और अपमानका व्यवहार किया। परन्तु अब तो अुन्हें यह डर लगने लगा कि ये लोग अुनकी रोटीमें हिस्सा बंटायेंगे। अेक बात तो माननी पड़ेगी कि हमारा स्वच्छताका मापदंड बहुत नीचा था। गांधीजीके वहां जानेके बाद जो साधन-संपन्न हिन्दुस्तानी थे,

अुनका स्वच्छताका स्तर बदला। परन्तु यह परिवर्तन अिने-गिने साधन-संपन्न लोगोंमें ही हुआ। हमारी हमेशाकी आदतें तो बहुत बेढंगी ठहरीं। हम कपड़े साफ नहीं रखते, हमारे घरोंका आंगन या भीतरका भाग गंदा और अव्यवस्थित होता है, हमारा रसोअीघर गंदगीसे भरा होता है। पाखानेकी तो बात ही नहीं की जा सकती; वह तो नरक जैसा ही होता है। हमारी ये सब आदतें अक्षम्य हैं। हम ढोंग तो यह करते हैं कि हम धार्मिक हैं, श्रद्धालु हैं, परन्तु धर्मके मुख्य अंग स्वच्छता और पवित्रताको हमने भुला दिया है। अिसलिअे विदेशी लोग हमारी बहुत निंदा करते हैं और हम अपमानित होकर अुसे सुनते आये हैं।

हमारी दूसरी बुरी आदतें तो बहुत हैं। अुन्हें यहां लिखनेकी जरूरत नहीं। परन्तु दक्षिण अफ्रीकामें गोरी जातिकी नजरमें आअी हुअी हमारी गंदगीके बारेमें लिखनेकी जरूरत जान पड़ी, अिसलिअे लिखना पड़ा। अिसके सिवा जो भाअी गिरमिटियाके रूपमें वहां बस गअे अुनका नैतिक अध:पतन भी बहुत हो गया था। मनुष्य जब गुलाम हो जाता है, तब अुसमें कौन सा गुण रह पाता है? अेक भी नहीं। सद्‌गुण और सद्‌व्यवहारको रहनेके लिअे योग्य स्थान तो चाहिये न? स्वतंत्रता ही अेक अैसा अुचित स्थान है, जहां सब सद्‌गुणोंका समूह निवास कर सकता है। जिस हद तक सद्‌व्यवहारमें त्रुटि होती है, अुसी हद तक स्वतंत्र जीवनमें त्रुटि रहती है। हिन्दुस्तानी गिरमिटियोंमें अुनकी गुलामीकी अवस्थामें अनेक दुर्गुण घर कर बैठे थे, जिनमें व्यभिचार करना, शराब पीकर पागल हो जाना और झगड़े-फसाद करना मुख्य थे। अिसलिअे वहांकी अदालतोंमें गोरों या जूलूओंसे हिन्दुस्तानी अपराधी अधिक होते थे। लेकिन जो गिरमिटिये मजदूर न रहकर स्वतंत्र हो जाते और स्वतंत्र वातावरणमें अपनी जमीन पर स्वतंत्र किसानकी हैसियतसे काम करने लगते, अुनका सारा जीवन बदल जाता था। आजकल नेटाल या ट्रान्सवालका बड़ा हिस्सा अैसे ही स्वतंत्र हिन्दुस्तानियोंसे बसा हुआ है।

अिन हिन्दुस्तानियोंके बारेमें भी थोड़ा परिचय कर लेना चाहिये। जो गिरमिटमें गये थे, अुन्होंने तो अपने वतनमें लौटनेकी आशा छोड़ दी थी। अिस-लिअे अुनकी तो जन्मभूमि ही मानो दक्षिण अफ्रीका हो गअी। जो व्यापारके लिअे गये हैं, अुनकी नजर हिन्दुस्तानकी तरफ ही रहती है। संतोषके लायक रुपया पैदा करके देशकी ओर कब लौटें यही अुनकी दृष्टि होती है। जो मुसलमान

व्यापारी जायदादें बनाकर वहां बस गये हैं, वे अब वहां आपसमें शादी-ब्याह करने लगे हैं। परन्तु अैसा वे रुपयेकी बचत और दूसरी सुविधाओंका लाभ अुठानेके लिअे ही करते हैं। जो गिरमिटमें गये वे वहां वतन बनाकर रह गये, अिसलिअे अुनकी आबादी बढ़ी। धीरे-धीरे वे कुछ शिक्षा भी प्राप्त करने लगे। अिसलिअे वे वहींके बाशिन्दों जैसे हो गये। अुनमें से जो वहां पैदा हुअे वे 'कोलोनियल बार्न' (अुपनिवेशमें जनमे हुअे) कहलाते हैं। वे तो गोरे लोगोंकी स्पर्धा करनेकी अुम्मीद रखते हैं। पुरुषोंकी पोशाक और रहन-सहन तो लगभग गोरों जैसे ही हो गअी हैं। परन्तु अुनकी स्त्रियोंने अुन्हें आगे बढ़नेसे रोक दिया है। स्त्रियां चाहे अीसाअी बन गअी हों या हिन्दू रही हों, अुन्होंने अपनी पोशाक, रीति-रिवाज और धर्म-वृत्तिको नहीं छोड़ा है। और अिसलिअे ये कोलोनियल बार्न युवक जब घर जाते हैं और अपनी मां, बहन और पत्नीको देखते हैं तभी अुन्हें पता चलता होगा कि वे हिन्दुस्तानी नौजवान हैं। बैरिस्टर जोसेफ़ रॉयपन मिस्टर लाज़रस, मिस्टर क्रिस्टोफ़र, वीर सत्याग्रही थंभी नायडू और पी. के. नायडू वगैरा सभी कालोनियन बार्नकी गिनतीमें आ जाते हैं। अिनमें से अधिकांश लोग सरकारी अदालतोंमें, गोरे वकीलोंके यहां या व्यापारियोंके यहां मुंशी-गिरी करते हैं। कुछ भाग स्वतंत्र खेती और व्यापारमें लगा हुआ है।

७

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी – ३

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके बारेमें कुछ विस्तारसे लिखनेको जी चाहता है। गोरे व्यापारी हिन्दुस्तानियोंके विरुद्ध जो जिहाद पुकार रहे हैं, अुसका मुख्य कारण जीवनकी स्पर्धा है। हिन्दुस्तानियोंका रहन-सहन बहुत ही सादा और किफायती होनेके कारण अुनके जीवनका बोझ भी हलका होता है। छोटे-मोटे व्यापारमें दस-पन्द्रह फी सदी नफेसे अुनका काम चल जाता है। अिससे अुलटे, गोरे व्यापारियोंको किसी भी चीजकी लागत कीमत पर ३०% से कम नफा लेना पुसा नहीं सकता। अिस कारण हिन्दुस्तानी और जूलू स्त्री-पुरुष गोरे व्यापारियोंकी दुकान पर भूले-भटके भी नहीं जाते। अिसके सिवा गोरोंमें जो गरीब होते हैं वे भी हिन्दुस्तानी दुकानों पर ही खरीदारी करने जाते हैं, क्योंकि

अुनको यह अनुभव होता है कि हिन्दुस्तानी दुकान पर यूरोपीय दुकानसे हर चीज बहुत सस्ती मिलती है। जो बात व्यापारकी है वही कारीगरीकी, मजदूरी की और छोटी-छोटी रोजकी फेरियोंकी है। सुबह-सुबह सागभाजी या फल बेचने वाले गोरे गोरोंके मुहल्लेमें जाते हैं तो स्त्रियां अुन्हें नम्रतासे सूचना देती हैं कि आअिंदा सागभाजी या फल बेचने न आना। क्योंकि अेक तो अुन्हें महंगा माल लेना पड़ता है और दूसरे सुबह-सुबह बिस्तरसे अुठते ही सागभाजी या फल लेने जाते समय गोरे फेरीवालेके पास पहने हुअे कपड़े ठीक-ठाक करके मर्यादाके साथ जाना पड़ता है, जब कि हिन्दुस्तानी फेरीवालेके पास तो वे कैसी भी अव्य-वस्थित हालतमें जा सकती हैं, क्योंकि अुन्हें तो अुन लोगोंने मजदूर मान रखा है। मजदूर या घरके नौकर-चाकरोंके सामने मर्यादा न रखी जाय, तो भी काम चल सकता है। अिस कारणसे गोरे फेरीवाले बेकार हो गये और अखबारोंमें हमेशा अुनकी शिकायत रहने लगी। अिस प्रकार सभी दिशाओंमें जीवनकी स्पर्धाके कारण गोरोंमें हिन्दुस्तानियोंके लिअे अीर्ष्या पैदा हो गअी। दूसरी तरफ, हमारे स्वाभिमानरहित व्यवहारके कारण हमारे प्रति तिरस्कार भी पैदा हुआ।

और जैसा पहले कहा जा चुका है, स्त्रियोंके लिअे बहुत झगड़े होते थे। यहांसे होनेवाली मजदूरोंकी भरतीमें ही स्त्रियोंकी संख्या पुरुषोंसे बहुत कम होती थी, अिसलिअे स्त्रियोंके स्वामित्वके लिअे हर जगह झगड़े-टंटे होते ही रहते थे। वहांकी फौजदारी अदालतें और वकीलोंके दफ्तर हिन्दुस्तानी मज-दूरोंसे ही भरे रहते थे। अिस कारणसे गोरोंकी और जूलूओंकी नजरमें हिन्दु-स्तानियोंकी रीत-नीति बहुत ही नीचे दर्जेकी मानी जाने लगी। हिन्दुस्तानी गिरमिटियों या स्वतंत्र मजदूरोंका गृहस्थ-जीवन भी अधिकतर क्लेशमय था। फिनिक्समें अेक बुढ़िया बार-बार हमारे पास आया करती थी। अुसका शरीर भरा हुआ और चेहरा तेजस्वी था, बोलनेमें वह मीठी और विवेकपूर्ण थी। सहज ही जाना जा सकता था कि यह स्त्री किसी अूंचे घरानेकी होगी। बातचीतमें हमें मालूम हुआ कि वह अुच्च ब्राह्मण कुलकी थी। हिन्दुस्तानमें मजदूरोंकी भरती करनेवाले दलालोंके हाथों पड़ गअी थी और मजदूरोंके जहाजमें वहां जा पहुंची थी। अेक बार पहुंच जानेके बाद कहां जाय? अेक चमार मजदूरके साथ अुसने अुम्र गुजारी। स्वभाव, संस्कार और आचार-विचारमें निरंतर असमानताके कारण, सदा क्लेश रहनेके कारण सारा जीवन कष्टमय बन

गया। अिस तरह गिरमिटमें गये हुअे अनेक स्त्री-पुरुषोंका गृहस्थ-जीवन दु:खमय साबित हुआ। अैसे दु:खी गृहस्थोंकी सन्तानके बारेमें अच्छी आशा किस तरह रखी जा सकती है?

अिसके सिवा, बच्चोंको शिक्षा और अच्छे संस्कार मिलते तो अुनके जीवन अुन्नत हो सकते थे। लेकिन अैसी सुविधा भी दक्षिण अफ्रीकामें कहीं नहीं थी। वहां हिन्दुस्तानियोंकी आबादी लगभग डेढ़ लाख थी। फिर भी सरकारकी ओरसे अुनकी शिक्षाके लिअे कोअी व्यवस्था नहीं की गअी थी। अेक भी प्रारंभिक या माध्यमिक शाला सरकारकी ओरसे नहीं खोली गअी थी। देशसे गये हुअे किसी-किसी अंग्रेजी पढ़े-लिखेने धन्धेके लिअे शिक्षण-वर्ग खोले थे। परन्तु अुनमें तो अुन्हीं लोगोंके बच्चे जा सकते थे, जिनमें वर्गोंकी बड़ी फीस देनेकी शक्ति हो। गरीबोंके बच्चे तो जा ही नहीं सकते थे। अिन कारणोंसे हिन्दुस्तानियोंको वहां बसे लगभग सौ वर्षका अरसा बीत जाने पर भी वे शिक्षामें बहुत ज्यादा पिछड़े हुअे हैं।

धर्मके मामलेमें तो हिन्दुस्तानी बहुत ही पिछड़े हुअे थे। वहां जो मजदूर गये, वे यहांसे अपने साथ भूत-प्रेत, माता और जादू-टोनोंका संसार ले गये और सारी रात ढोल-नगाड़े बजाते रहते और ओझोंको घुमाते रहते थे। शराब पीनेकी भी कोअी हद नहीं रहती। अिस प्रकार हिन्दुस्तानी मजदूरोंका जीवन तो बिलकुल अधोगतिको पहुंचा हुआ कहा जा सकता है। अेसी हालतमें अीसाअी पादरियोंको मौका मिला और मद्रासी मजदूरोंमें अीसाअी धर्मका प्रचार हुआ। कलकत्तेकी तरफके यानी अुत्तर हिन्दुस्तानी मजदूर हिन्दू धर्म पर टिके रहे। अुनमें से शायद ही कोअी अीसाअी बना होगा। अितनेमें आर्यसमाजके कुछ अुपदेशक भी वहां जा पहुंचे और अुन्होंने अपने केन्द्र स्थापित कर दिये।

आर्थिक स्थितिमें जो वहां टिके रहे, वे जम गये। गुजराती हिन्दू वहां बहुत नहीं जमे, क्योंकि अुन्हें बार-बार लड़के-लड़कियोंकी शादी करने, बापका बारहवां करने या स्त्रीकी सीमन्त-विधि पूरी करनेके लिअे देशमें आना पड़ता था। अिससे केवल अुनकी कमाअीकी धारा ही नहीं टूट जाती थी, बल्कि अुसमें कमी भी हो जाती थी। अिसलिअे अुनमें से बहुत कम लोग वहां जायदादें बना सके। दूसरी ओर, मुसलमान व्यापारी पहले ही से गये थे और अच्छी संख्या में थे। अिसके सिवा अुनके पीछे जाति-पांति या बाड़ाबन्दीका झगड़ा भी नहीं था। अिसलिअे शादी-ब्याह भी वे लोग वहीं करने लग गये। अुन्होंने देशकी

तरफ दृष्टि कम रखी और अिसलिअे वहां बड़ी जायदादें बना लीं। अिस प्रकार हिन्दुस्तानियोंमें मुसलमान व्यापारी वहां काफी अच्छी तरह जम गये।

परन्तु हिन्दू हों या मुसलमान सभी वहां 'कुली' माने जाते थे। अुनके लिअे वहां कोअी सार्वजनिक स्थान नहीं था। अुनके करसे बनाये गये सार्वजनिक विश्राम-स्थानोंमें, बाग-बगीचोंमें, नाटक-सिनेमामें, या सभा-सम्मेलनोंमें हिन्दुस्तानियोंके लिअे कोअी जगह न थी। समुद्रतट पर जो चौपाटी बनाअी गअी, वहां कुदरती हवाका लाभ लेने जितना अधिकार भी हिन्दुस्तानियोंको न था। गोरे सेठका पानी भरने और अींधन जुटानेवाले मजदूरके रूपमें हिन्दुस्तानी भले वहां जीवन बिताये; परन्तु स्वतंत्र नागरिकके रूपमें लाभ अुठानेवाला जीवन बिताये तो वहांके गोरोंसे सहन नहीं होता था। अिसलिअे हम अछूत, अस्पृश्य, जंगली और निर्धन लोग माने गये। अैसे लोगोंकी परछाअीं पड़ने पर भी अुन्हें शर्म आती। अैसे हम हिन्दुस्तानियोंके 'लोकेशन' यानी ढेड़वाड़े भी अलग ही होते थे। अुनकी हदके बाहर हम रह नहीं सकते थे। हमारे हरिजन भाअी-बहनोंको अस्पृश्य समझनेवाले अुच्च वर्णके ब्राह्मणोंकी दशा भी वहां हरिजनोंसे गअी-बीती है।

अिस प्रकरणमें दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके सामाजिक जीवनकी रूपरेखा हमने प्रस्तुत की। अब अुनकी मुसीबतोंकी ओर नजर डालें।

८

हिन्दुस्तानियोंकी मुसीबतें

अिस प्रकरणका नाम 'हिन्दुस्तानियोंकी मुसीबतें' अिसीलिअे रखा है कि अुसे पढ़कर हम देख सकेंगे कि बस्तीमें हर जगह धुतकारे जानेवाले कुत्तों या आवारा ढोरों जैसी दशा दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियोंकी थी और अब भी कुछ हद तक वैसी ही है। आज भी वहांके गोरोंके दिमागसे हिन्दुस्तानियोंके प्रति 'डेम कुली' की भावना मिटी नहीं है। अिसका कारण भी है: हम स्वाभिमानी प्रजा न बने। हिन्दुस्तानमें अभी तक हम परतंत्र हैं, गुलाम प्रजा हैं। और जब तक हम बिलकुल निर्मल नहीं बन जाते, तब तक दक्षिण अफ्रीकामें

बसनेवाला हमारा अेक अंग कितना ही खुशहाल हो तो भी हमारी मलिनताके छींटे अुस पर जरूर अुड़ेंगे। वहांकी गोरी जनता हिन्दुस्तानकी पैंतीस करोड़ जनताकी गुलामीके खयालसे भी वहांके हमारे मुट्ठी भर भाअी-बहन कितने ही बहादुर क्यों न हों तो भी अुनको कुछ नहीं समझेगी। नेटालमें गोरी जनताके हिन्दुस्तानियोंके प्रति अभिमानपूर्ण अुद्धत व्यवहारसे और गिरमिटकी पद्धतिसे जो रंगद्वेष पैदा हुआ, अुसके सिवा और कोअी रंगभेदका कानून नहीं बनाया गया था। नेटालकी धारासभाने हिन्दुस्तानियोंको वहां घुसनेसे रोकनेके लिअे रंगभेदका कानून बनानेकी बहुत कोशिशें की थीं। परन्तु अुस समयके प्रख्यात राजनीतिज्ञ मिस्टर चेम्बरलैनकी कोशिशसे वैसा कानून न बन पाया। परन्तु अेक दूसरा कानून सन् १८९७ में बनाया गया था। अिस कानूनके अनुसार नये आनेवालोंको शिक्षाकी परीक्षा लेकर घुसने दिया जाता था। यह नहीं देखा जाता था कि आनेवाला किस जाति या रंगका आदमी है। अिस प्रकार नेटालमें जातिभेद या रंग-भेदके आधार पर कानून बनानेका सिद्धान्त अस्वीकार हुआ। परन्तु कानून द्वारा समानता स्वीकार करनेका यह सिद्धान्त ट्रान्सवालमें नहीं माना गया। ट्रान्सवालमें नअी तकलीफोंके प्रथम चिह्न दिखाअी देने लगे। वहांके लोगोंने काले लोगोंके मामलेमें रंग-भेदकी राजनीति अख्तियार की थी। अिस कुटिल राजनीतिको बोअर-युद्ध लड़नेके अेक कारणके तौर पर सामने रखकर अंग्रेज सरकार ट्रान्सवालके राज्यकर्ताओंसे लड़ी। युद्धके बाद जब ट्रान्सवाल अंग्रेजोंके हाथमें आया, तब यह आशा रखी गअी थी कि अंग्रेजोंकी हिन्दुस्तानी प्रजाके दुःखोंका बोझ अब कुछ कम होगा। परन्तु युद्धसे पहले बड़ी सरकार जिस अत्याचारी कानूनके विरुद्ध जोरदार आक्षेप करती थी, वही अत्याचारी कानून वही बड़ी सरकार हिन्दुस्तानी लोगों पर लादनेको तैयार हो गअी। युद्ध शान्त होनेके बाद ट्रान्सवालमें बड़ी सरकारने ‘पीस प्रिजर्वेशन आर्डिनेन्स’ जारी किया और अुसके जरिये हिन्दुस्तानियोंके ट्रान्सवालमें प्रवेश करने पर अंकुश लगा दिया। ट्रान्सवालमें युद्धसे पहले हिन्दुस्तानियोंकी क्या दशा थी और युद्धके बाद कैसी हो गअी; यह नीचेकी तुलनासे मालूम होगा; अुससे यह भी कल्पना आ जायगी कि बड़ी सरकारको अपनी हिन्दुस्तानी प्रजाके हितकी कितनी चिन्ता थी।

तुलना

बोअर राज्यमें	ब्रिटिश राज्यमें
१. ट्रान्सवालके निवासीके रूपमें नाम लिखवानेकी कोअी भी फीस देना अनिवार्य नहीं था।	१. ट्रान्सवालके निवासीके रूपमें नाम लिखवानेकी ३ पाअुंड फीस तय की गअी और न देने पर १० से १०० पाअुंड तकका जुर्माना और चौदह दिनसे छह महीने तककी सजा तय की गअी।
२. व्यापार करनेके सरकारी परवाने लेनेमें ट्रान्सवालके किसी भी भागमें हिन्दुस्तानियोंको कोअी अड़चन नहीं होती थी। बहुतसे अुदाहरण अैसे होते थे कि सिर्फ परवानेकी फीसके रुपये जमा करा-कर व्यापार शुरू कर दिया जाता था। अिसमें कोअी कठिनाअी होती तो ब्रिटिश सरकारके राजदूतकी तरफसे संरक्षण मिलता था।	२. जिन लोगोंको युद्धसे पहले बोअर सरकारकी ओरसे व्यापार करनेके परवाने मिले थे वे ही पहलेकी जगहों पर व्यापार कर सकते थे। व्यापारके लिअे नया परवाना, हिन्दुस्तानियोंको बसानेके लिअे जो 'लोकेशन'– विशेष मुहल्ले – खड़े किये गये थे, सिर्फ वहीं मिलता था।
३. ट्रान्सवालके किसी भी हिस्सेमें बिना किसी बाधाके रहा जा सकता था। अुसके लिअे खास अिजाजत लेनेकी जरूरत नहीं होती थी।	३. 'लोकेशन'के सिवा और किसी हिस्सेमें रहनेकी जिसने सरकारसे विशेष अिजाजत न ली हो वह वहां नहीं रह सकता था। अुसे लोकेशनमें ही रहना पड़ता था।
४. हिन्दुस्तानी अपने नामसे जायदाद नहीं खरीद सकते थे, परन्तु गोरोंके नामसे खरीद सकते थे। और अैसी करोड़ोंकी सम्पत्ति हिन्दुस्तानियोंने खरीदी है।	४. अब गोरोंके नामसे कोअी भी हिन्दुस्तानी जायदाद नहीं खरीद सकता। ब्रिटिश राज्यके बाद अेक पाअीकी भी जायदाद नहीं खरीदी गअी।

५. लोकेशनमें ९९ वर्षके पट्टे पर जमीन मिल सकती थी।	५. आज तक ९९ वर्षके पट्टे पर मिली हुअी जमीन वापस ले लेनेका प्रस्ताव पास हुआ और आयन्दा कहां कहां लोकेशन बनाये जायं और हिन्दुस्तानियोंको जमीन दी जाय या नहीं, असका कोअी निर्णय नहीं हुआ।
६. दूसरे प्रान्तके हिन्दुस्तानी ट्रान्सवालके किसी भी भागमें बिना रोकटोकके जा सकते थे।	६. लड़ाअीसे पहलेके ट्रान्सवालके सच्चे निवासीकी भी अर्जी देनेके बावजूद तीन तीन महीने तक सुनवाअी नहीं होती थी, तो फिर नअे आनेवालोंकी तो बात ही क्या?
७. वहांके रहनेवालेकी हैसियतसे पास या परवानेके बारेमें धांधली मचानेवाला अेशियाअी विभाग नहीं था।	७. नया अेशियाअी विभाग खुल गया और असके होनेसे हिन्दुस्तानी बड़ी मुसीबतमें पड़ गये और अुनके लाखों रुपये लुट गये।
८. लड़ाअीसे पहले ब्रिटिश राजदूत हिन्दुस्तानियोंकी रक्षा करता था और किसीके हक मारे नहीं जाते थे।	८. ब्रिटिश अफसरोंने जिन्हें व्यापार करनेके परवाने दिये थे, अुन्हें भी सालके आखिरमें कअी तरहसे तंग करके अिस बातके लिअे मजबूर किया जाता था कि व्यापार बन्द करके लोकेशनमें चले जायं, और अिसमें हिन्दुस्तानियोंको लाखों रुपयेका नुकसान होता था।

अूपरकी तुलनासे पता चलेगा कि बोअर-युद्धसे पहले ट्रान्सवालमें हिन्दुस्तानियोंकी जो दशा थी अुससे युद्धके बाद ब्रिटिश सरकारके हाथों अुनकी दशा कअी गुनी बिगड़ गअी। अिससे भी ब्रिटिश सरकारको संतोष नहीं हुआ। लार्ड मिलनरने सन् १८८५ के कानूनके अनुसार हरअेक हिन्दुस्तानीका नाम फिरसे दर्ज करानेका आग्रह किया। अिस सम्बन्धमें बहुत चर्चा होनेके बाद हिन्दुस्तानियोंके नेताओंके साथ यह समझौता हुआ कि हिन्दुस्तानी स्वेच्छासे नाम दर्ज करवायें। लार्ड मिलनरने यह विश्वास दिलाया कि

अेक बार स्वेच्छासे नाम दर्ज करानेके बाद दूसरी बार नाम लिखवानेकी जरूरत नहीं पड़ेगी और नाम दर्ज करानेवालेको स्थायी निवासी माना जा सकेगा। लेकिन लार्ड मिलनरका यह आश्वासन गलत निकला। ट्रान्सवाल सरकारने कुछ सुना नहीं और सन् १९०६में "ड्राफ्ट आर्डिनेन्स" पास किया। अिस कानूनके अनुसार समूची हिन्दुस्तानी जातिको स्त्री-पुरुष और बच्चोंका फिरसे नाम दर्ज कराना लाजिमी हो गया। यह नया कानून हिन्दुस्तानियोंके लिअे बमके गोलेकी तरह चौंकानेवाला साबित हुआ। हिन्दुस्तानी तो लार्ड मिलनरके आश्वासन पर निश्चिन्त बैठे थे। परन्तु अुन्होंने देखा कि वह विश्वास धूलमें मिल गया। अितना ही नहीं, पड़ोसके दूसरे प्रान्तोंकी सरकारें ट्रान्सवालकी नकल करके हिन्दुस्तानियोंका फैसला करनेको तैयार हो गअीं। दक्षिण अफ्रीकामें ऐसी रंग-द्वेषकी राजनीति चलानेमें सभी प्रान्तोंकी सरकारें सफल हो जातीं, तो हिन्दुस्तानियोंके लिअे दक्षिण अफ्रीकासे भाग जानेके सिवा कोअी अुपाय नहीं रह जाता।

ये राजनीतिज्ञोंकी चालें हुअीं! परन्तु सामान्यत. आम रास्तोंमें, रेल-गाड़ियोंमें, ट्राममें या बगीचोंमें जहां जहां गोरे-कालेका संघर्ष होता, वहीं हिन्दु-स्तानियोंको अपमान ही सहन करना पड़ता। अैसे अपमान गांधीजीने दक्षिण अफ्रीकाके अपने निवासकालमें अनेक बार सहन किये हैं। अुनकी विगत पाठकोंको गांधीजीकी 'आत्मकथा' में मिल सकती है।

९

'गांधी भाअी'

गांधीजी सन् १८९३ में नेटाल गये। अुसके बाद दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दु-स्तानियोंके सामाजिक जीवनके साथ गांधीजी गुंथे हुअे हैं। गांधीजी वहां रोजगारके लिअे गये थे। परन्तु यहां सब कुछ हमारी अिच्छानुसार थोड़े ही हो सकता है? मनुष्य अपनी प्रकृतिके बन्धनसे अैसा बंधा हुआ होता है कि अुससे मुक्त होना बहुत कठिन है। अथवा मानव तो विधाताके हाथका खिलौना है। अिसलिअे हम कह सकते हैं कि अिस पृथ्वीतलसे असत्य और हिंसाका नाश करके सत्य और अहिंसाके दिव्य शस्त्रसे संसारका अुद्धार करनेकी तैयारीके लिअे ही विधाताने गांधीजीको दक्षिण अफ्रीका भेजा था। वे वहां २१ वर्ष रहे। अिस अवधिमें अुन्होंने भारी तप किया। शरीरको विविध आसनोंमें

स्थित करके चारों ओर आग जलाकर देह-दमन करनेसे ही तपकी साधना होती हो सो बात नहीं, जीवनके हरअेक अंगका प्रतिक्षण निरीक्षण करके तथा चित्तशुद्धिके प्रयत्नमें लीन रहकर सत्यके परम ध्येयकी आराधना करते रहना और अैसा करते-करते अपने सम्पर्कमें आनेवाले अनेक पीड़ित मानव-बन्धुओंके हृदयको स्नेहयुक्त आश्वासन देकर अिस कष्टमय संसारमें अुनके घावोंको भरनेके लिअे आत्म-समर्पण करना, यह श्रेष्ठ तप और श्रेष्ठ साधना है। गांधीजीने अैसी साधना दक्षिण अफ्रीकामें आरम्भ की। दक्षिण अफ्रीकामें २१ वर्षके अुनके कार्यकालका अेक-अेक क्षण अिस तपश्चर्यामें ही व्यतीत हुआ दिखाअी देगा। अुसमें आरम्भसे लेकर अन्त तक कहीं भी क्षति नहीं आअी। किसी भी कार्यमें अपना कर्त्तापन मानकर अपने व्यक्तित्वको आगे लानेका अुनका प्रयत्न दिखाअी नहीं दिया। अुस शुद्ध जीवनकी तपश्चर्याका वर्णन करनेकी शक्ति मुझमें नहीं। और अिन प्रकरणोंका यह हेतु भी नहीं है। परन्तु दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी लड़ाअीका कुछ भी वर्णन करते समय गांधीजीको केन्द्रमें रखना ही पड़ेगा। जैसे तिलोंमें तेल ओतप्रोत रहता है और दूधमें जैसे घी ओतप्रोत होता है, वैसे ही दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके जीवनमें गांधीजी ओतप्रोत रहे हैं। गांधीजीके बिना दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके जीवनका वर्णन करना आत्मारहित जड़ शरीरका वर्णन करने जैसा होगा। अिसलिअे यह प्रकरण मुझे लिखना पड़ता है। कोअी २० वर्ष पहले पांच-सात हजार मील दूरके देशमें क्या क्या हुआ, अिसकी जानकारी हममें से बहुतोंको नहीं है। अुन्हें अिस प्रकरणसे बहुत मदद मिलेगी।

गांधीजीको दक्षिण अफ्रीकामें प्रवेश करते ही अैसे अनुभव हुअे, जिनसे अुनका जीवन बदल गया — अुनके जीवनका निर्माण हुआ। अिन सारे अनुभवोंका अुन्होंने अपनी 'आत्मकथा' में वर्णन किया है। हिन्दुस्तानी दक्षिण अफ्रीकामें रुपया कमाने गये थे। जो वहां गये थे अुनमें से अधिकतरको शायद अपनी मातृभाषाका भी ककहरा नहीं आता होगा। किसी भी तरहसे लक्ष्मी प्राप्त करनेकी अुनकी तीव्र अिच्छा थी और अिस अिच्छासे प्रेरित होकर किये गये श्रमसे अुन्होंने धन-प्राप्ति भी की, परन्तु जाति-अभिमान क्या, स्वाभिमान क्या, मान–अपमान क्या और स्वाधिकार क्या, अिसका अुन्हें कुछ भी पता नहीं था। अैसे लोगोंके समूहमें गांधीजी पहुंच गये। जिस मुकदमेके सिलसिलेमें

पोरबन्दरके निवासी और डरबनकी प्रतिष्ठित पेढ़ीके मालिक अब्दुल्ला सेठके बुलावे पर गांधीजी अेक बरसके लिअे दक्षिण अफ्रीका गये थे, अुसका निपटारा अुन्होंने अदालतमें लड़कर नहीं, परन्तु समाधानकी वृत्तिसे, दोनों पक्षोंके हृदयोंमें अेक-दूसरेके लिअे प्रेम पैदा करके कराया। शान्ति और प्रेमके दूतका दक्षिण अफ्रीकामें हुआ यह पहला कार्य बहुत अप्रसिद्ध और सामान्य होने पर भी दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके जीवनरूपी महलकी पहली अींट जैसा था। यह अींट रखनेके बाद वे फौरन स्वदेश लौट आनेको तैयार हो गये। पहले ही अुपलब्ध जहाजके लिअे वे तैयारी करने लगे। अितनेमें अुन्होंने अखबारोंमें पढ़ा कि नेटालके हिन्दुस्तानियोंका मताधिकार वापस ले लेनेका प्रयत्न नेटाल सरकार कर रही है। यह बात अुन्हें पसन्द नहीं आअी। मताधिकार जैसा कीमती अधिकार कैसे छोड़ा जाय? परन्तु वहांके हिन्दुस्तानी सेठ तो जानते ही नहीं थे कि मताधिकार क्या चीज है। अुनका कोअी गोरा वकील या अन्य परिचित गोरा अेक दिन खुशामद करके अुन्हें दफ्तरमें ले जाता है और अुनके मतके लिअे हस्ताक्षर करा लेता है, अितना ही ये सेठ लोग जानते थे। गांधीजीने सब व्यापारियोंको और अुनके बाबुओंको अिकट्ठा किया और अुन्हें मताधिकारका अर्थ और महत्त्व समझाया। परन्तु जाता हुआ मताधिकार वापस कैसे लौटाया जाय? वह तो जायगा ही। फिर भी हिन्दुस्तानियोंके प्रथम प्रयत्नके रूपमें अुस समय गांधीजीने हिन्दुस्तानियोंका मताधिकार रद करनेवाले कानूनका विरोध करके ही संतोष माना और अेक अर्जी तैयार करके सैकड़ों हिन्दुस्तानियोंके हस्ताक्षर अुस पर लिये और अर्जी सरकारके पास भिजवा दी। गांधीजीके अिस प्रथम कार्यसे डरबनके और खास तौर पर नेटालके हिन्दुस्तानियोंका ध्यान अुनकी ओर गया। यह अर्जी भेजनेके लिअे अुन्होंने हिन्दुस्तान लौटनेकी तैयारी छोड़ दी। अुनके अिस सरल स्वभाव और सेवाभावसे प्रत्येक हिन्दुस्तानीका ध्यान अुनकी ओर खिंचा। जो अुनसे मिला, जो अुनके पास आया, जिसने अुनसे बातें कीं, जो अुन्हें अपने दुःख सुनाने आया, वही अुनका बन गया। सब गांधीके पीछे पागल हो गये। अिसलिअे जो अुन्हें जानते थे वे अुन्हें गांधी साहब या बैरिस्टर साहबके नामसे नहीं, बल्कि प्यारे 'गांधी भाअी' के नामसे पहचानते और पुकारते। आजकलके अनेक विशेषणोंसे अलंकृत महात्माजीके संबोधनमें जो मीठी मोहिनी होगी, अुससे भी शायद अधिक मिठास अुस समयके 'गांधी भाअी' के सम्बोधनमें होगी।

१०

नेटाल अिंडियन कांग्रेस

दक्षिण अफ्रीकामें रहनेके बाद गांधीजीने वकालत शुरू की। वकील लोग पेटके लिअे वकालत करते हैं। गांधीजीने पेटके लिअे वकालत नहीं की। अुन्होंने जनताकी वकालत करना शुरू किया। अदालतमें वकीलकी हैसियतसे तो वे कभी-कभी ही खड़े होते थे। अुन्होंने अदालतोंमें वकालत करके जितने मामले निपटाये अुनसे कअी गुने ज्यादा मामले घर बैठे बैठे निपटाये हैं। वकीलके रूपमें अपना कर्तव्य अुन्होंने संसारमें शान्ति फैलाना माना। वकीलोंने क्लेश और झगड़े बढ़ाना ही अपना धन्धा माना है। और वे यही करते हैं। फिर भी ढोंग अैसा करते हैं मानो शान्तिके दूत हों! गांधीजीको प्रचलित वकालतके धन्धेके प्रति बड़ी अरुचि थी और अैसी वकालत अुन्होंने किसी दिन नहीं की। 'सत्यकी शोध' अुनका जीवन-सूत्र ही था। अिस सूत्रको वे वकालत पर भी लागू करते थे। अपने मुवक्किलका मामला सच्चा होता, तो ही अदालतमें जाकर वे अुसकी वकालत करते थे। परन्तु अैसे मामलोंमें भी अदालतमें जानेसे पहले वे घर बैठे या पंचके जरिये दोनों पक्षोंमें समझौता करानेकी खूब कोशिश करते। अैसा न होता तभी अदालतमें मामला लेकर खड़े होते और अुसमें अुनके मुवक्किलके लाभमें ही परिणाम आता। अिससे आम तौर पर अुनके बारेमें यह माना जाता था कि जो मामला गांधीजी हाथमें लेते हैं वह सच्चा ही होता है। कुछ अुदाहरण अैसे भी हो गये कि मामलेके अधबीचमें या आखिरमें गांधीजीको विश्वास हो गया कि अुनके मुवक्किलने अुन्हें झूठी बातें कहकर धोखा दिया है और अुसका पक्ष गलत है, अिसलिअे अुन्होंने बीचमें ही अैसे मामलोंको छोड़ दिया।

परन्तु अैसी शुद्ध और प्रामाणिक वकालत करनेके प्रसंग अुन्हें अधिक मिलें अिससे पहले ही हिन्दुस्तानियोंकी सेवाका क्षेत्र अुनको नजर आ गया। और वह दिन दिन विशाल होता गया। अिसलिअे अुस कामको करनेके लिअे अेक जिम्मेदार संस्था खड़ी करनेकी जरूरत अुन्हें जान पड़ी। सन् १८९४ के मअी महीनेकी २२ तारीखको अुन्होंने नेटाल अिंडियन कांग्रेसकी स्थापना

की। डरबनमें नेटालके मुख्य माने जानेवाले व्यापारियों और दूसरे लोगोंको अुन्होंने बुलाया और बाकायदा नियम आदि बनाकर अिस संस्थाकी स्थापना की। डरबनके सेठ दाअूद मोहम्मदको अुसका अध्यक्ष बनाया गया और गांधीजी अुसके मंत्री बने। हर साल तीन पाअुंडकी फीस रखी गअी। अिस संस्थाने पहला ही काम जो हाथमें लिया, वह था स्वतंत्र हिन्दुस्तानी मज़दूरों पर लगनेवाले तीन पाअुंडके नये करका विरोध करके अुसे रद करानेकी अर्जी देना। यह काम नेटाल कांग्रेसने बहुत ही सफल ढंगसे पूरा किया। अिससे कांग्रेस खूब लोकप्रिय हो गअी, अुसने हिन्दुस्तानी जनताकी सेवा भी बहुत की; परन्तु अुसे चलानेमें आर्थिक कठिनाअियां आने लगीं। जो मामला कौम सम्बन्धी होता यानी सरकारके विरुद्ध किसी हिन्दुस्तानीका मामला होता और जिसके फैसलेसे सारे हिन्दुस्तानियोंके हित पर भला या बुरा असर पड़नेकी संभावना होती अैसे हर मामलेकी फीस गांधीजी कम से कम लेते और वह सीधी कांग्रेसके कोषमें जाती। बहुतसे मुवक्किलोंकी फीस सिर्फ कांग्रेसके सदस्य बनने लायक ही होती थी। अिस तरह कांग्रेसकी आर्थिक स्थितिको गांधीजी संभालते थे। अुसके वार्षिक सदस्य बनानेके लिअे तो अुन्हें लगभग सारे नेटालमें सफर करना पड़ा। अिस प्रकार नेटाल अिंडियन कांग्रेसके मुख्य संचालक गांधीजी ही थे।

सार्वजनिक संस्था चलानेमें अुसकी आर्थिक व्यवस्थाकी गांधीजी बहुत ही चिन्ता रखते थे। मुझे याद है कि साबरमती आश्रममें अपनी अनेक प्रवृत्तियों और समस्त देशके असहयोग आन्दोलनके सतत चलनेवाले काममें भी आश्रमके बही-खाते अुन्होंने बहुत ही ध्यानपूर्वक देखे हैं और बही-खातेमें जमा-खर्च करनेके तरीकोंमें भूल हो तो अुसे भी सुधरवाया है। आश्रममें जो कुछ भेंट आती है अुसका अुन्हें मनचाहा अुपयोग करनेका अधिकार है। मगर नेटाल अिंडियन कांग्रेसके बारेमें यह नहीं कहा जा सकता। अेक बार अैसा हुआ कि अुनके जान-पहचानके अेक भाअी आर्थिक संकटमें फंस गये। अुन्होंने चारों तरफ नजर दौड़ाअी। गांधीजीके सिवा कोअी अैसा आदमी अुन्हें दिखाअी न दिया जो तुरन्त अुनकी मदद कर सके। गांधीजीके पास निजी रकम नहीं थी। अुस भाअीसे अिनकार करते तो अुसे निराशा होती और अुसके मनमें गांधीजीके बारेमें कुछका कुछ खयाल हो सकता था! परन्तु क्या हो सकता था? आखिर गांधीजीको सूझा कि कांग्रेसका रुपया बैंकमें अुनके नामसे जमा

है। दो-चार दिनमें वापस दे जानेकी शर्त पर कांग्रेसके रुपयेमें से कोअी तीन सौ पौंडका चैक गांधीजीने अुस भाअीको लिख दिया। यह चैक अुन्होंने लिख तो जरूर दिया, परन्तु अुन्हें तुरन्त खयाल आया कि अुस आदमी पर अुपकार करनेके खातिर कांग्रेसका रुपया देनेका मुझे क्या अधिकार है? क्षणभर बाद ही कांग्रेसको पैसेकी जरूरत पड़ी तो क्या होगा? अुन्हें लगा कि अुन्होंने कांग्रेसके रुपयेका दुरुपयोग करके महापाप किया है। तीन सौ पौंडकी रकम कोअी छोटी नहीं थी। अिसी विचारमें शाम हो गअी। खाना भी नहीं भाया। सोते वक्त नींद नहीं आअी। "मैंने अैसा पाप क्यों किया? अपने प्रेमके खातिर अुस भाअीको कांग्रेसका रुपया देनेका मुझे क्या अधिकार था? वह रुपया तुरन्त न मिला और मिलनेसे पहले अैसी कंगाल हालतमें मेरी अचानक मृत्यु हो गअी, तो कांग्रेसका कर्ज मैं किस तरह चुका सकूंगा?" अिस तरहके विचार जैसे जैसे अुन्हें आते गये, वैसे वैसे अुनके हृदयमें अनन्त वेदना होती गयी। वे अीश्वरसे प्रार्थना करने लगे और हृदयमें अुन्होंने दृढ़ संकल्प किया कि, "भविष्यमें सार्वजनिक संस्थाकी रकमका अुपयोग मैं निजी कारणसे कभी नहीं करूंगा।" अिस प्रतिज्ञासे हृदयकी वेदना तो कम हो गअी, परन्तु वह रकम किसी भी तरह जल्दी मिलनी चाहिये यही विचार अुनके मनमें घुलता रहा। दूसरे दिन सवेरे भी अिसीका ध्यान बना रहा। नहा-धोकर वे नौ बजे दफ्तर गये। वहां जाते ही मुंशीने अुसी समय आया हुआ तार अुनके हाथमें दिया। नेटाल और ट्रान्सवालके बीचकी सरहद पर स्थित अेक गांवकी अदालतमें गैरकानूनी ढंगसे सीमाके भीतर घुसनेके मामलेमें ९० हिन्दुस्तानियों पर वारंट निकाला गया था और सबको अदालतमें लाया गया था। वहां गांधीजी खुद पहली गाड़ीसे जा पहुंचे। ९० भारतीयोंके सम्बन्धमें सारी हकीकतें पूछ कर वे अच्छी तरह परिचित हो गये। बादमें अुन्होंने कहा कि मैं मामला तो हाथमें लेता हूं, परन्तु शुरूमें हरअेकको अपनी फीसके तीन पौंड दे देने चाहिये; अिसके सिवा हरअेकको नेटाल कांग्रेसका सदस्य बन जाना चाहिये। सबने तुरन्त अुनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। वहीं रुपया ले लिया गया और सदस्यताकी रसीद दे दी गअी। सारा रुपया कांग्रेसके नामसे अपनी डायरीमें जमा कर लिया और बादमें अुनके मामले हाथमें लिये। अदालतमें मामले चले। सभी आदमी बाकायदा नेटालके बाशिन्दे थे। परन्तु अपढ़ लोगोंको अपनी बात समझाना नहीं आता था; अपनी बातको ठीक ढंगसे अदालतमें पेश करना वे जानते नहीं थे और कानूनका भी अुन्हें भान नहीं था। अिसलिअे सत्ताधारियोंको

वह गंभीर अपराध जैसा मालूम हुआ। परन्तु गांधीजीने वहां जानेके बाद थोड़े ही घंटोंमें अदालतको अुनके निर्दोष होनेका विश्वास करा दिया और सबको छुड़वा दिया।

नेटाल अिंडियन कांग्रेसने नेटालके हिन्दुस्तानियोंके सम्बन्धमें बहुत काम किया और वह नेटालके हिन्दुस्तानियोंकी अधिकारपूर्ण संस्था बन गअी। परन्तु बादमें सत्याग्रहकी लड़ाअीमें गांधीजीको ट्रान्सवालमें ही रहना पड़ा। अिसलिअे अपनी अनुपस्थितिके कारण कांग्रेसका मंत्रिपद अुन्हें छोड़ना पड़ा। अुनकी जगह पर अेक भाअी आये और अुन भाअीकी लापरवाहीसे संस्थामें अव्यवस्था अुत्पन्न हो गअी।

अन्तमें जब नेटालमें सत्याग्रह शुरू हुआ, तब अुस मृतप्राय कांग्रेस संस्थाके जरिये काम नहीं हो सकता था। क्योंकि अुस समय जनताका अुस संस्थामें विश्वास नहीं रह गया था। अिसलिअे गांधीजीने नेटाल अिंडियन अेसोसिअेशन नामकी दूसरी संस्था स्थापित की और आखिरी लड़ाअीका सारा काम अुसके जरिये किया।

११

सत्याग्रहका आरम्भ

सन् १८९४ से १९०६ तक दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके जीवनमें कोअी खास अुथल-पुथल नहीं हुअी। अुनके सामान्य दुःखोंकी कहानी तो रोजकी हो गअी थी। सामाजिक जीवनमें हिन्दुस्तानियोंको होनेवाले कष्टोंकी कथा जहां तहांसे सुनाअी देती थी और गांधीजी जहरके ये घूंट धीरजसे पिया करते थे। मौका पड़ने पर जनताकी सेवा करनेको तैयार रहते थे। जोहानिसबर्गमें प्लेगकी अुत्पत्ति हिन्दुस्तानी लोकेशनमें हुअी, यह बड़ी चौंकानेवाली बात थी। गोरी जाति और गोरी सरकार अिस छूतके रोगसे बहुत ही डरती थी। परन्तु गांधीजीने समय-सूचकतासे काम लेकर दो-चार चुने हुअे आदमियोंको अेकत्र किया और प्राणोंको खतरेमें डालकर तुरन्त अुपाय किये। अिससे प्लेग रुक गया और भविष्यके भारी खतरेसे हिन्दुस्तानी जनता और दूसरे लोग भी बच गये। फिर बोअर-युद्ध आरम्भ हो गया। जिस सरकारकी रक्षामें हम रहते हैं और जिसके राज्य और सत्ताका लाभ अुठाते हैं या

भविष्यमें अुठानेकी अिच्छा रखते हैं, अुस सत्ताके संकटके समय यथाशक्ति अुसकी मदद करना हमारा फर्ज है — अिस खयालसे बोअर-युद्धके मौके पर गांधीजीने घायल सिपाहियोंकी सेवा करनेवाली अेक टोली बनाअी। वह युद्धके क्षेत्रमें खूब घूमी और बंदूकोंकी गोलियों और तोपोंके गोलोंके नीचे रहकर अुसने अनेक घायल सिपाहियोंको अुठा-अुठा कर अुनकी सेवा-शुश्रूषा की। अिसके सिवा नेटालमें जूलू-विद्रोहके अवसर पर भी यही सेवाका काम करके अुन्होंने सैकड़ों घायल जूलुओंकी शुश्रूषा की। अिस समय गांधीजीने अपने जीवनके प्रयोग भी बहुत किये। धंधेमें या युद्धके क्षेत्रमें जहां जाते वहां चाहे जैसी विकट परिस्थितिमें भी अुन्होंने आत्म-निरीक्षणका कार्य सदा जारी रखा और अुसके परिणाम-स्वरूप अनेक प्रयोग किये। नेटालमें फिनिक्स आश्रम स्थापित किया। वहां अिन्टरनेशनल प्रिंटिंग प्रेस नामका छापाखाना खोलकर 'अिंडियन ओपीनियन' पत्र प्रकाशित करने लगे। वहां रहनेवाले भाअी जीवनमें अमुक सिद्धान्तोंका पालन करें और शरीर-श्रम करके सादा और अूंचा जीवन बितायें, अिस हेतुसे कायम हुअी अिस संस्थाका दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके राजनीतिक जीवनमें और गांधीजीके जीवनको बनानेमें बड़ा हाथ रहा है। अुसके बारेमें कुछेक बातोंका हम आगे चलकर विचार करेंगे, अिसलिअे अभी तो अितना ही देखेंगे कि सत्याग्रहकी लड़ाअीका श्रीगणेश किस तरह हुआ।

लॉर्ड मिलनरके दिये हुअे आश्वासनको खत्म करके सन् १८८५ का डच राज्यके समयका पुराना कानून ताजा करके ट्रान्सवालकी धारासभाने १२ सितम्बर, १९०६ को 'अेशियाटिक अमेंडमेंट अेक्ट' पास किया। अुसे हिन्दुस्तानियोंने खूनी कानूनका नाम दिया। अिस खूनी कानूनके पास होनेसे हिन्दुस्तानियोंके दिल अुबल पड़े। अुसकी कलमोंका सार नीचे लिखे अनुसार है:

(१) ट्रान्सवालमें रहनेका अधिकार रखनेवाले सारे हिन्दुस्तानी पुरुष, स्त्रियां और आठ बरससे अूपरके लड़के और लड़कियां अेशियाअी दफ्तरमें अपना नाम लिखाकर परवाने लें।

(२) ये परवाने लेते समय पुराना परवाना अधिकारीको सौंप दें।

(३) नाम लिखनेकी दरखास्तमें नाम, पता, जाति, अुम्र वगैरा दिये जायें।

(४) नाम लिखनेवाला अधिकारी प्रार्थीके शरीर परकी मुख्य मुख्य निशानियां लिख ले।

(५) प्रार्थीकी सब अंगुलियों और अंगूठेकी निशानी ली जाय।

(६) निश्चित अवधिके भीतर जो हिन्दुस्तानी स्त्री या पुरुष अिस तरहकी अर्जी न दे, अुसका ट्रान्सवालमें रहनेका अधिकार रद माना जायगा।

(७) अर्जी न देना बाकायदा जुर्म माना जायगा। अुसके लिअे जेल हो सकती है, जुर्माना हो सकता है और अदालतके विवेकके अनुसार देशनिकाला भी दिया जा सकता है।

(८) बच्चोंकी अर्जी मां-बापको देनी चाहिये; और अंगुलियोंकी निशानियां लेनेके लिअे बच्चोंको अफसरोंके सामने पेश करनेकी जिम्मेदारी भी मां-बापकी मानी जायगी। सोलह सालकी अुम्र होनेके बाद बच्चे अपने परवाने पक्के करा लें।

(९) जो परवाने प्रार्थियोंको दिये जायें वे किसी भी पुलिस अफसरके सामने जब और जहां मांगे जायें तब और वहां जरूर पेश किये जायें। यह परवाना पेश न करना जुर्म माना जायगा। अुसके लिअे अदालत कैद या जुर्मानेकी सजा दे सकती है।

(१०) अिस परवानेकी मांग रास्ते चलते मुसाफिरसे भी की जा सकती है।

(११) परवानेकी जांचके लिअे अधिकारी घरमें भी प्रवेश कर सकता है।

(१२) ट्रान्सवालके बाहरसे आनेवाले हिन्दुस्तानी स्त्री-पुरुषोंको जांच करनेवाले अधिकारीके सामने अपने परवाने पेश करने ही चाहिये।

(१३) कोअी हिन्दुस्तानी अदालतमें किसी कामसे जाय या महसूलके दफ्तरमें व्यापार या साअिकल रखनेकी परवानगी लेने जाय, तो वहां भी अधिकारी परवाना मांग सकता है। यानी किसी भी सरकारी दफ्तरमें अुस दफ्तरसे सम्बन्ध रखनेवाले किसी कामसे जाय, तो अधिकारी हिन्दुस्तानीकी बात सुननेसे पहले अुससे परवाना मांग सकता है।

(१४) यह परवाना पेश न करना या अुस बारेमें जो भी हकीकत अधिकारी मांगे अुसे बतानेसे अिनकार करना भी गुनाह है और अदालत अुसके लिअे कैदकी या जुर्मानेकी सजा दे सकती है।

यह कानून पास होनेके पहले ही हिन्दुस्तानियोंमें बड़ी खलबली मच गअी। हिन्दुस्तानियोंके नेताओंने सरकारके बड़े अधिकारियोंसे अनेक मुलाकातें कीं,

तब कहीं स्त्रियों और बच्चोंको अिस कानूनके अनुसार नाम लिखवानेसे मुक्त किया गया। अिस कानूनके पास होनेकी बात जानकर हिन्दुस्तानियोंकी भावनाअें अुत्तेजित हो गअीं। अिस खूनी कानूनके कारण अत्याचारपूर्ण राजनीति ग्रहण की जा सकती थी। लॉर्ड मिलनरके दिये हुअे वचन बिलकुल खतम हो जाते थे। हिन्दुस्तानियोंको धीरे-धीरे ट्रान्सवालसे खदेड़ देना ही अिस कानूनकी मंशा थी।

जिस दिन यह कानून पास हुआ, अुसी दिन जोहानिसबर्गमें अेक विराट सभा हुअी। आठ हजार हिन्दुस्तानियोंमें से तीन हजार अुसमें अिकट्ठे हुअे। गांधीजीने 'अिंडियन ओपीनियन' द्वारा लोगोंको यह जानकारी करा दी थी कि अिस कानूनका परिणाम हिन्दुस्तानियों पर क्या होगा। कानून पास हो जाय तो क्या किया जाय? अिसका अुपाय गांधीजीने अैसा ढूंढ़ निकाला था, जो ट्रान्सवाल सरकारके खयालमें नहीं आ सकता था। सरकारने तो यह मान लिया था कि सब लोग चिल्लाते रहेंगे, विरोध किया करेंगे और थोड़े दिन बाद खामोश हो जायंगे। हिन्दुस्तानी सशस्त्र विद्रोह तो कर ही नहीं सकते थे। अुनमें अिसकी ताकत ही कहां थी? वैसे सरकार तो यही चाहती होगी कि ये लोग हिंसात्मक विद्रोह करें। अैसा होने पर अुसे हिन्दुस्तानियोंको घड़ीभरमें ट्रान्सवालसे बाहर निकाल देनेका कारण मिल जाता। परन्तु सरकारके मुख्य अधिकारियोंको अिस बातका जरा भी खयाल नहीं हो सकता था कि गांधीजी हिन्दुस्तानियोंको हिंसात्मक विद्रोहके बजाय अहिंसात्मक सत्याग्रहका हथियार काममें लेना सिखायेंगे। अुस दिनकी सभामें लोगोंमें बड़ा अुत्साह फैला। जिन तीन हजार हिन्दुस्तानी मर्दोंने वहां निश्चय किया, अुनमें से अेक भी नामर्द नहीं निकला। 'खूनी कानूनका अमल होना न होना हमारे हाथमें है। जब तक यह कानून रद न हो तब तक अुसे न मानकर हम जेल जानेको तैयार रहें'—अैसा प्रस्ताव जब पेश हुआ और सभामें सबसे पूछा गया, तो अेकमतसे गगनभेदी आवाज आअी, "हमें यह प्रस्ताव मंजूर है।" गांधीजीका हृदय बांसों अुछलने लगा, परन्तु साथ ही नअी जिम्मेदारीके भानसे गंभीर भी बन गया।

अिस खयालसे कि अब भी लोगोंको लड़ना न पड़े हिन्दुस्तानियोंका अेक शिष्ट-मंडल अिंग्लैण्ड गया। अुसे अैसा प्रयत्न करना था जिससे खूनी कानूनको सम्राट्की स्वीकृति न मिले। गांधीजी अुसके मुखिया थे। वहां जाकर जो प्रयत्न किया गया, अुसका परिणाम यह निकला कि कानून पर सम्राट्के हस्ताक्षर न

हुअे और शिष्ट-मंडलकी मुराद पुरी हुअी। शिष्ट-मंडलने अेक और भी महत्त्वका कार्य किया। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंको मदद करनेवाली अेक कमेटी स्थापित की। अुसमें मद्रासके भूतपूर्व गवर्नर लॉर्ड अेम्पथील अध्यक्ष और सर मंचरजी भावनगरी कार्यसमितिके अध्यक्ष मुकर्रर हुअे। अिस कमेटीने ठेठ तक दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी सुन्दर सेवा की। शिष्ट-मंडल वापस आ गया और थोड़े समयके लिअे अैसा लगा कि अब शान्ति हो गअी। परन्तु वह शान्ति थोड़े ही समयकी थी। सम्राट्ने ट्रान्सवालके अिस कानूनको मंजूरी नहीं दी, अिसे बड़ी सरकार द्वारा स्वराज्य-भोगी अुपनिवेशके भीतरी प्रबन्धमें हस्तक्षेप करनेके बराबर माना गया। अिससे ट्रान्सवालके गोरे लोगोंका रोष और भी तीव्र और दृढ़ हो गया। दूसरे ही वर्ष जब कौंसिलका नया विधान बना और पहली कौंसिल बैठी, तब वही खूनी कानून अुसने दुबारा २२ मार्च, १९०७ को अेकमतसे पास कर दिया। हिन्दुस्तानियोंकी राय और भावनाका अुसने जरा भी खयाल नहीं किया। अिसकी अुसे जरूरत भी नहीं मालूम हुअी। मअी महीनेकी २ तारीखको सम्राट्को यह खूनी कानून मंजूर करना पड़ा।

ट्रान्सवालकी सरकारके अिस कदमके कारण अब लड़ाअी करनेके सिवा हिन्दुस्तानियोंके लिअे दूसरा कोअी चारा न रह गया। फिर भी गांधीजीने सोचा कि झगड़ा न हो तो अच्छा। वे फिरसे सुलहके प्रयत्न करने लगे। अुन्होंने यह अिच्छा ही प्रगट नहीं की कि कानून रद हो जायगा तो सरकारी कार्रवाअीकी सुगमताके लिअे हिन्दुस्तानी स्वेच्छासे नाम लिखा लेंगे, बल्कि यह भी बताया कि जब तक यह काम पूरा न हो जायगा तब तक सरकारको जरूरी मदद भी देंगे। परन्तु सत्ताके नशेमें चूर और रंगद्वेषसे अंधी बनी हुअी सरकारको यह बात पसन्द नहीं आयी। अुसे तो ट्रान्सवालसे हिन्दुस्तानियोंकी हस्ती ही मिटा देनी थी। अैसा कभी न होने देनेका हिन्दुस्तानियोंका अटल निश्चय था, अिसलिअे अन्तमें अुन्हें सत्याग्रहकी लड़ाअी शुरू करनी पड़ी।

सन् १९०७ के जुलाअी मासमें अुस कानूनके अनुसार हिन्दुस्तानी लोगोंको बाकायदा सूचना दी गअी कि प्रत्येक हिन्दुस्तानीको अपना नाम लिखवा देना चाहिये। अिस कामके लिअे सरकारी अधिकारी ट्रान्सवाल प्रान्तमें दौरा करने लगे, परन्तु अुनकी कुछ चली नहीं। अिसलिअे कानूनके अमलकी जो मियाद मुकर्रर की गअी थी वह बढ़ाअी गअी और सरकारने बड़े रोबसे जाहिर किया कि कानूनको माननेका जो विशेष अवसर हिन्दुस्तानियोंको दिया

जाता है अुसके अनुसार दी गअी मियादमें वे कानूनके अधीन नहीं होंगे तो अुन्हें बरबाद होना पड़ेगा। अिस प्रकार सरकारने हाथ-पैर तो बहुत पटके, परन्तु प्रतिज्ञा लेनेवाले हिन्दुस्तानियोंमें से ९५ फीसदी अुस पर अटल रहे और ८ हजार हिन्दुस्तानियोंमें से सिर्फ ४ सौने नाम लिखवाये। सरकारी हुक्मकी तामील न हो, अिसे सत्ता कैसे सहन कर सकती थी? अुसने अपना हथियार अुठाया। कुछ हिन्दुस्तानी नेताओंको देश छोड़कर चले जानेको कहा गया और अैसा न करने पर कैद करनेकी भी धमकी दी गअी। परन्तु नेता कोअी अिस तरह चले जानेवाले नहीं थे। अंतमें सरकारने अुन्हें पकड़ा। थोड़े ही दिनमें धर-पकड़ बढ़ने लगी। गांधीजी तो पहले ही पकड़ लिये गये थे और १० जनवरी, १९०८ को अुन्हें दो महीनेकी सजा दे दी गअी थी। अिस प्रकार सैकड़ों आदमियोंको जेलमें बन्द कर दिया गया। सरकारको आश्चर्य हुआ। अुसने जेलमें लोगोंको भेजा तो था कानूनका पालन करवानेके खातिर, परन्तु कानूनका पालन बिलकुल नहीं हुआ। वह सरकारकी कानूनी पुस्तकोंमें ही रह गया। अिसलिअे सरकार पीछे हटी। अिस समय सरकारकी बागडोर जनरल स्मट्सके हाथमें थी। अुन्होंने सुलहकी कोशिश की। मिस्टर कार्टराअिट नामक अेक मशहूर पत्रकारके जरिये यह समझौता हुआ। ये महाशय जेलमें गांधीजीसे मिले। अंतमें अैसा समझौता हुआ कि हिन्दुस्तानी लोग स्वेच्छासे नाम लिखवायें; तीन महीनेके भीतर हर हिन्दुस्तानी नाम लिखवा दे, तो बादमें खूनी कानून रद कर दिया जायगा। अिस समझौते पर दोनों पक्षोंके हस्ताक्षर हुअे और जेलके दरवाजे बीचमें ही खुल गये। २० दिन भी पूरे नहीं हुअे थे कि ३० जनवरीको तमाम सत्याग्रही छोड़ दिये गये और कानून रद करनेका वचन दिया गया। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंको सत्याग्रहके चमत्कारका यह पहला दर्शन हुआ।

१२

खूनकी पट्टीका जोड़

कानूनका पालन करनेकी और अुसके बदलेमें होनेवाले दुःखको अुठानेकी प्रतिज्ञाका हिन्दुस्तानियोंने अुत्तम रूपमें पालन किया और अुसके प्रतापसे सरकारको हिन्दुस्तानियोंके साथ समझौता करना पड़ा। हिन्दुस्तानियोंकी शुरूसे जो मांग थी वह मंजूर हुअी। वह मांग यह थी कि सब स्वेच्छासे अपने नाम लिखवायें और सरकार खूनी कानून रद कर दे। परन्तु अब अिस तरह स्वेच्छासे नाम लिखवानेमें कुछ हिन्दुस्तानियोंको दोष दिखाअी दिया। कुछ लोगोंकी समझमें नेताओंकी यह बात नहीं आयी। जबसे समझौता हुआ तबसे कौमके अेक भागमें विरोधकी आवाज सुनाअी देने लगी। फिर भी समझौतेके अनुसार नाम लिखवाना शुरू हो गया। सरकारने अेक अिमिग्रेशन कानून पास किया था। अिस अिमिग्रेशन कानूनमें सरकारने रंगभेद दाखिल करके मि० चेम्बरलेनकी रंगभेद-रहित राजनीति पर पानी फेर दिया। यह अिमिग्रेशन कानून और अेशियाटिक अमेण्डमेण्ट अेक्ट, अिन दो कानूनोंके अमलसे ट्रान्सवालमें हिन्दुस्तानियोंकी स्थिति बहुत खराब हो गअी थी। और अुनके अमलसे कितना ही शिक्षित हिन्दुस्तानी भी ट्रान्सवालमें पैर नहीं रख सकता था। परन्तु नेताओंको यह विश्वास था कि यदि लोग समझौतेकी शर्तोंका पालन करेंगे और तीन महीनेमें सभी नाम लिखवा लेंगे, तो सरकार वे कानून रद कर देगी और अिससे सरकारी राजनीतिमें रंगभेद बिलकुल नहीं रहेगा। अिससे नाम लिखवानेका वातावरण तेजीसे पैदा हो गया। अितने ही में अेक चौंकानेवाली घटना हो गअी।

कुछ भाअी 'स्वेच्छासे' और 'जबरदस्तीसे' का भेद नहीं समझे। वे यह समझे कि स्वेच्छासे जहर खायें या जबरन् खायें, प्राण तो जायंगे ही। परन्तु अिस सीधी-सादी समझमें कुछ विघ्न-संतोषी लोगोंने विषका संचार किया। अुन्होंने यह बात फैलाअी कि गांधीजीने सरकारकी यह बात स्वीकार करके हिन्दुस्तानियोंको धोखा दिया है। पहले तो कुरान शरीफ हाथमें लेकर नाम न लिखवानेकी प्रतिज्ञा कराना और बादमें अुस

प्रतिज्ञाको तोड़कर 'स्वेच्छा' के नाम पर नाम लिखवानेको कहना अुन्हें बेहूदा लगा। अैसी गलतफहमीसे कुछ भोलेभाले पठान भाअी गुस्सा हो गये। कुछ द्वेषी लोगोंने अिन पठानोंको भड़काकर अिसमें वृद्धि कर दी। अैसे वातावरणसे जोहानिसबर्गके हिन्दुस्तानियोंमें अैसी बातें होने लगीं कि संभव है कुछ पठान गांधीजी पर हमला करें। यह बात गांधीजी और अुनके साथियोंके कान पर भी आअी। गांधीजीके अेक जर्मन मित्र मि० कैलन-बैक अुनके साथ रहते थे और जीवनके अनेक प्रयोगोंमें अुनका साथ देते थे। अुन्हें यह बात मालूम हुअी। अुन्होंने सोचा कि अैसा कोअी हमला न होने दिया जाय, और हो तो गांधीजीको चोट न पहुंचने देना अुनका फर्ज है। अिसलिअे गांधीजीको मालूम न हो, अिस ढंगसे गांधीजी जहां जाते वहां वे भी अुनके साथ हो जाते। अेक दिन गांधीजी अपने दफ्तरसे बाहर जानेके हेतुसे कोट पहन रहे थे। पासकी ही खूंटी पर मि० कैलनबैकका कोट टंगा हुआ था। अुसकी जेबमें रिवाल्वर जैसी कोअी चीज गांधीजीको मालूम हुअी। गांधीजीने देखा तो रिवाल्वर निकला। गांधीजीने मि० कैलनबैकको बुलाकर पूछा: "यह रिवाल्वर जेबमें किसलिअे रखते हो?"

श्री कैलनबैकने शर्मसे जवाब दिया: "कुछ नहीं, अैसे ही।"

गांधीजीने हंसते हुअे पूछा: "रस्किन और टॉल्स्टॉयकी पुस्तकोंमें कहीं अैसा आया है कि बिना कारण भी रिवाल्वर जेबमें रखा जाय?"

अिस मजाकसे श्री कैलनबैक और ज्यादा शर्मिन्दा हुअे और बोले: "मुझे पता लगा है कि कुछ गुण्डे आप पर हमला करनेवाले हैं।"

"और तुम अुनसे मेरी रक्षा करना चाहते हो?" गांधीजीने गंभीर भावसे पूछा।

"हां, मैं अिसीलिअे आपके पीछे पीछे रहता हूं।"

श्री कैलनबैकका जवाब सुनकर गांधीजी हंस पड़े और बोले: "अच्छा, तब तो मैं निश्चिन्त हुआ। मालूम होता है मेरी रक्षा करनेकी परमेश्वरकी सारी जिम्मेदारी तुम्हींने ले ली है। और जब तक तुम जीवित हो तब तक मुझे अपने-आपको बिलकुल सलामत मान लेना चाहिये। वाह, मेरे प्रति स्नेहके कारण तुमने परमेश्वरका अधिकार भी छीन लेनेकी खूब हिम्मत की!"

गांधीजीके ये गंभीर वाक्य सुनकर श्री कैलनबैक विचारमें पड़ गये। अुन्हें अपनी भूल मालूम हो गअी।

गांधीजी बोल अुठे: "क्या विचार कर रहे हो? ये भगवानके प्रति श्रद्धा होनेके लक्षण नहीं हैं? मेरी रक्षाकी चिन्ता तुम न करो। अिसकी चिन्ता करनेवाला तो सर्वशक्तिमान प्रभु बैठा है। यह रिवाल्वर रखकर मेरी रक्षा करनेका विचार छोड़ दो।"

श्री कैलनबैकने नम्र भावसे कहा: "मेरी भूल हुअी। मैं अब आपकी रक्षाकी चिन्ता नहीं करूंगा।" यह कहकर अुन्होंने रिवाल्वर जेबसे निकाल कर दूर रख दिया।

श्री कैलनबैकको अीश्वर-श्रद्धाकी कीमती शिक्षा मिली। अुसके बाद अुन्होंने कभी अैसी चिन्ता नहीं की। सन् १९१४ के आखिरी समझौतेके बाद भी अैसा प्रसंग आ गया था और अैसी अफवाह सुनाअी दी थी कि गांधीजी पर हमला हो सकता है। अुस समय जब अिस बारेमें अुचित सावधानी रखनेके लिअे अेक मित्रने श्री कैलनबैकको लिखा, तब श्री कैलनबैकने अुत्तर दिया था कि:

"'भाअी' अपनी रक्षा करनेमें समर्थ हैं। अुनकी चिन्ता करनेकी मुझे या आपको जरूरत नहीं है।"

अिस अूपरवाली घटनाको थोड़े ही दिन हुअे थे कि गांधीजी पर हमला हुआ। १० फरवरीको गांधीजी नाम लिखवानेके लिअे अेशियाअी दफ्तर जानेवाले हैं, यह समाचार अखबारोंमें प्रकाशित हुआ था। अुस दिन सुबह नौ-दस बजेके करीब गांधीजी अपने दफ्तरसे निकले। साथमें थंबी नायडू, अध्यक्ष अीसप मियां और श्री पी० के० नायडू थे। चारों ही नेता नाम लिखानेवाले थे। अेशियाअी दफ्तरकी तरफ जाते हुअे अुन पर जो क्रूर आक्रमण हुआ, अुसका और अुसके बादका कुछ वर्णन गांधीजीके अपने शब्दोंमें यहां दे दूं वही अच्छा होगा। अुनके अपने वर्णनमें कवित्व और करुणा दोनों भरे हैं।

"दफ्तर पहुंचनेमें कोअी पांच मिनिटका रास्ता रहा होगा कि मीर आलम मेरे पास आया। मीर आलमने मुझे पूछा: 'कहां जाते हो?' मैंने जवाब दिया: 'मैं दस अंगुलियां देकर रजिस्टर निकलवाना चाहता हूं। अगर तुम भी चलोगे तो तुम्हारे अंगुलियां देनेकी जरूरत नहीं है। तुम्हारा रजिस्टर पहले निकलवाकर मैं अंगुलियां देकर मेरा निकलवाअूंगा।' मैं अितना कह ही रहा था कि मेरी खोपड़ी पर पीछेसे अेक लाठीकी चोट पड़ी। मैं तो बेहोश होकर औंधा गिर पड़ा। बादमें जो कुछ हुआ अुसका मुझे भान नहीं रहा। परन्तु मीर आलमने और साथ ही अुसके साथियोंने ज्यादा लाठियां मारीं और लातें भी

लगाअीं। अुनमें से कुछ अीसप मियांने और थंबी नायडूने झेलीं। अिसलिअे अीसप मियांको भी थोड़ी चोट आअी और थंबी नायडूको भी आअी। अितनेमें शोर-गुल मच गया। आते-जाते गोरे अिकट्ठे हो गये। मीर आलम और अुसके साथी भागे। परन्तु गोरोंने अुन्हें पकड़ लिया। अिस बीच पुलिस भी आ पहुंची। अुन्हें पुलिसके हवाले किया गया। पास ही अेक गोरेका आफिस था। अुसमें मुझे अुठा कर ले गये। थोड़ी देरमें मुझे होश आया तो मैंने अपने मुंह पर झुके हुअे पादरी डोकको देखा। अुन्होंने मुझसे पूछा : 'आपकी तबीयत कैसी है?' मैंने हंस कर जवाब दिया : 'तबीयत तो ठीक है, परन्तु मेरे दांत और पसलियां दुखती हैं।' मैंने पूछा, 'मीर आलम कहां है?' अुन्होंने कहा, 'वह तो पकड़ा गया है और अुसके साथ दूसरे लोग भी।' मैंने कहा, 'वे छूटने चाहिये।' डोकने अुत्तर दिया, 'यह सब तो होता रहेगा। यहां आप अेक पराये आफिसमें पड़े हैं। आपका होंठ फट गया है। पुलिस आपको अस्पतालमें ले जानेको तैयार है, परन्तु आप मेरे यहां चलें तो श्रीमती डोक और मैं आपकी भरसक सेवा करेंगे।' मैंने कहा, 'मुझे अपने यहां ले चलिये। पुलिसके प्रस्तावके लिअे अुनको धन्यवाद दीजिये, परन्तु अुन लोगोंसे कहिये कि आपके यहां चलना मुझे पसन्द है।' अितनेमें अेशियाओ अधिकारी भी आ पहुंचे। अेक गाड़ीमें मुझे अिस भले पादरीके यहां ले जाया गया। डॉक्टरको बुलवाया गया। अिस बीच मैंने अेशियाअी अधिकारी मि० चिमनीसे कहा : 'मुझे अुम्मीद तो यह थी कि आपके दफ्तरमें आकर दस अंगुलियां देकर मैं पहला परवाना लूंगा। पर यह अीश्वरको मंजूर नहीं हुआ। अब मेरी बिनती यह है कि आप अिसी समय कागजात ले आअिये और मेरा नाम लिख लीजिये। मुझे आशा है कि मुझसे पहले आप और किसीका नाम न लिखेंगे।' अुन्होंने कहा, 'अितनी क्या जल्दी है? अभी डॉक्टर आयेगा। आप आराम कीजिये। फिर सब कुछ हो जायगा। औरोंको परवाने दूंगा तो भी पहला नाम आपका ही रखूंगा।' मैंने कहा, 'अैसा नहीं। मेरी यह प्रतिज्ञा है कि मैं जीता रहा और अीश्वरको मंजूर हुआ तो सबसे पहले मैं खुद ही परवाना निकलवाअूंगा। अिसलिअे मेरा आग्रह है कि आप कागजात ले आअिये।' अिस पर वे गये। मेरा दूसरा काम यह था कि अेटर्नी-जनरल यानी सरकारी वकीलको तार दूं कि मीर आलम और अुनके साथियोंने मुझ पर जो हमला किया है अुसके लिअे मैं अुन्हें दोषी नहीं मानता। कुछ भी हो, पर मैं नहीं चाहता कि अुन पर फौजदारी मामला चले। मुझे आशा है कि मेरे खातिर

आप अुन्हें छोड़ देंगे। अिस तारके जवाबमें मीर आलम और अुनके साथियोंको छोड़ दिया गया।

"मगर जोहानिसबर्गके गोरोंने अेटर्नी-जनरलको अिस प्रकारका कड़ा पत्र लिखा: 'अपराधियोंको सजा देनेके बारेमें गांधीजीके विचार कुछ भी हों, लेकिन वे अिस देशमें नहीं चल सकते। अुन पर जो मार पड़ी है अुसके बारेमें वे चाहे कुछ न करें, परन्तु अपराधियोंने यह मार घरके कोनेमें नहीं मारी। अपराध आम रास्ते पर हुआ है। यह सार्वजनिक अपराध है। कुछ अंग्रेज भी अपराधका प्रमाण दे सकते हैं। अपराधियोंको पकड़ना ही चाहिये।' अिस हलचलके कारण सरकारी वकीलने मीर आलम और अुसके साथियोंको फिर पकड़ लिया और अुन्हें छह छह महीनेकी सजा मिली। सिर्फ मुझे गवाहके रूपमें नहीं बुलाया गया।

"हम बीमारके कमरेकी तरफ फिर नजर डालें। मिस्टर चिमनी कागजात लेने गये कि डॉक्टर आ पहुंचे। अुन्होंने मेरी जांच की। मेरा अूपरका होठ टफ गया था, अुसमें टांके लगाये। पसलियों वगैराकी जांच करके अुन पर लगानेकी दवा दी। जब तक टांके न टूटें, तब तक मुझे बोलनेकी मनाही कर दी। डॉक्टरने निदान किया कि मुझे किसी जगह बहुत सख्त चोट नहीं आअी है। अेक हफ्तेके भीतर मैं बिस्तर छोड़ सकूंगा और मामूली काम-काजमें लग सकूंगा। सिर्फ दो-अेक महीने शरीरसे बहुत परिश्रम न करनेकी सावधानी रखनी होगी। यह कहकर वे बिदा हो गये। अिस तरह मेरा बोलना बन्द हुआ, परन्तु मेरे हाथ चल सकते थे। कौमके लिअे अध्यक्षके मारफत अेक गुजराती पत्र लिखकर मैंने प्रकाशित करनेके लिअे भेजा। वह पत्र नीचे देता हूं:

"'मेरी तबीयत अच्छी है। श्री डोक और श्रीमती डोक मेरे लिअे सब कुछ कर रहे हैं और मैं थोड़े ही दिनोंमें फिर सेवा करने लगूंगा। जिन्होंने मुझे मारा है, अुन पर मुझे जरा भी क्रोध नहीं है। अुन्होंने नासमझीमें यह काम किया है। अुन पर कोअी मुकदमा चलानेकी जरूरत नहीं है। अगर अन्य लोग शान्त रहेंगे तो अिस किस्सेसे भी हमें लाभ ही होगा। हिन्दुओंको मनमें जरा भी रोष न रखना चाहिये। मैं चाहता हूं कि अिससे हिन्दू-मुसलमानोंके बीच कटुता पैदा होनेके बदले मिठास पैदा हो। और खुदासे — अीश्वरसे — मैं यही मांगता हूं।

"'मुझ पर जितनी मार पड़ी अुससे ज्यादा पड़े तो भी मैं अेक ही सलाह दूंगा। वह यह कि सभीको दस अंगुलियां देनी चाहिये। अिसीमें कौमका और गरीबोंका हित और रक्षण है।

"'अगर हम सच्चे सत्याग्रही होंगे तो मारसे या भविष्यमें होनेवाले दगेके डरसे जरा भी भयभीत न होंगे।

"'जो दस अंगुलियोंके बारेमें झगड़ रहे हैं अुन्हें मैं अज्ञानी समझता हूं।

"'मैं खुदासे दुआ मांगता हूं कि वह कौमका भला करे, अुसे सच्चे रास्ते लगाये और हिन्दू-मुसलमानोंको मेरे खूनकी पट्टीसे जोड़े।'"

अिस पत्रका आश्चर्यजनक असर हुआ। लोगोंमें शान्ति कायम हुअी। आपसका सन्देह दूर हुआ। और गांधीजीने हमला करनेवाले पठानों पर नालिश न की और खुद अुन्हें छुड़वा दिया, अिससे अुनके हृदय पर भी चमत्कारिक प्रभाव हुआ। ये पठान बादमें गांधीजीके सहायक बन गये। सन् १९१४ में अेक बार ट्रान्सवालकी अेक सभामें गांधीजीको निमंत्रण दिया गया था। वहां कुछ मुसलमानोंने फसाद किया और गांधीजी पर घातक हमला करनेकी तैयारियां कीं। अितनेमें अुन पठानोंमें से मीर आलम पठान हाथमें बड़ा छुरा लेकर सामने आ गया और बोला: "यकीन रखना गांधी भाअीको जरा भी चोट पहुंचानेवालेको मैं यहीं ढेर कर दूंगा।" अिस विकराल पठानसे दंगाअी दब गये और भाग गये। अिस तरह गांधीजीके जीवनसे हिन्दुस्तानियोंका वातावरण भी शुद्ध होने लगा। अच्छे हो जानेके बाद वे नेटाल गये। डरबनमें रातको अेक सभा हुअी। अुसमें भी फसादियोंने अेक षड्यंत्र रच रखा था। कुछ मित्रोंने सभामें होनेवाली धांधलीके बारेमें गांधीजीको सावधान कर दिया था और वहां न जानेका आग्रह किया था। परन्तु गांधीजीने कह दिया कि कौम मेरी मालिक है और मैं अुसका सेवक हूं। कौमके भाअी मुझे हुक्म दें और मैं न जाअूं तो मेरे लिअे शोभाकी बात नहीं होगी। अिस तरह धांधलीकी चेतावनी मिलने पर भी गांधीजी निडर होकर सभामें गये। सभामें शोरगुल मचा। रातका समय था। हमला होनेकी तैयारी थी। सभास्थलकी बिजलीकी बत्तियां अेकाअेक बन्द हो गअीं। परन्तु गांधीजीको मालूम न हो अिस तरह 'कालोनियल बॉर्न' युवकोंकी अेक टोली मिस्टर जैक-मुडले नामक अेक प्रसिद्ध बॉक्सरकी सरदारीमें अुस सभामें बैठी हुअी थी। अुसने ठीक समय पर गांधीजीकी रक्षा की।

अिस तरह समझौतेके सिलसिलेमें बहुत गलतफहमी पैदा होनेके कारण जो अवांछनीय घटनाअें हुअीं, अुनके कारण भविष्यमें अुनके प्रेरकोंको पछतानेका समय आ गया। परन्तु गांधीजीकी आत्मिक साधनामें अिन प्रसंगोंने अद्भुत सामर्थ्यका सिंचन किया।

१३

फिर लड़ाअी शुरू हुअी

गांधीजीकी तबीयत अच्छी होनेके बाद अुन्होंने अपनी सारी प्रवृत्ति सरकारके साथ हुअे समझौते पर अमल करने-करानेमें केन्द्रित कर दी। तीन महीनेमें ही प्रत्येक हिन्दुस्तानीने समझौतेकी शर्तके अनुसार अपना नाम दर्ज करवा दिया। विरोधी पक्षके साथ समझौता होनेके बाद वह समझौता पवित्र हो जाता है और समझौतेके अनुसार आचरण करना हमारा फर्ज हो जाता है। समझौता करनेके बाद विरोधी पक्ष अपनी शर्तें पूरी करेगा या नहीं, यह शंका रखकर हम अपना वचन पूरा करनेमें ढिलाअी करें, तो वह विश्वासघात और वचन-भंग माना जायगा। विरोधी पक्ष अपनी सज्जनता नहीं दिखायेगा और वचन-भंग करके हमारे साथ विश्वासघात करेगा, अिस तरहकी शंका रख कर हम भी वैसा ही रवैया रखें तो वह आत्म-घातक होता है। स्थूल दृष्टिसे तो हमारे पक्षके साथ धोखा होनेसे हमारा नुकसान होता दिखाअी देता है। परन्तु सत्यकी लड़ाअीमें अैसा कभी नहीं होता। सत्यकी लड़ाअीके परिणामका आधार सत्यका आचरण करनेकी हमारी शक्ति पर होता है, विरोधी पक्षके असत्याचरण पर या अधर्म पर नहीं। यह हो सकता है कि हमारी कड़ी परीक्षा हो। परन्तु जैसे-जैसे हमारी परीक्षा होती जाती है, वैसे-वैसे हम कंचनकी तरह अधिक शुद्ध बनते जाते हैं। ट्रान्सवालके समझौतेके बारेमें भी अैसा ही हुआ।

सन् १९०८ के जनवरी महीनेकी ३० तारीखको समझौता हुआ था और २४ जूनको सत्याग्रहकी लड़ाअी फिर आरम्भ हो गअी। हिन्दुस्तानियोंने अपने वचनका पूरी तरह पालन किया, तो भी वहांकी सरकारने अपना वचन पूरा करनेसे अिनकार कर दिया। खूनी कानून रद करनेसे अुसने साफ अिनकार

कर दिया और जो नाम लिखवाये गये हैं वे स्वेच्छासे नहीं बल्कि बाकायदा लिखवाये गये हैं, अैसा घोषित किया। सरकारकी अिस घोषणासे हिन्दुस्तानी चौंके। कुछ लोगोंने सरकारको दुष्ट बताया; कुछने गांधीजीको भोला कहा; और कुछने तो गांधीजीके मुंह पर कह दिया, "आप हमारी बात मानेंगे नहीं, परन्तु जनरल स्मट्स तो कपटी है। अुसने आपको धोखा दिया। हम सब नाम न लिखवाते तो झख मार कर वह कानून रद करता। अुसके वचन पर भला क्या विश्वास किया जाय?" अिस तरहकी कओी बातें गांधीजीको सुनाओी गओीं। गांधीजी बोले, "हमें अपने वचनका पालन करना चाहिये। अुन्होंने हमें धोखा दिया तो अिससे हमारा कोओी नुकसान नहीं हुआ। मुझे अुन्होंने धोखा दिया है, अिसलिअे मैं तो अुनसे लड़ूंगा ही और आप यह मानते हों कि मुझे दिया गया धोखा आप पर भी लागू होता है, तो आप भी मेरे साथ लड़ाओीमें शामिल हो जाअिये। अब हम अधिक शक्तिशाली बनकर सत्यकी लड़ाओी लड़नेके लिअे अधिक योग्य बनेंगे।"

हिन्दुस्तानियोंके नेताओंने सरकारको पत्र लिखे, परन्तु अुनके अुत्तर बिलकुल निराशाजनक मिले। अंतमें जिस धारासभामें खूनी कानूनको थोड़ा-सा सुधार करके पास किया गया था, अुसमें अुस बिलके पेश होनेसे पहले हिन्दुस्तानी लोगोंने अेक अर्जी भेजी। परन्तु पार्लियामेण्टने अुस अर्जीकी परवाह नहीं की। कमजोर और जंगली मानी जानेवाली जातिकी अर्जी पर शासक जातिने कभी ध्यान दिया है? अपनी अर्जीका यह अंजाम आया जानकर हिन्दुस्तानियोंके नेता अिकट्ठे हुअे और चर्चा करके अुन्होंने सरकारको अंतिम पत्र लिखकर यह बता दिया कि अमुक अवधिसे पहले खूनी कानून रद न किया गया तो हिन्दुस्तानी स्वेच्छासे लिये हुअे रजिस्टरोंको अिकट्ठा करके जला डालेंगे; और अैसा करनेसे जो भी कष्ट भोगने पड़ेंगे अुन्हें प्रसन्नचित्तसे भोग लेंगे।

यह निश्चय-पत्र पढ़कर जनरल स्मट्स आगबबूला हो गया। अुसने अिस निश्चयपत्रको हिन्दुस्तानियोंकी धमकी मानकर खूनी कानून पार्लियामेण्टमें पेश करते हुअे अिस पत्रको 'अल्टीमेटम' कह कर पार्लियामेण्टके सदस्योंका ध्यान अुसकी ओर खींचा। पार्लियामेण्टके सदस्य भी क्रुद्ध हुअे और अिस कानूनको सर्वसम्मतिसे पास करानेमें जनरल स्मट्सको जरा भी कठिनाओी नहीं हुओी। जनरल स्मट्स और धारासभाके सदस्योंको हिन्दुस्तानियोंका यह निश्चय-

पत्र धमकी जैसा लगा, अिसका भी कारण था। पत्रकी दो बातें अुन्हें बहुत बुरी लगीं: (१) "कानून रद नहीं करोगे तो हिन्दुस्तानी स्वेच्छासे लिये हुअे रजिस्टर जला देंगे" — यह तो अमली निश्चय हुआ। और (२) "मांगी हुअी वस्तु न मिली तो हम भी अमुक कदम अुठावेंगे" —— यह समानताका हक जताना हुआ। अिन दो बातोंमें दक्षिण अफ्रीकाकी गोरी सरकारको हिन्दुस्तानियोंकी अुद्धतता मालूम हुअी। परन्तु हिन्दुस्तानियोंने अिससे भी आगे अेक कदम अुठाया। अुन्होंने सरकारके अुत्तरकी राह देखे बिना दिन निश्चित करके अपनी अिच्छाको अधिक निश्चयात्मक बना दिया। अिस मियादको सरकारने अल्टीमेटम माना। अैसा अल्टीमेटम देनेका जो प्रसंग गांधीजीके भारतमें आनेके बाद अुपस्थित हुआ था, वह अिस परिस्थितिसे मिलता-जुलता है और गिरमिटकी अनिष्ट पद्धतिको बन्द करनेसे सम्बन्ध रखता है। अतः यहां अुसका अुल्लेख करना अप्रस्तुत नहीं होगा। वह अिस प्रकार है:

गांधीजी हिन्दुस्तान आये अुसके बाद सन् १९१७ में भारतकी कलंकस्वरूप गिरमिटकी प्रथाको बन्द करनेका आन्दोलन अुन्होंने आरम्भ किया। अिस आन्दोलनमें हिन्दुस्तानके सभी राजनीतिक दल शामिल हुअे। बम्बअीके कावसजी हॉलमें बम्बअीके सभी नेता अेक ही मंच पर अिकट्ठे हुअे। लिबरल या मॉडरेट, नेशनलिस्ट या अिंडिपेन्डेन्ट, सहकारी या समाज-सुधारक वगैरा सभी दलोंके नेता पहले-पहल अेक ही कामके लिअे अेक मंच पर अुपस्थित हुअे। सभाके सभापति थे सर जमशेदजी जीजीभाअी, गिरमिट प्रथाको रद करनेका प्रस्ताव रखनेवाले थे गांधीजी और अुसका अनुमोदन करनेवाले थे तिलक महाराज। प्रस्तावके सम्बन्धमें प्रारंभिक बातचीत करते समय बहुतोंका यह आग्रह था कि प्रस्तावमें यह मांग की जाय कि देशकी प्रतिष्ठाके खातिर भी भारत-सरकार गिरमिट पद्धतिको तुरन्त बन्द कर दे। गांधीजीने देखा कि हम अपनी ताकतसे गिरमिट प्रथा तुरन्त बन्द करनेकी मांग करते हों, तो अैसा प्रस्ताव सचमुच सरकारको कठिनाअीमें डालने जैसा है। और बिना ताकतके सिर्फ शब्दाडम्बरके खातिर 'तुरन्त' शब्दका अुपयोग करना हो तो अंग्रेजोंकी दृष्टिमें अिस शब्दका कोअी अर्थ नहीं। अिसलिअे गांधीजीने यह अंदाज लगा लिया कि सब नेताओंमें अिस प्रश्नके बारेमें कितनी तीव्रता है और अुस प्रस्तावमें परिवर्तन कर दिया। जो प्रस्ताव अमर्यादित था अुसमें '३१ मअीसे पहले' शब्द रखकर अुसे मर्यादित कर दिया। सारे देशके मुख्य मुख्य शहरोंसे यह मांग करनेवाले सैकड़ों तार

वाअिसरॉयके पास गये कि "३१ मओीसे पहले गिरमिटकी गुलामीकी प्रथा बन्द होनी चाहिये।" गांधीजीने अिस सम्बन्धमें वाअिसरॉय लॉर्ड चेम्सफोर्डसे मुलाकात की, तब अुन्होंने '३१ मओी'की दी हुओ मियादके बारेमें आपत्ति अुठाओ। कारण, अधीन प्रजा अिस तरह मियादी मांग करे, तो अुसका यही अर्थ होगा कि प्रजा सत्ताधारियोंसे जो मांग करती है अुसके पीछे अुस पर अमल करानेके लिअे अुसके पास काफी ताकत मौजूद है। वाअिसरॉय लॉर्ड चेम्सफोर्डको हिन्दुस्तानियोंकी यह मांग अप्रिय लगी। अधीन प्रजाका अैसी अुद्धत मांग करना अुन्हें पसन्द नहीं आया। परन्तु गिरमिटके सवालके पीछे भारतीय जनताके निश्चय-बलका विश्वास हो जानेके कारण अुन्होंने तुरन्त अिस प्रथाको भारत-रक्षा-कानूनके आधार पर स्थगित करनेका हुक्म दिया और भारत-मंत्रीके द्वारा सदाके लिअे रद करवा दिया। गांधीजीने अिस कार्य-पद्धतिका पहला प्रयोग दक्षिण अफ्रीकामें हत्यारे कानूनको रद करवानेका निश्चयपत्र ट्रान्सवालकी सरकारको भेजकर किया था। सरकारको अुसका खटकना स्वाभाविक ही था। परन्तु अुसकी चर्चा गोरोंमें अैसी हुओ जिससे हिन्दुस्तानी लोगोंका वातावरण अुग्र हो गया और वे लड़ाओके लिअे तैयार हो गये। जनरल स्मट्सने भरी धारासभामें यह चेतावनी दी कि "हिन्दुस्तानी लोग गैरजिम्मेदार आन्दोलनकारियोंके नचाये नाचेंगे तो कुचल दिये जायंगे।" दूसरी तरफ हिन्दुस्तानियोंने भी लड़ाओके लिअे कमर कस ली।

अिस तरह हिन्दुस्तानियोंका वायुमंडल गरम होने लगा। अुसमें अेक और नयी शक्ति प्रकट हुओ। अिस बारकी लड़ाओमें नेटालके हिन्दुस्तानी भी शरीक हो सकते थे। अिमिग्रेशन-कानूनके कारण बाहरका कोओ हिन्दुस्तानी कितना ही पढ़ा-लिखा क्यों न हो, तो भी वह ट्रान्सवालमें प्रवेश नहीं कर सकता था। यह कानून भी मुख्यतः हिन्दुस्तानियोंके विरुद्ध होनेके कारण रंगभेदसे भरा और अपमानजनक था। और हिन्दुस्तानके श्री गोखले या श्री फीरोजशाह मेहता जैसे अधिकसे अधिक शिक्षित और अग्रगण्य नेता भी ट्रान्सवालमें प्रवेश नहीं कर सकते थे। परन्तु गोरी चमड़ीका कोओ भी कंगाल और निरक्षर गुण्डा वहां प्रवेश कर सकता था। अिसमें हिन्दुस्तानका और न्यायभावनाका दोनोंका अपमान था। अिस कानूनका विरोध करना आवश्यक था। अिसलिअे लड़ाओका क्षेत्र बढ़ा। नेटाल प्रान्तको, जो सत्याग्रहकी लड़ाओसे अलग था, अिसमें शामिल होनेका निमंत्रण

मिला। अिस लड़ाअीसे पहले भी गांधीजीने समझौतेके प्रयत्न किये थे। सरकारने कहा, "अमुक हिन्दुस्तानियोंके प्रवेशको निषिद्ध माना जाय और अिमिग्रेशन-कानूनमें रंगभेद रखने दिया जाय, तो यह कानून बन्द किया जायगा।" गांधीजी अैसी बातको मंजूर कैसे करते? अुन्होंने साफ अिनकार कर दिया। और दूसरी लड़ाअी आरम्भ हुअी।

यह आरम्भ डरबनके पारसी युवक श्री सोराबजी शापुरजी अडाजणियाने किया। सोराबजी पारसी जातिके भूषण थे। (भगवानकी अिच्छासे वे कुछ वर्ष पहले गुजर गये।) अुस समय अुन्होंने साहस करके यह लड़ाअी आरम्भ की थी। सरकारको चेतावनी देकर वे २४ जून, १९०८ को ट्रान्सवालमें दाखिल हुअे। सरकारने अुन्हें पकड़ा। और २० जुलाअीको वॉलक्रस्टके मजिस्ट्रेटने अुन्हें अेक मासकी सजा दी। अिस अर्सेमें लोगोंका जोश बढ़ा। १२ जूनके दिन सरकारके वचन-भंगके विरुद्ध अपना पुण्यप्रकोप प्रगट करनेके लिअे हिन्दुस्तानियोंकी अेक जबरदस्त सभा हुअी और अुसमें दो हजार अैच्छिक रजिस्टर जला दिये गये। अितना ही नहीं, जिन्होंने स्वेच्छासे लिये हुअे रजिस्टर जला डाले अुन्होंने सरकारको खुली चुनौती देकर अपने नाम भी जाहिर किये। अिस प्रकार जलाये हुअे रजिस्टरोंकी सूची ट्रान्सवाल अिंडियन अेसोसिअेशनके दफ्तरमें रखी गअी थी और अिस सूचीको बादमें समझौतेके समय सरकारने मंजूर किया था। अब सरकारके अिस कानूनकी क्या कीमत रही? कानूनके खिलाफ लड़नेका यह ढंग सरकारको बुरा लगा। वह चौंक गअी। अुसने फिर नेताओंको बुलवाया। प्रिटोरियामें दोनों तरफके नेताओंकी अेक परिषद हुअी। मध्यस्थके रूपमें मि० आल्बर्ट कोर्टराअिट नियुक्त किये गये। समझौतेकी बातचीत हुअी। परन्तु अुससे कुछ काम नहीं बना। सरकार अिमिग्रेशन-कानूनमें और रजिस्ट्रेशनके कानूनमें कुछ सुधार करनेको राजी हुअी, परन्तु कानून रद करनेसे अुसने अिनकार कर दिया। अिसलिअे परिषदसे कुछ लाभ नहीं हुआ। फिर भी सरकारने अेक नया कानून बनाकर यह मानकर अूपरी सुधार किये कि सत्याग्रही अिन सुधारोंसे सन्तुष्ट हो जायंगे। परन्तु सत्याग्रहियोंने ये परिवर्तन स्वीकार नहीं किये और लड़ाअी जमी।

श्री सोराबजीके आरम्भके बाद नेटालके नेताओंका धावा हुआ। वहांके श्री दाअूद सेठ और पारसी रुस्तमजी वगैरा कुछ मुख्य व्यापारी नेटालकी हद लांघकर ट्रान्सवालमें घुसे। सरकारने अुन्हें भी योग्यतानुसार सजाअें दीं। अिस

प्रकार अेक ओर लड़ाओी आरम्भ हुओी और दूसरी ओर रोडेशिया प्रान्तने भी हिन्दुस्तानियोंको न आने देनेके लिअे अिमिग्रेशन-कानून बनाया, परन्तु बड़ी सरकारने अुसे मंजूरी नहीं दी। आरम्भ हुअे सत्याग्रहका यह तात्कालिक परिणाम माना जा सकता है। नेटालकी मददसे ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानियोंका अुत्साह बढ़ा। अुन्होंने भी व्यापारके या अन्य जो कानून थे अुन्हें तोड़-तोड़कर सरकारको खुले तौर पर चुनौती देना शुरू किया। यह दूसरी लड़ाओी तो पहलीसे भी कओी गुनी अुत्साहवाली निकली। ट्रान्सवालकी जेलें और हवालातें खचाखच भर गओीं। कुछ हफ्तोंमें तो ट्रान्सवाल जैसे छोटेसे प्रान्तमें सजाओंका औसत हररोज चालीस-पैंतालीस रहने लगा। बिना परवानेके हिन्दुस्तानी फेरियां लगाते, बिना परवानेके व्यापार करने बैठ जाते, बिना अिजाजतके ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानी नेटालमें जाकर वापस ट्रान्सवालमें घुस जाते और पकड़े जाते। अिस प्रकार बहुत बड़ी संख्यामें लोग पकड़े गये।

सरकारने भी हिन्दुस्तानियोंके अिस जोशको कुचल डालनेके लिअे कमर कस ली। अुसने देखा कि हिन्दुस्तानियोंके दिलोंसे जेलकी सजाका डर भाग गया है, अिसलिअे अुसने ट्रान्सवालकी जेलोंमें कैद हिन्दुस्तानी सत्याग्रहियों पर जुल्म करना शुरू किया। अुनसे पत्थर तुड़वाने लगी और पाखाना-सफाओीका काम भी कराने लगी। परन्तु अिससे सत्याग्रही डरे नहीं, अिसलिअे सरकारने दूसरा रास्ता ढूंढ़ निकाला। सैकड़ों मनुष्योंको पुर्तगाली अुपनिवेश डेलागोआ-बे नामक बन्दरसे जहाजमें हिन्दुस्तानकी तरफ रवाना करके मद्रासमें अुतार दिया। अैसी दो टोलियां सन् १९०९ में मद्रासमें अुतारी गओीं। जिन्हें हिन्दुस्तान भेजा गया था, वे ज्यादातर मद्रासकी तरफके रहनेवाले थे। अुनमें अुत्तर हिन्दुस्तान और बम्बओीकी तरफके रहनेवाले भी थे। अिन सब लोगोंको कोओी सूचना या तैयार होनेका समय दिये बिना ही जहाज पर चढ़ा दिया गया था। अुनके लिअे हिन्दुस्तानकी भूमि बिलकुल अनजान थी। वे सब ट्रान्सवालमें ही पैदा हुअे थे; हिन्दुस्तानमें अुनका कोओी सगा-सम्बन्धी नहीं था; खड़े रहनेको भी जगह नहीं थी। अैसी निराधार अवस्थामें अनजान आदमियोंको खाने-पीने या ओढ़नेके किसी साधनके बिना अनजान देशमें धकेल देना कोओी कम क्रूरता थी? परन्तु अिससे अेक फायदा हुआ। अिन लोगोंके निर्वासनसे हिन्दुस्तानकी सारी जनता अधिक जाग्रत हो गओी। दक्षिण अफ्रीकाके अपने भाअियोंकी मुसीबत-भरी हालतकी तरफ अुनकी आज तक जो लापरवाही थी वह दूर हुओी। चारों तरफसे अिसका

विरोध हुआ, अुसके प्रति प्रकोप प्रगट हुआ। मद्रासमें श्री गणेश नटेसनने सभी निर्वासित भाअियोंकी हर तरहसे सेवा की। और अपने 'अिंडियन रिव्यू' मासिक द्वारा तथा दूसरे अखबारोंके जरिये दक्षिण अफ्रीकी सरकारके अिस कदमकी आलोचना की। परिणामस्वरूप मद्रास, कलकत्ता, बम्बअी, दिल्ली, अलाहाबाद वगैरा बड़े-बड़े शहरोंमें नेताओंने सभाअें करके दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियों पर गुजरनेवाले जुल्मोंके खिलाफ विरोध प्रगट करके अुन्हें अुचित सहायता देनेकी अपनी तैयारी बताअी और अुसकी तरफ भारत-सरकारका ध्यान खींचा।

अिग्लैण्डमें गांधीजीके प्रयत्नसे लॉर्ड अेम्पथीलकी अध्यक्षतामें स्थापित कमेटीने भी बहुत मदद दी। अिसके अलावा, अुसने सरकारके साथ और अखबारोंमें दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी सत्याग्रहकी लड़ाअीके सम्बन्धमें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण चर्चा करके अिंग्लैण्डकी जनताका और सरकारका ध्यान खींचा।

ट्रान्सवालके कुछ न्यायप्रिय गोरोंने भी अिसमें मदद की। मि० विलियम हॉस्केनकी अध्यक्षतामें हिन्दुस्तानियोंको सहायता देनेके लिअे गोरोंकी अेक कमेटी स्थापित हुअी। अुस कमेटीने 'लंडन टाअिम्स' को अपना वक्तव्य भेजा। और अिसी अर्सेमें नेटाल और रोडेशियामें हिन्दुस्तानियोंके विरुद्ध जो कानून बने, अुनका भी अिस कमेटीने बहुत विरोध किया। अिस प्रयत्नके परिणाम-स्वरूप सरकारको वे कानून रद करने पड़े।

अिस तरह चारों ओरसे नैतिक सहानुभूति मिलने लगी; फिर भी असली जोर तो हिन्दुस्तानियोंको ही बताना था। श्री जोसेफ रॉयपन बैरिस्टर, श्री थंबी नायडू, श्री पी० के० नायडू, श्री क्रिस्टोफर वगैरा अनेक शिक्षित और दक्षिण अफ्रीकामें जन्मे हुअे हिन्दुस्तानियोंने अिस सत्याग्रहकी लड़ाअीमें अच्छा भाग लिया। सब दो-दो चार-चार बार जेलयात्रा कर आये। श्री सोराबजी तो सात बार जेलकी यात्रा कर आये। श्री प्रागजी देसाअी भी पांच-छह बार हो आये। अिन सभी भाअियोंका अुत्साह अनोखा था। जेलोंमें अनेक दुःख अुठाने पड़े, अुपवास करके जुल्मका विरोध करना पड़ा, फिर भी अुनके अुत्साहमें कमी नहीं आयी। ट्रान्सवालकी आठ हजारकी आबादीमें से अिस तरहकी लगभग दो हजार सजायें हुअी थीं। गांधीजीको अिस दूसरी लड़ाअीमें दो बार जेलकी सजा हुअी थी। ७ सितम्बर, १९०८ को वॉलक्रस्टमें गांधीजीको पकड़ा गया और अेक सप्ताह बाद अुन पर मुकदमा चलाकर वहांके मजिस्ट्रेटने दो महीनेकी सजा

दी थी। फिर १५ जनवरी, १९०९ को अुन्हें दुबारा वॉल्क्रस्टमें पकड़ा गया और २४ तारीखको मुकदमा चलाकर तीन महीनेकी सजा दी गओ थी। अिस प्रकार हिन्दुस्तानियोंने कओ बार जेलमें जाकर अनेक कष्ट अुठाये। अिन कष्टोंसे श्री नागापन् जैसे अुत्साही नौजवानकी जेलसे निकलनेके बाद तुरन्त ही मृत्यु हो गओ। कुछके शरीर जर्जर हो गये थे। और कुछ बर्बाद हो गये। अिनमें श्री काछलिया सेठका त्याग अनुपम था। वे ट्रान्सवाल अिंडियन असोसियेशनके अध्यक्ष थे। अिसलिअे अुनके प्रति तो सरकार और गोरे लोगोंका ध्यान आकर्षित होता ही। गोरे व्यापारियोंने श्री काछलिया सेठ पर दबाव डाला कि वे अिस आन्दोलनसे अलग रहें। गोरे व्यापारी काछलिया सेठके साहूकार ठहरे। दक्षिण अफ्रीकाके व्यापारमें व्यापारीकी सारी पूंजी लगी रहती थी और अुसके पास दुकानमें अपनी पूंजीसे कओ गुनी कीमतका माल होता था। दुकानकी प्रतिष्ठा पर गोरे व्यापारी हिन्दुस्तानी व्यापारियोंको अमुक मियादके भीतर पैसे चुकानेकी शर्त पर माल देते थे। सत्याग्रहकी लड़ाओमें लगा हुआ तन और मन व्यापारको किस तरह संभाल सकता था? अिस पर भी मांगनेवालोंका जान-बूझकर तकाजा होता था। परन्तु श्री काछलिया सेठ अपनी बात पर अडिग रहे। साहूकारोंकी सभा हुओ। अुसमें श्री काछलिया सेठको बुलाया गया और खूब धमकियां दी गओं: "तुम्हारी अिज्जत चली जायगी, तुम्हारा व्यापार नष्ट हो जायगा, तुम्हारा माल मिट्टीके भाव नीलाम होगा और हम अपना लेना पाओ-पाओ वसूल करनेमें जरा भी देर नहीं करेंगे। अिसलिअे तुम अपना भला चाहते हो तो अिस आन्दोलनसे अलग रहो।" अिन धमकियोंका जवाब श्री काछलिया सेठने दृढ़तासे दिया: "आपके द्वेष-भावसे मेरा व्यापार नष्ट होता हो तो भले ही हो जाय, परन्तु स्वीकार की हुओ देशसेवा करनेमें मैं पीछे कदम तो हरगिज नहीं हटा सकता।" श्री काछलिया सेठ पहाड़की तरह अटल रहे। द्वेषी गोरे व्यापारियोंने अुन पर दावे किये। श्री काछलिया सेठने पूरी अीमानदारीसे अपनी दुकानका सारा व्यापार अदालतको सौंप दिया और वर्षोंका जमा हुआ अपना व्यापार नष्ट हो जाने दिया। यह सब सहन करके कठिनाअियोंकी भट्टीमें से श्री काछलिया सेठ शुद्ध कंचन बनकर बाहर निकले। अंतमें गोरे व्यापारियोंने और हिन्दुस्तानियोंने अुनकी मर्दानगीकी कदर तो की ही। लड़ाओ खत्म होनेके बाद व्यापारीके रूपमें भी श्री काछलिया सेठकी प्रतिष्ठा अच्छी मानी गओ और वे फिर संपन्न हो गये।

अिस तरह ट्रान्सवालके मुट्ठीभर हिन्दुस्तानियोंमें से कितने ही व्यापारियों, युवकों और बहनोंकी परीक्षा हुअी। परीक्षासे अुनकी शक्ति बढ़ी और अन्तमें अुनकी जीत हुअी।

१४
'हिन्द स्वराज्य'

सत्याग्रहकी लड़ाअी अिस तरह आरम्भ हुअी और अुसने व्यवस्थित रूप लिया। सरकारने माना था कि सत्याग्रही थक जायंगे, परन्तु सत्याग्रही तो कभी थकता नहीं। हमेशा गिरफ्तारियां होती ही रहतीं। अितनेमें लड़ाअीमें अेक नअी लहर आअी। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंने दो शिष्ट-मंडल भेजनेका निश्चय किया। अेक हिन्दुस्तानमें और दूसरा अिंग्लैण्डमें। सर्वश्री पोलाक, अेम० अे० कामा, अेम० जी० नायडू और अी० अेस० कुवाडियाको हिन्दुस्तान भेजना निश्चित हुआ। सर्वश्री अेम० के० गांधी, अी० अेम० काछलिया, हाजी हबीब और वी० अे० चेट्टियारको अिंग्लैण्ड भेजना निश्चित हुआ। ट्रान्सवालकी सरकारको यह अच्छा नहीं लगा। शिष्ट-मंडलके दोनों देशोंमें जानेका अर्थ होता ट्रान्सवालकी सरकार और अुसके राजकाजकी फजीहत और अुसकी निंदा। अिसे वह कैसे सहन करती? अिसलिअे सरकारने दोनों मंडलोंके सदस्योंमें से सर्वश्री काछलिया, कुवाडिया, कामा और चेट्टियारको पकड़ लिया। सरकारकी अिस कार्रवाअीसे कौममें और अुत्साह बढ़ा और शिष्ट-मंडलका कार्यक्रम तो कायम ही रहा। दोनों शिष्ट-मंडल बिदा हुअे। अिंग्लैण्डके लिअे रवाना होनेवाले शिष्ट-मंडलमें गांधीजी और श्री हाजी हबीब थे। वे सन् १९०९ के सितम्बर मासमें विलायत पहुंचे। वहां अुन्होंने लॉर्ड क्रू से मुलाकात की। अुस समय दक्षिण अफ्रीकाका यूनियन स्थापित करनेके लिअे दक्षिण अफ्रीकाके सारे मंत्री अिंग्लैण्डमें मौजूद थे। बड़ी सरकारने अिसके साथ ही हिन्दुस्तानियोंके प्रश्नका भी निपटारा करनेका आग्रह किया। परन्तु जनरल स्मट्सने किसी भी तरह अिस बातको स्वीकार नहीं किया। ट्रान्सवालमें रंगभेद-रहित साधारण कानून बनानेसे अुन्होंने साफ अिनकार कर दिया। रंगभेदका कानून बनानेके बारेमें अुनका अितना अधिक दुराग्रह था कि बड़ी सरकारका दबाव जरा भी काम नहीं आ सका। अिस दृष्टिसे तो अिंग्लैण्ड गया हुआ शिष्ट-मंडल असफल ही कहा जायगा। परन्तु अुसके सिवा दूसरा काम बहुत हुआ। अुस समय गांधीजीने जो कठोर परिश्रम किया

अुसका वर्णन अुनके साथी श्री हाजी हबीबने अेक सभामें मार्मिक शब्दोंमें किया था। शिष्ट-मंडलके ट्रान्सवाल वापस आनेके बाद जोहानिसबर्गमें मुसलमान भाअियोंने श्री हाजी हबीबको मानपत्र देनेके लिअे अेक सभा की। अुसमें गांधीजीको भी आमंत्रण दिया गया। श्री हाजी हबीबकी सेवाकी कदर बहुतसे भाअियोंने अुनकी बड़ाअी करके की। कुछने शिष्ट-मंडलके सदस्यकी हैसियतसे अिंग्लैण्डमें अुनके द्वारा की गअी सेवाका वर्णन भी किया। गांधीजीने भी श्री हाजी हबीबकी सेवावृत्ति, अुनक सरल स्वभाव और देशके प्रति अुनके भक्तिभाव आदिका वर्णन किया। अिन सबके अुत्तरमें श्री हाजी हबीबने मजाकमें बताया कि, “मेरे मुसलमान भाअी मुझे जो अिज्जत दे रहे हैं अुसका कारण मैं अच्छी तरह समझता हूं। अिंग्लैण्डके शिष्ट-मंडलमें अुन्होंने मुझे गांधी भाअीके साथ भेजा और वहां मैंने जो सख्त काम किया अुसकी कद्र करके वे मेरा आदर करें अिसमें कोअी बुराअी नहीं है; और सचमुच मैंने बहुत काम किया है। अपने कामकी और अुसके असरसे होनेवाली थकानकी मैं क्या बात कहूं? हमारे गांधी भाअी रातको जो पत्र लिखते, अुनके लिफाफों पर डाकके टिकिट रातके अेक बजे तक चिपका कर मैं थककर चूर हो जाता था। अैसे मेरे कठोर परिश्रमके लिअे आप सब भाअी मेरा आदर करते हों, तो जरूर मैं अुसके योग्य हूं।” श्री हाजी हबीबने गांधीजीके परिश्रमका वर्णन अिन मनोरंजक शब्दोंमें किया था। परन्तु अिस शिष्ट-मंडलके कामके सिवा गांधीजीने जो काम किया अुसके प्रतापसे अुनके अपने और भारत-भूमिके भावी जीवनकी रूपरेखा निर्धारित हो गअी। अुस समय देशभक्त विनायक सावरकर, श्री शामजी कृष्ण वर्मा और श्री हरदयाल वगैराकी क्रांतिकारी मंडली अिंग्लैण्डमें थी। अुनके साथ हिन्दुस्तानके भविष्यके बारेमें गांधीजीकी जी खोलकर चर्चा हुअी। हिंसा, अहिंसा, सत्याग्रह, विप्लव और जिस स्वराज्यके लिअे अिन सब साधनोंका विचार होता था वह स्वराज्य कैसा होना चाहिये आदि अनेक विषयों पर चर्चाअें हुअीं। गांधीजीकी चर्चा सिर्फ चर्चाके लिअे नहीं होती, बल्कि अुसके अनुसार आचरण करनेके लिअे होती है। अिन सारी चर्चाओंमें गांधीजीने जो कुछ सोचा अुसके परिणामस्वरूप अुन्होंने किल्डोनल कैसल नामक जहाजमें ही ‘हिन्द स्वराज्य’ नामकी पुस्तक लिखी। यह जहाज १३ नवम्बरको अिंग्लैण्डसे रवाना हुआ था। अिस पुस्तकके विषयका या अुसके गुण-दोषोंका वर्णन करना मेरी शक्तिसे बाहरका काम है। मेरी यह नम्र मान्यता है कि जिसने अिस

पुस्तकको नहीं पढ़ा हो, वह गांधीजीकी प्रवृत्ति और सत्याग्रहकी लड़ाओीको नहीं समझ सकता। यह पुस्तक हिन्दुस्तानके स्वराज्य और अुसे प्राप्त करनेके आवश्यक साधन सत्याग्रह आदिकी नअी विचारसरणीका निचोड़ है। यह पुस्तक अुन्होंने सन् १९०९ में लिखी थी। आज ३४ वर्ष बीत जाने पर भी गांधीजीकी हरअेक प्रवृत्ति अुस पुस्तकमें बताये हुअे सूत्रके मूर्तरूपमें विकसित हुअी है। ३४ वर्ष पहले गांधीजीने चरखा देखा तक न होगा। सन् १९१६–१७ में अुन्होंने पहले-पहल पुराने ढंगका चरखा किसी घरकी छतके कूड़े-करकटमें से अुसी समय अुतारा हुआ देखा था। तब अुसके दर्शन करके अुन्हें अैसा आनन्द हुआ, मानो अुन्होंने हिन्दुस्तानके तारनहारके दर्शन किये हों। अैसे चरखेको अुन्होंने चौंतीस वर्ष पहले देखे बिना भी भारतका तारनहार मान लिया था। यह पुस्तक सारे जगतके कल्याणके लिअे लिखी गअी गांधीजीकी पहली पुस्तक है। अिसे हम भारतकी स्वराज्य-गीता कह सकते हैं।

गांधीजीका ‘हिन्द स्वराज्य’ प्रकाशित हुआ तब अुसके विषयमें अिंग्लैण्डमें और दक्षिण अफ्रीकामें बड़ी चर्चा हुअी। अुसमें बताये गये विचार अुस युगके लिअे नये थे। जो प्रथा, जो व्यवहार, जो पद्धति देशके लिअे और मानव-जातिके लिअे लाभदायक मानी जाती रही अुसका गांधीजीने खंडन किया। जो धंधे और अुन्हें करनेवाले लोग प्रतिष्ठित और परोपकारी माने जाते थे, गांधीजीने अुनकी निंदा की और अुन्हें अनर्थकारी बताया। जो दशा निकृष्ट और दुःखद समझी जाती थी अुसे अूंचा समझा। अैसे विचारोंसे बहुतसे लोग विचारमें पड़ गये, बहुतसे घबरा गये और बहुतोंको क्रोध आया। अैसे मित्रों और अपरिचित सज्जनोंने गांधीजीसे सवाल-जवाब किये। अिस स्थान पर मैं अैसे अेक-दो पत्र दे दूं, तो ‘हिन्द स्वराज्य’ में प्रगट किये गये विचारोंके बारेमें स्पष्टता हो जायगी।

“फागुन बदी ७, सं० १९६६

“चि० मगनलाल,

“तुम्हारा पत्र मिला। तुम मेरे जवाबको समझ सको, अिसलिअे तुम्हारा पत्र वापस भेज रहा हूं।

“तुमने जो शंकाअें अुठाअी हैं, अुनका स्पष्टीकरण करनेकी मैं कोशिश करूंगा। परन्तु शायद अुससे तुम मेरे विचारोंको पूरी तरह समझ नहीं सकोगे। अगर ‘हिन्द स्वराज्य’ अेक-दो बार फिर पढ़ लोगे, तो जो स्पष्टीकरण तुमने चाहा है वह अुसीमें से संभवतः तुम्हें मिल जायगा।

"जिस हद तक हमने नआी सभ्यताको ग्रहण किया है, अिसमें शक नहीं कि अुसी हद तक हमें पीछे हटना पड़ेगा। यह भाग सबसे कठिन है, परन्तु अिसे करना ही पड़ेगा। हम गलत रास्ते लग जायं तो वापिस लौटे बिना काम नहीं चल सकता। आज जो भोग हम भोग रहे हैं अुनके बारेमें हमें वीतराग होना ही पड़ेगा। अैसा होनेसे पहले अुनके प्रति मनमें तिरस्कार पैदा होना चाहिये। जो साधन लाभदायक दिखाअी देंगे वे तो छोड़े नहीं जायंगे। जिसे अनुभव द्वारा यह समझमें आ जायगा कि अमुक वस्तुसे दीखनेवाले लाभकी अपेक्षा हानि अधिक है वही अुस वस्तुको छोड़ेगा। मुझे तो लगता है कि पत्र जल्दी भेजे जा सकनेसे हमें कोअी फायदा नहीं हुआ। जब हम रेल वगैरा साधनोंको छोड़ देंगे, तब पत्रोंकी झंझटमें नहीं पड़ेंगे। जिसमें वस्तुतः दोष न हो अुस वस्तुका हम अेक हद तक अुपयोग कर सकते हैं। हम जो सभ्यताके घेरेमें घिरे हुअे हैं, वे अुतने समय तक डाक वगैराका अुपयोग कर सकते हैं। हम ज्ञानपूर्वक अिनका अुपयोग करेंगे, लेकिन अिनके पीछे पागल नहीं बनेंगे। और व्यवसायोंको बढ़ानेके बजाय हम दिनोंदिन अुन्हें घटायेंगे। जो अिस तरह समझेंगे वे जिन गांवोंमें डाक या रेल नहीं हैं वहां अुसे ले जानेके मोहमें नहीं पड़ेंगे। जहाज वगैरा पाखण्ड अेकाअेक नहीं मिटेंगे और सब लोग अुनका त्याग नहीं करेंगे, अैसे डरसे तुम्हें और मुझे बैठे रहकर अुनका अुपयोग बढ़ानेकी जरूरत नहीं। अेक आदमी भी यदि अुनका अुपयोग कम करेगा या बन्द करेगा, तो दूसरे लोग भी वैसा करना सीखेंगे। दूसरे करें या न करें, परन्तु अैसा करना अच्छा है यह माननेवाले तो वैसा करते ही रहेंगे। सत्यके प्रचारकी यही पद्धति है। दुनियामें और कोअी पद्धति मैंने देखी नहीं है।

"पार्लियामेण्टका मोह छूटना कठिन काम है। चमड़ी अुधेड़ना, जलाना और नाक-कान काटना जंगलीपन था। परन्तु चंगेजखां, तैमूरलंग वगैराके जुल्मसे पार्लियामेण्टका जुल्म कहीं ज्यादा है। अिसलिअे हम अुसके भ्रममें पड़े हैं। आजकलका जुल्म तो मोहजाल है, अिसलिअे यह ज्यादा नुकसान करता है। अेक आदमीके स्वतंत्र अत्याचारसे तो निपटा जा सकता है। परन्तु लोगोंके नामसे लोगों पर जुल्म हो तो अुससे निपटना बहुत मुश्किल है।

"राजा अेडवर्ड अकेले राज्य करते हों तो ठीक, परन्तु तुम्हारा और मेरा तो हर अंग्रेज राजा है। अिस वाक्यका अर्थ तुम सोच लेना। अिसमें दुनियाके मोहकी बात नहीं है। हिन्दुस्तानकी साधारण बुद्धि तो यही मानती है कि

पार्लियामेण्ट अेक पाखंड है। सभ्यताके प्रवाहमें बहनेवाली असाधारण बुद्धि भी पार्लियामेण्टके मोहमें पड़ जाती है।

"डाकूके सामने दया काम नहीं देती, अैसा कहकर तुम आत्माके अस्तित्वसे ही अिनकार करते हो या अुसके गुणोंसे अिनकार करते हो। पतंजलि भगवानने दया आदिका महत्त्व अैसा बताया है कि अुसका विचार करनेमें भी आनन्द होता है। असल बात यह है कि डरने हमारे भीतर घर कर लिया है। अिसलिअे सत्य और दया आदि गुणोंका विकास नहीं हो सकता। अुसके बाद हम यह मानते हैं कि दया क्रूर मनुष्यों पर काम नहीं देती। जो दया करे अुस पर हम यदि दया करें, तो यह दया नहीं परन्तु दयाका बदला है।

"हमारी रक्षा कोअी मुफ्तमें करे तो भी हम कमजोर माने जायंगे और किसीको पैसे देकर हम अपनी रक्षा करायें तो भी कमजोर ही माने जायंगे। डाकुओं वगैराके डरसे अगर हमें मुक्त होनेके लिअे तीसरे आदमीकी मदद लेनी पड़े तो हम स्वराज्यके योग्य नहीं हैं। अगर अुन्हें शरीर-बलसे मात करना होगा तो वह शरीर-बल हमें खुद अपने भीतर पैदा करना पड़ेगा। फिर कर देनेकी जरूरत नहीं मालूम होगी। स्त्री अधिकारसे पतिका संरक्षण चाहती है, परन्तु वह अबला ही मानी जाती है।

"स्वराज्य अुसके लिअे है जो समझता है। तुम और मैं तो आज भी स्वराज्य भोग सकते हैं। अिसी तरह सबको सिखलाना होगा। किसीका दिलाया हुआ स्वराज्य तो परराज्य ही है। फिर भले ही दिलानेवाले हिन्दुस्तानी हों या अंग्रेज।

"गोरक्षा-प्रचारिणी सभाको मैंने गोवध-प्रचारिणी सभा कहा, यह सच बात है। अुसका हेतु गायको कसाअीसे छुड़वाना या मुसलमानों पर दबाव डालकर अुसकी रक्षा करना है।

"रुपया देकर गायको छुड़वानेमें अुसकी रक्षा नहीं है, वह कसाअीको धोखा सिखानेका रास्ता है। मुसलमान पर दबाव डालनेसे वे गायका ज्यादा वध करेंगे, परन्तु अुन्हें रिझाअें या अुनके विरुद्ध सत्याग्रह करें तो वे गायकी रक्षा करेंगे। वह सभा तो हिन्दुओंको हिन्दूपन सिखानेवाली होनी चाहिये।

"बैलको कम खुराक देकर, आर भोंककर, बहुत काम लेकर और सता-सता कर मारनेसे तो तलवारके अेक झटकेसे अुसे मार डालना ज्यादा अच्छा है। रामचन्द्रजी आदिके अुदाहरण अक्षरशः सही समझनेमें कअी अुलझनें पैदा हो सकती हैं। दस सिरवाला और बीस हाथवाला रावण मनुष्यके शरीरके रूपमें होना

मुझे संभव नहीं लगता। परन्तु अुसे महान विषयी जड़ पदार्थ मानकर रामचन्द्ररूपी चैतन्यने अुसका नाश किया, अैसा मानें तो यह समझमें आने लायक बात है। मद, मोह, महा–ममता–रजनी–तम–पुंजको मिटानेवाले दिवाकरकी सेना जैसा रूप तुलसीदासजीने रामचन्द्रजीको दिया है। यदि हममें मद, मोह और ममता न हो, तो क्या तुम्हें अैसा जान पड़ता है कि किसी भी शरीरका नाश करनेको हमारे जीमें जरा भी अिच्छा हो सकती है? यदि नहीं कहो तो मद, मोह, ममता-रहित रामचन्द्रजी, दयानिधि रामचन्द्रजी, रावणका नाश कैसे कर सकते थे? फिर भी जब हम अुनकी विभूतिको प्राप्त कर लेंगे, लक्ष्मणजीकी तरह चौदह वर्ष तक निद्रा छोड़ देंगे और ब्रह्मचर्यका पालन करेंगे, तब हम देख लेंगे कि शरीर-बलका अुपयोग कहां जरूरी है।

"मैं यह कहना चाहता हूं कि पद-नमनसे सब कुछ हो जाता है। ट्रान्सवालका अुदाहरण अच्छा दिया। अूपरका भाव है, अितना मुंहसे कह देना काफी नहीं है। अुस भावको परीक्षामें अुत्तीर्ण होना चाहिये। हरिश्चन्द्रका सत्य सत्य सिद्ध हुआ अुससे पहले अुन्हें कितने संकट झेलने पड़े, अिसका खयाल करो। सुधन्वाकी भक्ति सच्ची साबित हुअी अुससे पहले अुसे क्या क्या कष्ट सहन करना पड़ा, अिसका विचार करो। यह मान लेनेका कोअी कारण नहीं कि ये सब दन्तकथायें हैं। नामरूप अलग अलग हो सकते हैं। जिसने ये कथायें रची हैं, अुसने अनुभव बताया है। ट्रान्सवालमें भी जो बकवास मेरे जैसे लोग कर रहे हैं, अुनकी परीक्षा हो रही है। और यह भी समझ लो कि जो बहुतसे लोग सत्याग्रही माने जाते थे वे दिखावटी साबित हुअे हैं। अब सच्चे सत्याग्रही किसे मानें? दया आदि गुण रखनेवालोंको। यह कहीं नहीं लिखा कि सत्याग्रहीको दुःख नहीं भोगना पड़ेगा। और दुःख क्या होता है? मन ही बंधन और मोक्षका कारण है, यह गीताका वाक्य है। सुधन्वा अुबलते हुअे तेलमें पड़े थे। दुःख देनेवालेने अिसे दुःख माना। सुधन्वाको तो अपनी भक्तिका प्रादुर्भाव दिखानेका सुन्दर अवसर मिला।

"सभी अेक साथ गरीब हो जायं या रुपयेवाले हो जायं, यह नहीं हो सकता। परन्तु सारासारका विचार करने पर अितना तो पता चलता है कि किसानों पर सारी दुनियाका आधार है। किसान गरीब ही हैं। वकील अगर परमार्थकी शेखी मारें, तो अुन्हें अपना गुजर शरीर-श्रमसे करके वकालत मुफ्त करनी चाहिये। वकील आलसी हैं, यह तुम्हें अेकाअेक पता नहीं चल सकता। बादमें मौज अुड़ायेंगे, बड़े बनेंगे, धन कमायेंगे, अिस धुनमें वकालतका विषयी थकने पर भी अुसी तरह तन-तोड़ मेहनत करता है, जिस तरह विषयी मनुष्य

थकने पर भी विषयोंमें लीन रहता है। अिसके पीछे हेतु यह है कि बादमें वह अैश-आराममें समय बिताना चाहता है। अिसमें कुछ अतिशयोक्ति है, अिसका मुझे भान है। परन्तु अधिकांशमें अूपरका विचार ठीक है।

"डॉक्टरोंकी टोली क्या देशसेवा करेगी? पांच-सात वर्ष तक मुर्दे चीर कर, हिंसा करके, व्यर्थके सूत्र रट कर वे क्या बड़ा पराक्रम करेंगे? शारीरिक रोग मिटानेकी शक्तिसे देशका क्या लाभ होगा? अुससे पूरा पूरा शरीरका मोह बढ़ता है। बीमारियां कैसे न हों, अिस तरहकी योजना बनाना तो हम वैद्यक शास्त्रका ज्ञान न होने पर भी जान सकते हैं। अिसका यह अर्थ नहीं कि वैद्य-डॉक्टर रहें ही नहीं। वे तो हमारे पीछे रहेंगे ही। कहनेका हेतु यह है कि अिस धंधेको बड़ा रूप देकर अुसमें बहुतसे युवक जो सैकड़ों रुपये और कितने ही वर्ष खोते हैं, वह न खोना चाहिये। यह जान लेनेकी जरूरत है कि विलायती डॉक्टरोंसे हमें रत्ती भर भी फायदा न तो हुआ और न होनेवाला है।

"तुम्हारी शंकाओंके अुत्तर तो पूरे हो चुके। हिन्दुस्तानके अुद्धारका भार व्यर्थ अपने सिर पर न लो। तुम अपना ही अुद्धार करो। यह भार ही बहुत है। सब कुछ तुम अपने पर ही लागू करो। तुम्हीं हिन्दुस्तान हो, यह जाननेमें ही आत्माकी प्रौढ़ता है। तुम्हारे अुद्धारमें ही हिन्दुस्तानका अुद्धार है। और सब तो मिथ्या है। तुम्हें यह अच्छा लगे तो अिसमें लगे रहो। औरोंकी फिक्र तुम्हें या मुझे करनेकी जरूरत नहीं रहती। औरोंकी फिक्र करनेमें हम अपनी बातें भूल जायंगे तो सब कुछ खो बैठेंगे। अिस पर परमार्थकी दृष्टिसे सोचना, स्वार्थकी दृष्टिसे नहीं। और कुछ पूछना हो तो पूछना।

मोहनदासके आशीर्वाद"

१५

कामचलाअू समझौता

दूसरा शिष्ट-मंडल हिन्दुस्तान आया। अुसमें अकेले श्री पोलाक ही थे। अुन्होंने हिन्दुस्तानमें आकर श्री गोखलेकी मदद ली। सर्वेन्ट्स ऑफ अिंडिया सोसाअिटीने हिन्दुस्तान भरके बड़े बड़े शहरोंमें सभाअें करनेका प्रबन्ध किया। श्री पोलाकने अपनी सादगी, सरलता, हिन्दुस्तानियोंके प्रश्नके सम्बन्धमें अपनी पूरी जानकारी और हिन्दुस्तानियोंके प्रति अपनी सहानुभूति आदिके कारण हिन्दुस्तानमें दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके दुःखोंके बारेमें भारी जागृति

पैदा की। जेलमें मृत्यु पाये हुअे हिन्दुस्तानी युवकोंके बारेमें और निर्वासित किये गये हिन्दुस्तानियोंमें से भाअी नारायण स्वामीके डेलागोआ-बेमें हुअे करुण अवसानके विषयमें सच्चे हाल जानकर हिन्दुस्तानकी जनताकी भावना अुत्तेजित हुअी। चारों कोनोंसे ट्रान्सवाल सरकारकी हिन्दुस्तानियोंको निर्वासित करनेकी नीतिका घोर विरोध हुआ। अिस समय श्री रतन ताताने गांधीजीको २५००० रुपये सहायतार्थ भेजकर आर्थिक सहायता भी आरम्भ की और हिन्दुस्तानके राजा-महाराजाओंने भी अुसमें भाग लिया। अुस वक्त लगभग १० हजार पौंडकी मदद हिन्दुस्तानसे गअी थी। अिस प्रकार लगभग अेक वर्षके सतत आन्दोलनसे बड़ी सरकारका ध्यान भी ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानियोंकी तकलीफोंकी ओर आकर्षित हुआ। अुसने किसी भी तरह हिन्दुस्तानियोंको ट्रान्सवालसे निर्वासित करना बन्द करवाया और जिन्हें निर्वासित किया गया था अुन्हें वापस जानेकी आज्ञा दिलवाअी। जब श्री पोलाक हिन्दुस्तानसे दक्षिण अफ्रीका लौटे, तब सारे निर्वासित सत्याग्रहियोंको साथ लेकर वे २८ सितम्बरको डरबनके बन्दरगाह पर अुतरे। लॉर्ड अेम्पथीलने भी लॉर्डसभामें ट्रान्सवाल सरकारकी अिस अत्याचारी नीतिके विरुद्ध बड़ा आन्दोलन मचाया। अिन सब परिस्थितियोंके कारण जनरल स्मट्स और अुनके साथी कुछ पीछे हटे। परन्तु अुनके दिल नहीं बदले। दिलमें तो अुनके यही था कि ट्रान्सवालमें अेक भी हिन्दुस्तानीको न रहने दिया जाय। परन्तु वे क्या करते? हिन्दुस्तानी लोग भी अपना बचाव करनेकी काफी शक्ति रखते थे। अिसी अर्सेमें दक्षिण अफ्रीकाका यूनियन स्थापित हुआ। १ जून, १९१० को दक्षिण अफ्रीकाका यूनियन घोषित हुआ और चारों प्रान्त अेक सत्ताके अधीन हो गये। अिस अवसरका लाभ अुठानेका बड़ी सरकारने प्रयत्न किया और यूनियनमें बसनेवाले हिन्दुस्तानियोंकी लड़ाअी अुचित होनेके कारण यूनियनके मंत्रियों पर यह दबाव डाला कि वे अुसका निपटारा कर दें। अिसमें अुसने नीचे लिखे मुद्दे पेश किये:

(१) सन् १९०७ का हत्यारा कानून रद कर दिया जाय।

(२) कानूनसे जातिभेदको निकाल दिया जाय।

(३) हिन्दुस्तानी कौमकी जरूरतोंके अनुसार हर साल शिक्षित हिन्दुस्तानियोंको प्रवेश करने दिया जाय।

(४) यूनियनके दूसरे प्रान्तोंमें भी भविष्यमें हिन्दुस्तानियोंके अधिकारोंकी रक्षा की जाय।

यूनियनके मंत्रियोंको मजबूर होकर अिन प्रस्तावोंके साथ सहमत होना पड़ा। आखिर सन् १९११ में अिमिग्रेशन-बिल यूनियन गजटमें प्रकाशित हुआ। फिर भी अुससे कुछ लाभ नहीं हुआ। जिसकी नीयत अच्छी न हुआी हो अुसके सामने अनेक सिफारिशें करनेसे भी कोआी बड़ा लाभ नहीं होता। वह अीमानदारीसे कोआी काम नहीं करेगा। यूनियन सरकारने भी अैसा ही किया। अिमिग्रेशन-बिलसे कोआी काम नहीं बना। अुससे हिन्दुस्तानियोंके मनको सन्तोष नहीं हुआ। नये बिलमें ट्रान्सवालके सिवा और प्रान्तोंके हिन्दुस्तानियोंके अधिकारोंकी रक्षा जरा भी नहीं होती थी। हत्यारा कानून रद कर दिया गया, परन्तु रंगभेद नहीं मिटाया गया। अितना ही नहीं, यूनियन स्थापित होनेके बाद रंगभेद बढ़ गया। सभी प्रान्तोंके गोरे लोगोंमें जो रंगद्वेष बंटा हुआ था, वह यूनियनमें अिकट्ठा हो गया और तीव्ररूपमें प्रकट हुआ। यह प्रकाशित बिल पार्लियामेण्टमें पेश हुआ, अुससे पहले हिन्दुस्तानी नेताओंने अुसका सख्त विरोध किया। सरकारके साथ अिस सम्बन्धमें अुन्होंने पत्र-व्यवहार किया।

बड़ी सरकारके प्रस्तावोंको अिस नये बिलमें जरा भी स्वीकार नहीं किया गया। नेताओंने मांग की कि नये बिलमें सिर्फ ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानियोंको राहत देनेका कानून बनाया जाय और दूसरे प्रान्तोंको वैसा ही रहने दिया जाय। परन्तु सरकारने अिसे मंजूर नहीं किया। अिसलिअे सभी प्रान्तोंके हिन्दुस्तानियोंकी ओरसे शोर मचा। अिसके परिणामस्वरूप वह बिल यूनियन पार्लियामेण्टमें पास नहीं हुआ। परन्तु सरकारने कामचलाअू समझौतेका अिन्तजाम किया। समझौता यह था कि सन् १९१२ की पार्लियामेण्टकी बैठकमें नया बिल पास न हो जाय तब तक सरकार किसी भी आपत्तिजनक कानूनका अमल बन्द रखे और हिन्दुस्तानी जनता सत्याग्रहकी लड़ाअी बन्द रखे। सन् १९१२ की पार्लियामेण्टमें बिल पेश किया गया, परन्तु अुसकी दशा पहले वर्ष जैसी ही हुआी। अिसलिअे वह बिल अेक वर्षके लिअे फिर स्थगित कर दिया गया और कामचलाअू समझौतेकी अवधि भी बढ़ा दी गअी।

गांधीजीकी साधना

दूसरा भाग

१

दक्षिण अफ्रीकामें देशभक्त गोखलेजी

गांधीजी देशभक्त गोपाल कृष्ण गोखलेजीसे दक्षिण अफ्रीकामें आकर वहां अपने देशभाअियोंकी अच्छी-बुरी हालत देख लेनेकी बिनती बहुत समयसे बार-बार किया करते थे। अितनेमें कामचलाअू सुलहके कारण दक्षिण अफ्रीकामें कुछ शान्ति हुअी। हिन्दुस्तानमें भी दिल्ली दरबारके कारण सद्-भावनावाला वातावरण पैदा हो गया था। अैसे मौके पर श्री गोखलेके दक्षिण अफ्रीका जानेसे सद्भावना कुछ बढ़ सकती थी और हिन्दुस्तानियोंके प्रश्नका निपटारा अच्छी तरह हो सकता था। हिन्दुस्तानके कोअी नेता आज तक अुपनिवेशोंमें नहीं गये थे। बम्बअीके बेताजके बादशाह सर फीरोजशाह बड़ी धारासभाको हिला रहे थे। श्री गोखले हिन्दुस्तान और बड़ी सरकारके बीच मीठी जंजीर बनकर अैसी कोशिश करते थे कि सब जगह शान्ति रहे। अुपनिवेशोंके गोरोंको हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानके लोगोंकी कल्पना नहीं थी; यदि थी तो अितनी ही कि हिन्दुस्तानकी जनता बिलकुल अपढ़ है, अनेक कुरीतियोंसे दूषित हो गअी है, निकम्मी और संस्कारहीन है। अैसे लोगोंका स्थान अुपनिवेशोंमें हो तो गोरे लोगोंके नौकर-चाकरके रूपमें ही हो सकता है; लकड़ी और पानी ढोनेवाले मजदूरोंके रूपमें ही हो सकता है। अुपनिवेशोंमें स्वतंत्र रहकर, स्वतंत्र व्यापार करके या स्वतंत्र गृहस्थके रूपमें जीवन-निर्वाह करनेवाले और गोरे समाजके साथ समानताका दावा करनेवाले प्रतिस्पर्धियोंके रूपमें तो अुन्हें स्थान हरगिज नहीं मिल सकता। अुपनिवेशवासी गोरोंका हिन्दुस्तानियोंके बारेमें अैसा खयाल था। अिस खयालकी जड़ तो हिन्दुस्तानियोंकी गुलामी ही थी। पराधीन जातिके बारेमें राज्य करनेवाली जाति और सोच ही क्या सकती है? और अुन्हींकी नकल दूसरे देशोंके लोग भी करते थे। अन्य किसी अुपनिवेशकी अपेक्षा ब्रिटिश अुपनिवेशोंमें हिन्दुस्तानियोंके बारेमें अैसा हलका खयाल अधिक मात्रामें था। और दक्षिण अफ्रीकामें तो गोरे लोगोंको हिन्दुस्तानियोंका पहला परिचय गिरमिटिया मजदूरोंके रूपमें ही हुआ था। अिसलिअे 'प्रथमग्रासे मक्षिकापातः' वाली बात हुअी। मानो समूचा हिन्दुस्तान गिरमिटिया मजदूरों जैसे अपढ़ और संस्कारविहीन लोगोंसे ही भरा हुआ हो। वे हिन्दुस्तानी व्यापारीको 'कुली व्यापारी', हिन्दुस्तानी बैरिस्टरको 'कुली बैरिस्टर' और

हिन्दुस्तानी डॉक्टरको 'कुली डॉक्टर' कहकर तिरस्कारकी दृष्टिसे देखते थे। गांधी जैसा अेक व्यक्ति अुनकी दृष्टिमें आया। परन्तु अुसकी कीमत तो जो गहरी दृष्टिसे देखता अुसीको मालूम हो सकती थी। और अुनकी सरलता और जीवनकी सादगीसे तो गोरे लोग प्रभावित होनेवाले थे ही नहीं। जब श्री गोखले वहां गये तब अुनका गौरव, गंभीरता, संस्कारिता, राजनीतिमें विलक्षण निपुणता, और साम्राज्यमें अुनकी अच्छी प्रतिष्ठा देखकर वहांके गोरोंकी आंखें खुलीं। क्या हिन्दुस्तानी भी अैसे राजनीतिज्ञ और व्यवहारकुशल हो सकते हैं, अैसे प्रश्नोंने अुनके दिलोंको बेचैन कर दिया। अिसके सिवा गोखलेजी दक्षिण अफ्रीकामें गये तब वहांके हिन्दुस्तानी लोगोंने अुनका सत्कार भी अैसे बादशाही और शानदार ढंगसे किया कि गोरे चकित रह गये। बहुतोंने गांधीजीसे पूछा कि "गोखलेजी बिलकुल सादे हैं, आपको भी सादगी पसन्द है; तो फिर गोखलेजीके स्वागतमें हजारों रुपये किसलिअे फूंक दिये?" अुत्तरमें गांधीजीने बताया, "गोखलेजीका हमें बादशाही सम्मान करना ही चाहिये। वे यहां सीधे-साधे गोखलेजीके रूपमें नहीं आये हैं, बल्कि ३३ करोड़ जनताके प्रतिनिधिकी हैसियतसे आये हैं। हम अपने नेताओंका अुचित आदर न करें, तो जो हमारा अपमान करते हैं वे अुनकी ओर सम्मानकी दृष्टिसे कैसे देखेंगे? अैसे मौके पर खर्चकी तरफ देखना सादगी नहीं, बल्कि अविवेक और अपने हृदयकी दरिद्रताका प्रदर्शन करना है। अिसलिअे जो सम्मान दक्षिण अफ्रीकामें बादशाहको भी नहीं मिल सकता, वह भव्य स्वागत श्री गोखलेका करना हिन्दुस्तानियोंका परम कर्तव्य है।" और हुआ भी अैसा ही। श्री गोखले दक्षिण अफ्रीकामें जहां जहां गये, वहां वहां लोगोंके अुत्साहका पार न रहा। अज्ञानी गोरे हिन्दुस्तानियोंके नेताको देखकर पीछे हट जाते, पढ़े-लिखोंको अुनकी बुद्धि और विद्वत्ता देखकर आश्चर्य होता, अुच्च कोटिके गोरोंने अुनकी कार्यदक्षता, शान्त राजनीतिज्ञता और आचार-विचारकी श्रेष्ठताको देखकर अुनके सामने सिर झुकाया, गिरमिटिया हिन्दुस्तानियोंने माना कि हमारा कोअी राजा आया है और दूसरे हिन्दुस्तानियोंने माना कि हिन्दुस्तानकी लाज रखनेवाला कोअी भव्य देवदूत आया है। और काम भी अैसा ही हुआ।

सन् १९१२ में श्री गोखले लन्दनसे सीधे दक्षिण अफ्रीका गये। दक्षिण अफ्रीकाका वातावरण रंगद्वेषसे कितना भरा होगा, अिसका अनुभव अुन्हें लन्दनमें

ही मिल गया था। वे जिस जहाजमें रवाना होनेवाले थे, अुसके अेजेंटको अुन्होंने पहले दर्जेकी जगह सुरक्षित रखनेकी सूचना भेजी। अिस सूचनाके मिलते ही अेजेंट विचारमें पड़ गया। पहले दर्जेके विभागमें तो सब गोरे ही होते थे। अेक केबिनकी दो जगहोंमें से अेक गोरेको और दूसरी हिन्दुस्तानीको कभी दी जा सकती है? दूसरे जहाजमें कुछ भी हो, परन्तु यह तो अिंग्लैण्डसे दक्षिण अफ्रीका जानेवाला जहाज था। अिसलिअे अेजेंटने खबर भेजी कि जगह नहीं है। तलाश करने पर मालूम हुआ कि जगह तो है। श्री गोखलेने जान लिया कि अेजेंटके अिनकार करनेका क्या कारण है। अितनेमें यह बात अुस समयके भारत-मंत्री लॉर्ड क्रूको मालूम हुअी। अुन्होंने तुरन्त कोशिश करके श्री गोखलेके लिअे पहले वर्गकी जगह प्राप्त की। दक्षिण अफ्रीकाके सफरमें रेलमें या दूसरी जगह अैसा कटु अनुभव श्री गोखलेको न हो, अिसके लिअे यूनियन सरकारने काफी सावधानी रखी। अुनकी यात्राके लिअे रेलके खास सेलूनकी व्यवस्था की और यह अिन्तजाम किया कि अुनके साथ यूनियन सरकारका अेक बड़ा अफसर रहे, ताकि दक्षिण अफ्रीकाके प्रवासमें गोखलेजीके साथ रंगद्वेषका आदी बना हुआ कोअी अफसर या नागरिक भूलसे भी अवांछनीय व्यवहार न कर बैठे।

श्री गोखले केपकालोनीके केपटाअुन बन्दरगाह पर अुतरे। वहां गांधीजी और दूसरे सैकड़ों हिन्दुस्तानियोंने अुनका स्वागत किया। श्री गोखले और गांधीजीने परस्पर आलिंगन किया। अेक हिन्दुस्तानका योद्धा, दूसरा दक्षिण अफ्रीकाका योद्धा — मानो दोनों सहोदर हों — छोटे और बड़े भाअी हों और अेक-दूसरेके हृदयमें जरा भी भिन्नता न हो। अेक-दूसरेके दासानुदास हों। श्री गोखलेने गांधीजीसे कहा: "देखो गांधी, तुम बहुत दिनसे आनेको कहते थे। अिसलिअे तुम्हारे बुलानेसे मैं आ गया हूं। अब मैं यहांसे बिदा होअूं तब तक मेरा जो अुपयोग करना हो तुम कर लो। मैं कुछ जानता नहीं। मैं अपने-आपको और अपनी प्रवृत्तिको तुम्हारे सुपुर्द करता हूं। तुम जानो और तुम्हारा काम जाने। बादमें मुझे दोष न देना कि गोखलेने दक्षिण अफ्रीकामें आकर कुछ नहीं किया।"

यह कहकर गोखलेजीने शुरूसे ही गांधीजी पर प्रेमका जादू डाल दिया। गांधीजी भी अुनके वशमें हो गये। अुस समयसे गांधीजीने अपनेको श्री गोखलेकी तन्दुरुस्ती और प्रवृत्तिके लिअे जिम्मेदार मान लिया और खुद ही अुनके

व्यक्तिगत मंत्री बन गये। किस समय क्या करना चाहिये, वहांकी परिस्थिति कैसी है आदि सारी जानकारी वे गोखलेजीको देते, मुलाकातोंकी व्यवस्था करते, कार्यक्रम तैयार करते, सभाओंकी व्यवस्था करते, हिन्दुस्तानी और यूरोपीय नेताओंका परिचय कराते थे, और गोखलेजीका सब निजी काम भी वे ही करते थे। अुनके कपड़े धोना, अुनका बिस्तर बिछाना, अुनका पाखाना साफ करना, दातुन और स्नान आदिकी व्यवस्था करना, खानेका प्रबन्ध करना —— सब काम गांधीजी ही करते थे। अुन्होंने तो मान लिया कि गोखलेजीकी सेवा करनेका अलभ्य अवसर प्राप्त हुआ है, और अिसका लाभ अुन्होंने अच्छी तरह अुठाया। केपटाअुनका स्वागत, सार्वजनिक सभा, वहांकी मुलाकातें और वहांकी जानकारी जुटानेका काम पूरा होनेके बाद श्री गोखले किंबरलीके लिअे रवाना हुअे। वहांके हिन्दुस्तानियोंके साथ वे दो दिन रहे। वहांकी हीरेकी खानें अुन्होंने देखीं। गोखलेजीने खानोंके मालिकोंसे मुलाकात की और वहांसे जोहानिसबर्गके लिअे रवाना हुअे। जोहानिसबर्ग ट्रान्सवालका मुख्य केन्द्र ठहरा। वहां वे लगभग १५ दिन रहनेवाले थे। जोहानिसबर्गका अुत्साह अपूर्व था। किंबरलीसे खास तौर पर सजाअी हुअी स्पेशल गाड़ीमें वे जोहानिसबर्ग गये। स्टेशन और शहर सुन्दर ढंगसे सजाया गया था। शानदार जंगी जूलूस निकला। अुसकी भी व्यवस्था सुन्दर थी। जोहानिसबर्गमें गोखलेजीको लगभग अेक पखवाड़े आराम लेना पड़ा। अिसमें से हफ्ताभर तो वे बिछौनेमें ही रहे। सिरदर्द, थोड़े बुखार और कमजोरीके कारण गांधीजीने अुन्हें जरा भी तकलीफ नहीं दी। जोहानिसबर्गके पास माअुन्ट व्यू नामक स्थान पर श्री कैलनबैकके बंगले पर अुन्हें पूर्ण शान्तिमें रखा। अिस मौके पर गांधीजीने अपने अनुभवके अुपचार श्री गोखले पर खुद ही आजमाये। पेट पर और सिर पर मिट्टीकी पट्टियां रखीं। ‘स्टीम बाथ’ और ‘क्यूने बाथ’, आहारमें परिवर्तन आदिके अुपचारसे श्री गोखलेकी तबीयत अच्छी हो गअी। अिन पन्द्रह दिनोंके मीठे स्मरण याद करके आज भी गांधीजी आनन्द-विभोर हो जाते हैं। श्री गोखले कितने आनन्दी और मीठे थे और साथ ही जरूरत पड़ने पर कितने कड़े हो सकते थे, अिसका अनुभव अुनकी सेवामें रहनेवालोंको अच्छी तरह हो गया।

अेक दिन अेक संन्यासी श्री गोखलेसे मिलने आये और अुनके साथ बातचीत करके जोहानिसबर्गके हिन्दुओंकी अलग सभामें दस मिनिट अुपस्थित

रहनेका वचन अुनसे ले गये। दूसरे दिन गांधीजीको खबर लगी कि जोहानिसबर्गके हिन्दू गोखलेजीको अलग मानपत्र दे रहे हैं। अैसी बात सुनकर गांधीजी तो चौंक गये। व्यवस्था यह थी कि श्री गोखलेको दिये जानेवाले सभी मानपत्र अेक मुख्य समारोहमें दिये जायं। अैसा होने में ही मुख्य समारोहकी शोभा रहती और खींचतान न होती। परन्तु हिन्दुओंके समारोहमें दस मिनट हो आनेके आश्वासनका अर्थ अुस संन्यासीने यह लगाया कि गोखलेजीने हिन्दुओंका अलग मानपत्र लेना स्वीकार कर लिया है। अैसा होनेसे सारी बाजी बिगड़ जाती। श्री गोखलेका सम्मान करनेमें कौमें अेक-दूसरेसे अलग हो जातीं। यह बात मालूम होते ही गांधीजीने गोखलेजीसे पूछा: "आपने स्वामीजीको क्या अैसा आश्वासन दिया है कि आप हिन्दुओंकी तरफसे अलग मानपत्र लेंगे?"

गोखलेजीने जवाब दिया: "नहीं, नहीं, मुझसे अुन्होंने बहुत आग्रह किया अिसलिअे मैंने हिन्दुओंकी सभामें दस मिनिटके लिअे हो आनेको कहा है।"

यह सुनकर गांधीजीने अुन्हें सारी हकीकत समझाअी। जो स्वामीजी गोखलेजीसे आश्वासन ले गये थे, अुनका असली परिचय दिया। स्वामीजीका पूरा परिचय पानेके बाद गोखलेजी बोल अुठे: "गांधी, तुमने मुझे पहले ही अिस आदमीके बारेमें सावधान क्यों न किया?"

"परन्तु आपने ही अपनी शर्तसे अुलटा बरताव किया, तब क्या हो? अनजान आदमीको अिस तरहका आश्वासन देनेसे पहले आपको मुझसे पूछना तो चाहिये था?" गांधीजीने हंसकर अुत्तर दिया।

"और मेरे मंत्रीकी हैसियतसे तुम्हारा यह फर्ज नहीं था कि अमुक आदमीके साथ कोअी भी परिचय करनेसे पहले मुझे चेता देते?" गोखलेजीने भौंअें चढ़ाकर पूछा।

"दूसरे आदमीकी अिस तरह बिना कारण निन्दा करनेका काम मनुष्यके नाते मेरा नहीं है।"

"बहुत अच्छा। मैं जानता हूं तुम बड़े होशियार हो। अब तुम्हें लगता हो कि मेरी भूल हुअी है तो तुम अुसे सुधार लो।"

और सचमुच अिस जरासी बातका बतंगड़ बन गया। परन्तु गांधीजीने तुरन्त ही सारी बाजी सुधार ली। हिन्दुओंको सन्तोष हुआ और सारी हिन्दुस्तानी कौमका समारोह भी बढ़िया रहा।

अिस तरह दोनोंमें रोज विनोद-वार्ता होती रहती थी।

२

दासानुदास गोखलेजी

जोहानिसबर्गमें गोखलेजी पन्द्रह दिन रहे, अुसमें अुन्होंने अधिक आनन्द अुठाया या गांधीजीने, अिसका निर्णय करना मेरे लिअे कठिन है। यह तो दोनोंके हृदय ही जानें। और दोनोंके हृदय तो अपने-अपने आनन्दको ही दूसरेसे अधिक आह्लादजनक मानते। गोखलेजी कुछ पढ़ते-पढ़ते पुकारते: "अरे, वह मेरा धोबी कहां गया?"

गांधीजी पासके खंडमें से जल्दी जल्दी आकर पूछते: "क्यों, क्या बात है साहब?"

"क्या क्या है? तुम्हें भान नहीं रहता। देखो, मेरा कमीज कितना गंदा हो गया है?"

"जी, अभी धो लाता हूं।" यह कहकर गांधीजी खुशी-खुशी अुनका कमीज ले जाते और खुद धोकर ले आते।

थोड़ी देर होती कि गोखलेजी अपने बिस्तरकी चादर बिखेर देते और चिल्लाते: "अरे, मेरा बिस्तर बिछानेवाला कहां गया? चादर अच्छी तरह क्यों नहीं बिछाअी?"

गांधीजी आते और 'जी साहब' कहकर चादर अच्छी तरह बिछा जाते।

अिस तरह गोखलेजी दिनमें कितनी ही बार गांधीजीको 'मेरा नौकर', 'मेरा धोबी', 'मेरा नाअी', 'मेरा पाखाना साफ करनेवाला' वगैरा संबोधनोंसे बुलाते और गांधीजी प्रसन्न मनसे आकर हाजिर हो जाते। गोखलेजीका सभी निजी काम दूसरा कोअी न करे, वे स्वयं करें, अैसी गांधीजीकी तीव्र अिच्छा और आग्रह रहता था। गोखलेजी यह जानते थे, अिसलिअे कुछ मजाक और कुछ आनन्द और गहरे स्नेहभावसे गद्‌गद होकर अिस तरह कहा करते थे।

यहां अेकाध स्नेह-स्मरणका मैं वर्णन कर दूं तो अच्छा होगा। अेक दिन फिनिक्स आश्रममें रातके समय हम बातोंमें लगे हुअे थे। श्री गोखले जोहानिसबर्गमें थे तब मैं नेटालमें था, अिसलिअे गोखलेजी और गांधीजीके स्नेह-सम्बन्धकी कुछ बातें मैंने गांधीजीसे ही पूछीं। जवाबमें गांधीजीने अुमड़ते हृदयसे नीचे लिखा रसप्रद और स्नेहभीना प्रसंग कह सुनाया। अुसे मैं

अुन्हींके शब्दोंमें अुद्धृत करता हूं। अिस प्रसंगके विषयकी तो रक्षा हुअी है, परन्तु वर्णनमें कुछ फर्क हो गया हो तो मैं क्षमा मांगता हूं।

गांधीजी कहने लगे :

"गोखलेजीने दक्षिण अफ्रीकामें पैर रखा, तभीसे अुन्होंने अपने-आपको मेरे हवाले कर दिया था। जैसे छोटा बच्चा अपनी सारी चिन्ता अपनी मांको सौंप देता है, वैसे ही वे अपनी कोअी चिन्ता नहीं रखते थे। अुनकी देखरेख मैं करता, अुनका कार्यक्रम मैं तैयार करता और किस मौके पर क्या बोलना यह भी कभी-कभी मैं ही बताता। अिसलिअे वे अकसर प्रेमसे 'मेरा धोबी', 'मेरा नाअी', 'मेरा सेवक', 'मेरा रसोअिया', 'मेरा रक्षक', और 'मेरा भंगी' वगैरा अुपनामोंसे मुझे पुकारते। जरा-जरासी बातमें भी मेरी मंजूरी लेते। मैं खूब काममें होता तो भी मुझे बुलाकर पूछते : 'मुझे अेक नारंगी खानी है, खा लूं क्या?' मैं कहता : 'अिसमें मुझसे क्या पूछते हैं? अच्छा हो तो खा लीजिये।' तब गंभीर भावसे जवाब देते, 'अरे, मैं तो अपनेको तुम्हारे हवाले कर चुका हूं।'

"अेक दिन प्रिटोरियामें अुनकी तबीयत अच्छी न होनेके कारण फलाहारके सिवा और कुछ खानेकी मैंने अुन्हें मनाही कर दी। फलाहारमें भी गिनतीके फल देता। अुन्हें भूख लगती तो वे मुझे बुलाते। गुस्सेका दिखावा करके मुझे धमकाते, 'मुझे पता नहीं था कि तुम अितने कृतघ्न होगे। याद है, कलकत्ता–कांग्रेसके वक्त मैंने तुम्हारी कितनी चिन्ता रखी थी। अेक महीने तक तुम्हें मिष्टान्न ही खिलाये थे। अुसके बदलेमें तुम यहां मुझे अेक-दो केले भी मिन्नत करनेके बावजूद ज्यादा नहीं देते और मुझे भूखों मारते हो! अितने पर भी तुम सेवावृत्तिका और साधुताका ढोंग करते हो।'

"मैं कहता : 'मैं कब अिनकार करता हूं? जितने चाहें अुतने खाअिये।'

"तब वे कहते : 'नहीं, तुम्हें देना हो तो दो, मुझे लेनेकी कोअी परवाह नहीं।'

"अन्तमें हार कर मैं दे देता।

"अुन दिनों जोहानिसबर्गमें भोजनका अेक समारोह था। अुसमें बहुतसे प्रसिद्ध पुरुष आनेवाले थे। अुस भोजमें गोखलेजीका अैतिहासिक भाषण होनेवाला था। खानेमें कअी तरहकी मीठी बानगियां तैयार की गअी थीं। सब चीजें निरामिष थीं। अिसलिअे भोजके दिन सवेरे गोखलेजीने मुझसे पूछा : 'क्यों गांधी, आज मुझे सब कुछ खानेकी छूट है न?'

'किसलिअे ?'

'आज तो भोज है न ?'

'तो क्या हुआ ?'

'अरे क्या बात करते हो ? मेरे सम्मानमें भोज हो, भोजमें तरह तरहकी स्वादिष्ठ बानगियां हों, अुम्दा मिठाअियां हों और मैं न खाअूं ? आज तो तुम्हें मंजूरी देनी ही पड़ेगी।'

'मैं तो अिजाजत नहीं दूंगा। आपको खाना हो तो खाअिये।'

'बहुत अच्छा, जाओ। मैं देखता हूं कि तुम कैसे अिजाजत नहीं देते।'

"शामके पांच बजे। मोटर आकर खड़ी हुअी। मैं अुनके पास गया। वे शान्तिसे पढ़ते रहे। मैंने कहा, 'मोटर आ गअी है, आप तैयार होअिये।'

'कहां जाना है ?'

'भोजका समय हो गया ?'

'मुझे कहीं नहीं जाना। तुम सब जाओ।'

"मैं समझ गया, फिर भी बोला : 'आपके बिना हम लोग जाकर क्या करेंगे ?'

'बहुतसी बारातें वरराजाके बिना जाती होंगी, वैसे ही तुम भी चले जाओ !'

"मैं चुप रहा। फिर बोला : 'देर हो जायगी।'

'भले ही देर हो जाय। मेरा तो निश्चय है कि वहां जाकर सब कुछ खानेकी अिजाजत जब तक तुम मुझे नहीं दोगे, तब तक मैं यहांसे अुठनेवाला नहीं हूं।'

"पांच तो वहीं बज गये। परन्तु अुनके कान पर तो जूं तक न रेंगी। अंतमें हारकर मैंने कहा : 'अब अुठिये, कपड़े पहनिये। आपकी मर्जीमें आये सो खाअिये।'

'तुम्हारी मंजूरी है ?' खुश होकर अुन्होंने मुझसे पूछा।

'हां, हां, मेरी मंजूरी है, अुठिये।'

"मेरी मंजूरीकी बात सुनकर अुठते-अुठते बोले : 'बस, अब मैं अुठूंगा। तुम सत्याग्रही ठहरे। अिसलिअे सामनेवालेके सत्याग्रहसे ही तुम हारते हो। देखा मेरा सत्याग्रह ? कबूल करो कि तुम हार गये।'

'हां, हां, मैं हारा। आपसे तो मैं सदा ही हारा हुआ हूं।'"

अितना कहकर गांधीजी शान्त हो गये। गहरे विचारमें डूब गये और किसी न किसी स्नेह-स्मरणको याद करके बोल अुठे : "वे तो दासानुदास हैं।"

अिस तरह यह निर्णय करना कठिन है कि गोखलेजीको गांधीजीके पीछे पागल माना जाय या गांधीजीको गोखलेजीके पीछे पागल माना जाय। यह कहना अधिक सत्य है कि गोखलेजी गांधीजीके पीछे और गांधीजी गोखलेजीके पीछे पागल थे। गोखलेजी गांधीजीके स्नेहकी तीव्रताको अनुभव करते थे, अिसलिअे अुन्होंने दक्षिण अफ्रीकाके अपने निवासके दिनोंमें अनेक बार गांधीजीसे कहा था: "तुम बड़े जालिम हो। दूसरेके हृदय पर प्रेमका अैसा जादू डालते हो कि वह बेचारा तुम्हारी अिच्छानुसार करने और तुम्हें खुश रखनेको मजबूर हो जाता है। मेरा शरीर कितना ही अस्वस्थ हो, मैं कितने ही जरूरी काममें व्यस्त होअूं, फिर भी तुम्हारा काम आते ही अुसे करनेके लिअे मैं पागल हो जाता हूं और तुम्हारे ही काममें डूबा रहता हूं।"

अिस प्रकार दोनों महापुरुषोंकी विनोद-वार्तासे दोनोंके हृदयकी अपूर्व सुन्दरताके दर्शन होते थे।

वहांके भोजके समय दिया हुआ गोखलेजीका भाषण अेक प्रवीण राज-नीतिज्ञको शोभा देनेवाला था। अुनके भाषणकी छटा, अंग्रेजी भाषा पर अुनका अधिकार, श्रोताओंके दिल पर गहरा असर करनेवाली अुनकी बहस करनेकी सरल शैली, हृदयका सन्तुलन और दोनों पक्षोंको देखकर अपना निर्णय करनेका विवेक –– अिन सबका संगम देखकर गोरोंको आश्चर्य हुआ। दक्षिण अफ्रीकाके अनेक गोरे नेता अुनसे मिले। अखबारोंके प्रतिनिधि भी अुनसे मिले। अुन्होंने सबके सामने अपनी न्याययुक्त मांग रखकर सबको जीत लिया। गोखलेजीने अपनी राय अुन्हें साफ तौर पर बता दी थी : "अपने देशमें आप कैसे आदमियोंको प्रवेश करने दें, यह आपकी मर्जीकी बात है। अिसके लिअे आप किसी भी देशके लिअे या किसी भी कौमके लिअे अपमानजनक न हो, अैसे किसी भी कानूनकी मददसे अपने देशमें अवांछनीय मनुष्योंके प्रवेश करने पर पाबन्दी लगायें तो वह अुचित ही है। मैं भी अपने देशमें अैसा ही करना चाहूंगा। परन्तु जो लोग यहां आ गये हैं, जिन्होंने अपना वतन ही अिस देशको बना लिया है या लम्बे अर्से तक रहकर जिन्होंने यहां अपनी जायदादें बना ली हैं और जो शरीर-श्रम करके अपना गुजारा करते हैं, अुनके प्रति अपना व्यवहार आप शरीफोंको शोभा दे अैसा रखिये। अुसमें आप भेदभाव न कीजिये। गुण-दोषका प्रतिबन्ध लगाकर आप

किसीको भी यहां आनेसे रोकिये, परन्तु रंगभेदका प्रतिबन्ध लगाकर आप किसीको आनेसे न रोकिये। अैसे लोगोंको आप अपने देशके नागरिक मानिये; अुन्हें अपने साथ रखकर अुनसे प्रेमभरा बरताव कीजिये। आप अितना करें तो मुझे और कुछ नहीं चाहिये।"

अैसी वास्तविक और नैतिक दलीलोंसे कैसा भी विरोधी अुनकी बात मान लेता था। प्रिटोरियामें यूनियन सरकारके मंत्रियोंसे भी गोखलेजी मिले और सभी प्रान्तोंके बारेमें अुनसे खूब चर्चा की। नेटालके स्वतंत्र हिन्दुस्तानी मजदूरों पर जो तीन पौंडका कर लगा हूआ था, अुसे हटा देनेके लिअे भी बहुत कहा। मंत्रियोंने अुन्हें विश्वास दिलाया कि अगली पार्लियामेण्टमें वह कर हटा दिया जायगा। ट्रान्सवालमें कोअी तीन सप्ताह रहकर वे नेटाल गये।

नेटालमें भी अैसी ही धूमधाम रही। स्वागतके जुलूस, मानपत्रोंके समारोह और मुलाकातों वगैराके कार्यक्रमसे सारे दक्षिण अफ्रीकाका वातावरण सुन्दर हो गया। नेटालमें तो गोरे जमींदारोंके मंडलने भी गोखलेजीको निमंत्रण दिया। कुछ जमींदारोंने आमंत्रण भेजकर अपने स्थान पर अुनका स्वागत किया। हिन्दुस्तानी गिरमिटिया मजदूरोंके झुण्डके झुण्ड अुनके दर्शन करने आये। गिरमिटिया मजदूरोंकी हर बैरकमें यही भावना मालूम होती थी कि 'देशसे गोखले राजा आये हैं।' गोखलेजी नेटालमें थे, अुसी बीच फिनिक्स भी हो आये। अिस प्रकार दक्षिण अफ्रीकाकी यात्रा पूरी करके वे डरबनके बन्दगाहसे बिदा हुअे। गांधीजी अुनके साथ गये और जंजीबार तक अुन्हें लौटा आये। अिस साधुचरित नेताका आगमन दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके जीवनमें अद्वितीय माना जायगा। अुसके मीठे संस्मरण आज भी ताजे बने हुअे हैं।

३

श्री हरमन कैलनबैक

अिस प्रकरणमें मैं गांधीजीके अेक जर्मन मित्रका परिचय देना चाहता हूं। अुन्होंने गांधीजीके जीवनमें, दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके जीवनमें और सत्याग्रहकी लड़ाअीमें गहरी दिलचस्पी बताअी है और सुन्दर भाग लिया है। अितिहासकी दृष्टिसे तो श्री कैलनबैकका परिचय श्री पोलाक, श्री वेस्ट या कुमारी श्लेशिनसे ज्यादा महत्त्वका नहीं है। फिर भी ये प्रकरण

लिखनेमें मेरा अेक हेतु गांधीजीके जीवनके कुछ सुन्दर प्रसंगोंका वर्णन करना भी है, और अुसी हेतुसे यह प्रकरण मैं लिखना चाहता हूं। गांधीजीके साथियोंके जीवनकी या अुनके साथके निजी परिचयकी कथा लिखनेका काम तो अुत्तम रूपमें वे स्वयं ही कर सकते हैं और कुछ हद तक अुन्होंने 'आत्मकथा' में और 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' में अैसा किया भी है। परन्तु मैं देखता हूं कि अुसमें अुन्होंने कअी मर्यादाअें रखी हैं। बहुतसी बातें अुन्होंने जान-बूझकर नहीं दी हैं। वे बातें जितनी भी मुझे मालूम हैं, अुन्हें अपनी दरिद्र भाषामें भी वर्णन कर देना मुझे अुचित मालूम होता है। और अैतिहासिक दृष्टिसे तो नहीं, परन्तु गांधीजीके जीवनके और अुनके आदर्शोंके अुपासकोंकी दृष्टिसे भी अैसे वर्णन आवश्यक हैं। अिन प्रकरणोंमें अिस तरहके बहुतसे वर्णन अिसी दृष्टिसे दिये गये हैं। मैं मानता हूं कि पाठक-मित्रोंको वे जरूर पसंद आयेंगे।

श्री हरमन कैलनबैक अेक जर्मन सज्जन थे। अुन्होंने भरी-जवानीमें जर्मन सेनामें सिपाहीका काम किया था। और जीवनका अेक भाग व्यतीत करनेके लिअे वे दक्षिण अफ्रीका गये थे। स्थपति (शिल्पकार) के नाते वे बड़े कुशल थे। आमदनी बहुत अच्छी थी। अकेले राम थे। न अूधोका लेना न माधोका देना। अिसलिअे अैश-आराम और ठाटबाटकी तो बात ही क्या कहना? शादी नहीं की थी, अिसलिअे जिन्दगी भी गैर-जिम्मेदार थी। जीवनकी नअी नअी लहरोंके अनुभवके जिज्ञासु ठहरे। अिसलिअे अनेक पाश्चात्य व्यक्तियोंकी तरह वे भी जिस विषयकी ओर ध्यान देते अुसीमें डूब जाते थे। श्री कैलनबैक अपने धंधेके साथ साथ जीवनके दूसरे पहलुओंकी ओर भी ध्यान देते थे। अन्तरात्माको कुछ संतोष मिले, अैसी चीजोंकी भी शोध करते थे। अुनके साथ अन्याय न करता होअूं तो शायद यह भी हो सकता है कि केवल जीवनमें विविधता लानेके स्थूल हेतुसे ही वे अिस तरहके काम करते हों। कुछ भी हो, किन्तु अपने कामधंधे और वैभवसे अुन्हें जो आनन्द मिलता था, अुससे अुन्हें संतोष नहीं था। यह सन्तोष वे ढूंढ़ा करते थे। जोहानिसबर्गमें थियासॉफिकल सोसाअिटीकी शाखा थी। वहां वे अपनी धार्मिक वृत्तिको पोषण देने जाया करते थे और क्षुधाकी शान्तिके लिअे निरामिष भोजनगृहमें जाते थे। अिन दो संस्थाओंमें गांधीजीसे अुनकी भेंट हुअी।

श्री कैलनबैक स्वभावके सरल और बड़े भोले थे। साथ ही जिज्ञासु वृत्तिके थे। ट्रान्सवालमें प्रचलित रंगभेदकी वृत्ति भी अुनमें काफी मात्रामें

थी। हिन्दुस्तानियोंको देखनेमें भी अुन्हें घृणा आती थी। परन्तु जिसे वे जीवनकी विविधता मानते थे, अुसमें गांधीजी जैसे अेक हिन्दुस्तानीको प्रवीण और रंगा हुआ देखकर गांधीजीकी ओर अुनका ध्यान गया। पहले तो अुनके मनमें अेक प्रश्न अुठा कि क्या हिन्दुस्तानियोंके जैसी संस्कारहीन जातिमें जीवनको विविधतायुक्त और समृद्ध बनानेके प्रयोग करनेवाले गांधी जैसे प्रवीण मनुष्य भी हो सकते हैं? पर बादमें वे गांधीजीसे सम्बन्ध कायम करनेकी कोशिश करने लगे। दोनों मिलकर चर्चाअें करते थे। अेक दिन अुन्होंने गांधीजीको अपने यहां भोजनका निमंत्रण दिया। गांधीजीने कृतज्ञतापूर्वक अिस निमंत्रणको अिस शर्त पर स्वीकार किया कि अुनके साथ श्री काछलिया और अेक-दो अन्य साथियोंको भी निमंत्रण दिया जाय; और कैलनबैक रजामन्द हों तो गांधीजी खुद अुन्हें अपने साथ ले जायं। कैलनबैकके हृदयमें अुस समय अन्य हिन्दुस्तानियोंको अपने यहां आमंत्रण देनेकी अुमंग तो नहीं थी। परन्तु गांधीजीके प्रति अुनके हृदयमें आदर पैदा हो गया था। अुस आदरके कारण अुन्होंने यह शर्त स्वीकार की और दूसरे दो-तीन साथियोंको भी कैलनबैकने निमंत्रण दिया। अिस प्रकार गांधीजीने श्री कैलनबैकके हृदयमें काली चमड़ीके प्रति बैठी हुअी घिनको मिटानेका पहला कदम अुठाया और श्री कैलनबैकको अुसी दिन मालूम हो गया कि हिन्दुस्तानियोंमें भी बहुतसे लोग अैसे हैं जिन्हें बुद्धिशाली और संस्कारी माना जा सकता है। अिस भ्रमके दूर होने पर तो श्री कैलनबैक गांधीजीके दफ्तरमें जाने लगे। दोनोंके बीच धर्म और आहारके विषयमें अनेक चर्चाअें होने लगीं। और साथ ही टॉल्स्टॉय तथा रस्किनकी पुस्तकें खरीद कर वे पढ़ने लगे। अिस नये स्वाध्यायसे गांधीजीके आदर्शोंके प्रति अुन्हें अधिक आकर्षण हुआ। गांधीजीने अपने कुटुम्बको नेटाल भेज दिया था। कैलनबैकने गांधीजीको अपने साथ ही रहनेका आमंत्रण दिया। प्रेमभावसे दिये गये आमंत्रणको अुन्होंने स्वीकार कर लिया। अिस समय तो गांधीजी और कैलनबैकमें दोस्तीका सम्बन्ध पक्का हो चुका था। जोहानिसबर्गसे दो तीन मील दूर 'माअून्ट व्यू' नामकी सुन्दर जगह है, वहां जोहानिसबर्गमें व्यवसाय करनेवाले बहुतसे धनवान गोरोंके बंगले थे। वहीं कैलनबैकका भी बंगला था। वहां दोनों मित्रोंने साथ रहनेका निश्चय किया। गांधीजी वहां रहने चले गये। परन्तु कैलनबैकका मौज-शौक अुन्हें खटका। मकान घरका होने पर भी वे केवल अपनी सुख-सुविधाओं पर

हर महीने लगभग १२०० रुपये खर्च कर डालते थे! साधारणतः सौ सवा सौ रुपये काफी थे। अितनी ज्यादा फिजूलखर्ची गांधीजीको खटकी।

गांधीजी वहां रहने गये, अुसके दूसरे ही दिन शामको कैलनबैकने कहा : "सैरका समय हो गया। चलो, घूमने चलें।"

"जोहानिसबर्गमें रहनेवाले लोग तो यहां घूमने आते हैं, तब हम क्या वापस जोहानिसबर्गकी तरफ जायं? हवा तो यहांकी अच्छी है। और घूमना श्रमके लिअे ही हो तो चलो खुरपी पकड़ो। बगीचेमें ही काम करेंगे तो शारीरिक श्रम भी हो जायगा; साथ ही बगीचेका काम भी हो जायगा।" यह कहकर गांधीजीने कैलनबैकको बगीचेके काममें लगाया, खुद भी काममें लगे और दोनों काम करते करते अनेक विषयों पर बातें करने लगे। अिस प्रकार सवेरे और शाम दोनों आदमी बगीचेमें नियमित रूपसे काममें लग जाते। थोड़े दिनमें श्री कैलनबैकको मालूम हो गया कि बगीचेके लिअे जो दो माली रखे गये हैं अुन पर खर्च करना अब फिजूल है। अिसलिअे अुन्हें अलग कर दिया।

अेक दिन गांधीजी स्नान करनेसे पहले अपना कमीज धो रहे थे। कैलनबैकको यह मालूम हुआ तो वे बोल अुठे : "अरे भाअी, आप क्यों धो रहे हैं? यह धोबी है न?" गांधीजीने जवाब दिया : "कलसे मैंने अपने कपड़े आप ही धोना शुरू कर दिया है। मुझे अितनी फुरसत मिलती है और मुझमें अितनी ताकत भी है। अिसलिअे अपने कपड़े तो मैं खुद ही धोअूंगा।"

अब श्री कैलनबैक क्या करते? गांधीजी अपने कपड़े खुद धोयें और कैलनबैक धोबीसे धुलवायें, यह कैसे हो सकता था? अुसी समयसे अुन्होंने भी अपने कपड़े खुद धोना शुरू कर दिया। नतीजा यह हुआ कि धोबी भाअी भी निठल्ले हो गये। और अुन्हें भी बिदा मिल गयी।

यहां अेक प्रसंग लिखने लायक है। गांधीजी दक्षिण अफ्रीकामें सत्याग्रहकी लड़ाअीमें दूसरी बार जिस दिन जेलसे छूटनेवाले थे, अुस दिन श्री कैलनबैक अेक नअी मोटर खरीद कर गांधीजीको जेलके दरवाजे पर लेने गये। गांधीजी जेलसे बाहर आये। सबसे मिले। श्री कैलनबैकने मोटरमें बैठनेकी प्रार्थना की। गांधीजीने पूछा : "किसकी मोटर है?" श्री कैलनबैकने बताया : "मेरी है। अभी खरीदकर लाया हूं।"

"किसलिअे खरीद लाये?" गांधीजीने पूछा।

"आपको ले जानेके लिअे। मेरे जीमें आया कि आपको नअी मोटरमें ले जाअूं।" श्री कैलनबैकने संकोचसे जवाब दिया। "अच्छा तो कैलनबैक, यह

मोटर तुम अभी नीलाम-घर पहुंचा आओ। मैं अिसमें नहीं बैठूंगा। मेरे लिअे तुम्हें यह मोह क्यों? तुम पहुंचा कर वापस आओ, तब तक मैं यहीं खड़ा रहूंगा।"

श्री कैलनबैक तुरन्त मोटरको नीलाम-घर पर छोड़ आये। वे लौटे तब तक गांधीजी अपनेको लेने आये हुअे दूसरे मित्रोंके साथ वहीं खड़े रहे और बादमें सब पैदल चलकर अपने-अपने घर गये।

श्री कैलनबैकने कुछ मास गांधीजीके साथ बिताये। अिस अर्सेमें आहारके परिवर्तन पर बातचीत चली। दोनों अलोना और अुबला हुआ खाना खाते थे। 'परन्तु हमारा आहार भी अप्राकृतिक है। सूर्यके तापसे पका हुआ भोजन ही कुदरती माना जा सकता है। पकी हुअी खुराकको फिर आग पर हम या तो अपनी स्वादेन्द्रियको पोषण देनेके लिअे पकाते हैं या अपनी गलत आदतके कारण पकाते हैं।' अिस चर्चा परसे दोनोंने फलाहार करनेका निश्चय किया। जरूरत हो तो सिर्फ गेहूंकी रोटी फलोंके साथ खाना तय किया। परन्तु यह विचार करने पर रसोअिया भी अनावश्यक मालूम हुआ। फिर तो रसोअियेके लिअे अपना ही खाना बनानेका काम रह जाता था। अिसलिअे अुसे भी बिदा कर दिया गया। अिस तरह करते करते थोड़े अर्सेमें गांधीजीने कैलन-बैकको सब झंझटोंसे मुक्त कर दिया। और हर महीने १२०० रुपया खर्च करनेवाले कैलनबैकका खर्च घटकर १०० से १२० रुपये मासिक पर आ गया।

दिनोंदिन श्री कैलनबैकमें विलक्षण परिवर्तन होता गया और हिन्दु-स्तानियोंके प्रति अुनकी ममता अितनी बढ़ गअी कि वे हिन्दुस्तानीमय बन गये। पश्चिमी ढंगके रहन-सहनमें अुन्हें अस्वाभाविकता लगने लगी, जरूरतसे ज्यादा टीम-टाम मालूम हुअी और छिछलापन जान पड़ा। हिन्दुस्तानी रहन-सहन अुन्हें कुदरतके अधिक अनुकूल और अधिक समीप प्रतीत हुआ। सन् १९१३-१४ में फिनिक्स आश्रममें हिन्दुस्तानी वेशमें फिरते हुअे किसी गौरांग साधुका खयाल करता हूं, तो मेरी आंखोंके सामने छोटीसी धोती पहिने नंगे बदन बगीचेमें सावधानीसे फल-फूलोंकी देखभाल करते हुअे श्री कैलनबैक आकर खड़े हो जाते हैं। मैं पूछता : "मिस्टर कैलनबैक, आप अिन पौधोंकी काट-छांट करते हैं, तब अितनी बारीकी और सावधानी क्यों रखते हैं?" जवाबमें वे गंभीर बनकर कहते : "मिस्टर रावजीभाअी, आप जानते हैं? कोअी डॉक्टर छोटे बच्चेको नश्तर लगाते समय जितनी सावधानी रखता है, अुतनी ही सावधानी फल-

फूलके वृक्षोंकी काट-छांट करते वक्त रखनी चाहिये। यह 'प्रूनिंग'—काट-छांट अिन पेड़ोंके वास्तविक विकासके लिअे ही की जाती है। हमारी तरह वनस्पतिमें भी जीव होता है। अुसे लापरवाहीसे काट डालें और कटे हुअे स्थान पर जरूरी लेप वगैरा न लगायें, तो अुस पेड़को दुःख हो और अुसका दुःख बढ़ जाय। मैं तो अिस वनस्पतिमें यह सुख-दुःखकी भावना देखता हूं।" मैं अिस दयामय हृदयको समझता और मन ही मन अुसे प्रणाम करता था। काम करते हुअे कअी बार जब कोअी अुनसे टकरा जाता और पश्चिमी पद्धतिके अनुसार जरा विवेकपूर्वक बोल अुठता : 'Very Sorry—बड़ा अफसोस है', तो कैलनबैक तुरन्त बोल अुठते : 'Please don't speak a lie; you do not seem to be sorry—मेहरबानी करके झूठ न बोलिये; आपको अफसोस हो रहा है अैसा दीखता नहीं है।' अिस प्रकार अुन्हें बाहरी–अूपरी शिष्टाचार पसंद नहीं था।

फिनिक्स आश्रमकी सोलह जनोंकी मंडलीकी व्यवस्था करनेके लिअे अुन्होंने वॉलक्रस्टमें दो-तीन दिन पहले ही डेरा डाला था। अुन्होंने किसी गोरे सज्जनके मकानका अेक कमरा थोड़े दिनके लिअे किराये पर ले लिया था। बादमें जब गोरे लोगोंको मालूम हुआ कि श्री कैलनबैक हिन्दुस्तानी सत्याग्रहियोंकी मदद करनेवाले हैं और अिसीलिअे यहां आये हैं, तो अुन्होंने कमरा खाली करनेको कहा। श्री कैलनबैक खुशीसे अपना बिस्तर लेकर वहां चले आये जहां हिन्दुस्तानी मोहल्लेमें हमने अपना पड़ाव डाला था। मैंने अुनसे पूछा : "मिस्टर कैलनबैक, आपको यहां रहना अटपटा तो नहीं लगेगा?" अुन्होंने हंसते-हंसते जवाब दिया : "मेरे जीवनमें अेक समय अेसा था जब मैं रंगकी घृणासे भरा हुआ था। लेकिन आज तो कोअी गन्दा हिन्दुस्तानी बच्चा रोता हो तो अुसे प्रेमसे अुठाकर अुसके नाकका रींट साफ करके अुसे खेलाते-खेलाते छातीसे लगा लेनेका मन हो जाता है।" अैसे सरल-हृदय श्री कैलनबैकके जीवनका लाभ हम भारतमें न अुठा सके। अुनके हृदयमें अुमंग तो बहुत थी कि 'भाअी' गांधीजीके साथ हिन्दुस्तान जाअूंगा और अुस प्राचीन पुण्यभूमिमें रहकर नअी नअी साधनायें करूंगा। परन्तु भगवानकी अैसी अिच्छा नहीं थी। वे गांधीजीके साथ हिन्दुस्तान आनेके लिअे रवाना हुअे थे; दोनों अिंग्लैण्ड होकर यहां आनेवाले थे। परन्तु अुनके अिंग्लैण्ड पहुंचते ही ब्रिटेन यूरोपकी लड़ाअीमें कूद पड़ा। श्री कैलनबैकको जर्मन होनेके कारण अेक निश्चित समयके लिअे वहीं रहना पड़ा। सरकारने अुन्हें गांधीजीके

साथ हिन्दुस्तान आनेकी अिजाजत नहीं दी। लड़ाअी खतम होनेके बाद वे सीधे जोहानिसबर्ग लौट गये और अपना शिल्पकारका धंधा करने लगे। अब भी श्री कैलनबैक जोहानिसबर्गमें रहते हैं और हमारी स्वतंत्रताकी लड़ाअीमें बड़ी दिलचस्पी लेते हैं।

४

'फिनिक्स आश्रम'

अिन प्रकरणोंमें मैंने टॉल्स्टॉय फार्मके बारेमें कुछ नहीं लिखा। गांधीजीने 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' में टॉल्स्टॉय फार्मके विषयमें काफी लिखा है। और अुसके सम्बन्धमें मेरी अपनी जानकारी नहींके बराबर है। अिसलिअे गांधीजीने अपनी सुन्दर भाषामें अुस अितिहासमें टॉल्स्टॉय फार्मका जो वर्णन किया है, अुसका पिष्टपेषण करना व्यर्थ है। फिनिक्समें तो मैं रहा हूं और अपने जीवनके दो धन्य वर्ष वहां बिता चुका हूं। अुस समयके गांधीजीके सहवाससे मेरे जीवन पर जो असर हुआ, मैं मानता हूं कि अुसीकी सुगन्धसे अब भी मैं थोड़ा-बहुत काम चला रहा हूं। अिसलिअे अिन प्रकरणोंमें फिनिक्सको भूल जाअूं तो मैं कृतघ्न माना जाअूंगा। तो जो कुछ मुझे याद है अुसे अपनी शक्तिके अनुसार पाठकोंके सामने रख देनेकी मैं कोशिश करूंगा।

डरबनसे अुत्तर दिशामें समुद्रके किनारे-किनारे जानेवाली रेलवे लाअिन पर चौदह मील दूर फिनिक्स नामका स्टेशन है। वहां आबादी तो बहुत नहीं है। परन्तु आसपास गन्ने और वॉटल नामक (बबूलकी अेक जातिके) पेड़ोंकी खेती होनेके कारण अुसके मालिकोंके बंगले और मजदूरोंके घर यहां-वहां खड़े हैं। अिस फिनिक्स स्टेशनसे पूर्वकी तरफ ढाअी मील दूर गांधीजीने जमीनके दो टुकड़े खरीद रखे थे। अेक बीस अेकड़का और दूसरा अस्सी अेकड़का। यह जमीन अुन्होंने सन् १९०४ में खरीदी थी। जोहानिसबर्गमें वकालत करते करते अुन्होंने जीवनके अनेक प्रयोग आरम्भ किये थे। अुनके प्रत्येक प्रयोगका केन्द्र-बिन्दु आत्मशुद्धि था। आत्मशुद्धिके प्रयत्नमें से जो कुछ अच्छा लगता अुसे वे जिज्ञासुकी वृत्तिसे पकड़ लेते और अमलमें लाते थे। दक्षिण अफ्रीकामें गये तो थे वे रुपया कमाने, पोरबन्दरके कबा गांधीकी व्यावहारिक प्रतिष्ठाको कायम रखने

और हो सके तो अुसे सवाअी करनेके लिअे। परन्तु वहां जानेके बाद अेक ही वर्षमें अुनका यह निश्चय हो गया कि रुपया पैदा करनेके बजाय देशसेवा हो सके तो अुसके लिअे वहां ज्यादा रहा जाय। अिसी वृत्तिसे वे १८९४ से १९०४ तक वकालत और देशसेवा दोनों साथ-साथ करते रहे। अिस अर्सेमें भी धन-प्राप्तिकी वृत्तिसे सेवाधर्मकी वृत्तिका पलड़ा ही भारी था। अिस वृत्तिमें भी जो कुछ धनप्राप्ति हो जाती वह सेवाके लिअे ही खर्च होती थी। अिस तरह दस साल बीत गये। फिर भी जीवनका आदर्श स्थिर नहीं हुआ। जीवन-नौकाको किस दिशामें ले जाया जाय और कहां अुसका लंगर डाला जाय, अिसका कुछ निश्चय नहीं हुआ।

परन्तु जो जिसे ढूंढ़ता है वह अुसे मिल जाता है। गीताजीमें भगवानका अुपदेश है कि 'जिस रूपमें तू मुझे भजेगा, अुसी रूपमें मैं तुझे मिल जाअूंगा।' भगवान अीसा मसीह कहते हैं: 'तू दरवाजा खटखटा, और वह खुल जायगा।' सच्चे हृदयकी प्रार्थना किस भक्तकी भगवानने नहीं सुनी? अेक दिन गांधीजी १९०४ में जोहानिसबर्गसे डरबन जा रहे थे। स्टेशन पर श्री पोलाकने अुनके हाथमें अेक पुस्तक रखी। अिस पुस्तकका नाम था 'अन्टु दिस लास्ट'। गाड़ीमें जैसे-जैसे अुस पुस्तकको गांधीजी पढ़ते गये, वैसे-वैसे अुन्हें अनोखा आनन्द आता गया। अुन्हें अैसा लगा कि मैं जो चीज चाहता था वह मुझे मिल गअी। अुन्होंने माना कि यह छोटीसी पुस्तक अीश्वरने ही भेजी है। डरबन पहुंचते-पहुंचते अुन्होंने वह पुस्तक पूरी पढ़ डाली और साथ ही साथ हृदयमें निश्चय भी कर लिया। कैसा निश्चय?— "वकालतका धंधा बन्द किया जाय। शरीर-श्रम करके श्रमजीवी बनना धार्मिक और नैतिक जीवनका मुख्य साधन है। वकालत या डॉक्टरी पर जीनेका किसीको अधिकार नहीं है। तब किसी भी धंधेसे धनका परिग्रह करनेका अधिकार तो हो ही कैसे सकता है? अपने पसीनेकी रोटी पर ही हमारा अधिकार है। वही रोटी नीतिसे पैदा की हुअी मानी जा सकती है। अैसा श्रमजीवी जीवन ही जीने योग्य है। वही भविष्यमें शान्ति देता है।"

अिस पुस्तकके विचार अुनके दिमागमें ताजे थे। अितनेमें श्री मदन-जीतने, जो दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी भलाअीके लिअे 'अिंडियन ओपीनियन' नामक साप्ताहिक अखबार निकाल रहे थे और जिनके अखबारमें गांधीजीके लेखों और आर्थिक सहायताका बड़ा भाग रहता था, देश जानेका

विचार किया। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके प्रश्नके लिअे अेक अखबारकी जरूरत तो थी ही। अिसलिअे गांधीजीने अुस अखबारको अपने हाथमें लेनेका विचार किया। जोहानिसबर्ग जैसी दूर जगहमें रहकर डरबनमें प्रकाशित होनेवाले अखबारको चलाना अुन्हें कठिन मालूम हुआ। सारी परिस्थितिका विचार करके गांधीजीने रस्किनकी पुस्तकमें पढ़े हुअे विचारोंको अमलमें लानेका निश्चय किया। अुनके भतीजे श्री छगनलाल गांधी 'अिंडियन ओपीनियन' पत्रमें श्री मदनजीतके साथ काम करते थे। अुन्हें गांधीजीने अपना निश्चय बताया। श्री छगनलालने अुनकी योजनामें शामिल होनेकी अिच्छा प्रगट की। श्री आल्बर्ट वेस्टने भी गांधीजीकी अिच्छाका स्वागत किया। शहरसे दूर स्टेशनके नजदीक कोअी जमीन खरीद कर वहां 'अिंडियन ओपीनियन' का प्रेस ले जाया जाय; अैसे कार्यकर्ता जुटाये जायं जो अुपरोक्त विचारधाराके अनुसार जीवन बिताना पसंद करते हों; हिन्दुस्तानी कौमकी सेवाके लिअे अखबार चलाया जाय; अुसमें काम करनेवाले दिनके अमुक समय तक अपने मकानके आसपासकी जमीनमें खुद मेहनत करके खेतीबाड़ी करें और अुससे अपनी और अपने कुटुम्बकी जरूरतें पूरी करनेका प्रयत्न करें; अनिवार्य हो तो अेक निश्चित रकम प्रेससे ले लें; जीवनमें परिग्रह करनेका विचार न करें; सरल जीवन और अुच्च विचार रखनेका प्रयत्न करें और कौमकी सेवा करें — ये विचार श्री वेस्टको पसन्द आये और वे गांधीजीके निश्चयमें शरीक होनेको तैयार हो गये।

भाअी मगनलाल गांधी अुस समय धन्धेके लिअे स्टेनगारमें रहते थे। अुन्हें बुलाकर गांधीजीने अपना निश्चय बताया और अुसमें शामिल होनेको कहा। अुन्होंने भी हां कह दिया। अिस तरह काम करनेवालोंका समूह बनाकर खरीदी हुअी जमीनमें अुनके लिअे मकान तैयार किये गये। अेक कुटुम्बके रहने लायक मकान और अुसीके साथ तीन अेकड़ जमीन — अिस प्रकार दस परिवारोंके लिअे दस मकान बनवाये गये। अिस जमीनमें पानीका अेक छोटासा झरना था। अुस झरनेके पास ही प्रेसके लिअे ७५ × ५० फुट लम्बा-चौड़ा कामचलाअू मकान बनाया गया। डरबनसे प्रेस और अखबारका दफ्तर यहां लाया गया। प्रेसका पुराना नाम अिंटरनेशनल प्रिंटिंग प्रेस था। अुसे वैसा ही रहने दिया। श्री छगनलाल और श्री वेस्ट अुसके मुख्य व्यवस्थापक थे। अनुभवी और शक्तिशाली तथा जीवनके अुच्च हेतुसे प्रेरित होकर हिन्दुस्तानी जातिकी सेवाके काममें अपना जीवन अर्पण करनेवाले

गोरे मित्र श्री आल्बर्ट वेस्टके बारेमें गांधीजीने अपने हाथसे जो लिखा है अुससे ज्यादा मैं क्या लिख सकता हूं? प्रामाणिकता, अुद्योगशीलता और सेवाभाव — ये गुण मैंने अुनमें विशेष तौर पर देखे। वे वर्षों तक वहां रहे, परन्तु हिन्दुस्तानी काम करनेवालोंके साथ अुन्होंने कभी भेदभाव नहीं किया। मैं जब वहां था तब वे कुटुम्बवाले थे। परन्तु जब अखबारका काम संभाल लेनेको गांधीजीने अुन्हें जोहानिसबर्गसे डरबन भेजा तब वे अकेले थे। अुनकी शादी नहीं हुअी थी। वे जोहानिसबर्गमें छापाखानेका धंधा करते थे। गांधीजीके काममें मदद देनेके शुद्ध हेतुसे कुछ ही घंटोंके भीतर अपने सारे धंधेकी व्यवस्था हिस्सेदारको सौंपकर वे डरबन चले गये और वहां अुन्होंने 'अिंडियन ओपीनियन' का काम संभाल लिया। अुसके बाद लगभग बारह बरस तक वे प्रेस और अखबारके व्यवस्थापकके रूपमें रहे। अुस समय हर कार्यकर्ताके खर्चकी रकम तीन पौंड निश्चित की गअी थी। वही अुन्होंने भी स्वीकार की। दक्षिण अफ्रीकामें अुनके जैसे होशियार आदमीके लिअे यह वेतन बहुत ही कम था। परन्तु वे वेतनके लिअे तो रहे नहीं थे। फिनिक्सके आदर्शमें शरीक हुअे तब अुन्हें वेतनके रूपमें हर महीने तीन पौंड मिलते थे और शरीर-श्रम करके जमीनसे जितना पैदा हो सकता हो अुतना कर लेनेका हक था। जब श्री वेस्टने विवाह किया और अपनी पत्नी, बहन और बूढ़ी सासको वे गांधीजीकी सलाहसे फिनिक्समें लाये, तब अपनी कमसे कम जरूरतोंके अनुसार वे आठ पौंड लेने लगे। अेक मामूली हिन्दुस्तानी क्लार्कका पांच पौंड मासिक खर्च आता था। अैसे खर्चीले प्रदेशमें चार मनुष्योंके गुजरके लिअे आठ पौंड बहुत ही कम थे। परन्तु श्री वेस्टको यह त्याग और सादगी पसन्द थी। गांधीजीके जीवनके आदर्शोंमें वे रम गये थे। और जब तक अुनके अिन आदर्शोंकी रक्षा हुअी तब तक वे वहां बने रहे।

श्री मगनलाल गांधीके नामसे तो गुजरात परिचित ही है। वे और अुनके बड़े भाअी श्री छगनलाल गांधी भी वहां स्थायी हो गये। भाअी गोविन्दस्वामी नामके अेक मद्रासी सज्जन भी पहलेसे ही अिस काममें शरीक थे। वे भी आश्रमके सदस्य बन गये। और दूसरे दो परिवार वैतनिकके रूपमें रहते थे। फिनिक्समें काम करनेवालोंकी व्यवस्था अिस प्रकारकी थी।

सन् १९१२ में साधुचरित देशभक्त गोखलेजीके दक्षिण अफ्रीका जानेके बाद और सरकारके साथ हुअे कामचलाअू समझौतेके बाद गांधीजीने टॉल्स्टॉय

फार्मकी सारी व्यवस्था समेट ली और पाठशालाके विद्यार्थियोंके साथ फिनिक्स चले गये। तबसे फिनिक्समें आश्रम-जीवन आरम्भ हुआ।

जबसे गांधीजीने स्थायी रूपमें वहीं रहना तय किया, तबसे फिनिक्सके आदर्शोंके अनुसार जीवनका कड़ाओीसे पालन होने लगा। वहांके निवासकालके कुछ प्रसंगोंका वर्णन आगे आयेगा। परन्तु गांधीजीने खुद अिस संस्थाके बारेमें क्या आशा रखी थी, अुसकी स्थापनाके पीछे अुनका क्या हेतु था और व्यक्ति और समाज दोनोंके जीवनमें अुसका क्या स्थान होना चाहिये, अिसकी कुछ कल्पना नीचेकी हकीकतसे हो सकेगी।

फिनिक्समें रहनेवालोंको कुछ व्रतोंका पालन करना पड़ता था:

(१) ब्रह्मचर्यका पालन करना। (२) सूक्ष्म सत्यव्रतका पालन करना। (३) काम मुख्यतया शरीर-श्रमका यानी खेतीका करना। (४) अक्षर-ज्ञान बढ़ानेका हेतु हो तो अुसे भूल जाना; सहज ही और जरूरत पड़ने पर बढ़ जाय तो भले ही बढ़े। (५) मनमें यह निश्चय करना कि अक्षर-ज्ञानके बजाय चरित्रको दृढ़ बनाना हमारा कर्तव्य है। (६) जाति या कुटुम्बके अन्यायका निडर होकर विरोध करनेकी तैयारी रखना। और (७) शुद्ध दरिद्रता धारण करना।

अूपरके नियम व्यक्तियोंके लिअे थे। अुनके अलावा समाजके लिअे अुनका आदर्श अिस प्रकारका था:

(१) सत्य परम साध्य वस्तु है। वह परमात्मा — अीश्वर है।

(२) अहिंसा अिस साध्यको प्राप्त करनेका साधन है।

(३) सत्य और अहिंसाके आधार पर अिस समाजकी रचना हो, तो ही अिसमें स्थिरता, दृढ़ता और स्वतंत्रता आ सकती है।

अैसे विचार प्रकट करनेवाले गांधीजीके कुछ पत्र, जिनमें फिनिक्स संस्थाके बारेमें अुन्होंने निर्देश किया है, मैं नीचे दूं, तो मुझे लगता है कि यह समझा जा सकेगा कि गांधीजीने फिनिक्सके बारेमें क्या क्या आशाअें रखी थीं।

“विपत्तिके लिअे धैर्यके सिवा और कोअी अिलाज नहीं है। साधन तो जो ट्रान्सवालमें हैं वही देशमें होने चाहिये, अिस बारेमें मेरे मनमें कोअी शंका नहीं। परन्तु . . . का पत्र बता रहा है कि हम तैयार तो फिनिक्स जैसे स्थानमें ही हो सकेंगे। श्मशानमें सोते हुअे भी निडर रहना मनुष्यका कर्तव्य है। परन्तु

संभव है कि श्मशानमें सोना शुरू करनेवाला आदमी सोते ही डरके मारे मर जाय। अुसी तरह तुम्हारा और मेरा हिन्दुस्तान अभी तो श्मशानरूप है। अुसमें बिस्तर बिछा कर मीराबाअीका प्रभुभक्तिका भजन ‘बोल मा बोल मा’ गा सकें, अिसकी तैयारी यहां करनी चाहिये—करनी पड़ेगी।... किसी भी प्रकारसे और किसी भी समय आनेवाली मौतका स्वागत करने योग्य बल मुझमें आयेगा, अैसा आभास हुआ करता है। मैं चाहता हूं कि सभीमें अैसा बल आये।”

* * *

“तुम जरा विचार करोगे तो देख सकोगे कि यह सवाल पैदा ही नहीं होता कि कौन किसे निकाले। जब फिनिक्सकी हालत पूरी तरह कमजोर हो जायेगी, तब निकालने और रखनेकी जरूरत ही नहीं रहेगी। परन्तु जिस पर सच्चा रंग चढ़ा होगा वही यहां रहेगा। अुस समय तो यह सवाल अुठेगा कि कौन यहां रहेगा। आज हम वेतन नहीं देते, परन्तु भोजन दिया जाता है। सवाल यही है कि अुसमें भी कमी करके, कष्ट अुठाकर और सूखी रोटी खाकर कौन रहेगा? फिनिक्स आश्रम भी फिनिक्समें ही रहेगा सो बात कहां है? जहां फिनिक्सका अुद्देश्य है, वहीं फिनिक्स है।... हम सारी तैयारी हिन्दुस्तानके लिअे करते हैं।... तुम मेरी आत्माको जितनी समर्थ मानते हो अुतनी ही समर्थ तुम्हारी आत्मा भी है। हमारी आत्माओंमें कोअी भेद नहीं है। परन्तु तुममें जितनी अनात्मता, दीर्घकालीन भीरुता, संशय, अनिश्चय आदि हों, अुन्हें निकाल डालो तो हम दोनों अेकसे ही हैं। फर्क अितना ही रह जाता है कि महाप्रयाससे मैंने जितने आश्रम खोले हैं, अुतने और अुनसे अधिक तुम भी खोल सकोगे, यदि तुम दृढ़तासे साहस करो।”

* * *

“मैं बहुत चाहता हूं कि मुझे वकालत फिरसे न करनी पड़े। यही मेरी बड़ी अिच्छा है। मैं भी चाहता हूं कि मेरे जीते-जी फिनिक्समें हम पूरी गरीबीसे रहने लगें। वह दिन दिखानेकी मैं अीश्वरसे प्रार्थना करता हूं। परन्तु लक्षण तो सब अुलटे ही देखता हूं।...कलके लिअे अेक पाअी भी नहीं है, कैसे काम चलेगा?—अैसे अवसरका अलभ्य लाभ हमें नहीं मिलेगा अैसा लगता है। अिस लाभको मैं अलभ्य मानता हूं, क्योंकि दुनियाके मुख्य भागोंकी यही स्थिति है, बुद्ध आदिकी यही स्थिति थी, और भविष्यमें भी रहेगी। अैसा निश्चित रूपसे लगता है कि अिसके बिना आत्मारामको पहचाना नहीं जा सकता।...ने हमें

ज्ञान सिखाया है, परन्तु वह शुष्क ज्ञान मालूम होता है। सच्चा ज्ञान नरसिंह महेता और सुदामाजीने सिखाया है, अैसा निश्चित लगता है। अिंद्रियोंका भोग भोग कर कहना कि मैं कुछ नहीं करता, अिंद्रियां अपना काम करती हैं, मैं तो कृष्ण हूं—आदि वाक्य बिलकुल मिथ्यावादियोंके-से हैं। जिसने पूर्ण अिंद्रिय-दमन किया है और जिसकी अिंद्रियां शरीर-यात्राके लिअे ही सारे व्यापार करती हैं, वही यह वाक्य कह सकता है। अिस दृष्टिसे हममें से अेक भी आदमी यह वाक्य बोलनेका अधिकारी नहीं है। और जब तक सच्ची गरीबी नहीं आ जाती, तब तक यह चीज हमें मिलेगी नहीं। यह माननेके लिअे कोअी कारण नहीं कि राजा आदि पुण्यके प्रतापसे राजा बनते हैं। अितना ही कहा जा सकता है कि वे कर्मके प्रतापसे बनते हैं। परन्तु यह कहना कि वह पुण्य-कर्म ही है, आत्माके गुणोंकी परीक्षा करने पर बिलकुल गलत मालूम होता है। ये विचार तुम सबको सही लगें और यदि तुम यह चाहते हो कि जिस प्रौढ़ पदवीका मैं चित्र खींच रहा हूं अुसे हम सब भोगें, तो संभव है अैसा समय अीश्वर कभी दिखा भी दे।"

* * *

"अभी रातके साढ़े नौ बजे हैं। केपटाअुनसे अभी पांच दिनकी मंजिल बाकी है। मैं दाहिने हाथसे लिखते-लिखते थक गया हूं, अिसलिअे तुम्हें बायें हाथसे पत्र लिख रहा हूं। शायद मैं सीधा जेल भेज दिया जाअूं। अिसलिअे यह पत्र लिख रहा हूं।

"मैं यह मान लेता हूं कि मेरे जेल जानेसे तुम तो खुश ही होगे, क्योंकि तुम समझदार हो। सत्याग्रहका रहस्य यह है कि हम जेलमें जाकर खुश हों और खुश रहें।

"फिनिक्सके बारेमें तुमने सवाल पूछा सो अच्छा किया। पहले यह विचार करना पड़ेगा कि हम आत्माको कैसे खोज सकते हैं और देशसेवा कैसे कर सकते हैं। अुसके बाद यह समझाया जा सकता है कि फिनिक्स क्या चीज है। आत्माको खोजनेके लिअे पहले तो नीतिको दृढ़ बनाना चाहिये। नीतिका अर्थ है अभय, सत्य, ब्रह्मचर्य आदि गुण सम्पादन करना। अैसा करनेसे देशसेवा अपने-आप हो सकती है। अैसा करनेमें फिनिक्स बहुत सहायक है। मेरा विचार यह है कि शहरोंमें जहां मनुष्य बहुत तंगीमें रहते हैं और जहां अनेक प्रलोभन होते हैं, वहां नीतिको सिद्ध करना बहुत कठिन है। अिसलिअे ज्ञानी पुरुषोंने

फिनिक्स जैसा अेकान्त स्थान बताया है। अनुभव सच्ची पाठशाला है। जो अनुभव तुम्हें फिनिक्समें मिला, वह और जगह न मिलता। आत्माको खोजनेका विचार भी वहीं हो सका। . . ."

* * *

"तुम्हारा स्नेह भूला नहीं जाता। बा पर तुमने विजय पाओी, अिसे मैं बहुत बड़ा काम मानता हूं। बा ने अपना स्वभाव बहुत बदल लिया है, अैसा मैं यहां अनुभव करता हूं।

"तुमने जो जो व्रत लिये हैं, अुनमें दृढ़ रहना। भूतकी तरह अुनके पीछे पड़े रहना। फिर तो तुम म . . . को जीत लोगे, जगतको जीत लोगे और अपने पर स्वराज्य प्राप्त करके हिन्द पर भी स्वराज्य प्राप्त कर लोगे। अिस प्रकार हमारा धर्म अैसा है जो सब जीतोंकी अेकमात्र कुंजी है। अिस प्रौढ़ धर्मकी सरलता और विषमताका पार नहीं है।

"जिस सादगीसे हम रहते थे, अुसे और बढ़ाना। मैं जब तक वहां था, तब तक तुम स्वतंत्र थे। अब यह समझना कि कैदमें हो। स्वादेन्द्रियको अपना मुंह न फैलाने देना। यह वस्तु ली जा सकती है और यह भी ली जा सकती है, अैसा सोचनेके बजाय यह झंझट कम हुओ और अुसे भी कम कर देंगे, अैसा प्रयत्न करके स्वादेन्द्रिय पर विजय प्राप्त करना।

"तुम्हारे रहन-सहनके सब समाचार मुझे देते रहना। तुम तथा भाओी प्रा . . . सहोदर भाओी हो, यह समझ कर रहना। खेतीमें मन लगाना, सारे फिनिक्समें सुगन्ध फैलाकर फिनिक्सको धर्मक्षेत्र बना देना। जहां तक हो सके मौन धारण करना।

"तामिलको न छोड़ना। मुत्तू वगैराके साथ बोलनेकी आदत डाल लेना।"

* * *

"तुम्हारा पत्र मिला। . . . स्तंभ अेकाअेक बन्द हो गये, यह बात मुझे भी चौंकाती है। ये स्तंभ यदि वे हों, जिन पर अमूल्य लेख लिखे गये थे, तो बुरा हुआ। तुमने तो ठीक ही किया है। तुमने शंकाका निवारण करवा कर स्तम्भ बन्द कर दिये यह ठीक ही किया। मुझे वह स्थान बताना। तब ज्यादा समझमें आयेगा। मैं यह मानता हूं कि अिमलीसे (शरीरमें) शिथिलता नहीं आती। भोजन ज्यादा खा लिया गया होगा।

"फिक्शनका अर्थ है कल्पित कहानी। रामायण और महाभारतमें अितिहास थोड़ा और कल्पना अधिक है, यह निःसन्देह बात है। वे दोनों धर्मग्रंथ हैं। करोड़ों लोग तो अुन्हें अितिहाससे भी अधिक मानते हैं, और यह अुचित है। भरतके जैसे ही रामके भाअी भरत न हुअे हों, परन्तु वैसे भरत हिन्दुस्तानमें तो हुअे हैं। तभी तो तुलसीदासजी अुनकी कल्पना कर सके। जिनके गुण रामायणमें चित्रित हैं अुनकी वन्दना सारा भारतवर्ष करता है।

"सत्याग्रह करनेके कारण की हुअी सारी मेहनत अगर व्यर्थ जाय और अुससे फिनिक्स अुजड़ जाय, तो हम कुछ भी चिन्ता न करें। शान्त स्थितिमें हम खेती करें। अशान्तिमें भीख मांगें, मजदूरी करें या भूखों मरें। अिस निरपवाद कानूनमें हमारा दृढ़ विश्वास होना चाहिये कि किया हुआ कर्म व्यर्थ नहीं जाता। फिरसे खेती करनेका मौका आये तो खेती करें, न आये तो निश्चित रहें। खेती साध्य नहीं, परन्तु साधन है। स्थूल रूपमें लोकसेवा हमारा साध्य है; सूक्ष्म रूपमें मोक्ष हमारा साध्य है। दोनोंको साधनेका अेक साधन खेती है। साध्यकी प्राप्तिमें वह बाधक बन जाय तब हम अुसे छोड़ दें।

"क...जो लूट ले रहे हैं, वह अनिष्ट है। फिर भी अैसे लोगोंके लिअे हमें तितिक्षा रखना चाहिये — अैसा मानकर कि किसी समय तो भी वे रसादिका त्याग कर देंगे। हमारा संग अुनके लिअे तो सत्संग ही है। अुनके लिअे हम जितनी आसानी पैदा कर सकें अुतनी कर दें। क...को लागू होनेवाला नियम हम सब पर लागू न करें। अिसलिअे अैसे मामलोंमें अेक ही नियम न रखें। क...भी सीमा छोड़ दें, तो हमारे कामके नहीं रह जायंगे।

"फिनिक्स संस्था कहनेका कारण पूज्य श्री गोखले हैं। अन्य लोग और वे स्वयं तुरंत समझ सकें, अिसलिअे अुन्होंने हमारी संस्थाका 'फिनिक्स' नाम रखा। फिनिक्सके कअी अुद्देश्य तो यहींकी संस्थाके हैं; और वे फिनिक्सके अुद्देश्योंको समझते थे, अिसलिअे अुन्होंने अुसका फिनिक्स नाम रखा। हमें हमेशा तो वह नाम रखना नहीं है। कहीं न कहीं स्थायी बन जायंगे तब दूसरा नाम ढूंढ़ लेंगे। ... रंगूनमें काफी अनुभव हुअे हैं।

बापूके आशीर्वाद"

गांधीजी दक्षिण अफ्रीकासे लन्दन गये और फिनिक्सकी शाला तथा श्री मगनलाल गांधी वगैरा लोग देशमें आ गये। वे सब शुरूमें गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टागोरके शान्तिनिकेतनमें रहे थे। श्री मगनलालको शान्तिनिकेतनका और

हिन्दुस्तानकी दूसरी संस्थाओंका जो अनुभव हुआ था, अुस परसे अुन्होंने शान्तिनिकेतनमें रहनेवाले फिनिक्सवासियोंके जीवनके बारेमें गांधीजीको लिखकर पूछा था। अुसके जवाबमें गांधीजीने लन्दनसे अेक पत्र लिखा था। दूसरी संस्थाओंके अनुभवके बाद फिनिक्स संस्थाके सम्बन्धमें बनाअी हुअी अपनी अंतिम राय अुन्होंने अिस पत्रमें बताअी है। वह पत्र मैं यहां अुद्धृत करता हूं :

"तुम सबके पत्र मिल गये। अपनी लाचार हालतमें मैं सबको पत्र नहीं लिख रहा हूं। अिसलिअे अिसे सबके लिअे समझकर सब लोग मुझे पत्र लिखते ही रहें।

"तुम छाछ लेनेकी छूट मेरे आनेके बाद मुझसे मांगनेवाले हो, परन्तु मैं यहींसे दे देता हूं। वहांकी हालत देख कर जो भी छूट लेना मुनासिब मालूम हो ले लेना और पूछनेकी राह न देखना। सब बातोंमें संयम रखनेकी बातको याद रखकर काम करो तो काफी है।

"तुम्हारा यह निश्चय ठीक है कि खेती सच्ची प्रार्थना और सच्चा परोपकार है। खेती करते, खाते, खेलते, घूमते तथा नहाते समय या और किसी समय भी हरिका नाम लेना केवल अुचित ही नहीं है, हमारा फर्ज भी है। जो राममय होना चाहे और होनेका प्रयत्न करे, अुसे किसी खास समयकी जरूरत नहीं। फिर भी युवकोंके लिअे नियमकी जरूरत है। अिसलिअे जो समय खेतीका न हो, अुसे खास तौर पर प्रार्थनाके लिअे नियत किया जाय। अिसलिअे तड़के ही जब अंधेरा हो तब, शास्त्रोंके कथनानुसार अरुणोदयसे पहले, संध्यादि किये जायं। हमने जो रातका समय प्रार्थनाके लिअे रखा है वह ठीक है।

"खेती करनेमें जो अुत्साह तुमने रखा है अुसे बढ़ाना। फलोंके पेड़ लगाना। . . . तुममें से बड़े लोग प्रत्येक शिक्षककी कुछ न कुछ सेवा अपने पर ले लें तो अच्छा हो।

"जितना हो सके अुतना सामान हाथसे बनाना। जो न बन सके अुसके बिना काम चला लेनेकी आदत डाल लेना। हम खेतीसे और शरीर-श्रमसे अपना गुजर करना सीख जायं, तो समझना कि हमने सब कुछ कमा लिया और सब कुछ सीख लिया। मुझे भी यही सीखना है। मैं तो शायद सीखे बिना ही देह छोड़ दूंगा। भगवान करे तुम्हारे लिअे अैसा न हो।

"वहां गुरुदेवको अड़चन होती हो और काफी जगह न हो, तो तंबूमें रहनेकी या दूसरी सुविधाकी मांग करना।

“मैं अिस नतीजे पर तो पहुंचा ही हूं कि दुनियामें आज अैसी कोअी संस्था नहीं है, जो फिनिक्सके आशयों या रहन-सहनसे अूंची पहुंचती हो। हो तो अुसे सभ्य वर्ग नहीं जानता। यह अच्छा है कि तुम सब पर यही छाप पड़ी है। मेरी तन्दुरुस्ती ठिकाने नहीं आअी थी कि अितनेमें कलसे बाको जोरका रक्तस्राव शुरू हो गया। पता नहीं अीश्वरकी क्या अिच्छा है। फिर भी तुम सब निश्चिन्त रहना।

“मेरी खुराकमें वनस्पतिके क्षार काफी नहीं है, अिसलिअे डॉक्टर अेलिन्सनने कन्दमूल और भाजी खानेकी सिफारिश की है। अिसलिअे अिस भयंकर स्थितिमें भी मैं प्रयोग कर रहा हूं। मेरा भोजन अिस प्रकार है : सुबह वहांसे लिये हुअे सूखे केले और फलीके दो-तीन चम्मच मिलाकर अुसका काढ़ा। अुसमें टमाटर भी डालता हूं और अेक चम्मच तेल। दोपहरको अेक छोटी गाजर और आधा छोटा शलजम कच्चा और गेहूं तथा केलेके आटेके बने आठ बिस्किट अुबालकर खाता हूं। कभी कभी गाजर और शलजमके बजाय कच्ची पत्ता गोभीके दो पत्ते पीस कर लेता हूं। शामको दो चम्मच चावल अुबालकर अुसके साथ अूपर बताये अनुसार कच्चा साग और भिगोये हुअे अंजीर तथा केले और गेहूंके आटेकी रोटीका छोटासा टुकड़ा। अभी तो अिस प्रकार चल रहा है। अुद्देश्य यह है कि पका हुआ भोजन छोड़कर कच्चे पर रहूं और गेहूं छोड़कर अुसके बजाय ‘नट’ पर वापस आ जाअूं। सुबह दो सेब लेता हूं। कच्चा शाक खाते हुअे अब लगभग अेक मास हो गया। अिससे कोअी नुकसान होता नहीं दीखता। तुम कहते थे कि कच्चा शाक खाया जा सकता है, परन्तु यह बात मेरे गले नहीं अुतरती थी। यहां बहुत लोग कच्चा शाक खाते दीखते हैं। अिसमें बहुतसे विचारोंका समावेश होता है, परन्तु अुन्हें अभी नहीं लिख सकता। फिर लिखूंगा। दूध-घी भी मैंने यहां अन्तिम बार लिया है। डॉक्टरोंके बहुत पीछे पड़ने पर नहीं लूंगा तो तबीयत बिगड़ जायगी अैसा महसूस होनेके कारण लिया है। अब मैं तो अिस जन्ममें ये वस्तुअें कभी नहीं खाअूंगा। अन्य व्रत वहां लूंगा। अिस बीच प्रसंगवश यहां कोअी व्रत ले लिया जाय तो कह नहीं सकता।”

५

पुत्रवत्सल गांधीजी

गांधीजीने अपना जीवनपथ निश्चित करना आरम्भ कर दिया था। अिस समाजमें हम जिन विचारों और व्यवहारको प्रगतिशील मानते हैं, वे गांधीजीको प्रगति-विरोधी मालूम हुअे। और दिनोंदिन अुनकी यह मान्यता मजबूत होती गअी। अुन्हें अैसा जान पड़ा कि यह संसार जिस दिशामें आगे बढ़ रहा है, अुस दिशामें वह अधोगतिके गहरे गर्तमें गिरनेके लिअे ही दौड़ रहा है। पाश्चात्य संस्कृति आत्मा-विहीन और अधार्मिक होनेके कारण वह अुन्हें संसारके विनाशकी जड़ प्रतीत हुअी। आजकलकी शिक्षा, मानवताको भी चकित कर देनेवाले विश्वविद्यालयोंके दांभिक प्रदर्शन, बौद्धिक शिक्षणकी कार्य-पद्धति और बुद्धिबल तथा शिक्षाके नाम पर होनेवाला राष्ट्रीयताका और मानवीय भावनाओंका ह्रास देखकर अुस शिक्षा और अुसकी भव्य दिखाअी देनेवाली संस्थाओंके प्रति अुनका मोह नष्ट हो गया। सच्ची शिक्षा कैसी होनी चाहिये, अिसकी योजना वे अपने हृदयमें बनाने लगे। और अपने पुत्रोंको वैसी ही शिक्षा देनेका अुन्होंने निर्णय किया। हिन्द स्वराज्य या आत्म-स्वराज्य — मोक्ष प्राप्त करनेके लिअे क्या क्या करना चाहिये, कैसी रहन-सहन होनी चाहिये, कैसा अध्ययन होना चाहिये, कैसी शिक्षा होनी चाहिये, कैसा व्यवहार होना चाहिये, अुसके योग्य जीवन बनानेके लिअे क्या किया जाना चाहिये — अैसे विचारोंके मंथन द्वारा गांधीजीने अपना जीवन-परिवर्तन किस ढंगसे किया, यह अुन्होंने अपनी 'आत्मकथा'में विस्तारसे वर्णन किया है। अिसी अुद्देश्यसे अुन्होंने फिनिक्स संस्थाकी स्थापना की और सारे कुटुम्बको अपने विचारोंसे रंगना शुरू किया। अिस बातसे अुनके बड़े पुत्र हरिलाल गांधीको असंतोष हुआ। अुन्हें अैसा लगा कि गांधीजी साधुताकी ओर प्रयाण कर रहे हैं। परिवारकी स्थिति संतोषजनक नहीं है, मुझे और दूसरे छोटे भाअियोंको शिक्षा देनेके लिअे गांधीजीने अभी तक कोअी साधन अिकट्ठे नहीं किये हैं। अिस पर ये नये विचार और अुन पर अमल करनेके लिअे कठोर आचरण! यह सब किसलिअे? शान-शौकत, वैभव, मान-प्रतिष्ठा और धनप्राप्तिके बजाय केवल देशसेवा और साधुताके मार्ग पर विचरनेवाले गांधीजीके प्रति श्री हरिलालके हृदयमें

असंतोषकी आग धधकने लगी। शरीर-श्रम करना, धंधा करना, अुद्योग करना, बीमारोंकी देखभाल करना, संयम और यम-नियमका पालन करके, व्रत लेकर संसारकी सेवाके लिअे तैयार होना और मोक्षके लिअे पाथेय बांधना ये बातें श्री हरिलालको पसन्द नहीं आअीं। आधुनिक शिक्षाकी संस्थाओंमें पारंगत होकर, परीक्षाअें पास करके और अुपाधियां लेकर जीवनको आगे बढ़ानेकी जो महत्त्वाकांक्षा अुनके हृदयमें जाग अुठी थी, वह किसी तरह शान्त नहीं होती थी। बा के मनमें भी अैसे ही विचार आया करते थे। 'अिन्होंने क्या सोचा है? क्या लड़कोंको अपढ़ रखना है? सबको लंगोटी पहनानी है? गरीब और भिखारी रखना है?' ये अुद्‌गार बा बार-बार प्रगट किया करती थीं। मौका आने पर गांधीजी अुन्हें समझाते थे, परन्तु अुनका हृदय किसी तरह मानता नहीं था। हरिलाल तो अकसर यह कह देते थे: "आपने जैसे बैरिस्टर बनकर देशसेवा करनेकी शक्ति प्राप्त की, वैसे हम भी शक्ति प्राप्त कर लेंगे और धन कमा लेंगे, अुसके बाद साधुताका और देशसेवाका विचार करेंगे।" अिन विचारोंने श्री हरिलालके दिलमें घर कर लिया। अुन्हें अैसा लगा कि जब तक मैं बापूजीके साथ रहूंगा, तब तक अुनके फंदेसे छूट नहीं सकूंगा। अिसलिअे अुन्होंने अुनके पाससे भागनेका विचार किया।

अेक दिन फिनिक्समें गांधीजीको मालूम हुआ कि हरिलाल जोहानिसबर्गसे चले गये हैं और पहले ही जहाजसे देशके लिअे रवाना होनेवाले हैं। अिस सम्बन्धमें अुनका पत्र भी मिला था। गांधीजीके लिअे यह समाचार असह्य था। अुन्हें यह अच्छा न लगा कि हरिलाल अुनसे छिपकर चले जायं। पुत्रवत्सल गांधीजीको हरिलालके अिस बरतावसे बड़ी चोट लगी। वे परेशान और विह्वल होकर कहने लगे: "हरिलाल चला गया? मुझसे असंतुष्ट होकर चला गया? तुझे यह क्या सूझा? हरिलाल, तूने यह क्या किया? मुझसे मिला तक नहीं? मैं तुझे अितना अधिक बुरा और निर्दय लगा? हरिलाल, तू कैसे चला गया?" अिस प्रकार विह्वलताके कारण गांधीजी दो दिन तक खूब बेचैन रहे, अुन्होंने अपार व्यथा अनुभव की। हरिलालके देशके लिअे रवाना होनेसे पहले डेलागोआ दो तार भेज कर अुन्हें वापस बुलवाया। और जब तक हरिलाल वापस न आये तब तक पुत्रवत्सल गांधीजी विह्वल बने रहे। अितना होते हुअे भी गांधीजी अपने विचारोंमें दृढ़ थे। अपने विचारोंमें अुन्होंने जरा भी क्षति न आने दी। हरिलालको समझानेकी कोशिश की। अुनके साथ खूब चर्चा की।

परन्तु अन्तमें हरिलाल न समझे और अुन्होंने भारत आकर अहमदाबादमें पढ़ाअी शुरू करनेका अपना फैसला कायम रखा। गांधीजीने अपना विरोध छोड़ दिया। अुनके संतोषके खातिर अुन्हें देश जाने दिया और पढ़ाअीके खर्चकी व्यवस्था कर दी। परन्तु तीन साल तक लगातार जब जब हरिलालके फेल होनेकी खबर आती तभी वे बोल अुठते : "अैसा ही हो सकता है; और कुछ हो ही नहीं सकता। अुसे मोह हो गया है। असफलताके बिना अुसका मोह टूटेगा नहीं। अच्छा हुआ!"

परन्तु गांधीजीके जीवन-प्रवाहका विरोध करके हरिलालने जो विद्रोह किया, अुसका असर दूसरे भाअियों पर भी पड़ा। भाअी मणिलाल अिस विषयमें विचार करने लग गये थे। बा को भी हरिलालका वियोग खटकता था। वे मणिलालको टोकती रहतीं कि कुछ अध्ययन करो, कुछ पढ़ो। परन्तु क्या पढ़ते? वे गांधीजीसे बातें करते और गांधीजी अुन्हें शिक्षाका — सच्ची शिक्षाका पाठ समझाते। शिक्षाके वे पाठ कैसे थे यह हम अगले प्रकरणमें देखेंगे।

६

गांधीजी और शिक्षा

गांधीजी स्वयं तो जीवन-साधनामें लगे ही हुअे थे, परन्तु अुन्हें अपने बच्चोंको भी अुसमें लगाना था। अिस प्रयत्नमें भाअी हरिलालने अुनके खिलाफ विद्रोह किया, यह हम पिछले प्रकरणमें पढ़ चुके हैं। अिस बातसे हमारे मनमें नया विचार पैदा होता है। शिक्षाके बारेमें गांधीजीके क्या विचार होंगे? भाअी हरिलालने नअी शिक्षा लेनेकी अिच्छा प्रगट की, गांधीजीके पुत्रके रूपमें दक्षिण अफ्रीकाकी परिस्थितिसे निकल कर अुन्होंने शिक्षाके लिअे भारत आनेका निश्चय किया और अिसके लिअे गांधीजीसे छिपकर निकल पड़े — अिन सब बातोंसे मालूम होता है कि गांधीजी जो शिक्षा पाकर बैरिस्टर बने, वैसी ही शिक्षा पाकर जीवनको आगे बढ़ानेकी भाअी हरिलालकी जो महत्त्वाकांक्षाअें थीं, वे गांधीजीको पसन्द नहीं थीं।

यह घटना तो मेरे फिनिक्स जानेसे पहले हुअी थी, अिसलिअे भाअी हरिलालसे मेरा परिचय नहीं हुआ था। परन्तु फिनिक्स जानेके बाद मैंने भाअी मणिलाल, रामदास और देवदासकी दिनचर्या देखी तो मुझे भी दुःख हुआ था।

मुझे भी अैसा लगा था कि अिन लड़कोंको किसी अुत्तम विद्यालयमें या महाविद्यालयमें पढ़ानेके बजाय गांधीजीने यहां **क्यों** पढ़ानेको रखा है? भाअी मणिलालके हाथमें पुस्तक तो पाठशालाका जो दो-तीन घंटेका समय रहता अुसी वक्त दिखाअी देती थी। वैसे सारे दिन तो वे और और धंधोंमें ही लगे रहते थे। सबेरे फावड़ा-कुदाली लेकर बगीचेमें काम करते, साग-भाजीके नये बीज डालते, बीजोंके लिअे नअी क्यारियां बनाते या फलके पेड़ोंकी नयी कलम करते। दो घंटेके अिस कामके बाद पाखानेकी बाल्टियां साफ करते, पाखानेको व्यवस्थित ढंगसे क्यारीमें मिला देते। और दोपहरका समय बढ़अीके काममें बिताते। अलमारी बनाते और मेज बनाते। फिर दोपहर बाद प्रेसमें कम्पोज करने जाते और प्रूफ सुधारते। अिस तरह सारे दिन अुन्हें कअी बातों पर ध्यान देना पड़ता। अिसके सिवा कोअी बीमार होता तो अुसकी देखभालका भी कुछ न कुछ काम अुनके सुपुर्द होता। यह सब मैं देखता तो मेरे मनमें प्रश्न अुठता कि ये लड़के आगे कैसे बढ़ेंगे?

परन्तु गांधीजीने तो शिक्षाकी अेक नयी ही पद्धति खड़ी कर ली थी। अुन्होंने अेक छोटीसी पाठशाला बना ली थी। अुसमें सत्याग्रही कार्यकर्ताओंके बच्चे, प्रेसके कार्यकर्ताओंके बच्चे और अुनके अपने तथा अुन पर श्रद्धा रखनेवाले कुछ स्नेहियोंके बच्चे पढ़ते थे। अिस प्रकार पच्चीस-तीस बच्चे गांधीजीकी संरक्षकतामें कुटुम्बीजनोंके रूपमें वहां रहते और गांधीजीकी पद्धतिसे पढ़ाअी करते थे। यह पद्धति कैसी थी? अुसकी कुछ कल्पना अुन्होंने 'हिन्द स्वराज्य' में दी है। यदि मनुष्यके शरीरको अिस तरहकी तालीम मिली हो कि वह अुसके काबूमें रह सके, सौंपा हुआ काम प्रसन्नता और आसानीसे करे, यदि अुसकी बुद्धि शुद्ध हो, शान्त हो और न्यायदर्शी हो, अुसका मन कुदरतके कानूनोंसे भरा हो और अिन्द्रियां वशमें हों, अुसकी अन्तर्वृत्ति विशुद्ध हो, वह नीच कामोंको धिक्कारता हो और दूसरोंके लिअे आत्मौपम्य भाव रखता हो, प्रकृतिके नियमोंके अनुसार चलता हो और प्रकृति अुसका अिसलिअे अच्छा अुपयोग करती हो कि वह स्वयं प्रकृतिका अच्छा अुपयोग करता है, तो अैसा मनुष्य शिक्षित –– सच्ची तालीम पाया हुआ माना जायगा। हम जिसे शिक्षा कहते हैं, जिसके लिअे हम बड़ी बड़ी शालाअें और विश्वविद्यालय स्थापित करते हैं, अुनमें जो विषय पढ़ाये जाते हैं अुनसे मनुष्यको अूपर बताअी हुअी शिक्षा नहीं मिलती। केवल भूगोल-विद्या, खगोल-विद्या, भूस्तर-विद्या या बीज-गणित पढ़ानेसे मन संयमी, प्रामाणिक,

न्यायप्रिय और सत्यनिष्ठ नहीं बनता। शरीरको भी अुससे अैसी तालीम नहीं मिलती कि वह अुसके वशमें रह सके। वह अपना काम यदि प्रसन्नचित्त और सरलतासे नहीं कर सकता, तो फिर अिन विद्याओंके सीखनेका क्या लाभ? अिसलिअे केवल अिन सबकी पढ़ाअीको गांधीजी पूरी और सच्ची शिक्षा नहीं मानते। शिक्षित व्यक्तिके बारेमें अुनका खयाल अैसा है: अेक किसान अीमानदारीसे खेती करके रोटी पैदा करता है और अपना तथा अपने परिवारके लोगोंका निर्वाह करता है, अुसे आम तौर पर संसारकी नीति-रीतिका ज्ञान है, वह पुत्रके रूपमें अपना कर्तव्य समझता है और अुसीके अनुसार अपने माता-पिताके साथ व्यवहार करता है, पिताकी हैसियतसे भी वह अपने कर्तव्यका अच्छी तरह पालन करता है और अपनी पत्नीके प्रति भी वफादार स्नेहीको शोभा देनेवाला पवित्र व्यवहार करता है, अुसे अिस बातका भी काफी ज्ञान है कि अपने सगे-सम्बन्धियोंके साथ या जिस समाजमें वह रहता है अुस समाजके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये, वह नीति-नियमोंको समझता है और अुन्हें पालता है, वह अपने पैदा करनेवाले प्रभुके प्रति पूज्यभावसे श्रद्धा रखकर तथा अुसके बच्चोंको अपने जैसा मानकर सबके साथ नम्रभावसे व्यवहार करता है; यह सब होते हुअे भी यदि अुसे अक्षर-ज्ञान न हो और वह अपने दस्तखत भी न कर सकता हो, तो अितने परसे ही अुसे अशिक्षित मानना अुचित नहीं है।

गांधीजी अैसा मानते हैं कि आजकल प्राथमिक शालाओंमें जो शिक्षा दी जाती है वह तो निरा अक्षर-ज्ञान है। वह अेक साधन मानी जा सकती है, साध्य नहीं। मनुष्य अपनी वृत्तिके अनुसार अुसका अुपयोग करते हैं। और अिस संसारमें सदुपयोगकी अपेक्षा अुसका दुरुपयोग ही अधिक हुआ है। अिसके सिवा शालाओंमें जो विषय पढ़ाये जाते हैं, वे तो विश्वविद्यालयोंके प्रमाणपत्र लेनेके लिअे हैं। अुनका अुपयोग अुनके जरिये पेट भरनेके लिअे ही होता है। यह शिक्षा जीवन-निर्वाहका अेक साधन बन गयी है और अुसका अुपयोग भी परहितकी अपेक्षा दूसरेके हितको हानि पहुंचाकर अपना स्वार्थ साधनेमें ही अधिक होता है, यह हम देख रहे हैं। शिक्षाके बारेमें अपनी अिस विचारसरणीके कारण गांधीजीने अपनी गृहशालामें अुसीके अनुसार कार्यक्रम रखा था।

परन्तु भाअी हरिलालकी तरह ही भाअी मणिलाल और रामदासको भी अिस शिक्षासे संतोष नहीं था। अिसलिअे गांधीजी प्रसंग आने पर अुन्हें

सच्ची शिक्षाके बारेमें समझाया करते थे। दूर होते तब पत्र द्वारा सच्ची शिक्षाके पाठ अुन्हें समझाते थे। अैसे कुछ पत्र अुन्होंने भाअी मणिलाल और रामदासको लिखे हैं। अुन्हें पढ़कर गांधीजीका यह प्रयत्न समझमें आ जायगा।

"चि० मणिलाल,

"तुम्हें क्या करना है, अिस सवालसे तुम घबरा गये। तुम्हारी तरफसे मैं जवाब दूं तो यह कहूंगा कि तुम्हें अपना फर्ज अदा करना है। अिस समय तुम्हारा काम माता-पिताकी सेवा करना, जितनी शिक्षा मिले अुतनी शिक्षा लेना और खेती करना है। आगेकी चिन्ता तुम न करो। वह चिन्ता तुम्हारे माता-पिताको है। जब वे मर जायंगे तब वह चिन्ता तुम करना। अितना निश्चय होना चाहिये कि तुम्हें बैरिस्टरी या डॉक्टरीका पेशा नहीं करना है। हम गरीब हैं और गरीब ही रहना चाहते हैं। पैसेकी जरूरत केवल भरण-पोषणके लिअे रहती है। फिनिक्सको अूंचा अुठाना हमारा काम है, क्योंकि अुसके जरिये हम अपनी आत्माकी खोज कर सकते हैं और देशसेवा कर सकते हैं। अितना विश्वासके साथ मान लेना कि तुम्हारी चिन्ता मैं हमेशा करता हूं। मनुष्यका सच्चा काम यही है कि वह अपना चरित्र निर्माण करे। कमानेके लिअे खास तौर पर कुछ सीखना नहीं पड़ता। जो आदमी मनुष्य-जातिका रास्ता कभी नहीं छोड़ता, वह कभी भूखों नहीं मरता; और भूखों मरनेका समय आ जाय तो डरना नहीं चाहिये। तुम निश्चिन्त रह कर जो पढ़ाअी वहां हो सकती हो करते रहो। यह लिखते हुअे तुमसे मिलने और तुम्हें छातीसे लगानेका मन हो रहा है। परन्तु अैसा नहीं कर सकता, अिसलिअे आंखें भर आअी हैं। तुम निश्चय समझो कि बापू तुम्हारे साथ निर्दयता नहीं करेंगे। मैं जो कुछ कर रहा हूं तुम्हारे भलेके लिअे ही कर रहा हूं। यह विश्वास रखना कि तुम औरोंकी जो सेवा करते हो वह कभी व्यर्थ नहीं जायगी।

बापूके आशीर्वाद"

अिसी तरह शिक्षा या अभ्यासके बारेमें भाअी रामदासको भी गांधीजीने नीचेका पत्र लिखा था:

"चि० रामदास,

"परोपकार करना, दूसरोंकी सेवा करना और वैसा करते हुअे जरा भी बड़प्पन न मानना, यही सच्ची शिक्षा है। जैसे जैसे तुम अुम्रमें बड़े होगे,

वैसे वैसे यह बात अधिक अनुभव करोगे। बीमारोंकी सेवा करने जैसा अुत्तम मार्ग और क्या हो सकता है। अुसमें धर्मका बहुत बड़ी हद तक समावेश हो जाता है।

"जब तक तुम दृढ़ नीतिकी रक्षा करोगे और अपना फर्ज पूरा करते रहोगे, तब तक मैं तुम्हारे अक्षर-ज्ञानके बारेमें निश्चिन्त हूं। यदि मेरा कार्य, जिसे शास्त्रोंमें यम-नियम कहा गया है, होता रहे तो काफी है। तुम शौकके खातिर या अधिक योग्य बननेके लिअे अक्षर-ज्ञान बढ़ाओ, तो अुसमें मैं तुम्हारा सहायक होअूंगा। और तुम अैसा न करो तो मैं तुम्हें अुलाहना नहीं दूंगा। फिर भी मनमें जो निश्चय कर लो अुस पर डटे रहनेकी कोशिश करना। तुम प्रेसमें क्या क्या करते हो, अुसका हाल लिखना। यह भी लिखना कि तुम कब अुठते हो और खेतमें क्या काम करते हो।

बापूके आशीर्वाद"

श्री मणिलालभाअीको लिखे दो-अेक पत्र और देखिये:

"चि० मणिलाल,

"तुम मि० वेस्ट आदिकी सेवा कर रहे हो, यह तुम्हारा सबसे अच्छा अभ्यास है। जो मनुष्य अपना कर्तव्य पूरा करता है, वह सदा ही अभ्यास करता है। तुम लिखते हो कि अभ्यास छोड़ देना पड़ा है। पर अैसी बात नहीं है। तुम सेवा करते हुअे अभ्यास ही कर रहे हो। हां, अक्षर-ज्ञानको छोड़ देना पड़ा, यह कहना ठीक है। सेवाके लिअे अक्षर-ज्ञानको छोड़ देनेमें कोअी बुराअी नहीं है। अक्षर-ज्ञान तो बादमें भी प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि सेवा करनेका अवसर बादमें आयेगा।...यह भी दिलमें लिख रखना कि तुम्हारा मन साफ है, असलिअे सेवा करते हुअे तुम बीमार नहीं पड़ोगे; और अितने पर भी बीमार पड़े तो मैं निश्चिन्त रहूंगा। अिस तरह तालीम लेकर ही तुम और मैं सब सम्पूर्ण बनेंगे। अच्छा जीवन व्यतीत करना सीखना सच्चा अभ्यास है। अन्य सब मिथ्याभ्यास है।

बापूके आशीर्वाद"

"चि० मणिलाल,

"तुमसे कोअी पूछे कि तुम कौनसे वर्गमें हो, तो क्या तुम अुसका जवाब नहीं दे सकते? अब यह जवाब देना कि 'मैं बापूके वर्गमें हूं।' तुम्हें पढ़नेका

विचार क्यों आया करता है ? कमानेके लिअे आता हो तब तो वह ठीक नहीं है, क्योंकि भोजन तो अीश्वर सबको देता है। तुम मजदूरी करके भी पेट भर सकते हो। और हमें तो फिनिक्समें या अैसे ही दूसरे काममें मरना है। तब कमानेकी बात ही कहां अुठती है ? तुम्हें देशके खातिर पढ़ना हो तो वैसा तुम आज भी कर रहे हो। यदि आत्माको पहचाननेके लिअे पढ़ना हो तो अच्छा बनना सीखना चाहिये। तुम अच्छे हो अैसा सभी कहते हैं। अब बाकी रही ज्यादा काम करनेके लिअे तुम्हारे पढ़नेकी बात, सो अुसके लिअे जल्दबाजीकी जरूरत नहीं। जितनी पढ़ाअी फिनिक्समें हो सकती हो अुतनी करो। बादमें देखा जायगा। अगर तुम्हें भरोसा हो कि मैं तुम्हारी चिन्ता रखता हूं, तो तुम अपनी चिंता छोड़ दो।"

* * *

"समझौता होनेकी आशा अब थोड़ी ही है। अिसलिअे यह पत्र मंगलवारको लिख डालता हूं, क्योंकि अब तक जितना काम रहा अुससे आगे ज्यादा काम रहनेकी संभावना है।...यहां ज्यों ज्यों मैं देखता हूं, त्यों त्यों मुझे लगता है कि यह माननेके लिअे कोअी कारण नहीं कि यहां शिक्षा ज्यादा अच्छे ढंगसे प्राप्त की जा सकती है। मैं यह भी देखता हूं कि कुछ शिक्षा यहां दोषयुक्त है। फिर भी मनमें यह अिच्छा बनी रहती है कि तुम सब थोड़े समय यहां रह जाओ। हम अपना कर्तव्य ठीक ढंगसे करते रहेंगे, तो अुसीसे जो होना होगा वह हो जायगा। तुम वहां दृढ़तापूर्वक पढ़ो, तो वह यहां आनेकी तैयारी जैसा ही है।"

* * *

सन् १९०८ में जब गांधीजी ट्रान्सवालकी जेलमें थे, तब पढ़ाअीकी चिन्ता करनेवाले भाअी मणिलालको अुन्होंने नीचेका पत्र लिखा था :

"चि० मणिलाल,

"...अब जेलमें मैंने काफी पढ़ लिया है। मैं अिमरसन, रस्किन और मेजिनीकी रचनायें पढ़ रहा हूं। अुपनिषद् भी पढ़ता रहा हूं। शिक्षाका अर्थ अक्षर-ज्ञान नहीं, परन्तु चरित्रका विकास — धर्मभावनाका भान — है। मेरी यह राय सब तरहके पठनसे मजबूत बन रही है। अपनी भाषामें हम अुसे शिक्षा शब्दसे पहचानते हैं। यदि शिक्षाका अुद्देश्य अैसा ही हो — और मेरी धारणाके

अनुसार केवल यही सच्चा अुद्देश्य है -- तो मैं कहूंगा कि तुम अुत्तम प्रकारकी शिक्षा पा रहे हो।

"बा की सेवा करके अुसके अुग्र स्वभावको सह लो। चि० हरिलालकी अनुपस्थितिमें चि० चंचीको बुरा न मालूम हो अिस प्रकार अटकलसे अुसकी जरूरतें जान कर अुसकी चिंता रखना और रामदास तथा देवदासकी संभाल रखना। अिस सबसे अधिक अच्छी शिक्षा और क्या हो सकती है? यह काम तुम पूरा कर सकोगे तो तुमको आधीसे ज्यादा शिक्षा मिल चुकी, यह मान लेनेमें मुझे क्या बाधा हो सकती है?'

"अुपनिषदों पर नथुरामजीकी प्रस्तावनाके अेक वाक्यका मेरे मन पर बड़ा गहरा असर पड़ा है। वे कहते हैं कि पहली ब्रह्मचर्य-अवस्था अंतिम सन्यस्त-अवस्था जैसी ही है। यह बिलकुल सच है। निर्दोष अवस्था यानी सिर्फ बारह वर्षकी अुम्र तक ही आनन्द भोगा जा सकता है। बच्चा बड़ी अुम्रका हुआ कि अुसे तुरन्त जिम्मेदारी समझना सीख लेना चाहिये। अिस अुम्रके बाद प्रत्येक मनुष्यको आचार-विचारमें सत्य और अहिंसा-सम्बन्धी संयमका पालन करना चाहिये। यह काम अैसी पढ़ाअीकी पद्धतिसे नहीं होना चाहिये कि जिससे हम अुकता जायं, परन्तु स्वाभाविक आनंदके रूपमें होना चाहिये।

"राजकोटके बहुतसे लड़के मुझे याद आते हैं। तुम्हारी आजकी अुम्रसे मैं छोटा था तब मुझे पिताजीकी सेवा-शुश्रूषामें सच्चा आनन्द आता था। बारहवें सालके बादसे मैंने जरा भी आनन्द नहीं देखा। यदि तुम सच्चे सद्गुणोंका अनुकरण करो और तुम्हारा जीवन सद्गुणमय बन जाय, तो कहूंगा कि तुमने शिक्षाका मेरा आदर्श पूरा कर दिया। अिन गुणोंसे सुसज्जित होकर तुम दुनियाके किसी भी कोनेमें अपना निर्वाह कर सकोगे और आत्मज्ञान — अीश्वर-ज्ञान प्राप्त करनेके मार्ग पर लग जाओगे।

"अिसका यह अर्थ नहीं कि तुम्हें अक्षर-ज्ञान प्राप्त नहीं करना चाहिये। परन्तु वह चीज अैसी है कि अुसे प्राप्त करनेके लिअे तुम्हें व्याकुल न होना चाहिये। अिसके लिअे तुम्हारे पास काफी अवकाश है; और दूसरोंकी सेवामें अुपयोगी साबित हो, अिसी हेतुसे तुम्हें शिक्षा ग्रहण करनी है।

"यह न भूलना कि भविष्यमें हमारे नसीबमें गरीबी है। जैसे जैसे मैं जगतके बारेमें अधिक विचार करता हूं, वैसे वैसे यह ज्यादा समझमें आता है कि

अमीर होनेसे गरीब रहनेमें ज्यादा आश्वासन है। धनवान बननेकी अपेक्षा गरीब रहनेमें गरीबीके फल ज्यादा सुन्दर और ज्यादा मीठे होते हैं।

बापूके आशीर्वाद"

गांधीजीने 'हिन्द स्वराज्य' नामक अपनी पुस्तकमें चारित्र्यको दृढ़ करना, सदाचारी बनना, मन और अिन्द्रियोंको संयममें रखना सीखना, अपना व्यवहार अैसा निःस्वार्थ रखना कि अुससे दूसरेका अहित न हो, बल्कि अुसका परिणाम दूसरेका कल्याण ही हो — अैसा चरित्रशील बननेमें ही शिक्षाकी सार्थकता बताओी है। अैसी शिक्षा किस तरह दी जाय, अिस विचार पर वे अपनी शालामें ही अमल करने लगे। और अपने लड़कोंको वे अिसी रास्ते पर ले गये, यह हमने अूपरके पत्र-व्यवहारसे देख लिया है। अिन विचारों पर अपने जीवनमें अमल करते हुअे अुन्हें कठिनाअियां भी आओीं, परन्तु वे अपने अमलमें दृढ़ रहे यही अुनकी जीवन-साधनाकी महत्ता है।

अेक पत्रमें अुन्होंने लिखा था:

"ब्राह्मणोंका आदर करनेमें हमें अपनी अन्तर्दशा पवित्र रखनी चाहिये, अुनके प्रति कटाक्ष नहीं करना चाहिये। जैसे खानदानी आदमीको देखकर हमें दया आती है और अुसके प्रति आदर भी पैदा होता है, वैसे वेश्याके लड़केके लिअे स्वाभाविक तौर पर हमारे दिलमें आदर नहीं होता। परन्तु मेरे कहनेका तात्पर्य यह नहीं है कि ब्राह्मणोंके दुराचारका समर्थन किया जाय। कोओी ब्राह्मण व्यर्थकी भीख मांगने निकले और तुम अभ्यास छोड़कर अुसे अेक मुट्ठी आटा दो, तो तुम अपने अभ्यासको नुकसान पहुंचाओगे। अिसमें मैं यह नहीं मानूंगा कि तुमने ब्राह्मणका आदर किया है; यह तो तुम्हारी भीरुता और अविचार होगा।

"मैं शालाकी शिक्षाके विरुद्ध नहीं हूं, परन्तु छापके विरुद्ध हूं। आजकलकी शालाओंमें अेक दोष तो यह है कि शिक्षक नीतिवान नहीं होते; और दूसरा दोष यह है कि बच्चे अुनसे अलग रहते हैं। तीसरा दोष यह है कि कितने ही विषयोंमें समय बेकार चला जाता है; और चौथा दोष यह है कि शालाअें अकसर हमारी बेड़ियोंकी निशानी होती हैं।

"तुम दूध-दही न छोड़ो तो अच्छा है। परन्तु अुन्हें प्रधानता न दो।

"मैं अच्छी शालाके विरुद्ध नहीं हूं। परन्तु यह मानता हूं कि ज्यादा लड़कोंवाली शाला अच्छी नहीं हो सकती। और शाला वही है जहां विद्यार्थी चौबीस घंटे रहते हैं। वहां दो प्रकारकी शिक्षा मिलती है।

"यह मान लेनेका कोअी कारण नहीं कि हमारे शास्त्र सब विचारपूर्वक और ज्ञानपूर्वक ही लिखे गये हैं। यह भी अेक शास्त्र है। यदि यह अर्थ करें कि जिसमें शुद्ध ज्ञान है वही शास्त्र है, तो अैसा कहा जा सकता है कि सब शास्त्र ज्ञानपूर्वक लिखे गये हैं। अिस विचारके अनुसार जिसमें नरमेध आदिकी बातें आती हैं, अुसे अज्ञान मानना चाहिये। संभव है यह बात शुद्ध शास्त्रोंमें बादमें दाखिल हो गअी हो। आत्मार्थीको यह खोज करनेकी जरूरत नहीं। वह अितिहास जाननेवालेके कामकी चीज है। हमें तो प्रत्येक लेख या वचनसे तत्त्व ग्रहण करना है। सब शास्त्रोंको शास्त्र मान कर अुनके अनर्थको अर्थ कहकर अुसे सही सिद्ध करनेकी झंझटमें हम क्यों पड़ें? हिन्दुस्तानमें और दूसरे देशोंमें भी ज्ञान और अज्ञानकी जोड़ी सदा साथ साथ रहती है। अिसलिअे काली माताके भोग वगैराका जो अन्याय हमारे धर्मके नाम पर होता हम देखते हैं, अुसे मिटानेके प्रयत्नमें हम नहीं पड़ सकते। हमारा पहला सूत्र यह है कि हम आत्माको पहचानें। यह पाठ पढ़ और जान लेनेके बाद सब कुछ अपने-आप हल हो जायगा और समझमें आ जायगा।

"अिसमें कोअी शंका नहीं कि विभीषण निःस्वार्थ बुद्धिसे प्रभु रामचन्द्रजीसे मिले होंगे। सगे भाअीका भी दोष प्रभुसे कौन छिपावे! और भाअीकी बुराअी दूर करनेके लिअे भगवानसे सहायता भी मांगी जा सकती है।

"तुमने भागवतका श्लोक अुद्धृत किया है। अुसके शब्दार्थका पालन नहीं हो सकता। कृष्णकी लीला कृष्ण ही जानते हैं। वे कामनावाले बन कर काम करें, तो भी हम स्थूल प्राणी अैसा नहीं कर सकते। अुनकी प्रभुता अुन्हें जो छूट देती है, वह छूट हम नहीं ले सकते। वैसे कृष्णके बारेमें भागवतके लेखकने अपने ज्ञानकी मर्यादाके अनुसार लिखा है। वास्तविक कृष्णको कोअी नहीं जानता।"

७

प्रथम दर्शन

मैं सन् १९०९ से — अपनी विद्यार्थी अवस्थासे ही — ‘अिंडियन ओपीनियन’ पढ़ता था। अुस सालके अन्तमें अुस पत्रके अंकोंमें ‘हिन्द स्वराज्य’ पहले-पहल छपा था। अुसे पढ़कर मुझे अत्यन्त आनन्द हुआ। सन् १९१० में नेटाल जानेके बाद गांधीजीके दर्शन करनेकी मनमें तीव्र लालसा पैदा हुअी। गोखलेजी नेटाल पधारे तब सभाओं और समारोहोंमें मैंने गांधीजीको दूरसे देखा था। अिससे प्रत्यक्ष दर्शनका संतोष तो हो ही नहीं सकता था। श्री गोखलेको हिन्दुस्तानकी ओर बिदा करनेके बाद गांधीजी ट्रान्सवाल होकर नेटाल लौटे। पता चलते ही मैं डरबन गया। श्री रुस्तमजी सेठके यहां मुझे अुनके दर्शन हुअे। मैंने अुनके चरणोंमें प्रणाम किया। मुझे अैसा लगा जैसे मेरी अुनसे पुरानी जान-पहचान हो; अिस मधुर मिलनसे हृदयको बड़ी तृप्ति हुअी। शामको अुन्होंने मुझसे पूछा, “क्यों फिनिक्स चलना है न?” मैंने हां कहा। शामको हम डरबनसे फिनिक्स गये। वहां मैं पहले अपने अेक स्नेहीसे मिलने गया था, परन्तु अुस समय गांधीजी वहां रहने नहीं गये थे। रातको ब्यालू करके मैं प्रार्थनामें शामिल हुआ। काफी आनन्द आया। वहांके लोगोंसे अपरिचित होनेके कारण रातको किसीसे कोअी बात न कर सका, अिसलिअे मैं सो गया। दूसरे दिन सबेरे सब अुठे। शालाके विद्यार्थी और विद्यार्थिनियां, शिक्षक और शिक्षिकाअें, गांधीजी और बा वगैरा अुठकर दातुन-पानीसे निपटनेके बाद नाश्ता करने बैठे। क्यूनेकी पद्धतिसे बनाअी हुअी डबल रोटी, नारंगीकी छालका मुरब्बा और भुने हुअे गेहूंकी बनाअी कॉफीका नाश्ता किया। नाश्तेके बाद सात बजे सब खेतीके काममें लगे। गांधीजीने दो फावड़े तैयार किये। अेक अुन्होंने लिया और दूसरा मुझे दिया। हमने बगीचेमें फलोंके पेड़ोंकी क्यारियां गोड़नेका काम शुरू किया। जहां तक मुझे याद है कोअी खास काम करनेकी गरजसे मैंने जीवनमें पहले-पहल ही फावड़ा पकड़ा था। फिर भी आजकल गांधीयुगमें किसान कहलानेमें गौरव माना जाता है, अिसलिअे मुझसे पूछा जाय तो मैं भी यही कहूंगा कि मैं किसान हूं। घासको गोड़ते गोड़ते हम दोनों

बातोंमें लग गये। सेवाभाव, देशसेवामें अुस भावनाकी जरूरत, देशसेवामें ब्रह्मचर्यका स्थान, ब्रह्मचर्यका पालन करनेकी अिच्छावाले भाअी या बहनको होनेवाली कठिनाअी वगैराके बारेमें हमने बातें कीं। ब्रह्मचर्य पालनका प्रयत्न करनेवाले कुछ व्यक्तियोंकी बातें अुन्होंने मुझे सुनाअीं। ब्रह्मचर्य-पालनमें पुरुषको अुसकी पत्नीकी ओरसे और पत्नीको अुसके पतिकी ओरसे आपत्ति हो तो क्या किया जाय, कैसा बरताव रखें, अिसकी भी चर्चा हुअी। दुराचारीकी पत्नी अपने पतिके साथ कैसा व्यवहार करे और दुराचारिणीका पति अपनी पत्नीके प्रति कैसा व्यवहार रखे, अिसकी भी चर्चा हुअी। अिस तरह बातोंमें कितना काम हो गया यह मालूम ही न हुआ और यह भी पता नहीं चला कि कितना समय निकल गया। ठीक ढाअी घंटे पूरे होनेके बाद हमने काम छोड़ा। बातोंमें कअी प्रश्नोंका हल मिल जानेसे मुझे अपार आनन्द हुआ। यह आनन्द तो हृदयको हुआ, परन्तु शरीर ढाअी घंटेकी सख्त मेहनतसे थक गया था। नहा-धोकर मैंने खाना खाया और भाअी श्री मगनलाल गांधीके यहां जाकर बैठा। थका-मांदा था। बातों बातोंमें वहीं सो गया। सारा शरीर दुःखने लगा। चलनेमें भी शरीर और पैर दुखते थे। दो दिनके आरामके बाद स्टेशन तक चलने लायक स्वस्थ हुआ। वहांसे स्टेशन जानेकी अिजाजत बापूजीसे मांगी और अुन्हें प्रणाम किया। अुन्होंने आशीर्वाद दिया और हुक्म दिया : "शान्तिसे व्यापार करना, परन्तु व्यापारमें अीमानदारी रखना। प्रामाणिक व्यापार करनेमें तुम्हें श्रीकृष्णकी सेवाका ही आनन्द मिलेगा। प्रह्लाद राक्षसोंमें रहकर भी निर्दोष रहे और रामको न भूले। वैसे ही तुम व्यापारमें रह कर भी सत्यको न भूलना। अितना करने पर भी वहां रहना असह्य हो जाय, तो खुशीसे यहां आ जाना।"

अुत्साहसे भरा हुआ मैं स्टेनगार गया। बापूजीकी आज्ञाको केन्द्रबिन्दु समझकर चलने लगा। कितने ही महीने बीत गये। अब अधिक व्यापार करना अच्छा नहीं लगा। दिलका दर्द असह्य हो अुठा। थोड़े महीने बाद स्टेनगारको छोड़ और हिस्सेदारको सारी जिम्मेदारी सौंपकर मैं चल पड़ा और फिनिक्समें जाकर मैंने गांधीजीका आसरा लिया।

८

गांधीजीका मार्गदर्शन

गांधीजीके दर्शन तो हुअे, परन्तु अुससे मनको संतोष न हुआ। दो दिन फिनिक्समें रहनेसे मेरी प्यास न बुझी। फिनिक्समें जाकर रहनेकी आतुरता बढ़ी। परन्तु किया क्या जाय? अनेक झंझटें थीं। सारी बाहरी झंझटोंसे अंतरकी झंझट ज्यादा बड़ी थी। हृदयकी निर्बलताके कारण प्रलोभन पीछा न छोड़ते थे। यह अच्छा या वह अच्छा, अिसका निर्णय नहीं हो पाता था। और निर्णय न हो तब तक गांधीजीसे कहा भी कैसे जाय? मैं जिस व्यापारमें लगा हुआ था, अुसकी जिम्मेदारी मेरी थी। अुसमें मेरा हिस्सा था। मेरे चाचाजी सारा व्यापार मुझे सौंपकर भारत गये थे। अैसी हालतमें मैं व्यापार भी नहीं छोड़ सकता था। और व्यापारसे मुक्त होकर अिस तरह सार्वजनिक संस्थामें शामिल होने और धन कमानेका अुज्ज्वल भविष्य नष्ट करनेका मेरे माता-पिता और पत्नी विरोध करते थे। वे सब यहां भारतमें बैठे बैठे अपना विरोध प्रगट किया करते थे। मैंने शुरूसे ही अपना विचार अुन्हें बता दिया था कि मेरी वृत्तिके अनुसार व्यापार करनेसे कुल मिलाकर लाभ होगा, अैसी मेरी श्रद्धा है। परन्तु वह श्रद्धा अुनमें नहीं थी। अुन्हें अैसा लगा कि काम-धंधा छोड़कर मैं त्यागी बन जाअूंगा। व्यापार करना हो तो यह दलील नहीं की जा सकती कि मुझे स्वच्छ व्यापार ही करना है, गंदा व्यापार नहीं करना है। ग्राहकको धोखा न दिया जाय, परन्तु अुसे खुश करके, अुसे दिखाकर, हमें जो माल अुसे देना हो अुसके देनेमें पाप कहां है?—अैसी अुनकी दलील थी। अिस बारेमें मतभेद बढ़ता गया। मेरे मनकी तीव्रता बढ़ती गअी। अिस बारेमें जैसे मैंने अुनके साथ पत्र-व्यवहार किया, वैसे ही गांधीजीके साथ भी किया। अिस प्रकरणमें फिनिक्स संस्था, अुच्च और प्रामाणिक जीवन तथा देशसेवाके बारेमें पूज्य गांधीजीकी क्या विचारधारा थी और मेरे हृदयके मंथन-कालमें अुन्होंने मुझे किस तरह रास्ता बताया, यही मैं बताना चाहता हूं। अिसी ढंगसे मैं अनेक विषयों पर अुनके विचार पेश कर सकूंगा।

मैं नेटाल प्रान्तके स्टेनगार गांवमें रहता था और वहीं मेरा व्यापार चलता था। अुसे छोड़ कर फिनिक्समें रहने और अुनके विचारोंके अनुसार

जीवन-परिवर्तन करके देशसेवाकी तालीम पानेका अपना विचार मैंने अुन्हें बताया। अुसके जवाबमें अुन्होंने मुझे सन् १९११ में नीचेका पत्र लिखा :

"भाअीश्री रावजीभाअी,

"तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे पत्र परसे मैं समझता हूं कि तुम्हारी अिच्छा फिनिक्समें काम करनेकी है। यह विचार बहुत अच्छा है। मैं तुम्हें प्रोत्साहन दूंगा। परन्तु यहांका जीवन तुमसे हजम हो सकेगा, अिस बारेमें मुझे शंका है। यहां रहकर (१) ब्रह्मचर्य पालना होगा। (२) सूक्ष्म सत्यव्रत पालना होगा। (३) काम मुख्यतया शरीरका यानी कुदाली-फावड़ेका करना होगा। (४) अक्षर-ज्ञान बढ़ानेका अुद्देश्य हो तो अुसे भूल जाना होगा। सहजमें और जरूरत पड़ने पर वह बढ़ जाय तो हर्ज नहीं। (५) दिलमें निश्चय करना होगा कि अक्षर-ज्ञानके बजाय चारित्र्यको दृढ़ करना हमारा कर्तव्य है। (६) जाति या कुटुम्बका निर्भय होकर विरोध करनेकी तैयारी रखनी होगी। और (७) शुद्ध गरीबीका जीवन अपनाना होगा।

"यह सब तुमसे हो सके या करनेकी तुम्हारी अिच्छा हो, तो ही फिनिक्स आनेका विचार करना। यह समझ लेना कि यहांकी जिन्दगी दिनोंदिन ज्यादा कठिन होगी और अुसका कठिन होना सुखकी बात है।

"यदि तुम्हारा विचार मार्च महीनेमें आनेका हो जाय, तो अूपरके विचारोंका विकास करना। पत्र लिखते रहना।

मोहनदासके यथायोग्य"

मेरे पिताजीका गांधीजीके साथ परिचय था। अुन्होंने जब पत्र द्वारा मेरे विचार जाने, तो गांधीजीको अिस सम्बन्धमें पत्र लिखा। मुझे अैसा लगा कि वह पत्र पानेके बाद गांधीजीने मेरे सम्बन्धमें अपने विचार बदल लिये हैं। अपनी यह राय जब मैंने अेक पत्रमें बताअी तो गांधीजीने मुझे नीचे लिखा पत्र भेजा :

"भाअीश्री रावजीभाअी,

"तुम्हारा पत्र मिला। मैंने अपने विचार बदले नहीं हैं, लेकिन तुम्हारे पिताजी तुम्हें फिनिक्स आनेको मना करें, तो मेरा धर्म है कि मैं तुम्हें अिनकार कर दूं। और तुम्हारा भी यही धर्म है (परन्तु तुम्हारे पिताजी तुमसे स्पष्ट

अधर्म करायें, तो अुससे मुक्त होनेके लिअे मैं तुम्हें फिनिक्समें ले सकता हूं।) मुझे लगता है कि जब हम नीति-सम्बन्धी कठिनाअीमें पड़ जायं अुस समय कोअी खास कदम अुठानेसे माता-पिता मना करें, तो हम चुप हो जानेके लिअे बंधे हुअे हैं। परन्तु वे कोअी पाप करवाना चाहें तो हम न करें। अिसमें प्रह्लादजीके अुदाहरणके सिवा दूसरा कोअी अुदाहरण नहीं बताया जा सकता। और पिताके हुक्मसे हम हर तरहका शारीरिक दुःख अुठा सकते हैं, परन्तु आत्माका दुःख नहीं अुठा सकते।

"तुम व्यापारमें रह सकते हो और नीतिकी रक्षा भी कर सकते हो। अुसीमें तुम्हारा शिक्षण है। तुम जिस तरहकी जिन्दगी बितानेकी अिच्छा रखते हो, अुसकी वह तैयारी होगी। और तुम अपने व्यापारमें अटल प्रामाणिकता रख सकोगे, तो अपने व्यापारमें अुपकार भी कर सकोगे। जो भी ग्राहक आये, अुससे अेक ही और वह भी अमुक नफा (साधारण) देनेवाले दाम ही लिये जायं। जो चीज हमारे लिअ त्याज्य है, अुसे न बेचा जाय। ग्राहकोंके साथ नम्रतासे बात की जाय। माल बेचनेके लिअे अुनकी खुशामद न की जाय। नौकर हों तो अुन्हें भाअी समझकर अुनके साथ बरताव किया जाय। ये सब बातें आसानीसे की जा सकती हैं। तुम्हें अैसा नहीं लगना चाहिये कि व्यापार करना लालचमें पड़ना है, क्योंकि तुम्हें व्यापार केवल अनीतिके लिअे ही पसन्द नहीं है। तुम तो सिर्फ पिताजीकी आज्ञाके अधीन होनेके कारण ही व्यापार करोगे। अिसलिअे अुसमें प्रामाणिकता रखना आसान मालूम होना चाहिये। तुम कहते हो कि रुपयेका तुम्हें लोभ नहीं है। जिस स्थितिके प्रति हम वीतराग हों अुस स्थितिमें रहनेसे हम दुःख पाते हैं, परन्तु भ्रष्ट तो हरगिज नहीं होते। प्रह्लादजी राक्षसोंके बीचमें विष्णुके भक्त रहे। मुझे अैसा नहीं लगता कि यह अुनके लिअे कोअी मुश्किल बात थी। क्योंकि वे राक्षसी प्रवृत्तिके बारेमें पूरी तरह वीतराग थे।

"मनुष्य सूली पर बैठा होने पर भी अपने व्रतकी रक्षा कर सकता है। अुस समय भी जिस व्रतकी रक्षा हो सके वही सच्चा व्रत है। यदि नीति हमारे लिअे स्वाभाविक बन जाय, हमारी हड्डियोंमें पैठ जाय, तो अुसकी रक्षा जरूर होती है; और अुस हद तक अुसका विकास करना हम सबका कर्तव्य है। मैं चाहता हूं कि तुम्हारी शुभ अिच्छाअें सफल हों।

मोहनदासके यथायोग्य"

गांधीजीके अुपरोक्त पत्रोंके मार्गदर्शनसे मैं अपने सिर पर आअी हुअी जिम्मेदारीको तटस्थ हृदयसे पूरा करनेमें लग गया। और जब मेरे हिस्सेदार चाचा देशसे वापस आ गये, तो अुन्हें सारा व्यापार सौंपकर मैं मुक्त हो गया और फिनिक्स जाकर वहांका बन गया।

वहां रहनेके बाद और सत्याग्रहकी आखिरी लड़ाअी खत्म होनेके बाद अेक और प्रसंग पर मेरा हृदय विह्वल हो गया। मुझे अपनी पूज्य माताजीका वात्सल्यपूर्ण पत्र मिला। अुसे पढ़कर मैं बेचैन हो गया। प्रेममूर्ति माताके दर्शनके लिअे मैं छटपटाने लगा। गांधीजी अुस समय केपटाअुनमें थे। मैंने अुन्हें अपनी माताजीके पत्र और अुससे पैदा होनेवाली अपनी विह्वल दशाका वर्णन करनेवाला अेक पत्र लिख भेजा। अुसके जवाबमें अुन्होंने नीचेका पत्र लिखकर मुझे सान्त्वना दी :

"भाअीश्री रावजीभाअी,

"तुम्हारा पत्र आज अितनी देरसे मिला कि आजकी डाकसे मैं तुम्हें पत्र नहीं लिख सकता और तार भी नहीं भेज सकता। तार तो अब सोमवारको ही करूंगा।

"जहां माताके प्रेमकी बात है, जहां पुत्रकी वत्सलताका सवाल है, वहां तीसरे आदमीका सलाह देना धर्म-संकट है। फिर भी मुझे सलाह देनी ही पड़ेगी। तुम्हारे पिताजीके पत्र परसे तुम जिस निर्णय पर पहुंचे थे, अुस निर्णयके समय तुम्हारी माताजीके अुद्‌गारोंकी हम कल्पना कर सके थे। अुनका पत्र आनेसे नअी बात पैदा नहीं होती। परन्तु नअी भावना अुत्पन्न हो गअी है और प्रेमभावने स्वाभाविक रूपमें तुम्हारे हृदय पर अधिकार कर लिया है। अब यदि तुम निर्मोही बनकर फैसला कर सको, तो तुम्हारा प्रेम निर्मल और दिव्य स्वरूप ले सकता है। तुम अपना प्रेम सारे जगतको दे सकते हो। अिसलिअे चाहो तो वैसा करनेका प्रयत्न कर सकते हो। यही मातृभक्तिका अुद्देश्य है। अन्य कोअी भक्ति स्थूल, लौकिक और केवल देहके प्रति है। अिससे मुक्त होनेके पद तुम बहुत बार गाते हो। 'आ संसार असार विचारी'[1] भजन गाकर अुसकी अन्तर्ध्वनिका विचार करना। 'जीवने श्वास तणी सगाअी'[2]

---

१. अिस संसारको असार मानकर।

२. जीवके साथ श्वासकी सगाअी है।

की क्या ध्वनि है ? फिनिक्सके रहन-सहनमें और दूसरे रहन-सहनमें यह फर्क है कि हम जिस वस्तुके बारेमें पढ़ते हैं अुसे आचरण द्वारा अपनेमें दृढ़ करनेकी कोशिश करते हैं। तुम्हारे हिन्दुस्तान जानेका असर क्षणिक होगा। पन्द्रह या पांच दिनके बाद तो रोना ही है। अुसके बाद तो वियोग ही है।

"अिसके सिवा, हम अैसी जिन्दगी बिताना चाहते हैं कि हमारे पास अेक पाअी भी न रहे। विचार करो कि अैसा गरीब आदमी अैसे समय क्या करेगा।

"अपने माता-पिताके दर्शन करनेकी भावना तुममें सदा ही रहना अुत्तम है। अभी अिस भावनाको दबाकर अपना जीवन विशेष वीतरागी बनाना तुम्हारा कर्तव्य है। तुम अपना चरित्र बनानेके लिअे ही देशनिकाला भुगत रहे हो। तुम्हारी यह स्थिति वनवासकी स्थिति है। अिसीमें तुम अपने माता-पिताकी शोभा बढ़ाओगे। तुम स्वच्छन्द आचरण नहीं कर सकते। परन्तु दिनोंदिन आत्मोन्नति करो, दिनोंदिन संयमी बनो, अिसलिअे अभी तुम देश जानेके फर्जसे मुक्त हो।

"ये विचार करनेमें मैंने प्रेसकी स्थितिका जरा भी खयाल नहीं किया है। तुम्हारी आत्मोन्नति किसमें है, यही सोचकर मैंने सलाह दी है।

"फिर भी अगर लौकिक मातृभक्ति तुम्हें देशकी ओर ही खींचती हो और तुम यहां शान्तचित्त होकर न रह सको, तो तुम शौकसे जा सकते हो। मेरा लिखना सलाहके रूपमें है, अैसा समझ कर तुम स्वतंत्र निर्णय करना और अुसीके अनुसार चलना।

मोहनदासके यथायोग्य"

९

गांधीजीकी वात्सल्यपूर्ण शुश्रूषा

हिन्दुस्तानके हालके मुक्तिके रण-संग्राममें सत्याग्रह आश्रमने जो काम किया है, वही काम दक्षिण अफ्रीकाकी लड़ाअीमें फिनिक्स आश्रमने किया था। वहांका जीवन भविष्यकी लड़ाअीके योग्य बननेकी तैयारीके रूपमें मालूम होता था। सच पूछा जाय तो फिनिक्समें अैसी ही तालीम मिलती थी, जिससे हम समस्त जीवनके लिअे योग्य बन जायं। अिसलिअे वहांके रहन-सहनके बारेमें

थोड़ासा लिखना अुपयोगी होगा। सतत साधनाके प्रतापसे गांधीजी आजके गांधीजी बने हैं। अुन्होंने अपने पहले जीवन-प्रयोग फिनिक्स आश्रममें किये थे। अपने भोजन-सम्बन्धी विचार, दवा-दारू सम्बन्धी विचार, बीमारोंकी सेवा-शुश्रूषाकी पद्धति आदिके प्रयोग अुन्होंने ज्यादातर फिनिक्समें किये थे। वे प्रयोग मैंने देखे हैं तथा कुछ हद तक मैं अुनमें गांधीजीका साथी बना हूं। अतः यहां अुनका और फिनिक्सके जीवनका थोड़ा-बहुत वर्णन कर दूं, तो मैं अपनी मर्यादासे बाहर गया नहीं माना जाअूंगा।

मेरे फिनिक्समें भरती होते ही मुझे कितनी ही बातोंका अनुभव होने लगा। मुझे छुटपनसे ही गठियाका रोग था। देशमें और नेटाल जानेके बाद वहां मैंने बहुतेरी दवाअें की थीं। वैद्य और डॉक्टर अिलाज कर करके थक गये थे। परन्तु गठिया कम नहीं होता था और समय समय पर दर्शन देता ही रहता था। सन् १९१२ के आखिरी भागमें मैं फिनिक्समें रहने गया। अुस समय गांधीजी वहां स्थायी तौर पर रहते थे। वहां जानेके बाद मैं भी वहांके वातावरणमें मिल गया। मैंने खुराकमें परिवर्तन किये। पहले तो जो भी खानेकी लालसा होती अुसे पूरा करनेके लिअे मन तैयार रहता था। स्वादेन्द्रियकी सभी चाट मैं पूरी करता था। मिर्च-मसाले और मिठाअियोंमें कोअी कसर नहीं रहती थी। तब संयमकी तो बात ही कहांसे होती? अिसलिअे अूपरी दवाओंके जोरसे मेरा दर्द भी अूपरसे तो मिट जाता था, परन्तु शरीरमें वह घर करके बैठ गया था। फिनिक्समें जानेके बाद मेरा मनचाहा भोजन बन्द हो गया। शरीर और अुसमें रहनेवाली आत्माकी पुष्टिके लिअे क्या चाहिये, अिसीका विचार करना पड़ता था। मिर्च, मसाले, शकर, गुड़, दूध, दही वगैरा खाना मैंने बन्द किया, और संयमकी दृष्टिसे खाना शुरू कर दिया। धीरे धीरे मैंने अन्नाहार भी बन्द कर दिया और सिर्फ फलाहार करने लगा। नतीजा यह हुआ कि तरह तरहके स्वादिष्ठ आहार और दवाओंके बोझके नीचे जो बीमारी दबी हुअी थी अुसे स्वाभाविक मार्ग मिल गया। फलाहार शुरू किये अेक महीना भी पूरा नहीं हुआ होगा कि शरीरके सारे जोड़ोंमें गठिया नजर आया। सारे जोड़ अकड़ गये। अुठने, बैठने या चलने-फिरनेमें बहुत पीड़ा होने लगी। शौच जाना भी मुश्किल हो गया। चार दिनमें मैं तंग आ गया। गांधीजी तो यह सब जानते ही थे। लगभग सारे दिन हम साथ ही रहते थे। किसे क्या खानेको दिया जाय और किस बीमारकी क्या सेवा की जाय,

यह सब अुन्हींके सिर पर था। आत्माके वैद्यकी तरह शरीरके वैद्य भी वे ही बन गये थे। मेरी बीमारीको देखकर गांधीजीने मुझे अपने हाथमें ले लिया। मेरा भोजन तो फलोंका ही जारी रखा। सिर्फ नीबू, खट्टी नारंगी जैसे थोड़ी भी खटाअीवाले फल बन्द करा दिये। कच्चे या पके टमाटर जहां तक हो अधिक देना शुरू किया। शरीरके लिअे कुछ न कुछ चिकनी चीज तो होनी ही चाहिये। घीसे शरीरमें चर्बी बढ़ सकती थी, तेलसे मेदेकी कुछ गरमीके कारण कब्जकी संभावना रहती थी, अिसलिअे ऑलिवके फलका तेल (जिसे हम जैतूनका तेल कहते हैं) शुरू किया। फिनिक्समें यही तेल काममें लिया जाता था। ऑलिव ऑअिल रेचक होने पर भी पौष्टिक होता है। किसी चीजमें मात्रासे अधिक लेने पर कुछ अरण्डीके तेलके जैसी गंध आती है, परन्तु ठीक मात्रामें लिया जाय तो बहुत स्वादिष्ठ लगता है। अिस प्रकार खुराकमें थोड़े परिवर्तन किये। खुराकके परिवर्तनके साथ अन्य अुपचार भी शुरू किये।

सुबह बिस्तरमें रहता तब मुझे यह शंका होती कि आज तो मुझसे बिलकुल नहीं अुठा जायगा। अितनेमें गांधीजी आते। अुनके आनेका जरासा अिशारा पाते ही मैं तुरन्त किसी तरह अुठ बैठता और खड़ा होनेकी कोशिश करता। अुनके पैरों पड़ता। वे मेरे सिर पर हाथ रखते। अुस हाथमें कितना वात्सल्य होता था! कितना माधुर्य रहता था! अुजाला हो जाता तो वे मेरी जीभ देखते और मुझे व दूसरोंको दातुन देकर चले जाते। दातुन-कुल्लेसे निपट कर मैं अेक अलग कमरेमें जाता। नियमित समय पर गांधीजी वहां आते। लगभग दो-तीन सेर साबुनका पानी बनाते, अितना साबुन मिलाते कि पानी सफेद हो जाय। अुसमें करीब दो रुपये भर साफ अरण्डीका तेल डालते और पिचकारी द्वारा गुदाकी तरफसे मेरे पेटमें वह पानी पहुंचाते। जब पेटमें सहन होने जितना पानी पहुंच जाता, तो हाथोंमें थोड़ा अरण्डीका तेल लगाकर गांधीजी मेरा पेट अिस ढंगसे मलते कि पेटके भीतरका पानी अन्दरके भागमें फैल जाय और अंतड़ियोंसे चिपटा हुआ मल छूट जाय। पेटमें गया हुआ पानी अिस प्रकार दो-तीन मिनट तक और सहन हो सके तो ज्यादा देर तक पेटमें घूमता हुआ रखनेके बाद शौच जाना होता था। पानीके साथ पेटका मल निकल जानेके बाद पानीसे भरे टबमें छाती और जांघोंके बीचका भाग पानीमें रखकर मैं बैठ जाता और पेटको हाथसे मला करता। लगभग आध घण्टे अिस तरह

पेट मलनेके बाद ठंडे पानीसे नहा डालता। अिस प्रकार हर दूसरे दिन गांधीजी मुझे पिचकारी देते और बीचके दिन वाष्पस्नान (स्टीमबाथ) कराते। वाष्पस्नानका तरीका यह है। स्टोव पर भगोनेमें पानी रखा जाय। वह खूब अुबलने लगे तो अुसे कुरसीके नीचे रख दिया जाय। कुरसी पर गुदड़ी या कम्बलकी तह करके अुस पर नंगा बैठा जाय। फिर सावधानीसे चारों तरफ दो तीन कम्बल अिस ढंगसे लपेट लिये जायं कि स्टोव और शरीरको जरा भी हवा न लगे। यह क्रिया बन्द कमरेमें ही होनी चाहिये। कम्बल लपेटकर तुरन्त स्टोवकी गरमी कम कर दी जाय। स्टोवको अितना ही जलता रखा जाय कि अुसके अूपरका पानी जरूरी भाप देता रहे और ठंडा न पड़ जाय। शरीरका सिरका भाग खुला रहने दिया जाय। पांच मिनटमें ही भाप शरीरके सारे भागमें घूम जायगी। जो भाग गठियाके असरसे जकड़े हुअे हों वहां भाप अधिक लगे, अिस ढंगसे शरीरको पलटते रहना चाहिये। शरीरके रोम रोमसे पसीना बहने लगता है। जब खुले कपाल पर पसीनेके मोती निकल आयें और थोड़ी थोड़ी घबराहट होने लगे, तब पासवाला आदमी होशियारीसे कुरसीके नीचेका स्टोव बिलकुल बन्द कर दे। फिर धीरेसे सब कम्बल हटा लिये जायं। शरीर खुला हो जानेके बाद साफ तौलियेसे शरीरका पसीना पोंछ डाला जाय। अुस समय अिस बातकी विशेष सावधानी रखी जाय कि शरीरको हवा न लगे। शरीर पोंछकर साफ पानीसे नहा लिया जाय। अूपर बताअी पद्धतिसे हर तीसरे दिन स्टीमबाथ भी मुझे गांधीजी देते थे। पिचकारीसे मेरा पेट साफ हो गया। टमाटर तो गठियाके शत्रु ठहरे। वे बहुत ही निर्दोष होते हैं। जहां तक हो सका मैंने अुनका अधिक अुपयोग किया। मैं दूसरी जो खुराक लेता वह भी अैसी होती, जिससे शरीरमें हानिकारक तत्त्व बढ़ने बन्द हो जायं। और, स्टीमबाथसे पसीनेके जरिये अिकट्ठा हुआ खराब खून कम होकर जकड़े हुअे जोड़ ढीले होने लगे। अिस तरह तीन महीनेमें मेरे शरीरकी रक्तशुद्धि हो गअी। धीरे धीरे भोजनमें भी परिवर्तन किया। मुख्यतः गेहूंकी रोटी, जैतूनका तेल और पके टमाटरोंका भोजन रखा। दिनोंदिन मेरी बीमारीमें बहुत सुधार होता गया। गठिया शरीरमें घूमता रहता था। आज पैरोंके घुटनोंमें दर्द होता तो कल हाथोंकी कोहनीमें होता और परसों कमर या हाथोंकी अंगुलियां अकड़ जातीं। परन्तु अुनका दर्द कम होने लगा। अिस प्रकार रोजकी बीमारी और अुसका अिलाज जारी रहते हुअे भी मुझे याद नहीं कि मैं कभी

बिस्तर पर पड़ा रहा। बिस्तर पर पड़ा न रहना और भरसक श्रम करते रहना भी गठियाका अेक आवश्यक अुपचार था। मेरी दिनचर्या अिस प्रकार थी:

फिनिक्समें सुबहकी प्रार्थनाका नियम नहीं था, अिसलिअे बीमारीके दिनोंमें मैं छह बजे ही अुठता था।

६–० से ७–० दातुन-कुल्ला और शौचादि क्रिया।

७–० से ८–० शालामें विद्यार्थियोंके साथ।

८–० से ९–० बीमारीका अिलाज करना। हर तीसरे दिन पिचकारी या स्टीमबाथ लेना।

९–० से १०–० रसोअीमें। वहां गांधीजीके साथ काम करना। खड़े खड़े क्रूने ब्रेड–रोटीका आटा गूंधकर रोटी तैयार करना।

१०–० से १२–० भोजन और आराम।

१२–० से २–० प्रेसमें कम्पोजीटरका काम करना।

२–० से ४–० बगीचेमें शरीरसे हो सके अुतना खोदने और फल बीननेका काम करना।

४–० से ५–० भोजनालयमें फुटकर काम।

५–० से ६–० भोजन करना।

६–० से ७–० आराम और घूमना-फिरना।

७–० से ७–३० प्रार्थना।

७–३० से ८–३० गांधीजीके साथ शामको बातचीत और अनेक विषयों पर चर्चा। खास तौर पर दिनभर जो कुछ नअी घटनाअें होतीं अुन पर चर्चा। कभी कभी प्रार्थनाके बाद श्री तुलसीकृत रामायण और गीताका पाठ।

९–० से ६–० नींद।

फिनिक्स आश्रमका यह साधारण कार्यक्रम था। शालाके विद्यार्थियोंको दिनभरमें तीन घंटे शालामें, दो घंटे खेतीमें और दो घंटे प्रेसमें लगानेके सिवा दूसरा फुटकर काम होता था। अिसके सिवा वे रातको भी कम-ज्यादा पढ़ते थे। अिस प्रकार लगभग सारे दिन वातावरण पढ़ाअी और मेहनतके कारण शुद्ध विचारों और अुनसे अुत्पन्न होनेवाले शुद्ध आचरणसे पूर्ण होता था। अिसलिअे पढ़ाअीकी कमी मालूम नहीं होती थी। और बगीचेमें गांधीजीके साथ काम करते हुअे भी अलग अलग विषयों पर चर्चा तो होती ही थी। भोजनालयमें

काम करते समय भी महत्त्वपूर्ण घटनाओंकी, किसी महापुरुषकी या किसी अुत्तम ग्रंथकी चर्चा हुआ करती थी।

अिस तरह श्रमके साथ ज्ञान भी मिलता रहता था। मेरी तन्दुरुस्ती जब काफी अच्छी हो गअी तब तो मैं सबेरे तीन या चार बजे ही अुठ जाता था। छह घंटेसे ज्यादा सोना अपराध माना जाता था।

अिस प्रकार लगातार तीन महीने तक मेरा अिलाज चला। गांधीजीका मुश्किलसे ही किसी दिन बाहर जाना होता था। मुझे खानेकी कोअी चीज देते तो दूसरे दिन देखते कि शरीर पर अुसका क्या असर होता है। अुसीके अनुसार दूसरे दिन खानेमें फेर-बदल करते थे। सात्विक भोजन और पिचकारीके अिलाजसे मेरा पेट अितना साफ रहता कि विजातीय पदार्थके अन्दर जाते ही अुसका असर मालूम होता था। अिस तरह अत्यंत वात्सल्य, स्नेह और लगनसे लगातार तीन महीने तक मेरा अिलाज हुआ। अिन सब बातोंकी याद आने पर मैं शर्मिंदा हो जाता हूं। शुरूमें जब मैं जल्दी ही अुठने-बैठनेमें समर्थ नहीं था, तब पिचकारी लगानेके बाद गांधीजी मेरा पाखाना देखते, यह जांचते कि खाना हजम हुआ है या नहीं और साथ ही मुझे अुसके बारेमें सूचनाअें देकर परिचित करते। फिर पाखानेका बरतन वे खुद साफ कर डालते। अिस प्रकार जिस मातृभावसे मेरे बचपनमें मेरी स्नेहशील माताने बिना किसी घिनके मेरी देखभाल की, अुसी मातृभावका — वात्सल्यका — लाभ मुझे अिन तीन महीनोंमें गांधीजीकी ओरसे मिला। बीस बीस सालका अर्सा गुजर जाने पर भी अभी तक वह मीठा दृश्य मेरे हृदयमें ताजा ही है। मेरे शरीरमें घर करके बैठा हुआ गठिया तो भाग ही गया; और अुसके बाद आज तक किसी दिन भी मेरे शरीरमें वह मालूम नहीं हुआ। परन्तु सौभाग्यसे अुस गठियाकी जगह अेक दूसरी चीजने ले ली। मुझे बीमारोंकी सेवा-शुश्रूषा करना अच्छा आ गया। मेरे दिलमें रोगीकी सेवा करनेका प्रेम पैदा हो गया। मेरी बीमारी मिटनेके बाद गांधीजीको किसी दिन बाहर जाना पड़ता, तो विद्यार्थियों या दूसरे बीमारोंकी सेवा करनेका काम मेरा हो जाता। वे मुझे ही यह काम सौंपते थे। गांधीजीकी बीमारीके मौके पर या अुपवासके अवसर पर अुनकी सेवाका लाभ मुझे मिलता था। मुझे मालूम हुआ है कि यहां देशमें आनेके बाद गांधीजीकी या और किसीकी बीमारीमें मेरी सेवासे सबको संतोष हुआ है।

मोतीझिरे जैसे भयंकर ज्वरके कितने ही रोगियोंको भी गांधीजीने अूपर लिखे सादे अुपचारोंसे बचाया है, और अेक भी मामलेमें अुन्हें असफलता नहीं मिली। मिस्टर गेब्रियल आअिज़ेक नामके अेक अंग्रेज सज्जन सत्याग्रहकी लड़ाअीमें हिन्दुस्तानियोंके सहायक थे। लड़ाअीके बाद वे भाअी मोतीझिरेमें फंस गये। अुस समय वे फिनिक्समें ही रहते थे। गांधीजीने अुनकी सेवा-शुश्रूषा की। चौदह दिन तक सिर्फ खट्टे नीबूका रस अुबले हुअे पानीमें मिलाकर देते रहे। और कुछ नहीं। बीमारी भयंकर साबित न हुअी। ज्वर अुतरनेमें देर लगी। वे खतरेसे निकल गये और धीरे धीरे भयमुक्त हो गये। अितनेमें गांधीजीको समझौतेके लिअे केपटाअुन जाना पड़ा। मिस्टर आअिज़ेकको वे मेरे हवाले कर गये। अुन भाअीको अैसा भोजन देना था जिससे कब्ज न हो और पाचन होता रहे। नियमित रूपसे वे शौच जायं अिसका ध्यान रखना और कब्ज मालूम हो तो मिट्टीकी पट्टी या पिचकारीका अुपचार करना — वगैरा देख-भाल मुझे करनी थी। वे भाअी अेक दिन डरबन गये। जानेसे पहले मैंने अुन्हें चेतावनी दी कि कहीं किसी होटलमें न चले जाना। अुन्होंने मेरी सूचना पर अमल नहीं किया; अितना ही नहीं बल्कि वहांसे 'मेरी बिस्किट' का अेक डिब्बा भी वे लेते आये। अुसे छिपा कर अुन्होंने अपने पास रख लिया और जब जीमें आया तभी खाने लगे। मुझे तो अिसका पता ही नहीं था।

अेक दिन अुन्हें कब्ज मालूम हुआ। थोड़ासा बुखार भी आया। मैंने फौरन पिचकारी वगैराका अिलाज किया। पिचकारी लगानेके बाद अुनका पाखाना देखने पर अुसमें मीठे नींबूके रेशे और गेहूंके आटेका बिना पचा हुआ भाग मालूम हुआ। मुझे शंका हुअी। अुनसे पूछा, परन्तु अुन्होंने कोअी बात बताअी नहीं। अुन्हें नियमित रूपसे जो खुराक दी जाती, अुसके सिवा बगीचेमें से नारंगी और मीठे नींबू अच्छे और बड़े देखकर वे तोड़ लाते और अुनके साथ बिस्किट भी खाया करते। मैं अचानक अुनके कमरेमें चला गया और सभ्यताके साथ कहा, "मुझे शक है कि आप कुछ फालतू चीजें खाते हैं। अिसलिअे मैं आपकी तलाशी लेने आया हूं। गांधीजीने आपकी जिम्मेदारी मुझे सौंपी है। अिसलिअे आपको बुरा लगे तो भी और जरा असभ्य बन कर भी मुझे अपना फर्ज अदा करना पड़ेगा। मेरी असभ्यताके लिअे मुझे क्षमा करें।"

यह कहकर मैंने अुनके बिस्तर और सामानकी तलाशी लेना शुरू किया। अुसमें से बिस्किटका डिब्बा और चार नारंगियां निकलीं। डिब्बा आधा खाली

हो गया था। मेरे बुजुर्गके बराबर मिस्टर आअिज़ेक शर्मिंदा हो गये। मैंने कहा, "भोजनके मामलेमें यहां कठोर अपरिग्रह रखा जाता है। किसीके पास अिस तरह खुराक जमा नहीं रह सकती। अुस पर आप तो बीमार हैं।"

अुन्होंने बहुत ही नम्रताके साथ कहा, "मुझे बड़ा अफसोस है। मैं संयम न रख सका। अिसलिअे मैं चुपके चुपके खाने लगा। परन्तु आप अिस बारेमें गांधीजीको न लिखिये। अुन्हें बुरा लगेगा। अितना वचन मैं आपसे मांगता हूं।"

मैंने कहा, "हर रोज बापूजी पत्रमें आपकी तन्दुरुस्तीके बारेमें पूछते हैं। अुसके जवाबमें यदि अिस बारेमें न लिखूं तो मैं बेवफा कहलाअूं। आपने जो यह आश्वासन दिया है कि अपनी भूल आप सुधार लेंगे, अुसके बारेमें भी मैं अुन्हें लिख दूंगा। मोतीझिरेसे बचकर निकलनेवाले बीमारको लंबे अर्से तक संभालकर रखना चाहिये।"

मिस्टर आअिज़ेक खुद फिनिक्सके संयममें न रह सके। जल्दबाजी करके वे जोहानिसबर्ग चले गये। वहां जानेके बाद स्वादेन्द्रियको तृप्त करनेकी प्रवृत्तिमें फंस गये। रोगने पलटा खाया। फिनिक्ससे गये अुन्हें मुश्किलसे अेक महीना हुआ होगा कि यह बुरा समाचार मिला: मिस्टर गेब्रियल आअिज़ेक मर गये।

गांधीजीको दवाकी अपेक्षा शुश्रूषा पर अधिक श्रद्धा है। अिसलिअे अपने पास रहनेवालोंकी बीमारीके मौके पर वे स्वयं ही अुनकी सेवामें लग जाते और जोखिम अुठा कर चाहे जैसे भयंकर रोगमें भी कुदरती अिलाज और भोजनके परिवर्तनसे बीमारकी सेवा-शुश्रूषा करते। अिसमें अभी तक अुन्हें सफलता मिली है। अैसी सेवा-शुश्रूषाके अवसर पर अुन्होंने सन् १९१४ के सितम्बर महीनेमें जो पत्र लिखा था, अुससे हम अिस विषयमें जान सकेंगे:

"चि० मगनलाल,

"तुम्हें मैं अिन दिनोंमें पत्र नहीं लिख सका।

"आज तबीयत अच्छी है अिसलिअे लिखने बैठा हूं। अभी बिस्तरमें ही हूं और अैसा मालूम पड़ता है कि दस दिन तो और बिस्तरमें रहना ही पड़ेगा। अिस बार वेदनाकी हद हो गअी। मेरी रायमें मैंने डॉक्टर मित्रोंकी सलाह मानी अिसीलिअे अैसा हुआ। सबका आग्रह था अिसलिअे जिन वस्तुओंके बारेमें मुझे अंतिम आपत्ति नहीं थी अुन्हें लेना मैंने मंजूर किया। दाल, भात, साग चार

दिन खाये। चारों दिन वेदना बढ़ी और जिस बातके लिअे खानेको कहा गया था वह भी नहीं मिटी। पांचवें दिन नमक खाया। अुस दिन तो वेदना असह्य हो गअी। छठे दिन मैंने डॉक्टरोंको छोड़ा और अपने ही अिलाजों पर आ गया। अिससे वेदना बिलकुल शान्त हो गअी और बवासीर भी जाती रही। परन्तु बीचमें मेरी ही मूर्खताके कारण फिर दर्द अुठा। नमक खानेके दिन जीवनमें पहली बार बलगममें खून आया। वह अब भी आ रहा है। अिसलिअे मेरी पहचानके अेक शाकाहारी गोरे डॉक्टरको मि० कैलनबैक ले लाये। अुन्होंने कहा, नमक खानेकी जरूरत नहीं है। परन्तु कन्दमूलकी जरूरत अुन्होंने बताअी और यह बताया कि अुपवाससे शरीर बिलकुल कमज़ोर हो गया है, अिसलिअे अभी जल्दी ही तेल, नट वगैरा न लिये जायं। अिसलिअे अभी मैं बार्लीका पानी, आठ औंस हरा मेवा और आठ औंस शलजम, गाजर, आलू और गोभी वगैरा मिलाकर अुसके अुबले हुअे रस पर रहता हूं। शरीर क्षीण हो गया है। मुझे अिसमें भी पूरा विश्वास नहीं है। परन्तु अपनी कुंजी पूरी तरह मेरे हाथ नहीं लगी है। अिसलिअे यह प्रयोग आजमा रहा हूं। दर्द बन्द है। बलगममें खून जारी है। खानेमें अभी तो स्वाद बिलकुल नहीं रहा। अिसलिअे स्वादेन्द्रियको वशमें रखनेका यह बड़ा अच्छा मौका मिला है। डॉक्टरने नीबू भी बन्द कर दिये हैं। अिसलिअे तेलके बिना शलजम, गाजर और गोभीका अुबला हुआ पानी पीनेमें स्वाद जरा भी नहीं रह जाता। फिर भी मैं आनन्दपूर्वक पी जाता हूं। पहले तो बार्लीका पानी खराब लगा। लेकिन अब वह भी सहन करने जैसा मालूम होता है। तुम्हें तफसीलमें लिख रहा हूं। परन्तु घबरानेका कोअी कारण नहीं। अैसी आशा है कि मेरी तबीयत ठीक हो जायगी। और अभी तक दिल यही कहता रहता है कि फलाहारसे ही वह ठीक होगी। देखना है कि अनुभवसे क्या होता है। मित्र दूध लेनेका आग्रह करते रहते हैं। अिसके लिअ मैंने साफ अिनकार कर दिया है। मैंने कह दिया है कि दूध न लेनेकी मेरी प्रतिज्ञा है, अिसलिअे दूध तो मौत आती हो तो भी मैं हरगिज न लूंगा।

"बाकी शक्ति गजबकी है। अुसका मेरे अुपचारों पर विश्वास जमता जा रहा है।

"यहां मुझे अिंडिया आफिसके विरुद्ध सत्याग्रह करना पड़ा है। अिसकी विगत दूसरे पत्रमें लिखूंगा।

"फिनिक्सके अुद्देश्योंका पालन सारे असह्य संकट सहकर भी करना . . . । सबकी तबीयत कैसी रहती है, वहां जानेके बाद वातावरणका असर बच्चोंकी आत्मा पर कैसा हुआ है, आदि समाचार विस्तारपूर्वक लिखना ।

बापूके आशीर्वाद"

१०

गांधीजीके भोजनके प्रयोग

फिनिक्समें भोजनके प्रयोग बहुत हुअे थे । ये प्रयोग गांधीजीने खास तौर पर संयम और ब्रह्मचर्यके खयालसे आरम्भ किये थे। ब्रह्मचर्यका कुछ आधार भोजन पर है । ब्रह्मचर्यका व्रत पालनेवालेको स्वादेन्द्रियका संयम पालना ही चाहिये । जिसने अिन्द्रियां जीत लीं, अुसने जगत जीत लिया, यह बिलकुल सत्य है । और अुतना ही सत्य यह है कि जिसने जीभको जीत लिया, अुसने अिन्द्रियोंको जीत लिया । बहुतसे होशियार डॉक्टरोंने और भोजनमें सुधार करनेवाले विचारकोंने भी शारीरिक स्वास्थ्यकी दृष्टिसे और आर्थिक दृष्टिसे भोजनके प्रयोगोंका विचार किया है । परन्तु गांधीजीने धार्मिक दृष्टिसे, संयमकी दृष्टिसे भोजन पर विचार किया । गांधीजीने डॉक्टर मूर और डॉक्टर जुस्टकी पुस्तकोंसे भोजनके गुण-दोष अूपरकी स्थूल दृष्टिसे जाने। बादमें गांधीजी अुसमें आगे बढ़े और अुन्होंने खोज निकाला कि शारीरिक और आर्थिक दृष्टिसे भोजनके गुण-दोष देखना और जानना स्थूल दृष्टि है। संयम और ब्रह्मचर्यकी दृष्टिसे भोजनके गुण-दोष देखना ही सच्ची दृष्टि है। कुछ पाश्चात्य डॉक्टरोंने खोज की है कि प्रत्येक कन्द या फलमें कुदरती नमक जरूर होता है । अन्नमें यदि तुलनामें कम होगा तो पत्ताभाजीमें ज्यादा होगा। अिसलिअे दोनों चीजें अपनी अपनी मात्रामें नमकके बिना ली जायं तो भी तन्दुरुस्तीके लिअे काफी है। अुनमें ज्यादा सलोनापन लानेके लिअे बनावटी नमक डालना तन्दुरुस्तीके लिअे जरूरी नहीं है, बल्कि कुछ हानिकारक ही है । गांधीजीने अिस दृष्टिका विकास किया और सोचा कि नमकीनपनसे स्वादेन्द्रिय पुष्ट होकर आत्माका संयमरूपी किनारा

टूट जाता है और अुससे ब्रह्मचर्य-पालन कठिन हो जाता है। क्योंकि जैसा आहार वैसी डकार। हृदयकी वृत्तियों पर भी सात्विक या तामसी भोजनका अच्छा-बुरा असर होता ही है। यह विचारश्रेणी गांधीजीने हमारे सामने रखी है। अुसी पर अुन्होंने भोजनके सारे प्रयोग किये। यहां तक कि कुछ प्रयोग तो अुनके लिअे धर्म-संकल्प ही बन गये। अिन प्रयोगोंमें सामान्य प्रयोग अलोने भोजनका था। यह प्रयोग अुन्होंने कस्तूरबाकी बीमारीके समय शुरू किया था। सन् १९०८ में कस्तूरबा बीमार पड़ीं। डॉक्टरने यह सलाह दी कि कस्तूरबा नमक और दाल छोड़ दें तो अुनकी तन्दुरुस्ती सुधर जाय। गांधीजीने डॉक्टरकी सूचना कस्तूरबाको बताअी। नमक और दालके बिना कैसे काम चले? फिर भी दाल तो छोड़ी जा सकती है, परन्तु नमक हरगिज़ नहीं छोड़ा जा सकता। दलीलोंमें कस्तूरबाके मुंहसे निकल गया, "दाल और नमक छोड़नेको तो तुमसे कोअी कहे तो तुम्हीं न छोड़ो।" गांधीजीके लिअे यह वाक्य काफी था। अुन्होंने तुरंत यह बात पकड़ ली और बोले: "तुम छोड़ो या न छोड़ो, परन्तु मैं तो आजसे अेक बरसके लिअे नमक और दाल छोड़ता हूं।"

गांधीजीके भोजनके प्रयोगोंका शुभारंभ यहींसे हुआ। जोहानिसबर्गमें रहकर अिन प्रयोगोंको अमलमें लानेका अुन्होंने प्रयत्न किया। फिनिक्समें ये प्रयोग स्थायी हो गये। वे अुनके जीवनका अेक अंग बन गये। फिनिक्समें भोजन बिलकुल सादा हो गया। भोजनालय तो अेक ही था। सबके लिअे नहीं, परंतु विद्यार्थियों और शिक्षकोंके लिअे। जो पहलेके रहनेवाले थे वे अपने-अपने कुटुम्बके साथ अलग अलग भोजनालयोंमें खाते-पीते थे। अिस भोजनालयमें सवेरे गेहूंकी कॉफी दी जाती थी। पूरे गेहूंको खूब भूनकर पीस लिया जाता और फिर अुसे कॉफीके रूपमें काममें लिया जाता। अिस कॉफीके अुबले हुअे पानीमें शक्कर और दूध डालकर पीनेसे लगभग कॉफी जैसा ही स्वाद आता है।

सामान्य कॉफीका नशा अिसमें जरा भी नहीं होता। अिस कॉफीके साथ 'क्यूने' रोटी, खजूर, मुरब्बा या कोअी फल होता तो वह दिया जाता था। दोपहरको रोटी, चपाती, चावल, दाल और साग दिया जाता था। दाल-सागमें गरम मसालेका अुपयोग नहीं होता था। मिर्चें भी नहीं होती थीं। सिर्फ नमक डाला जाता था। घीके बजाय जैतूनका तेल काममें लिया जाता था। फिर, कुछ लोग व्रतधारी होते, अलौना खानेके व्रतवाले

होते, शक्कर न खानेवाले होते। अिन सबके लिअे भी अुचित व्यवस्था थी। जेलकी तरह अेक ही बड़े कटोरेमें सब कुछ खाना होता था। लकड़ीके चम्मचका अुपयोग भी होता था।

अिस भोजनमें भी कभी कभी परिवर्तन होता था। गांधीजीको दूधका अुपयोग करना पसन्द नहीं था। और अुसमें भी डिब्बेके जमाये हुअे दूधसे अुन्हें विशेष अरुचि थी। फिर भी जितना चाहिये अुतना दूध न मिलनेके कारण डिब्बेका दूध अिस्तेमाल करना पड़ता था। अेक दिन अुन्होंने मुझसे कहा : "हमें दूध बन्द करना है। मुझे दूधका अुपयोग दिलमें खटकता है। मुझे लगता है कि बादामके मगजका दूध निकालकर अुसका अुपयोग हो सकता है।" मैंने कहा : "मैं अैसा करके जरूर देखूंगा।" मैंने बादामका मगज खरलमें पानीके साथ घोटकर अुसका दूध निकाला। अुस दूधका अिस्तेमाल किया। परन्तु पीनेवालोंको जरा भी फर्क न लगा। गांधीजी खुश हुअे। परन्तु अुन्हें अेक विचार सूझा और वे बोले : "रावजीभाअी, अिस तरह बादामके मगजका दूध बनाकर कॉफीमें डालना हमें पुसायेगा नहीं। बहुत ही खर्चीला हो जायगा। मूंगफलीके दानोंके दूधका प्रयोग करके देखो।" दूसरे ही दिन पावभर मूंगफलीके दाने पीसकर और खरलमें पानीके साथ घोटकर अुनका दूध निकाला। वह दूध कॉफीमें अिस्तेमाल किया। किसीको भी पता न चला। कॉफी पीनेवालोंको खास कोअी फर्क मालूम नहीं हुआ। तबसे फिनिक्स आश्रमसे दूधको छुट्टी मिल गअी।

गांधीजी यह जानते थे कि स्वाद किसी चीजमें नहीं, हमारी वृत्तिमें है। अतः अिस बारेमें वे काफी सावधान थे। सादे अन्न और मिष्टान्नका पूरा रसास्वाद फलाहारमें है। स्वादेन्द्रियके चोचले फलाहारमें भी किये जा सकते हैं। अिसलिअे गांधीजीने फलाहार पर भी अंकुश लगाना शुरू कर दिया। अिस प्रकार भोजनके प्रयोग करनेसे अुन्हें और अुनके साथ रहनेवालोंको संयम और तंदुरुस्ती दोनोंका लाभ हुआ है, अिसमें जरा भी शक नहीं। हम बाहरी कठिनाअियोंसे जूझना सीखते हैं, परन्तु अिससे भी ज्यादा जरूरत अपने मनसे जूझनेकी है। भोजनके प्रयोगोंमें, और खास तौर पर यदि वे संयमके हेतुसे किये गये हों तो, हमें अपने ही मनसे लड़नेके बहुत मौके मिलते हैं। अुनमें हम सावधान हों तो अिन झगड़ोंसे हमारा मनोबल बढ़ता है, हम प्रतिज्ञा और व्रतका माहात्म्य समझने लगते हैं और अुनसे लाभ अुठा सकते हैं।

स्वास्थ्य, मनके विकारों और स्वादेन्द्रियके संयम-असंयमका खुराकके साथ क्या सम्बन्ध है, यह गांधीजीके नीचेके पत्रसे समझमें आ जायगा :

"चि० मगनलाल,

"हमारे जैसों पर अनुचित भोजनका असर तुरंत हो जाता है, अिसका कारण तुमने अच्छी तरह बताया है। बुद्धदेवने भिक्षामें मिला हुआ मांस खाया कि तुरन्त अुनका देह गिरा।

"दूधके बारेमें यह मान लेनेका कोअी कारण नहीं कि किसीने विचार ही नहीं किया होगा। मैं मानता हूं कि दूधके बिना काम चला लेनेवाले बहुत लोग दुनियामें होंगे। परन्तु मैं कह चुका हूं कि किसी महापुरुषने हिन्दुस्तानमें जो मांस छुड़वाया, वह अितना बड़ा महत्त्वका परिवर्तन था कि दूधके बारेमें विचार करने या लिखनेवाला कोअी देखनेमें नहीं आया। परन्तु यह हमारे अज्ञानके कारण है। हमने सब कुछ पढ़ा नहीं है। सबको देखा नहीं है। अेक ही मापदंड अुत्तम है। भूतकालमें दूध छोड़नेका विचार हुआ हो या न हुआ हो, परन्तु वह बुद्धिको ठीक लगता है या नहीं? और दूधके छोड़नेमें किसीने पाप बताया या माना नहीं है।..."

"पवित्र माने जानेवाले तीर्थोंमें तेलको त्याज्य समझकर घीको पवित्र मानते हैं। अिसका कारण मैंने जो अनुमान लगाया है वही मालूम होता है। हिन्दुस्तान जब मांसाहारी ही था और किसीने बहुतोंको निरामिषाहारी बना दिया, तब घीको अति पवित्र बना दिया गया। अिसलिअे हम अपने भोजनमें बेहद घी अिस्तेमाल करते हैं। जितना अधिक घी अुतना ही भोजन स्वादिष्ट माना जाता है। अिससे ज्यादा अंधेर और क्या होगा? फिर भी यही माना जाता है। अैसा होनेसे पवित्र स्थानोंमें भी घीको अूंचा दर्जा दे दिया गया। परिवर्तन करनेवालोंने सोच लिया कि लोग घी खूब खायेंगे तो अुन्हें मांसकी बहुत जरूरत नहीं रहेगी। अिसी तरहके हेतुसे लंदनके वेजिटेरियन भी अंडेका अिस्तेमाल करते हैं। वे जो पकवान बनाते हैं अुनमें से कुछमें ही अंडा नहीं होता होगा। अंडेको अुन्होंने लगभग पवित्र स्थान दे दिया है।

"स्वादको जीतनेके बारेमें तुमने जो श्लोक लिखा था, वह तो मैंने देखा था। फिर भी मेरी आलोचना लागू होती है। अेक श्लोकसे कोअी असर नहीं होता। अिस विषय पर अुन्होंने जोर नहीं दिया। दिया ही

होता तो हवेलीमें हर बहानेसे मिष्टान्न न बनता। ब्राह्मण-भोजन भी न होता। और आजकल ॠषि तथा साधु भी स्वादेन्द्रियको नहीं जीतते, बल्कि अुसके अधीन हुअे पाये जाते हैं। यह बात बहुत लंबी-चौड़ी है। दोष निकालनेके लिअे यह सब कहें तो हम पापी बनते हैं। परन्तु जहां अपना और परायेका अुपकार ही मुख्य बात है वहां कैसे भी बड़े मान्य पुरुष क्यों न हों, अुनमें हम जो अपूर्णता देखें अुस पर विचार करना हमारा फर्ज है।

"यह तो मुझे मालूम नहीं कि दशमीका व्रत क्यों नहीं रखा जाता और अेकादशीका क्यों रखा जाता है। परन्तु पखवाड़ेमें कमसे कम अेक दिन साधारण भोजन छोड़नेसे शरीर और मन शुद्ध होते हैं।

बापूके आशीर्वाद"

सत्याग्रहकी आखिरी लड़ाअी समाप्त होनेके बाद समझौतेके कामसे गांधीजी केपटाअुन गये थे। वहांसे सन् १९१४ के अप्रैल मासमें अुन्होंने मुझे अेक पत्र लिखा था। अुसे पढ़नेसे यह मालूम हो जायगा कि गांधीजी स्वादेन्द्रियके संयमके बारेमें कितना आग्रह रखते हैं:

"भाअीश्री रावजीभाअी,

"तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे अुपवासके बारेमें मैंने सुना था। अुपवास तुमने सकारण किया हो तब तो मुझे कुछ नहीं कहना है। तुम्हें वहां अेकान्त तो मिल ही नहीं सकता।...में बाह्य प्रवृत्ति विशेष रहनी चाहिये। अिसीमें शान्ति है। वहां सेवाधर्म ही प्रधान है।

"जे...की तन्दुरुस्ती गिर जानेसे मैं घबरा गया हूं। तुरंत सुधर जाय तो अच्छा।

"म...के लिअे जी व्याकुल होता है। पता नहीं चलता स्थिति क्यों नहीं सुधरती। मैं भी यही ठीक समझता हूं कि वह मेरे पास आ जाय। तुम अैसा अिंतजाम करते रहना। देशमें मैं देख लूंगा। अैसा लगा करता है कि मानसिक रोगके कारण यह होता है। जेलमें तबीयत ठीक रहती थी अिसका कारण ढूंढ़ता रहता हूं। परन्तु अूपरकी बात ही सूझती है। वहां मन जबरदस्ती अेक स्थितिमें रहता था। अुसका असर शरीर पर भी हुआ। यहां तककी कैसा भी भोजन करने पर भी जेलमें तन्दुरुस्ती ठीक रही। अब जेलसे बाहर क्या वैसा मनोराज्य नहीं प्राप्त किया जा सकता? कुछ भी

हो, हिन्दुस्तान आना ही म . . . के लिअे ठीक मालूम होता है। परन्तु वह भी अिस बारेमें सोचे।

"अेक अुदाहरण मैं अपना दे देता हूं। बाने अदरककी अिच्छा की। अदरक न खानेका मेरा व्रत नहीं था, अिसलिअे मैंने बाके साथ ही अुसका गुण देखनेके लिअे खाना शुरू कर दिया। बाकी जीभ स्वादप्रिय है। बाने अदरककी जड़ें ढूंढ़ लीं। मुझे तो अुन पर राग अुत्पन्न हो गया। वह यहां तक कि चार-पांच चनेके बराबर कोमल गांठें मैं भी चबा जाता। अेक दिन बाने श्रीमती गुलकी टोकरीमें से बहुतसी जड़ें ढूंढ़कर कमरेमें रख दीं। मैं देखकर घबरा गया। रात बीती। सवेरे अुठते ही भड़क अुठा: 'मैं अदरक कैसे खा सकता हूं? जिसकी अेक गांठसे अनेक जड़ें पैदा होती हों, अुसमें तो अनेक जीव होने चाहिये! और कोमल जड़ें खाना तो कोमल बच्चेको मार डालनेके बराबर हुआ!' मुझे अपने पर बड़ा तिरस्कार पैदा हुआ। मैंने निश्चय किया कि अिस शरीरमें तो अदरक नहीं खाअूंगा। मजेकी बात अब आती है। बाने देखा कि मैं अदरक नहीं खाता। अुसने कारण पूछा। मैंने समझाया। वह भी समझ गअी। अति कोमल जड़ें ले गअी। बाकीमें से खानेका मुझसे आग्रह किया। मैंने अिनकार किया। व्रत तो जारी ही है। परन्तु जीभ और आंख कुत्ते जैसी हैं। आंख देखती है तो अदरक खानेकी अिच्छा होती है। जीभ तड़पती रहती है। परन्तु जूठनके लिअे तड़पता हुआ कुत्ता जैसे मालिकको देखकर जूठन खानेकी हिम्मत नहीं कर सकता, वैसे ही आत्मारामजी देखते हैं अिसलिअे जीभ अुस अदरकको छू नहीं सकती। अदरक तो सारे दिन मेरी नजरके सामने ही रहता है, क्योंकि जहां मेरे कागजात पड़े हैं वहीं वह पड़ा रहता है। आजकल मेरी यह हालत है कि शक्कर और नमक छोड़ना जितना मुश्किल नहीं हुआ, अुतना अदरक परसे वृत्तिको हटाना मुश्किल हो रहा है। अब तुम अपनेको क्या दोष दोगे? मनको जो शराब पिये हुअे बन्दरकी अुपमा दी गअी है सो गलत नहीं है। मुझसे ज्ञान सीखनेकी बड़ी आशाअें रखो तो भी क्या? हम सब अेक ही टूटी हुअी नावमें बैठे हैं। अुसमें अनुभवरूपी ज्ञान मुझे ज्यादा होनेके कारण मैं बताअू वहां तुम पैर रखो तो भले ही रखो। हम सब अंधेरेमें हैं और अेक ही वस्तुकी खोज कर रहे हैं। मेरे पैर शायद जरा ज्यादा जोर और विश्वासके साथ पड़ते होंगे। अिसलिअे मेरे प्रति विशेष आदर-वृत्ति रखना भी तुम्हारी अुन्नतिको रोकने जैसा है। जब मैं सब कामनाओंको

जीत लूंगा, तब तुम्हें या औरोंको निःसंकोच भावसे ज्ञान दूंगा। अभी तो हम सब अेक साथ जोर लगाकर मोक्ष देनेवाले नारायणको ढूंढ़ें और अुस खोजमें भूल करते हुअे, लड़खड़ाते हुअे और मार खाते हुअे भी हिम्मत और धीरजके साथ आगे बढ़ें।

मोहनदासके यथायोग्य"

* * *

"मेरे साथ तुम सब दौड़ो, यह वांछनीय है। परन्तु मैं अैसी आशा नहीं रखता। यह मांग मैंने कभी नहीं की कि मैं जो कुछ करता हूं वह सब तुम भी करो। परन्तु जिसे करनेका भार अुठा लो अुसे तो पूरा करना ही चाहिये। . . . बलात्कारकी तो बात ही नहीं है। परन्तु तुम अपने-आप समझ-बूझकर . . . का व्यसन छोड़ कर मुझे धोखा दो तो अिसमें दोष तुम्हारा ही होगा। . . . अिसी तरह हमें मान लेना चाहिये कि बच्चे अेक खास हद तक पहुंच गये हैं। वे फिनिक्समें कुछ चीजोंका त्याग करते हैं, तो वहां अुन चीजोंको त्याज्य समझते हैं। फिनिक्ससे बाहर जाकर वही चीज कैसे की जा सकती है? अलोना खाना किसीके लिअे फर्ज नहीं है। तेज मसाले, व्यसन, मिष्टान्न, बहुत स्वादिष्ट भोजन या कॉफी वगैरा वस्तुअें सबके लिअे त्याज्य हैं। विषय-भोग, चोरी, असत्य और देरसे अुठना सबके लिअे त्याज्य हैं। ये नियम जिनको कड़े लगें वे यहां कैसे रह सकते हैं? हरअेक संस्थाके कुछ खास नियम होते हैं। अुन नियमोंको बाहर और भीतर सब जगह पालना ही चाहिये। जो न पाले अुसका संस्थामें रहना बेकार है।

"तुम जो कहना चाहते हो वह तो यह है। मेरी शर्मके मारे बच्चे और दूसरे लोग कअी बातें करते हैं, स्वतंत्र रूपमें नहीं करते और अिसलिअे वे मुझे धोखा देते हैं। यह मेरा दोष हो सकता है, परन्तु अिससे मैं अेक ही तरहसे मुक्त हो सकता हूं। अर्थात् मुझे किसीके साथ न रहना चाहिये। अभी तो मुझे यह अपना कर्तव्य नहीं लगता। रा . . . शर्मके कारण मेरी मांगके बिना अलोना खानेका ढोंग करके मुझे धोखा दे, तो अिससे मैं दोषी कैसे बन जाता हूं? . . . तुम अलोना नहीं खाते हो, अिससे मैं तुम्हें कम चाहता हूं और ज . . . बिलकुल फलाहारी है अिसलिअे अुसे ज्यादा चाहता हूं, अैसी कोअी बात नहीं है। अलोने-सलोनेमें कोअी पाप-पुण्य नहीं है। अुसके पीछे जो रहस्य है अुसमें पाप-पुण्य है। अिमामसाहब कभी अलोना

नहीं खाते, लेकिन अिसलिअे वे मुझे अप्रिय नहीं हैं। मिस श्लेशिन सब बातोंमें मुझसे अुलटा व्यवहार करती है, फिर भी अुसके चरित्रको कुछ हद तक तुम सबसे मैं अधिक अूंचा मानता हूं। सब परिवर्तनोंमें यथाशक्ति संयम रखना और अुसमें वृद्धि करना हमारा अुद्देश्य है। अुस रात मैंने यह कहा था कि जिसे यह बात स्वीकार न हो वह मुझे छोड़ दे। और वह यथार्थ ही मालूम होता है। . . . नॉर्टनके काम पर मैं मोहित नहीं हुआ और बंगाली वकीलोंका मैं तिरस्कार नहीं करता। सत्याग्रही अुन दोनोंके प्रसंगसे बाहर है और अुसका कर्तव्य दूसरा ही है। तुम्हारे सवालोंमें यह सवाल भी है कि सत्याग्रही ठीक राह पर है या नहीं। यह तुम अभी तक न समझे हो तो मैं यही कहूंगा कि यह वस्तु अनुभवगम्य है। दूसरा अिसे नहीं समझा सकता। अिसे समझनेके लिअे हम स्वादेन्द्रिय वगैराको जीतनेकी कोशिश करते हैं। . . . संयमका अर्थ अलोना खाना न समझो। तुम दो दिनकी सूखी रोटी और नमककी अेक डली खाकर जीवन बिताओ, तो वह मेरे कअी तरहके मेवोंके स्वाद लेनेसे बहुत अूंचा हो सकता है। कार्यकी शुद्धताका निर्णय अिस बातसे होगा कि तुम किस अुद्देश्यसे सूखी रोटी खाते हो और मैं किस अुद्देश्यसे मेवे वगैरा खाता हूं।

“पवित्रता दूसरोंके आक्षेपोंसे लज्जित नहीं होती, परन्तु विशेष बल प्राप्त करती है।

“तुमसे कोअी भी अनुचित बात हुअी हो तो मेरे सामने सब कबूल कर लेना। अैसा किये बिना तुम्हारे अुपवास या सैकड़ों प्रायश्चित्त भी सफल नहीं होंगे। मैं वहां आनेके लिअे तड़प रहा हूं, परन्तु मेरा कर्तव्य छोड़ा नहीं जा सकता।

“सूर्य पश्चिममें अुगे तो भी यह नहीं हो सकता कि मैं अपनी की हुअी प्रतिज्ञा वापस ले लूं।

“जिन्हें मैंने अत्यंत निष्पाप माना है, वे अैसे पापी हों तो अिस शरीरको पोषण देकर अेक क्षणके लिअे भी मैं रखना नहीं चाहता।

“मनुष्य अपने प्रणकी रक्षा आसानीसे नहीं कर सकता।

“तुम दोनोंको अिस पत्रसे रोष आयेगा। परन्तु जो बात मेरे मनमें है वह न लिखूं, तो मुझमें जो कुछ सत्य है अुसे कलंक लगेगा और मैं तुम्हारा बुरा करनेवाला बनूंगा। तुम्हें दुःख पहुंचाना अिस समय मेरा धर्म हो गया है।”

११

प्रतिज्ञाकी महिमा

फिनिक्स आश्रममें अैसी तालीम दी जाती थी, जिससे जीवनके सभी अंगोंका विकास हो। विद्यार्थियोंकी शिक्षाके बारेमें तो गांधीजीने 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' में जो कुछ लिखा है, वह शिक्षाके जिज्ञासु अुसमें पढ़ लेंगे। मैं यहां कुछ और ही बात बताना चाहता हूं। आश्रममें संयम, नीति और सदाचारका अैसा शुद्ध वातावरण था कि साधारण वायुमंडलमें निर्दोष समझी जानेवाली हमारी आदतें वहां सदोष समझी जातीं। वहांका जीवन अितना अूंचे दर्जेका था कि सामान्य व्यवहार भी दोषपात्र माना जाता। अुदाहरणके लिअे, विद्यार्थी या और कोअी नियमित रूपमें दो-तीन बार खाना खाये और फिर भी बगीचेमें काम करते हुअे कोअी अच्छा फल दिखाअी देने पर अुसे तोड़कर खानेकी अिच्छा करे, तो अिसे आम तौर पर हम अपराध नहीं मानते। फिनिक्सके अुच्च कोटिके वातावरणकी दृष्टिसे अुसे अपराध माना जाता था। भले ही अुसकी सजा नहीं दी जाती थी, परन्तु वहांकी नैतिक दृष्टिसे अैसा अपराध करनेवालेको खुद ही संकोच होता था और वह निश्चय करता था कि मैं फिर कभी अैसा नहीं करूंगा। अिसके अलावा अेक महीने अलोना खानेका दिलसे निश्चय कर लेनेके बाद किसी असाधारण प्रसंग पर भी सलोना भोजन करना हृदयकी दुर्बलता और गंभीर अपराध माना जाता था। विद्यार्थियोंने रातको निश्चय किया हो कि कल रविवार है अिसलिअे समुद्र-तट या अिनाण्डाके जल-प्रपातके रमणीय स्थान पर गोठ करेंगे, तो बादमें भले ही भारी वर्षा हुअी हो और दिनमें भी वर्षाके पूरे आसार नजर आते हों, या अन्य कोअी कठिनाअी पैदा हो गअी हो, फिर भी अिस प्रकारकी कठिनाअीके कारण किये हुअे निश्चयको अमलमें न लाना सबके लिअे कमजोरी माना जाता था। आश्रममें झाड़ू लगानेवाला नौकर या मैलेकी बालटी साफ करनेवाला भंगी नहीं रखा जाता था। खेती करनेवाला या पढ़ानेवाला, प्रेसका कम्पोजीटर या पत्रका संपादक, या रसोड़ेमें खाना बनानेवाला अेक ही आदमी होता था। सब

अपने लिअे निश्चित किया हुआ काम करते थे। अुसमें भी पाखाना साफ करनेका काम दूसरे सब कामोंसे अूंचा माना जाता था। स्टेशन आश्रमसे ढाअी मील दूर था। खाने-पीनेका सामान और प्रेस-संबंधी सामान स्टेशन पर आता तब अुसे आश्रममें लाना पड़ता था, परन्तु अुसे लानेके लिअे कोअी जानवरकी सवारी नहीं रखी गअी थी। अेक छोटीसी गाड़ीमें रखकर विद्यार्थी और शिक्षक ही अुसे खींच लाते थे। अेक बार अेक विद्यार्थीके पिताजी बीमार हुअे। अुसके शिक्षक अुन्हें देखने डरबन गये। अुन बुजुर्गकी रहनेकी जगह गंदी थी, हवा और रोशनीवाली नहीं थी, वातावरण हानिकारक था। बीमारीमें भी आदतोंके अनुसार अवांछनीय खान-पान आदि व्यवहार होता था। यह सब देख कर अुन शिक्षकको लगा कि अैसी हालतमें बीमारी जरूर बढ़ जायगी और बादमें काबूमें नहीं रह सकेगी। अुन्होंने अुन बुजुर्गको फिनिक्समें जाकर रहनेकी सूचना दी। अुन्होंने मंजूर कर लिया। यह तय करके कि अमुक दिन अमुक गाड़ीसे फिनिक्स स्टेशन पर अुतरना, वे शिक्षक फिनिक्स चले गये। ये बुजुर्ग बीमारीकी हालतमें ढाअी मील पैदल तो चल ही नहीं सकते थे, आश्रममें बैलगाड़ी या और कोअी साधन भी नहीं था। स्टेशन पर भी अैसा कोअी साधन किरायेसे नहीं मिल सकता था। शिक्षकने भार अुठानेकी छोटी गाड़ी तैयार की। विद्यार्थी अपने अेक साथीके पिताजीको अुस गाड़ीमें खींचकर लानेको तैयार हो गये। वे शिक्षक विद्यार्थियोंको लेकर स्टेशन गये और बीमार बुजुर्गको गाड़ीमें बिठाकर आश्रम तक खींच लाये। अिस सेवाभावको, अपने साथीके प्रति अैसी ममताको आज हमारी शालाओंमें देखनेके लिअे हम बहुत अुत्सुक हैं। वे बुजुर्ग फलोंके नियमित और अल्प आहार तथा पिचकारी और मिट्टीकी पट्टीके अुपचारकी वजहसे छह महीनेसे शरीरमें घुसे हुअे क्षय जैसे भंयकर शत्रुसे बच गये। अुन्हें पूरी तरह आराम हो गया। वे शारीरिक श्रम करने लगे और डेढ़ महीनेकी सेवा-शुश्रूषाके बाद दो-चार मील चलनेके लिअे समर्थ हो गये। अैसी कितनी ही सेवा करने और देखनेका विद्यार्थियोंको मौका मिलता था। यह कोअी मामूली तालीम नहीं कही जा सकती। अैसे सेवाभावी और शुद्ध वातावरणमें, जैसे अुजले कपड़े पर स्याहीका दाग बहुत जल्दी दिखाअी देता है, वैसे ही मामूली दोष भी गंभीर माना जाता था।

अेक दिन अेक विद्यार्थी जोहानिसबर्गसे आये हुअे अपने बुजुर्गसे मिलने डरबन गया था। बुजुर्गको बच्चेके प्रति ममता होनेके कारण अैसा लगा कि

आश्रममें मिठाअियां या तेज चटपटी पकौड़ियां वगैरा अिसे कहां मिलती होंगी। अिसलिअे अुन्होंने विद्यार्थीको खाना खिलानेके बाद पकौड़ियां खरीदकर ला दीं। लड़केने पकौड़ियां थोड़ी तो खा लीं। परन्तु खाते खाते अुसे अपने साथियोंकी याद आअी। अुसने तुरंत पकौड़ियोंकी पुड़िया बांध ली और अपने साथ फिनिक्स ले गया। रातको छोटे बड़े जो भी विद्यार्थी वहां थे अुन सबको अुसने पकौड़ियां दीं। अचानक अेक शिक्षिका वहां पहुंच गअीं। विद्यार्थियोंने कोअी संकोच नहीं किया। अुन्होंने अुन बहनके आगे भी पकौड़ियां रख दीं। बहनने वे खा लीं। परन्तु कोअी न जाने तो अच्छा, अिस खयालसे अुन्होंने सूचना दी कि कोअी अिसका जिक्र न करे। परन्तु वहां अैसी बात क्या छिपी रह सकती थी? दूसरे दिन औरोंको मालूम हुअी और तीसरे दिन शामकी प्रार्थना करनेके बाद यह बात गांधीजीके पास पहुंची। कौन लाया, किस किसने खायीं, वगैरा बातें पूछी गअीं। पहले तो अिसे बहुत महत्त्व नहीं दिया गया। सिर्फ यही जाननेकी कोशिश की गअी कि साधारण नियमके बाहर किस किस विद्यार्थीने आचरण किया। परन्तु बादमें अैसा मालूम हुआ कि अेक शिक्षिका बहन भी अुसमें शामिल थीं। गांधीजीको पहले तो यह बात सच्ची न लगी। परन्तु जब अेक दो विद्यार्थियोंने विश्वासके साथ कहा तो गांधीजीको शंका हुअी। गांधीजीको अुन बहन पर बड़ा विश्वास था, फिर भी अुन्होंने अुनसे पूछा। अुन्होंने बड़ी चालाकी और भावनापूर्ण वाणीमें अुस बातके सच होनेसे अिनकार किया। अुनके अिनकारसे यह तुच्छ प्रश्न और भी गंभीर बन गया। विद्यार्थी झूठे या बहन झूठी? दोनोंमें से कोअी भी पक्ष अिस तरह जान-बूझकर झूठ बोले यह असह्य था। विद्यार्थी और भी दृढ़ताके साथ अपनी बात कहने लगे। दूसरी तरफ अुन बहनने भी अधिक जोरके साथ अिनकार करना शुरू किया। कोअी अपराध हो जाना आकस्मिक घटना हो सकती है, परन्तु किये हुअे दोषको छिपाने और अुसके लिअे झूठ बोलकर अुससे अिनकार करनेसे किया हुआ अपराध कअी गुना गंभीर बन जाता है। अिस मामलेमें अैसा ही हुआ। और प्रत्येक क्षण वह और भी गंभीर बनता गया। अंतमें गांधीजीने देवदासको बुलाया और पासमें खड़ा रखकर पूछा: 'देवा, तू अिस बारेमें क्या जानता है? बहनने पकौड़ियां खाअी थीं?' देवदास क्या जवाब देते? गांधीजीके दिलमें अुन बहनके लिअे अितना विश्वास था कि अुनके बारेमें कोअी भी दोषारोपण करना विद्यार्थियोंके लिअे धर्म-संकट था। अिस प्रश्नसे देवदास

रोने लगे। हिचकियां भरने लगे। गांधीजीने कहा : 'देवा, तू अितना ज्यादा रो क्यों रहा है? जो सच हो सो कह दे।' देवदासने हिचकियां भरते भरते कहा : 'मैं आपसे सच बात कह दूंगा। परन्तु आप मुझे झूठा मानेंगे। अिसलिअे मुझे रोना आता है।' गांधीजी बोल अुठे : 'अब तो मुझे विश्वास है कि तू सच ही कहेगा। जो सच हो वही कह दे।' देवदासने दृढ़ताके साथ बताया : 'बहनको पकौड़ियां खाते मैंने देखा है।'

बस अब क्या हो सकता था? गांधीजी तो क्षणभरके लिअे विचार-सागरमें डूब गये। अिस हद तक विद्यार्थी झूठ बोलते हों तो यह भयंकर बात है। और यदि वह बहन झूठ बोलती हों तब तो अिससे भी बड़ी भयंकर बात है। सारे खंडमें खामोशी छा गअी और अुदासी फैल गअी। सब अिस विचारमें पड़ गये कि घड़ीभर बाद क्या होगा। अितनेमें गांधी-जीने निश्चयात्मक शब्दोंमें कहा : 'मेरे सामने सच बात तो आनी ही चाहिये। अिसलिअे जब तक दोनों पक्षोंकी तरफसे यह निर्णय नहीं कर दिया जाय कि विद्यार्थी सच्चे हैं या बहन सच्ची हैं, तब तक मैं अनशन-व्रत लूंगा।' यह फैसला सुनकर हम अैसे अवाक हो गये मानो हम पर बिजली गिर गअी हो। अिसका क्या परिणाम होगा, अिस पर भले-बुरे तर्क-वितर्क होने लगे। श्री कैलनबैक तो भारी चिन्तामें पड़ गये। रातके साढ़े नौ बज गये। गांधीजीने मुझसे पूछा : 'तुम्हारा क्या खयाल है?' मैंने कहा : 'वह बहन अैसा नहीं कर सकतीं; और यदि भूलसे अपराध हो गया हो तो अिस हद तक नहीं छिपा सकतीं। मेरा यह अनुभव है कि देवदास कअी बार झूठ बोला है। लेकिन आज अुसके कहनेका मुझ पर दूसरा असर हुआ और मैं भी अब शंकाशील बन गया हूं। फिर भी मैं पक्की जांच करूंगा।' फिर सब सो गये। मैंने और मगनलाल गांधीने रातके बारह बजे निर्दोष विद्यार्थियोंको अेक अेक करके गहरी नींदसे अुठा कर पूछना शुरू किया। अुन सबकी तरफसे अेक ही तरहकी जानकारी मिली। और हमें भी विश्वास हो गया कि विद्यार्थियोंका कहना सच है।

परन्तु जब तक वह बहन खुद गांधीजीके सामने स्वीकार न करें, तब तक क्या हो सकता था? अन्तमें भगवानने अुन बहनको सच बात कहनेकी हिम्मत दी। दूसरे दिन दस बजे अुन बहनने गांधीजीके पास जाकर और अुन्हें प्रणाम करके अपना दोष स्वीकार कर लिया।

यह प्रसंग पढ़कर बहुतोंको आश्चर्य होगा। वे सोचेंगे कि अैसे छोटे छोटे मामलोंमें गांधीजीका अुपवास करना अजीब बात है। परन्तु यह छोटासा दिखाअी देनेवाला प्रसंग कितना गंभीर था, यह तो फिनिक्सके वातावरणमें रहनेवाला ही समझ सकता है।

अिस प्रसंगके बाद दूसरे दिन गांधीजी जोहानिसबर्ग चले गये थे। वहांसे अिस सम्बन्धमें अुन्होंने मुझे यह पत्र लिखा था:

"भाअीश्री रावजीभाअी,

"तुम पर किसी पूर्वजन्मका ॠणानुबन्ध होगा। तुमसे अितना प्रेम पानेका मुझे क्या अधिकार हो सकता है? फिर भी कल जब मैं भारी संकटमें पड़ गया, तब तुमने जो प्रीति दिखाअी अुसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। अिसलिअे मैं चाहता हूं कि तुम दोनोंकी आत्मा अधिक तेजस्वी बने; और तुम अैसी कामना करना कि अुस प्रीतिको अनुभव करनेसे अपनी आत्माकी शक्तिके बारेमें मेरा विश्वास अधिक दृढ़ हो। सीधे त्रैराशिकके अनुसार यह जवाब मिलता है कि अेक छोटीसी प्रतिज्ञा यानी तपश्चर्याके आदरसे जब अितना हो सकता है, तो की हुअी तपश्चर्या कितना कर सकती है अिसका कोअी हिसाब ही नहीं हो सकता। और बात भी अैसी ही है। मैंने प्रतिज्ञा न ली होती तो शुद्ध प्रेमका अनुभव न होता और जिस शीघ्रतासे सत्य प्रकट हो गया और छोटे बच्चे निर्दोष साबित हुअे वैसा भी न हो पाता।

"चि० ....को मैंने जिस अूंचे दर्जेकी समझा था वहांसे अुसे अुतरना पड़ा है। फिर भी मैं यह जरूर मानता हूं कि वह पुण्यात्मा है और अुसमें सद्‌गुण भी बहुत हैं। अुनका विकास करना हमारा फर्ज है। अुसका पाप और काम तो बहुत भारी था। अुसकी अुसे याद न आये अैसा व्यवहार हमें अुसके साथ करना है। अुसे घरके कामकाजमें प्रवीण होनेका प्रोत्साहन देना। यह देखते रहना कि कोअी बच्चे अुसका अपमान न करें।... रातकी कथा जारी रखना। बच्चोंको पांच बजे अुठानेका भार रा...पर समझूंगा। ... म...की तबीयतके समाचार नियमित रूपसे मिलने चाहिये।

मोहनदासके यथायोग्य"

१२

गांधीजीके अुपवास

गांधीजीने दक्षिण अफ्रीकामें सत्याग्रहकी जो लड़ाअी आरम्भ की थी, अुसमें अुनकी दृष्टि राजनीतिककी अपेक्षा धार्मिक अधिक थी। सम्पूर्ण सत्याग्रह सम्पूर्ण आत्मशुद्धिके बिना नहीं हो सकता। और संपूर्ण सत्याग्रहके साथ ही अुसकी सम्पूर्ण विजयकी कल्पना जुड़ी हुअी है। अिस प्रकार कोअी भी लड़ाअी सत्याग्रहके जरिये लड़नेमें आत्मशुद्धिकी जरूरत पहली है। अतः सत्याग्रह मूल रूपमें ही धर्मवृत्ति है; अुपवास और प्रार्थना आत्मशुद्धिके मुख्य साधन हैं। अैसे अुपवास दो कारणोंसे हो सकते हैं: संयमके कारण और प्रायश्चित्तके कारण। दैनिक जीवनमें हम अधिकसे अधिक शुद्ध किस तरह हों, अिसके अुपायके रूपमें मन और हृदयके निरंकुश जोशको दबानेके लिअे जो अुपवास होते हैं वे संयमके हेतुसे किये गये अुपवास कहलाते हैं। और मन तथा हृदयके आत्महितसे विरुद्ध जानेवाले कार्योंमें या प्रलोभनोंमें पड़नेके कारण जो दोष हो जाते हैं, अुनके प्रायश्चित्तके खातिर होनेवाले अुपवास प्रायश्चित्तके हेतुसे किये गये अुपवास कहलाते हैं। हम देख चुके हैं कि गांधीजीने भोजनके सारे प्रयोग संयमके हेतुसे शुरू किये थे। बादमें वे अुससे आगे बढ़े। अुन्होंने अेकाशन और निराहार अुपवास भी शुरू किये। अिस तरहके निराहार अुपवास अुन्होंने संयमकी दृष्टिसे अेक साथ नहीं किये। अैसे अेक साथ किये जानेवाले अुपवास संयमकी दृष्टिसे अुचित हैं या नहीं, अिसका विचार अुन्होंने तो किया ही होगा। परन्तु अिस बारेमें मेरा खयाल यह है कि जीवन सतत दूसरोंकी सेवामें ही लगा रहता हो तो सेवाका काम ही संयम है। संयमके खातिर अुपवास करके सेवामें लगे हुअे जीवनमें जरा भी विक्षेप डालना अुन्हें अुचित नहीं लगा होगा। अिसलिअे अमुक समयके लिअे नियमित अेकाशन और अेकादशीके अुनके अुपवास संयमकी दृष्टिसे किये गये माने जायंगे। अैसे अुपवास गांधीजीने अेक साथ किये हों, यह मेरी जानकारीमें नहीं है।

प्रायश्चित्तके खातिर अेक और अेक साथ अनेक अुपवास गांधीजीने कअी बार किये हैं। अैसे प्रायश्चित्तके रूपमें अुन्होंने आज तक जितने अुपवास किये हैं, अुनके चार हिस्से किये जा सकते हैं:

(१) अपने आत्म-स्खलनके कारण प्रायश्चित्तके रूपमें।

(२) अपने जीवनके असरमें रहनेवाले आप्तजनोंका आत्म-स्खलन असह्य हो अुठने पर।

(३) जिस समाजको अपना कार्यक्षेत्र बनाया है और जो समाज अपने जीवनके असरमें माना जाता है, अुस समाजके गंभीर आत्म-स्खलनके कारण।

(४) जिस समाजको अपना कार्यक्षेत्र बनाया है और जो समाज अपने जीवनके असरमें माना जाता है, अुस समाजके प्रति किसी व्यक्ति या किसी समाजकी तरफसे होनेवाले असह्य अन्याय और अत्याचारके कारण।

अूपरके चार भागोंमें से पहले दो भागके अुपवास गांधीजीने दक्षिण अफ्रीकामें किये थे। प्रथम अवसर सात दिनके अुपवासका था। दूसरा अवसर चौदह दिनके अुपवासका था। आश्रममें रहनेवाले अेक भाओी और अेक बहनके गंभीर पतनसे गांधीजीको भारी दुःख हुआ था। अिस कारणसे दोषी आप्तजनोंके लिअे अुनका हृदय अुबल पड़ा। परन्तु गांधीजीने अिस अुबालको दबा दिया। अपने पास रहनेवाले आप्तजनोंके हृदयकी मलिनताके लिअे मैं ही जिम्मेदार हूं, अिसमें कहीं न कहीं गहराअीमें मेरी आत्माकी अशुद्धता ही होनी चाहिये, नहीं तो शुद्ध स्फटिक मणिमें मैल कभी छुपा नहीं रह सकता। अगर मैल छिपा रहा तो स्फटिक मणिके स्वयं शुद्ध न होनेके कारण ही छिपा रहा। अिस दृष्टिसे सात दिनके अुपवासका निश्चय करके गांधीजीने दोषी भाओी-बहनोंके प्रति अपना रोष शान्त किया और अुन पर दया बरसाओी। अिस सात दिनके अुपवासमें श्री कैलनबैक भी शामिल थे। वे गांधीजीके जीवनके अेक महत्त्वपूर्ण अंग बन गये थे। अिसलिअे अुनके अतिशय आग्रहके कारण गांधीजीने अुन्हें अुपवासमें शामिल होनेकी अनुमति दी। ये सात दिनके अुपवास रोजके कार्यक्रममें जरा भी बाधा पड़े बिना पूरे हो गये।

ये सात दिनके अुपवास होनेके लगभग छह महीने बाद दूसरे चौदह अुपवास करनेका अवसर अुपस्थित हुआ। यह प्रसंग मेरी दृष्टिसे तो बहुत ही छोटे कारणसे अुपस्थित हुआ जान पड़ा। अेक व्यक्तिके, जिसके लिअे गांधीजीने बड़ी जोखिम अुठाओी थी, चरित्रके बारेमें गांधीजीको बड़ा विश्वास था। परन्तु अुस व्यक्तिका भीतरी जीवन बहुत ही मलिन मालूम हुआ। अतः गांधीजीने अुसके लिअे प्रायश्चित्त किया और यह आशा रखी कि कमजोरीके कारण अुसमें जो मलिनता आ गयी होगी वह अिससे नष्ट हो

जायगी। परन्तु अन्तमें गांधीजीको विश्वास हो गया कि अुस व्यक्तिकी मलिनता नष्ट नहीं हुअी है; वह अुन्हें चालाकीसे धोखा देता है। अिसलिअे गांधीजीको निराशा हुअी। जिसके बारेमें अुन्होंने बहुत बड़ी आशा रखी थी, अुसकी अैसी अधोगतिका कारण अुन्होंने अपनेको माना। अुन्होंने फिनिक्समें चौदह अुपवास करनेका निश्चय किया, अुससे पहले कितने ही समयसे अुनके दिल पर बड़े आघात लगते रहे थे। हमारी नजरमें बहुत छोटा अपराध अुनके लिअे बड़े दुःखका कारण बन जाता था और हृदयकी क्षति या हृदयकी मलिनताको वे जरा भी बरदाश्त नहीं कर सकते थे। वे दिन ही अैसे थे। परन्तु वे दिन जितने दुःखद थे, अुतने ही स्वानुभवके, आत्म-निरीक्षणके और ज्ञानवृद्धिके भी थे। संवत् १९७० के चैत्र बदी १३ के रोज अुन्होंने अपने हृदयकी पीड़ा अिस प्रकार व्यक्त की थी :

"आज तक मेरा कोअी भी दिन अिस तरहकी मानसिक वेदनामें नहीं गुजरा होगा। मेरा बोलना, मेरा हंसना, मेरा चलना, मेरा खाना और मेरा काम करना सब आजकल यंत्रकी तरह ही होता है। मैं कुछ भी लिख नहीं सकता। अैसा मालूम होता है जैसे मेरा हृदय सूख गया हो। आजकलकी मेरी पीड़ाका कोअी पार नहीं है। कअी बार तो जेबसे छुरी निकालकर अपने पेटमें भोंक लेनेका मेरा विचार हुआ। कभी मैंने सामनेकी दीवारसे सिर फोड़ लेनेका विचार किया और कभी कभी अिस संसारसे भाग जानेका विचार किया। परन्तु बादमें विचार हुआ, 'अरे भले मानस! मूर्ख जीव! अिस तरह तू क्यों पागल हो रहा है? अैसी मानसिक वेदनाके समय भी तूने संतुलन कायम नहीं रखा, तो तुझे थोड़ा भी जो ज्ञान मिला है वह किस कामका?' अिस तरहके विचारोंमें आजकल मैं अपने दिन बिता रहा हूं। मेरे जो हितेच्छु हैं अुन्हें यह हकीकत मुझे अब कह देनी है। . . . 'देखो भाअी, जे . . . ने घोर पाप किये हैं।'

"यह सब जाना तब मुझे विचार आया कि अपात्र पर विश्वास रखकर मैंने जो पाप किया, अुसका प्रायश्चित्त मुझे करना ही चाहिये। १५ दिनके अुपवास करनेकी प्रतिज्ञा लेते हुअे मैं हिचकिचाया। बाका खयाल आया। मैं १५ दिन न खाअूंगा तो बा जरूर मर जायगी। अिस डरसे ही फिलहाल मैंने वह विचार छोड़ दिया। परन्तु बादमें निश्चय किया कि जे . . . को फी . . . जाना ही चाहिये। वहां जाकर रहना ही अुसका मुख्य

धर्म है। यहां रहनेमें अुसका कल्याण नहीं है।...पता नहीं मुझमें क्या बात है। मुझमें अैसी निर्दयता है — दूसरोंके कहे अनुसार — कि दूसरा आदमी मेरा मन रखनेके लिअे मजबूर होकर काम करता है और जो काम नहीं हो सकता अुसे भी करनेकी कोशिश करता है। और जब अैसा करनेकी अुसकी शक्ति नहीं होती तो अन्तमें कृत्रिमता धारण करके मुझे धोखा देता है। गोखलेजीने भी मुझे बहुत बार कहा था: "तुममें अितनी कठोरता है कि दूसरे आदमीको तुम कंपा देते हो और वह आदमी डरके मारे या तुम्हारी अिच्छा पूरी करनेकी कोशिशमें मजबूरीसे काम करता रहता है और अन्तमें अशक्त मनुष्य कृत्रिमता धारण कर लेता है। तुम मनुष्यों पर असह्य भार डाल देते हो। मैं खुद भी तुम्हारा काम शक्ति न होने पर भी मजबूरन् करता हूं।"

अेक दिन सुबहके साढ़े दस बजे सब खाना खाने बैठे। मैं और गांधीजी सबको परोस रहे थे। परोस कर मैं भोजनालयमें गया। पीछे पीछे गांधीजी आये और बोले: "अुसने आज भयंकर झूठ बोला और मुझे अुससे कहना पड़ा कि अब दुबारा अिस तरह जान-बूझ कर झूठ बोलोगे तो मैं चौदह दिनका अुपवास करूंगा।" अिस बातको चौबीस घंटे होने आये। फिर खाने और परोसनेका अवसर आया और गांधीजी बोल अुठे: "...ने गजब किया। आज भी अुसने जान-बूझकर झूठका प्रयोग किया। अब मुझे चौदह दिनका अुपवास करना ही पड़ेगा।"

मुझ पर तो जैसे वज्र गिर गया। मैं स्तब्ध हो गया। गांधीजीने तुरन्त मुझे सचेत कर दिया। हमारे दोके सिवा रसोअीघरमें और कोअी नहीं था। बा तो बीमार थीं, अिसलिअे बिस्तर पर थीं। गांधीजीने मुझसे कहा: "तुम खा लो। फिर मगनलाल और छगनलालको बुलाओ।" मैंने कहा: "अभी ही बुला लाता हूं। मुझे खाना नहीं है।" गांधीजीने मुझे तुरन्त वापस बुला लिया और बोले: "मेरी आज्ञा है, तुम खा लो। तुममें से किसीको अिस बारेमें विचार नहीं करना चाहिये। किसीको मेरे साथ अुपवास करके अपना नित्यकार्य बिगाड़ना या अुसमें त्रुटि नहीं करनी चाहिये। सबको यह सावधानी रखनी है कि हमारे कार्यक्रममें जरा भी खलल न पड़े। अिसलिअे तुम खाने बैठो।" गांधीजीने मुझे जबरन् खाने बैठा दिया; यों कहिये कि मुझ पर ज़ुल्म किया। मैंने तर्क किया: "परन्तु आप अिस

तरह हर किसी बात पर अुपवास करें, अिसका क्या अर्थ है? चौदह दिनके अुपवास किसलिअे? हमारे पापोंके लिअे आप क्यों अुपवास करें? आपके हृदयकी छाया अितनी ठंडी है कि अुसकी शीतलतामें भयंकर जहरीला नाग भी पल सकता है। अुसके पापके कारण आप भूखों मरें, यह कहांका न्याय है?" गांधीजी मेरे हृदयकी पीड़ाको समझ कर हंसे और गंभीर भावसे बोले:

"हर कोअी झूठ बोले या मुझे धोखा दे, तो मुझे चोट नहीं लगती है। अुसके लिअे मैं अपनेको दोषी नहीं मानता। चौदह दिनका अुपवास करनेका मैंने जो निश्चय किया है, वह किसीके पापका प्रायश्चित्त करनेके खातिर नहीं किया है; बल्कि कल मैंने जो यह प्रतिज्ञा की थी कि 'अब दुबारा अिस तरह तुम जान-बूझकर झूठ बोलोगे तो मैं चौदह दिनका अुपवास करूंगा,' अुस प्रतिज्ञाके पालनके खातिर मुझे अुपवास करना पड़ेगा। परन्तु जिन्हें मैं अपना मानता हूं, जिनसे मैंने बड़ी आशाअें रखी हों, जिन पर मुझे बड़ा विश्वास हो और जिनके लिअे मैंने कअी तरहके खतरे अुठा कर अपनी आत्माको अुंडेला हो, वही व्यक्ति असत्य काममें लेकर मुझे हमेशा धोखा देते रहें, तो अिसमें मेरा ही पाप है, यह मुझे दीपककी तरह स्पष्ट मालूम होता है। मुझमें पाप न हो तो अैसे पापीका पाप मैं क्यों न देख सका? पत्थर और हीरेका फर्क जौहरीको करते आना ही चाहिये। अपने जिन आदमियोंको मैं अपना मानता हूं, अपने हृदयका प्रतिबिम्ब समझता हूं, अुनमें यदि असत्य हो तो मुझमें असत्य होना ही चाहिये। यह मेरा जीवन है। अिसके खातिर मैं जीता हूं। तुम्हें तो मुझे हिम्मत बंधानी है। तुम्हें होशियार रहकर मैं अशक्त हो जाअूं तब मेरी सेवा करना और अिस तरहसे काम करते रहना है कि हमारे नित्यकार्यमें कोअी कमी न आये। मेरे पीछे अुपवास करके, मेरी मुश्किलें बढ़ाकर, मेरे अुपवासमें मुझे चिन्तातुर बनाना तुम्हारा कर्तव्य नहीं है।"

मैं चुप रहा। जैसे तैसे कुछ खाया और बादमें मगनलाल, छगनलाल और मिस्टर वेस्ट वगैराको बुला लाया। गांधीजीने अुन्हें अपना निश्चय बताया। अूपरके जैसी चर्चा भी अुनके साथ हुअी। परन्तु सब जानते थे कि गांधीजीके निश्चयका अर्थ होता है भीष्म-प्रतिज्ञा।

अुन्होंने चौदह दिनके अुपवास शुरू किये। नीमके पत्तों या रससे शरीरकी गरमी शान्त हो कर मनुष्यकी वृत्तियां दबती हैं, अैसे किसी खयालसे

गांधीजीने अुपवास करनेसे पहले यह संकल्प किया कि नीमकी कोमल पत्तियां अमुक मात्रामें दिनमें दो बार खाअूंगा। अिस प्रकार चार दिन हुअे कि अुनके पेटमें दर्द अुठा और असह्य वेदना होने लगी। पत्तियां खाना तो अुन्होंने बन्द कर दिया, परन्तु दर्द नहीं मिटा। पांच ही दिनमें गांधीजी चौदह दिनके अुपवासके अन्तमें जितने अशक्त दीखने चाहिये अुतने अशक्त हो गये। अिन चौदह दिनोंमें मैं हमेशा अुनके पास ही रहा और मुझे अुनकी सेवा करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ।

परन्तु हम सबको यह सूचना कर दी गअी थी कि अिस अुपवासके बारेमें हम किसीसे बात न करें और यह बात फिनिक्ससे बाहर न जाय। और यह भी समझ लिया गया था कि फिनिक्समें कोअी मिलने आये तो हम अुससे भी खुद होकर यह बात न कहें। अुपवासकी बात बाहर चली जाय तो दक्षिण अफ्रीका फिनिक्समें ही अुमड़ आये और हाहाकार मच जाय। दक्षिण अफ्रीकामें, जहां खूब खा-पी कर मौज करनेका आदर्श रखनेवाले लोग रहते हों, चौदह दिनके अुपवासकी बात सुनकर स्नेहियोंका फिनिक्सकी तरफ कूच शुरू हो जाना स्वाभाविक था। अिस प्रकारकी चुप्पीके कारण शान्तिसे गांधीजीके अुपवास पूरे हुअे। अंतिम अुपवासके दिन तो अुनसे बिस्तरसे अुठा भी नहीं जाता था; अितनी कमजोरी आ गअी थी। अिस मौके पर मि० कैलनबैक जोहानिसबर्गमें थे। अुन्हें चार दिन बाद खबर मिली। वे तो अिस चौदह दिनके अुपवासकी बात जानकर व्याकुल हो अुठे। तुरन्त अुन्होंने गांधीजीको तार दिया और वहांसे फिनिक्स आनेको निकल पड़े। तारके दूसरे दिन श्री कैलनबैक शामकी गाड़ीसे कोअी चार बजे अुतरनेवाले थे। दो ढाअी बजे गांधीजी बिस्तरमें पड़े पड़े बोले: "जिसे मेरे साथ स्टेशन चलना हो वह तैयार हो जाय। प्रेस या शालाके कामवाला कोअी न आये।" यह कहकर वे बिस्तरसे अुठे। हाथमें लाठी ली, चप्पल पहने और चलने लगे। मैं भी साथ साथ गया। स्टेशन पहुंचे और गाड़ी आ गअी। श्री कैलनबैक गाड़ीसे अुतरे। गांधीजीको स्टेशन पर देखकर वे तो चकित हो गये। वे गांधीजीसे मिले और बोले: "मैंने माना था कि आप अभी बिछौने पर ही पड़े होंगे।" गांधीजी हंसते हंसते बोले: "हां, था तो बिस्तर पर ही। परन्तु यह मुझसे सहन नहीं हुआ कि तुम मुझे बिस्तर पर पड़ा समझकर वहांसे यहां भागे आ गये। मेरे लिअे अितनी अधिक चिंता क्यों? अितना ज्यादा मोह

कैसा ? मैं तीन मील चलकर तुम्हारे सामने आया हूं, सो यह बतानेको कि मैं बिछौनेमें पड़ा नहीं रहा।"

श्री कैलनबैक बहुत खुश हुअे और सब लोग बातें करते करते आश्रमकी तरफ चलने लगे।

परन्तु जो सदा ही आत्म-निरीक्षण करते हों और जिनके हृदयमें सतत मंथन चलता रहता हो, अुनका प्रत्येक क्षण अमूल्य होता है। अिस प्रकार गांधीजीके लिअे कौनसा प्रसंग क्रान्तिकारक सिद्ध होगा, यह नहीं कहा जा सकता था। कोअी भी छिछली प्रवृत्ति या बाहरी ढोंग देखकर अुन्हें बेहद दुःख होता था। अूपरके प्रसंगके बाद अैसा कुछ देख-जानकर शामकी प्रार्थनाके बाद सबको संबोधित करके अुन्होंने नीचे लिखे अुद्गार प्रकट किये :

"...तुम गीताजीके श्लोक कंठस्थ कर लोगे, तो अिससे मैं प्रसन्न नहीं होअूंगा। तुम अितिहास पढ़ो या न पढ़ो, गणित करो या न करो, संस्कृत पढ़ो या न पढ़ो, अिसकी मुझे कोअी चिन्ता नहीं। परन्तु यह जरूरी है कि तुम संयम-वृत्ति धारण करो। यही मुझे चाहिये। मैं मनुष्यका गुलाम बनना चाहूंगा, परन्तु अपने मनका गुलाम नहीं बनना चाहता। मनका गुलाम बनने जैसा कोअी अधम पाप नहीं है। अिसलिअे तुम समझकर मनको नियममें रखना सीखो। अैसी स्थितिमें ही तुम मेरे पास रह सकोगे, नहीं तो मुझे किसीकी जरूरत नहीं। मैं तुममें से किसीको भी सिखानेका अभिमान नहीं रखता। मेरे पास अेक शिष्य है, जिसे सिखाना बड़ेसे बड़ा काम है। अुसे शिक्षा देकर ही मैं तुम्हारा, हिन्दुस्तानका या मानव-जातिका भला कर सकूंगा। और वह मैं खुद ही हूं, जिसे मैं अपना मन कहता हूं। अिस प्रकार जो अपनेको अपना शिष्य बनायेंगे, वे ही यहां रहनेके लायक हैं। जो यहांके जीवनको पचा न सकें, अुनका यहां न रहना ही बेहतर है। वे यहांसे अलग हो जायें तो ठीक ही करेंगे। लेकिन समझे बिना (हेतुपूर्वक न करके यंत्रकी तरह) काम करना पाप है। मैं अैसा नहीं चाहता।"

१३

स्नेही, त्यागी या ज्ञानी ?

सब कोअी यह कहते हैं कि गांधीजीमें कुछ विशेषता है। जो अुनके दर्शन करने जाता है, अुस पर वे जादू डाल देते हैं। जो अुनके साथ झगड़ा करने जाता है, अुसे वे जीत लेते हैं। जो अुनके प्रति स्नेह रखते हैं, अुनके स्नेहमें वे ओतप्रोत हो जाते हैं। अुनमें स्नेहकी अितनी जबरदस्त शुद्धता और तीव्रता है कि अुनके संपर्कमें आनेवाला अपने-आपको अुनमें समा देना चाहता है। सिर्फ अुन लोगोंके हृदयकी कमजोरी ही अिसमें बाधक होती है। गांधीजीके स्नेहमें मोह नहीं होता। आम तौर पर हम मोहको स्नेह और प्रेमके नामसे पुकारते हैं। हमारे स्नेहमें देहके प्रति आकर्षण होता है। यम, नियम और संयमसे आत्म-निरीक्षण करके जिसने आत्म-साधना की हो, वह मोह यानी देहके आकर्षणवाले स्नेह और शुद्ध स्नेहका भेद जान सकता है और अुसे परख सकता है। स्नेह तो हमेशा शुद्ध ही होता है। परन्तु हमारे स्नेहका स्तर अितना मलिन हो गया है कि हम स्नेह और शुद्ध स्नेह जैसे भेद करते हैं। स्नेह हमेशा श्रेय होता है, प्रेय नहीं होता। अुसमें आत्माका चिरस्थायी श्रेय होता है। अुसमें क्षणिक शारीरिक लालसा और मनकी अुत्तेजित भावनाओंके लिअे कोअी स्थान नहीं होता। गांधीजीका स्नेह आत्माका श्रेय करनेवाला है। अनेक भक्तोंने अीश्वरसे अैसा शुद्ध स्नेह मांगा है; अिस संसार या त्रिलोककी धन-संपत्तिका या अधिकारका अनादर करके प्रभुके प्रति या आप्तजनोंके प्रति शुद्ध स्नेह चाहा है। गांधीजीके नीचे दिये गये पत्र हमें अैसे ही शुद्ध, पवित्र स्नेहकी झांकी कराते हैं। सच्चा स्नेही सच्चा त्यागी है, सच्चा ज्ञानी है।

सन् १९०८ में सत्याग्रहकी लड़ाअीमें गांधीजीको दूसरी बार जेलकी सजा हुअी। अुस समय पूज्य कस्तूरबा फिनिक्समें खूब बीमार थीं। मिस्टर वेस्टने कस्तूरबाकी भयंकर बीमारीके बारेमें गांधीजीको तार दिया। अिस पर गांधीजीने पूज्य कस्तूरबाको नीचे लिखा पत्र भेजा। गांधीजीकी अुम्र अुस समय चालीस बरसकी रही होगी।

"तुम्हारी तबीयतका तार मि० वेस्टने आज भेजा है। मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है, मैं रो रहा हूं। परन्तु अैसी स्थिति नहीं है कि तुम्हारी सेवा करने आ सकूं। सत्याग्रहकी लड़ाअीमें मैंने सब कुछ अर्पण कर दिया है। मैं वहां आ ही नहीं सकता। जुर्माना देकर ही आ सकता हूं। और जुर्माना तो दिया ही नहीं जा सकता। तुम जरा हिम्मत रखो और ठीक ढंगसे खाओ-पियो तो ठीक हो जाओगी। फिर भी यदि मेरे भाग्यमें यही लिखा होगा कि तुम चली जाओ, तो मैं अितना ही लिखता हूं कि तुम वियोगमें भी मेरे जीते-जी ही चली जाओ तो बुरा नहीं होगा। तुम पर मेरा प्रेम अितना अधिक है कि तुम मरने पर भी मेरे लिअे जिन्दी ही रहोगी। तुम्हारी आत्मा तो अमर है। मैं तुम्हें विश्वासके साथ कहता हूं कि यदि तुम्हें जाना ही पड़ा, तो तुम्हारे बाद मैं दूसरी स्त्री नहीं करूंगा। मैंने तुम्हें कभी यह कहा भी है। तुम अीश्वर पर आस्था रखकर प्राण छोड़ना। तुम मरोगी तो वह भी सत्याग्रहको शोभा देनेवाला ही होगा। मेरी लड़ाअी सिर्फ राज-नीतिक नहीं है। यह लड़ाअी धार्मिक है। अिसलिअे अत्यन्त शुद्ध है। अिसमें मरे तो क्या और जिये तो क्या? आशा है तुम भी यही समझकर जरा भी दुखी न होगी। अैसा वचन मैं तुमसे चाहता हूं।"

अूपरका पत्र लिखनेके लगभग पांच सालके लम्बे अर्सेके बाद गांधीजी अेक दिन सुबह फिनिक्समें खेतीका काम कर रहे थे। अुस समय डाक आअी। डाकमें अेक तार था। वह तार अुन्होंने डाक पढ़ते समय पढ़ा और अपने पास अिस तरह रख दिया जैसे थोड़ा भी महत्त्वका समाचार न हो। आश्रमका सारे दिनका कार्यक्रम पूरा हो गया। अुनके साथ काम करनेवालोंको पता भी नहीं चला कि आज अुनके दिलमें गंभीर अुथल-पुथल मची हुअी है। रातको प्रार्थनाके बाद सारे दिनकी महत्त्वपूर्ण घटनाओंके बारेमें या महत्त्वके समाचारोंके विषयमें बातें हो रही थीं। अुस समय गांधीजी बहुत ही गंभीर हो गये और अत्यन्त दुःखपूर्वक अुन्होंने हमारे सामने नीचेके अुद्‌गार प्रगट किये:

"मुझ पर बड़ीसे बड़ी विपत्ति आ पड़ी है। मैं समझता हूं कि अन्त समय तक मेरा विचार करते हुअे मेरे भाअी कल मर गये। मुझसे मिलनेकी अुनकी अिच्छा कितनी अुत्कट थी! मैं भी अिसीलिअे अपना काम जल्दी खतम कर रहा था कि जैसे तैसे जल्दी हिन्दुस्तान चला जाअूं, अुनके चरणोंमें

प्रणाम करूं और अुनकी सेवा-शुश्रूषा करूं। परन्तु होना कुछ और ही था। अब तो मुझे विधवाओंके कुटुम्बमें ही जाना पड़ेगा और वह कुटुम्ब भी मेरे ही आसरे होगा। तुम हिन्दुस्तानकी कौटुम्बिक व्यवस्थाको न समझनेके कारण अिस प्रसंगको समझ नहीं सकते। किसी भी प्रकार हिन्दुस्तान जानेकी मेरी अिच्छा अब दिनोंदिन प्रबल होती जा रही है। और अब भी निश्चित कौन कह सकता है? मेरी यह अिच्छा पूरी होगी या नहीं, अिस बारेमें मुझे अब भी शंका है। फिर भी मुझे अिस यात्राके लिअे तैयारी करनी चाहिये और परिणामके लिअे शान्तिसे सर्व-शक्तिमान प्रभु पर विश्वास रखना चाहिये।"

अिस घटनाके बाद गांधीजी केपटाअुन गये। अुस समय यूनियन पार्लियामेन्टमें अिण्डियन रिलीफ बिल पेश हुआ था। अुस समय भी गांधीजीके हृदयमें अपने भाअीकी मृत्युसे जो विचार पैदा होते थे, वे अुन्होंने जोहानिसबर्गमें अेक साथीको पत्रमें बताये थे। वे ये हैं:

"अैसे आघातोंसे मनुष्यमें मृत्युके बारेमें ज्यादा निर्भयता आती जाती है। अिस घटनासे मेरे दिलमें अितनी खलबली किसलिअे मचनी चाहिये? अैसे शोकमें स्वार्थकी छाया है। यदि मैं मृत्युके लिअे तैयार होअूं और मृत्युको स्वागत-योग्य प्रसंग समझूं, तो मेरे भाअीका मर जाना कोअी आपत्ति नहीं है। मृत्युसे हमें डर लगता है, अिसलिअे हम औरोंकी मृत्यु पर रोते हैं। शरीर नाशवान है और आत्मा अमर है, यह जानते हुअे भी मैं शरीर और आत्माके अलग होने पर शोक कैसे कर सकता हूं? परन्तु अिस सुन्दर और आश्वासनपूर्ण सिद्धान्तमें सच्चा विश्वास हो, तो ही यह स्थिति प्राप्त होती है। जिसे अिसमें श्रद्धा हो, अुसे शरीरका लालन-पालन नहीं करना चाहिये, बल्कि अुसका नियंता बनना चाहिये। अुसे अपनी शारीरिक आवश्यकताअें अैसी रखनी चाहिये कि जिससे देह देही पर अधिकार न करके अुसके अधीन रहे। औरोंकी मृत्युके लिअे शोक न करना लगभग शाश्वत शोककी स्थिति स्वीकार कर लेना है। कारण, शरीर और आत्माका सम्बन्ध स्वयं ही शोकप्रद है। अिन विचारोंका आजकल मुझ पर प्रभुत्व है। अिस समय अैसा दूसरा पत्र मुझसे लिखा नहीं जायगा। यह तो अपने-आप लिखा गया है। अिसलिअे मि० पोलाकको पहुंचा देना और म...को भी पढ़नेको देना। और अुसके बाद मि० वेस्ट और दूसरोंके पढ़नेके लिअे छ...के पास भी भिजवा देना।"

अिसी समय मुझ पर मानसिक आपत्ति आ पड़ी। मैं अपने माता-पिताके वात्सल्यपूर्ण पत्रोंसे दीन हो गया। मैंने अपनी दशाका वर्णन करनेवाला अेक पत्र गांधीजीको केपटाअुन लिखा। अुसके जवाबमें अुन्होंने जो पत्र मुझे लिखा अुस परसे गांधीजीकी यह विचारधारा हमें मालूम हो सकेगी कि त्यागी ही सच्चा स्नेही है, और सच्चा स्नेह हमें स्वार्पणके मार्ग पर ले जाता है। वह पत्र यहां देता हूं :

"रामचंद्रजी वनवास जाने लगे तब दशरथ राजाने अुनसे कहा कि कैकेयीको दिये हुअे वचनकी कोअी परवाह नहीं; वचन-भंग होने पर भी तुम वनमें न जाओ। लौकिक और स्थूल पुत्रप्रेमसे पैदा होनेवाली अिस अिच्छाका अनादर करके रामचंद्रजी वनमें गये और सच्ची पितृभक्ति करके अुन्होंने राजा दशरथका और अपना भी नाम अमर कर दिया। हरिश्चन्द्रने अपनी स्त्रीको बेचकर और रोहितके गले पर तलवार रखने तकको तैयार होकर स्त्रीभक्ति और पुत्रप्रेम प्रकट किया। प्रह्लादने पिताकी आज्ञाका अुल्लंघन करके पितृभक्ति की और अुनका अुद्धार किया। मीराबाअीने राणा कुंभाको छोड़कर राणा कुंभाको ही अपना भक्त बना लिया। दयानंदने अपने माता-पिताके पाससे भागकर, की हुअी सगाओको छोड़कर, अपने पीछे भेजे हुअे आदमियोंके हाथसे भी छूटकर मातृभक्ति और पितृभक्ति की। बुद्धदेव अपनी जवान स्त्रीको सोती हुअी छोड़कर चल दिये।

"अैसे बहुतसे अुदाहरण हमें मिलते हैं। अुनका चिन्तन करके तुम पर जो संकट आ पड़ा है अुसमें अन्तर्विचार करके सच्ची नीतिके अनुसार जो अुचित मालूम हो वही करना। श्रवणके लिअे सूक्ष्म और स्थूल भक्ति अेक ही प्रवाहकी थी, अिसलिअे हम अुसका अुदाहरण लेकर प्रायः यह नहीं देख पाते कि सही वस्तु क्या है। सत्य मार्ग पर चलनेवालेको संकटके समय हमेशा सत्यमार्ग सूझ जाता है। वैराग्यके पद वगैरा हम जो पढ़ते हैं, वे अगर धर्म-संकटके समय अुपयोगी सिद्ध न हों, तो यही माना जायगा कि हमने अुन्हें सिर्फ तोतेकी तरह रट लिया है। अुन पर विचार हमने बिलकुल नहीं किया। गीताजी पढ़कर भी यदि वह अंतसमय हमारी मदद न करे, तो गीताजीका पढ़ना न पढ़ना बराबर है। अिसीलिअे मैं हमेशा कहता रहा हूं : थोड़ा पढ़ो। परन्तु जो पढ़ो अुस पर विचार करो और अुसका रहस्य समझकर अुसके अनुसार आचरण करनेको तैयार रहो।

"स्नेहियोंके प्रति वीतराग स्थिति अुत्पन्न हो जाय, तभी हृदय सचमुच दयावान बनता है और स्नेहियोंकी सेवा करता है। बाके प्रति मैं जिस हद तक वीतराग बना हूं, अुसी हद तक अुसकी सेवा अधिक कर सकता हूं। बुद्धने अपने माता-पिताको छोड़कर अुनका भी अुद्धार कर दिया। गोपीचन्दने वैराग्य लेकर अपनी माता पर अत्यन्त शुद्ध प्रेम बताया। अिसी तरह तुम भी अपने चरित्रका निर्माण करके, अत्यंत निर्मल नीतिको दृढ़ बनाकर अपने माता-पिताकी सेवा करोगे। जब तुम्हारी आत्मा विशुद्ध होगी, तब अुसकी परछाीं तुम्हारे सब स्नेहियों पर पड़े बिना रह ही नहीं सकती।"

अूपरके प्रसंगोंके अनुसार गांधीजीने जो पत्र लिखे, अुनके अलावा अुनके बहुतसे पत्रोंमें ज्ञान और वैराग्यकी तरफ अुनका झुकाव दिखाअी देता है। नीचेके पत्र अुत्तम कोटिके हैं।

"आत्माके सिवा सब कुछ क्षणभंगुर है। यह विचार ही हर घड़ी करना काफी नहीं है, बल्कि अुससे संबंध रखनेवाले कार्यमें सदा लगे रहना चाहिये। ज्यों ज्यों मैं विचार करता हूं त्यों त्यों सत्य और ब्रह्मचर्यकी महिमाका विचार मनमें रमता जाता है। ब्रह्मचर्यका और अन्य सारी नीतिका समावेश सत्यमें हो जाता है। फिर भी मुझे यह लगा ही करता है कि ब्रह्मचर्यका अितना महत्त्व है कि वह सत्यके साथ बैठ सकता है। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि अिन दोनोंके द्वारा कोअी भी कठिनाअी दूर हो सकती है। सच्ची कठिनाअियां मनोविकारोंकी ही होती हैं। बाहरी सम्बन्धों पर सुखका जरा भी आधार न रखें, तो यह विचार करनेके बजाय कि लोग क्या कहते हैं हम यही विचार करेंगे कि हमें क्या करना चाहिये।"

* * *

"अीश्वर परमात्मा है। आत्मा अुसका मोक्ष है। अिस जन्ममें भी मोक्ष हो सकता है। अितनी बात पक्की हो जानेके बाद हमें अिस विषयमें संशोधन करते ही रहना होगा। जो होता है वह होता है अिसीलिअे ठीक है, या हमारे बड़ोंने किया अिसीलिअे अमुक काम ठीक है, अैसा मान लेनेके लिअे रत्तीभर भी कारण नहीं है। यह आत्माके विरुद्ध बात है। बहुतसी प्राचीन बातें अच्छी हैं। परन्तु जैसे आगके साथ धुआं रहता है, वैसे ही पुरानी अुत्तमताके साथ कुछ कनिष्ठता भी लगी रहती है। अुसे अलग करके सार निकाल लेनेमें ही हमारा ज्ञान है।"

* * *

"चि० मगनलाल,

"अपनी स्त्रीके साथके विषय-भोगमें संयम रखना महाकठिन काम है। अुससे अधिक कठिन काम थोड़े ही होंगे। तुम्हारा झुकाव अुस तरफ है, अिसलिअे तुम जरूर सफलता प्राप्त करोगे। कोशिश तो करते ही रहना और अैसी परिस्थितियां पैदा करना कि अुसमें सफलता मिले। अिस तरह सहज ही पार लग जाओगे। मेरे विचार अिस तरहके बननेके बाद प्रयत्न करते रहने पर भी रा...और दे...प्राप्त हुअे हैं। मेरी प्रारम्भिक असफलता परसे तुम्हें अपने भीतर साहस पैदा करना चाहिये। पुरुषको कवियोंने सिंहकी अुपमा दी है। चिन्तन करनेसे हम सबको अिंद्रिय-वनके राजा बननेका सामर्थ्य प्राप्त होगा।

बापूके आशीर्वाद"

गांधीजी सन् १९१४ के अप्रैलमें जब केपटाअुन गये थे तब पूज्य कस्तूरबा भी अुनके साथ थीं। वहां वे बीमार पड़ गयीं। बाकी बीमारीके समय गांधीजी अुनके पास हों तो वे ही अुनकी शुश्रूषा करते थे। अुस मौके पर गांधीजीने अपने पुत्र मणिलालको नीचेका पत्र लिखा था :

"तुम अपने अक्षर सुधारना। बाकी तबीयत अिस समय तो बहुत बिगड़ गअी है। वह और मैं दोनों यही मानते हैं कि डॉक्टरी दवाका असर अुस पर बहुत बुरा हुआ है। अुसीने यह अिच्छा बताअी थी कि डॉक्टरी अिलाज किया जाय। दो या तीन खुराक दवा लेनेके बाद बीमारीने अुग्र रूप ले लिया। अब बा कुछ खा नहीं सकती। कल थोड़े अंगूर लिये थे, लेकिन वे भी अनुकूल आते जान नहीं पड़ते। अन्तमें मृत्यु भी आ जाय तो भी हमने तो मृत्युसे न डरनेका निश्चय कर लिया है। अिसलिअे चिन्ताकी कोअी बात नहीं है। शरीर किसी दिन तो गिरने ही वाला है। वह गिरनेका जो दिन तय हो चुका है अुसी दिन गिरता है। अुसीके अनुसार हमें अिलाज सूझते हैं। अिसके सिवा आत्मा तो अमर है। यद्यपि सम्बन्ध हम शरीरका ही रखते मालूम होते हैं, फिर भी सच्चा सम्बन्ध तो आत्माका ही होना चाहिये। यह निश्चित है कि शरीरमें से जीवके निकल जानेके बाद हम घड़ीभर भी अुसकी संभाल नहीं करते। अैसा समझकर बाके शरीरके बारेमें अुचित अुपाय करनेके बाद मैं तो निश्चिंत रहता हूं, और चाहता हूं कि तुम सब भी निश्चिंत रहो। अब शरीरकी अैसी स्थितिको

समझ लेनेके बाद हमें साधुता और अुदासीनता अपनानी चाहिये। साधुताका अर्थ स्थूल वैराग्य या जगतमें भटकना नहीं है; यहां अुसका अर्थ शुद्ध चरित्रसे सम्बन्ध रखता है। अुदासीनताका अर्थ अप्रसन्नता नहीं, परन्तु विषयोंसे अरुचि और संसारके विषयमें अमोह है! बाकी बीमारीमें तुम सब यह बात सीखो तो वह बाके प्रति तुम्हारा सच्चा भक्तिभाव माना जायगा।

बापूके आशीर्वाद"

फिनिक्समें हमसे थोड़ी दूर नेपाल नामका अेक किसान रहता था। वह शुरूमें गिरमिटमें आया था। अुसकी पत्नी भी गिरमिटमें आअी थी। दोनोंकी मुलाकात तो डरबनके बन्दरगाह पर अुतरनेके बाद ही हुअी थी। अिमिग्रेशन-अफसरने अुन दोनोंका विवाह कराया था। वह स्त्री अपने पतिके साथ रहती तो जरूर थी, परन्तु नेपाल अुससे नीची जातिका था। अिसलिअे वह अुसके प्रति बार-बार तिरस्कार दिखाती और कठोरताका बरताव करती थी। अेक दिन शामको अुसकी झोंपड़ीमें अेकाअेक आग लग गअी। नेपाल अितना बीमार था कि अुठ भी नहीं सकता था। हम आगकी लपटें देखकर वहां दौड़ गये। परन्तु वहां पहुंचनेसे पहले झोंपड़ी जलकर खाक हो गअी थी। बेचारा नेपाल अपनी खाटमें पड़ा पड़ा ही जल मरा। अुसकी पत्नी दूर बैठी रोती रही। गांधीजी अुस समय केपटाअुनमें थे। अिस घटनाका करुण वर्णन मैंने गांधीजीको अेक पत्रमें लिखा था। अुसके जवाबमें अुन्होंने नीचे लिखा पत्र भेजा था:

"भाअीश्री रावजीभाअी,

"तुम्हारा पत्र मिला। नेपाल तो छूट ही गया। अुसकी पत्नी अनुभवसे कठोर हृदयकी मालूम हुअी है। मौतसे हमें अपना कर्तव्य सोचना है और शरीरके विषयमें लगभग तिरस्कार पैदा करना है। परन्तु मृत्युसे डरनेकी जरूरत नहीं। मालूम होता है मनुष्य जलकर मरता है, तब भी बहुत दुःख नहीं अुठाता। ज्यादा दुःख होने पर मूर्छित हो जाता है। शरीरसे अधिक चिपटनेवाला अधिक दुःख पाता है। आत्मतत्त्वको जाननेवाला मनुष्य मृत्युसे नहीं घबराता। नेपालकी तरह हजारों मनुष्य, हजारों जीव आजकल हर क्षण जल मरते हैं। ब्रह्मांडमें नेपाल चींटीसे भी सूक्ष्म जन्तु है। हम स्वयं जाने-अनजाने आग सुलगानेमें, रातको लालटेनका अुपयोग करनेमें, नेपालसे मात्रामें

बड़े कितने ही जीवोंको जला डालते होंगे। ब्रह्माके समान किसी महाजीवकी कल्पना करो! अुसके खयालमें तो हम चींटीसे भी छोटे होंगे। अुसकी आंखकी परिधि ही अितनी बड़ी होगी कि हम अुसे पिस्सूके बराबर मालूम होंगे। अुसने नेपालको जला दिया हो तो क्या पता? और अुसने यह भी माना होगा कि अुसके महाजीवके सुखके खातिर नेपाल जैसे जन्तुओंको जीते-जी जला डालना चाहिये। हमारे खयालसे तो नेपाल हमारे जैसा ही जन्तु है, अिसलिअे हमारा भी यही हाल होगा अिस डरसे हमें अुस पर दया आती है। परन्तु जो दलील हम चींटी, खटमल, पिस्सू और दूसरे असंख्य जन्तुओंके बारेमें, जिन्हें हम अपनी चमड़ेकी आंखोंसे नहीं देख सकते, बुद्धिमत्तापूर्वक देते हैं, वही दलील अधिक बुद्धिमान ब्रह्मा हमारे लिअे काममें लेता होगा। यह बात यदि समझमें आ जाय, तो नेपाल आदिके किस्सोंसे हम अितनी बातें सीख सकते हैं:

"१. स्वयं अपने अूपर दया करके हम सब जीवोंको समान मानें, अुन पर दया करें तथा अपने किसी भी सुखके लिअे जीवहानि करते हुअे चौंके।

"२. देहके बारेमें मोह न रख कर मृत्युसे जरा भी न डरें।

"३. यह समझकर कि शरीर बड़ा धोखेबाज है, अिसी क्षण मोक्षकी सामग्री तैयार करें।

"ये तीनों सूत्र कह देना आसान है, परन्तु अुन पर विचार करना कठिन है; और विचार करनेके बाद अुसके अनुसार आचरण करना तो खांडेकी धार पर चलनेके समान है।

"अिस समय प्रातःकाल है। विचारका प्रवाह अिसी दिशामें बह रहा है। क्योंकि बा फिर पीड़ा भोग रही है और अुसे मृत्युके डरसे मुक्त करनेका मैं प्रयत्न कर रहा हूं।

मोहनदासके यथायोग्य"

१४
अिच्छाबलका प्रभाव

अिस तरह गांधीजीने अपनी आत्मशुद्धि करनेकी कोशिश की। जैसे जैसे वे शुद्ध होते गये वैसे वैसे अधिकाधिक प्रवृत्तिमय बनते गये। कुदरत भगवानकी संपूर्ण कृति है। अुसकी शरणमें जानेवाला मनुष्य अुसे अपनी मानता है। वह कुदरतके किसी भी रूपको देख कर आनन्दित होता है। जल-प्रलय करनेके लिअे अुमड़नेवाले बादलों, अुनकी भयंकर गड़गड़ाहट और बिजलीकी हृदय-विदारक कड़कड़ाहटमें अुसे डरकी कोअी बात नहीं लगती। अुसे वह रमणीय लगती है। पृथ्वीको बहाकर दूर फेंक देनेवाली महासागरकी प्रचंड लहरों पर प्रभुको छोटेसे बालकके रूपमें नृत्य करते देखकर योगी पुरुष अुनके दर्शनसे अत्यन्त आनन्दित होता है। भयानक जहरीला सांप या विकराल वनराज अुसके सामने आकर खड़ा हो जाय, तो अुसे भी वह अपने जैसा कुदरतका बालक समझकर अुससे भयभीत नहीं होता; परन्तु अुसे आप्तजन मानकर स्नेहसे अुसका स्वागत करता है। हम अैसे व्यवहारको चमत्कार कहते हैं। सच पूछा जाय तो संसारमें चमत्कार जैसी कोअी चीज ही नहीं है। कोअी मनुष्य यह कहे कि मैं चमत्कार दिखा सकता हूं, तो यही मानना चाहिये कि वह कोअी ढोंगी या धूर्त है। जो कुदरतके स्वरूपमें मिलकर अेक नहीं हो सकते, जो कुदरतका साक्षात्कार नहीं कर सकते, अुन्हें अपनी शक्तिसे अधिक जो विशेषता मालूम होती हैं अुसे वे चमत्कार कहते हैं। सोलहवीं-सत्रहवीं सदीमें देखनेवालेको बिजली या हवाअी जहाज चमत्कार लगा होता। अब हम जानते हैं कि वह चमत्कार नहीं है, परन्तु प्रकृतिका व्यावहारिक अुपयोग है। जब मानव अपनी स्थूलताका आत्यंतिक सूक्ष्मतामें लोप कर डालता है, तब वह भयंकर या रमणीय दिखाअी देनेवाले कुदरतके किसी अवयवका रूप ले लेता है। अुसकी दृष्टिमें काल या अकाल, जीवन या मृत्यु, भयंकरता या रमणीयता सब अपनी संतानके समान प्रिय हैं। प्रकृतिमय बन जानेवाले संत पुरुषके लिअे प्रकृतिका द्रोह करनेकी बात नहीं रहती और प्रकृतिको अुसका द्रोह करनेकी बात नहीं रहती। फिर तो अुसके व्यवहारकी जिम्मेदारी कुदरत पर होती है और अुसके वचन और आचरणको सिद्ध करनेका कर्तव्य कुदरतके सिर पर होता है।

गांधीजी ज्यों ज्यों आत्मशुद्धिमें आगे बढ़ते गये, त्यों त्यों अुनके हृदयकी निर्भयता और विशालता बढ़ती गअी। अिसे कुछ लोग चमत्कार भी कहेंगे। जो भी कहना हो कहें। अैसी अेकाध घटना यहां बताकर अुस समयके गांधीजीके जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाले अिस प्रकरणको मैं पूरा करूंगा।

अिस शांतिके समयमें, यानी सन् १९१२–१३ में, रंगूनसे भाअी कोतवाल वहां आये। अुनका पूरा नाम पुरुषोत्तम केशव कोतवाल था। गांधीजीके मित्र डॉक्टर प्राणजीवनदास मेहताने अुन्हें दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका सच्चा हाल जानने और गांधीजीके जीवनके बारेमें थोड़ा निजी अनुभव प्राप्त करनेकी गरजसे भेजा था। भाअी कोतवाल फिनिक्स आश्रममें दाखिल हुअे, तभीसे अुनकी दृढ़ता और निडरताकी छाप सब पर और गांधीजी पर भी अच्छी पड़ी। भाअी कोतवाल वहां दो तीन महीने रहे, परन्तु अुन्होंने अपनी हिन्दुस्तानी पोशाक नहीं छोड़ी। वे विद्याके अुपासक और युनिवर्सिटीके ग्रेज्युअेट होकर भी खूब सादे, सरल और मिलनसार थे। फिनिक्सके निवास-कालमें अुन्होंने गांधीजीको भी अपनी ओर आकर्षित किया था।

दो तीन मास रहनेके बाद वे हिन्दुस्तान लौटनेकी तैयारी करने लगे। जिस दिन डरबनसे जहाजमें बैठना था अुससे दो रोज पहले वे फिनिक्ससे चले गये। जाते जाते अुन्होंने गांधीजीसे कहा कि सोमवारको जहाज रवाना होगा, अिसलिअे रविवारको दोहपरके ढाअी बजेकी गाड़ीसे वापस आअूंगा और सोमवारको सुबहकी गाड़ीसे डरबन जाकर जहाज पकड़ लूंगा। रविवारके दिन सुबह डरबनके हिन्दू-मंडलने भाअी कोतवालके सम्मानमें समारोह किया और मंडलकी तरफसे अेक सोनेकी घड़ी अुनको भेंट की। समारोह पूरा होने पर वे भोजन करके स्टेशनके लिअे रवाना हुअे। अुस समय बरसात शुरू हो गअी। मूसलधार पानी बरसने लगा। गाड़ी फिनिक्स स्टेशन पर आअी। भाअी कोतवाल गाड़ीसे अुतरे। तीन घंटे तक खूब पानी गिरा। और वहांकी पहाड़ी जमीनमें पड़ा हुआ पानी जोरसे बहने लगा। फिनिक्स स्टेशन पर अुतरकर आश्रमकी तरफ अुन्होंने नजर डाली तो पानी ही पानी दिखलाअी दिया। स्टेशन-मास्टरने कहा कि बरसात हलकी पड़ जाय और पानी बह जाय तब तक रुक जाअिये। अुन्होंने यह भी कहा कि बरसात न रुकी तो मैं यहां ठहरनेका आपका अिन्तजाम कर दूंगा। भाअी कोतवालने स्टेशन-मास्टरका आभार माना और सोचा कि अिस तरह कैसे रुक सकता हूं? लगभग तीन बज गये। बरसात बन्द न हो और अिस तरह शाम हो जाय, तो

आश्रममें कैसे जाअूंगा; कुछ भी खतरा अुठा कर आश्रम तो जाना ही चाहिये, यह सोचकर अुन्होंने धोतीका कच्छ बनाया। सिरसे अूंची लाठीके सिरे पर अपनी पोटली बांधी और आश्रमकी ओर चल दिये। स्टेशनसे अेक दो फर्लांग पर अेक छोटासा झरना था। पथरीली जमीन थी, अिसलिअे पड़ते ही पानी जोरसे बहने लगता और नालेमें खूब पूर आ जाता। नालेके बाहर भी सपाट जमीन पर घुटनों तक पानी बहता था। परन्तु नालेमें पानी कितना गहरा होगा, अिसका अन्दाज न होने पर भी वे चलते ही रहे। नालेमें अुतरते ही अचानक अुनका पैर गहराअीमें फिसल गया। चारों कोने चित्त हो गये। हाथमें से लकड़ी छूट गअी। पोटली भी अलग जा गिरी। नालेका बहाव अितना तेज था कि भाअी कोतवाल संभलकर तैरनेकी कोशिश करें अिससे पहले ही प्रवाहमें बहने लगे। बहते बहते कंटीले पेड़की डालियां सारे शरीरको लगीं और खरोंचें पड़कर शरीरसे खून बहने लगा। दोनों जांघों पर गहरे घाव हो गये। वे बहकर अेक दो फर्लांग दूर गये होंगे कि अेक कंटीले वृक्षमें, जो गिर गया था, फंस गये। पेड़की डाली पकड़कर वे अुसके अूपर चढ़ गये। अच्छी तरह होश आने पर देखा तो मालूम हुआ कि जिस पेड़ पर वे चढ़े हैं वह नालेके अिस पारका है। फिनिक्स आश्रममें जानेके लिअे प्रचंड वेगसे बहनेवाले अुस नालेको तो अुन्हें पार करना ही पड़ेगा। अब क्या करते? खतरा तो था ही। परन्तु अुनका यह दृढ़ संकल्प था कि अभी आश्रममें जाकर बापूजीसे मिलूं और कल देश जानेसे पहले आजकी रात बापूजीके साथ बिताअूं। यह पेड़ हाथमें न आया होता तो आधे घंटेमें भाअी कोतवाल हिंद महासागरकी लहरोंमें रमते होते। परन्तु राम जिसका रक्षक है, अुसे कौन मार सकता है? अुन्होंने अपना लंबा कुर्ता और गरम बंडी अुतारकर पेड़की अेक डाली पर रख दी। पैरोंकी चप्पलें भी वहीं रख दीं। लम्बी धोतीको फाड़कर कच्छ बनाया और रामका नाम लेकर बहते हुअे नालेमें कूद पड़े। सीधे तो तैर ही नहीं सकते थे। टेढ़े टेढ़े तैरते हुअे पचास फुट चौड़े नालेको पार करनेके लिअे अुन्हें दो फर्लांग तैरना पड़ा। आखिर दूसरे किनारे पर पहुंच कर घुटने और कमर तकके पानीको चीरते हुअे आश्रममें पहुंचे!

अुस समय विद्यार्थी और दूसरे साथी भारी बरसातके कारण मकानमें ही बैठे मूंगफलियां छील रहे थे। गांधीजी पासके ही खंडमें फुटकर

काम कर रहे थे। पांच बजेका अन्दाज होगा। बरसातके बावजूद अधिकसे अधिक चार बजे तक भाअी कोतवालको आ जाना चाहिये था। अिसलिअे अुनकी बाट देख रहे थे। मैंने जल्दीमें पूछा: "बापूजी, भाअी कोतवाल अभी तक नहीं आये। क्या कारण होगा? अधिकसे अधिक चार बजे तक तो अुन्हें आ ही जाना चाहिये था। अिसके बजाय पांच बज गये। क्या बरसातके कारण अुन्होंने आनेका विचार छोड़ दिया होगा?" गांधीजी यह सुनकर हमारे पास आये। "कितनी ही वर्षा हो, भाअी कोतवाल आये बिना नहीं रह सकते। मरनेका खतरा अुठाकर भी वे आयेंगे।" गांधीजी यह वाक्य कहकर वहीं खड़े रहे। अेक-दो मिनट ही हुअे होंगे कि भाअी कोतवाल दरवाजेमें घुसे। शरीर पर हाथभरकी लंगोट, सारे बदन पर खरोंचें, जांघोंके दोनों घावों पर जमा हुआ खून और ठंडसे कांपते शरीरसे पास आकर भाअी कोतवालने गांधीजीके चरणोंमें प्रणाम किया। गांधीजी अुन्हें अैसे वेशमें देखकर खिलखिला पड़े। भाअी कोतवालकी पीठ पर अेक धप जमाकर अुन्होंने पूछा: "ये क्या हाल हैं तुम्हारे?"

भाअी कोतवाल बोले: "मैं तो मरता मरता आया हूं। मेरी तीव्र अिच्छा थी कि कोअी भी खतरा अुठाकर आज आपके दर्शन करने ही चाहिये। और मरते मरते भी प्रभुने मेरी यह अिच्छा पूरी कर दी!"

१५

गांधीजीके सहोदर अिमामसाहब

दक्षिण अफ्रीकाकी भारतीय प्रजाके अितिहासमें स्वर्गीय अिमामसाहब अब्दुल कादर बावाजीर अेक बिरले ही व्यक्ति थे। अिमामसाहब शुद्ध अरब वंशकी संतान थे। अुनके वंशके मूल पुरुष पैगम्बर साहबके गाढ़ सान्निध्यमें रहनेवाले अुनके प्रियसे प्रिय शिष्योंमें से अेक थे। पैगम्बर साहबने जब अजान देनेकी नयी पद्धति अख्तियार की, तब अुन्होंने यह काम अिन मूल पुरुषको सौंपा। जिस पुरुषको पैगम्बर साहबने अैसे पवित्र कार्यका आरम्भ करनेकी जिम्मेदारी सौंपी, वह पुरुष कितना धार्मिक और पैगम्बर साहबका कितना विश्वासपात्र होगा, यह समझा जा सकता है। मदीनेकी जुम्मा मसजिद पर चढ़कर अजान देनेवालेकी आवाज भी कितनी बुलन्द होनी चाहिये? और पवित्र अजान

देनेमें अकेली बुलन्द आवाजसे ही काम नहीं चल सकता था। अुसमें अजानके प्रत्येक शब्दके अुच्चारणकी शुद्धता, भक्तिभाव और हृदयकी गहराअीसे निकलनेवाला नाद होना चाहिये। खुदाके प्रति तीव्र अनुराग और अिस संसारके प्रति तीव्र विराग अुस नादमें प्रगट होना चाहिये। यह आसानीसे समझमें आ सकता है कि अैसे बिरले पुरुषको ही पैगम्बर साहब अितना पवित्र और जरूरी काम सौंप सकते थे। स्वर्गीय अिमामसाहब अैसे बिरले पुरुषके वंशज थे। अुन मूल पुरुषका अुत्तराधिकार अुनके पुत्रोंको मिला। स्व० अिमामसाहबके पिताको भी बम्बअीकी जुम्मा मसजिदके अिमामका प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था। हमारे अिमामसाहब कुछ मित्रोंके साथ दक्षिण अफ्रीका जा पहुंचे। वे बड़े धर्मवृत्तिवाले और अुदार थे। जोहानिसबर्गमें रहे तो वहां भी मसजिदमें नमाजके समय अिमामका काम वे ही करते थे। परन्तु मसजिदके अिमामके कामके बदलेमें वे कुछ लेते न थे। अपना निर्वाह वे किरायेकी घोड़ागाड़ियां रखकर करते थे। अिस धन्धेसे अुन्हें हर महीने तीस पौंडकी आमदनी होती थी। अुन्होंने अेक मलायी स्त्रीसे शादी की थी। अुन्हें यूरोपियन ढंगसे रहनेकी आदत थी और स्वभावके वे अुदार थे, अिसलिअे अुनका खर्च भी बहुत ज्यादा था।

अुनके जोहानिसबर्गके निवास-कालमें गांधीजीसे अुनका परिचय हुआ। कभी कभी कुछ मुवक्किलोंके साथ भी वे गांधीजीके पास जाते थे। अुनकी बुद्धि बहुत तीव्र थी, अिसलिअे दूसरेकी बात वे तुरंत समझ जाते थे। साथ ही अपनी बात भी दूसरेको अच्छी तरहसे समझा सकते थे। अिसलिअे कुछ मुवक्किल वकीलोंके सामने अपनी बात प्रभावशाली ढंगसे रखनेके लिअे अुन्हें अपने साथ ले जाया करते थे। अिन प्रसंगोंसे गांधीजीके साथ अुनका परिचय बढ़ा। गांधीजीके गाढ़ परिचयमें आनेसे वे भी दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी राजनीतिक प्रवृत्तिमें दिलचस्पी लेने लगे। जब हिन्दुस्तानियोंने ट्रान्सवाल सरकारके अन्यायी कानूनके खिलाफ सत्याग्रह शुरू किया, तब वे भी अुसमें शामिल हुअे। अुनका मौजी जीवन देखकर बहुतोंने अुन्हें लड़ाअीमें शरीक होनेसे रोकनेकी कोशिश की। परन्तु वे तो निश्चय करके सत्याग्रहकी लड़ाअीमें कूद पड़े और सरकारके मेहमान बन गये।

फिर तो अमृतका स्वाद जो चखा सो चखा! अिमामसाहबने अपना सारा जीवन ही बदल डाला। सत्याग्रहकी आखिरी लड़ाअीके बाद वे कुटुम्बके

साथ फिनिक्स संस्थामें आकर बस गये। अुन्होंने आश्रम-जीवनकी कड़ी तालीमको अपना लिया। अपनी पत्नी और दो लड़कियोंके साथ वे फिनिक्सका सादा जीवन बिताने लगे। लगभग डेढ़ सालके लम्बे अर्से तक मैं अुनके गाढ़ सम्पर्कमें रहा। अहिंसा, सत्य, सच्चे धर्म पर संसारमें आचरण और संयम तथा व्रत-सम्बन्धी रसिक चर्चाओंमें वे बहुत दिलचस्पी लेते थे। हर रोज प्रार्थनाके समय वे जरूर हाजिर रहते। "वैष्णवजन तो तेने कहीअे जे पीड पराअी जाणे रे!" यह भक्त-शिरोमणि नरसिंह मेहताका भजन 'वैष्णव-जन' के स्थान पर 'मुस्लिम-जन' रखकर वे बहुत ही श्रद्धापूर्वक गाते थे। अिसी तरह कअी बार पवित्र कुरानशरीफमें से पैगम्बर साहबके पवित्र वचन हमें सुनाते थे। रोज तड़के ही अुनकी अजानकी बुलन्द आवाजके अिन्तजारमें हम बिछौनेमें पड़े रहते और अिमामसाहबकी नियमित अजान ही हमसे बिछौना छुड़वाती थी। अुनके जीवनमें हृदयकी सच्चाअी, आनन्दी स्वभाव, स्वधर्मके प्रति अटल श्रद्धा होते हुअे भी दूसरे धर्मोंके प्रति सम-भाव और तीव्र देशभक्ति — अिन सबका समन्वय था। वे बार बार अिस सूत्रको दोहराते थे कि सच्चा हिन्दू सच्चा मुसलमान है और सच्चा मुसलमान सच्चा हिन्दू है। और जब हिन्दू-मुसलमानोंके कौमी झगड़ोंकी बात वे सुनते तब अुन्हें बड़ा दुःख होता था। फिनिक्स आश्रममें अन्य सब निवासियोंकी तरह वे भी हर काममें बिना संकोच लगे रहते थे। गांधीजीके प्रति अपने प्रेममें वे किसीसे भी कम नहीं थे। अिस मौके पर मुझे अेक सुंदर प्रसंग याद आता है।

सन् १९१४ के अगस्त महीनेके दिन थे। गांधीजी हिन्दुस्तान आनेको तैयार हुअे, परन्तु श्री गोखले अुस समय अिंग्लैंडमें थे। अुनकी यह अिच्छा थी कि गांधीजी देश जायें अुससे पहले अिंग्लैंडमें अुनसे मिलते जायें। जिस दिन फिनिक्ससे अुनको बिदा दी गअी वह दिन अलौकिक था। प्रियजनोंसे बिछुड़नेके अिस प्रसंगका वर्णन नहीं किया जा सकता। घरके मुख्य खंडमें हम सब अिकट्ठे हुअे। प्रेमाश्रुओंके साथ सबने प्रार्थना की। प्रार्थनाके बाद सबने अेक अेक करके गांधीजीके चरणोंमें प्रणाम किया। अुन्होंने किसीको मीठी चपत लगाअी, किसीको मधुर घूसा जमाया, किसीकी पीठ प्रेमसे थपथपायी और प्रत्येकको कुछ न कुछ कहकर स्नेहरसमें भिगो दिया। श्री अिमामसाहबकी बारी आअी। गांधीजीने अिमामसाहबको बाहु-

पाशमें जकड़ लिया और छातीसे लगाकर खूब दबाया। अुनके सामने देखकर आंखसे आंख मिला कर गद्‌गद भावसे गांधीजी बोले: "मेरी मांने दोको जन्म दिया। अेक मैं और अेक तुम। हम दोनों सहोदर भाअी हैं।"

अिमामसाहबकी आंखोंमें से टपटप हर्षाश्रु बरसने लगे। सचमुच गांधीजीकी माताने दोको जन्म दिया: अेक हिन्दू, दूसरा मुसलमान; दोनों सहोदर भाअी हैं। अिस बिरले प्रसंग पर हम सबकी आंखोंसे प्रेमाश्रुओंकी धारा बहने लगी। फिरसे कब और कहां बापूजीके दर्शन होंगे, अिसी विचारमें हम अलग हुअे और अपने प्रिय बापूको हमने बिदा किया।

अिस प्रसंगके बाद गांधीजीकी गैरमौजूदगीमें भी अिमामसाहब वहीं रहे और प्रेसका सौंपा हुआ काम करते रहे। साबरमती आश्रम तैयार हो जानेके बाद गांधीजीने अुन्हें यहां बुलवा लिया। हिन्दुस्तानमें आनेके बाद वे अन्त तक साबरमती आश्रममें ही रहे। पिछली नमक-सत्याग्रहकी लड़ाअीमें धरासनाके अैतिहासिक प्रसंग पर अुन्होंने बड़ी हिम्मत और निडरता दिखाअी थी। श्री अब्बाससाहबके पकड़े जानेके बाद धरासना कैम्पका चार्ज श्री अिमामसाहबने संभाला था। स्वयंसेवक नमकके आगर पर धावा बोलें अिससे पहले अुन्होंने सबके साथ प्रार्थना करके जो पवित्र और भक्तिभावपूर्ण वातावरण पैदा किया था, अुससे स्वयंसेवकोंके अुत्साहमें अनोखी वृद्धि हुअी थी। जो लोग अुस समय वहां मौजूद थे वे आज भी अुस चित्रका स्मरण करके स्वर्गीय अिमामसाहबकी देशभक्ति, हिम्मत, निडरता और सत्याग्रहमें पूर्ण श्रद्धाकी मुक्तकंठसे प्रशंसा करते हैं।

१६

गांधीजी और धर्मकथाअें

धर्मके सम्बन्धमें गांधीजीके विचार सब कोअी जानते हैं। अुनकी दृष्टिसे सब धर्म समान हैं। अिसका अर्थ यह नहीं है कि अुन्हें हिन्दू धर्म छोड़कर दूसरा धर्म स्वीकार कर लेना पसन्द है। अैसा करनेमें प्रत्येक धर्मके प्रति समानताकी भावना कहां रही? अुनका कहना यह है कि सच्चा हिन्दू सच्चा मुसलमान या सच्चा अीसाअी है। अिसी तरह सच्चा मुसलमान या अीसाअी सच्चा हिन्दू है। धर्मोंमें सत्यका जो सर्व-सामान्य तत्त्व है, वह

सबके लिअे कल्याणकारी है; अुसमें कोअी भेद नहीं होता। भेद तो धर्मकी चारदीवारियोंसे पैदा हुआ है। सब धर्म जनकल्याणके लिअे हैं। सब धर्मोंके संतपुरुष वंदनीय हैं और अुन्होंने तत्त्वतः अेकसा ही अुपदेश दिया है। सब धर्मोंकी पौराणिक कथाओंका सच्चा अर्थ अगर समझ लिया जाय तो वे सब बोधप्रद हैं। गांधीजीने हिन्दू धर्मकी पौराणिक कथाओं और साथ ही दूसरे धर्मोंकी कथाओंको अपने जीवनमें किस तरह अुतारा है, यह नीचेके पत्र पढ़नेसे मालूम होगा। हिन्दू धर्ममें जीवनके व्रत पालनेकी कितनी महिमा गाअी गअी है, यह भी अिन पत्रोंसे जान पड़ेगा।

अुन्होंने अपने बड़े भाअीको कुटुम्बके विचार और व्यवहारके बारेमें यह पत्र लिखा था :

"गो... चला गया तो भले गया। सम्बन्धके कारण स्वाभाविक रूपमें यह लिखते हुअे भी मुझे रोना आ रहा है। परन्तु मेरे मनके विचार, जिनका मैं बहुत समयसे सेवन करता रहा हूं, अब बहुत प्रबल हो गये हैं। मैं देख रहा हूं कि हम सब बड़ी जंजालमें फंस गये हैं। यह हालत जैसी परिवारकी है वैसी ही मैं देशकी भी देखता हूं। बहुतसे विचारोंमें से अभी जो मेरे मनमें मुख्य हैं अुन्हींको यहां रखता हूं। झूठी शरम या झूठे मोहसे हम बच्चोंको जल्दी ब्याह देनेका विचार करते हैं। अिस झंझटमें सैकड़ों रुपये गंवाते हैं और फिर विधवाओंके मुंह देखा करते हैं। शादी करें ही नहीं यह तो मैं कैसे कहूं? परन्तु कोअी हद तो बांधें? बच्चोंकी शादी करके हम अुन्हें दुखी करते हैं। वे संतान पैदा करके मुसीबतमें पड़ जाते हैं। हमारे नियत-धर्मके अनुसार स्त्रीसंग तो सन्तानकी अुत्पत्तिके लिअे ही होता है। अन्य हेतुसे किया गया स्त्रीसंग केवल विषय-वासना है। अैसा हम कुछ भी करते नहीं दीखते। अगर यह बात सही हो तो हम बच्चोंका विवाह करके अुन्हें अपनी तरह विषयी बनाते हैं। अिस प्रकार विषय-वृक्ष बढ़ता ही रहता है। मैं तो अिसे धर्म नहीं कहता। जो मेरे जीमें आ रहा है वही छोटा भाअी होने पर भी आपके जरिये मैं सारे कुटुम्बके सामने रख रहा हूं। मेरी कुटुम्ब-सेवा तो यही है। अिसमें अपराध होता हो तो क्षमा करें। चौदह वर्षके अध्ययन और सात वर्षके व्यवहारके बाद ये विचार समय देखकर आपके सामने मैं रख रहा हूं।"

नीचेके पत्र यह बताते हैं कि गांधीजी धर्मकथाओंका हमारे जीवनके साथ किस तरह मेल बैठाते हैं :

"प्लेगके बारेमें तुमने मुझे अच्छे सवाल पूछे हैं। राजकोटमें चूहे मरते ही मैंने सबको घर या गांव बदल देनेकी सलाह दी। मेरे ये विचार अुस समय (सं० १९५८) के थे। अब मालूम होता है कि अुनमें भूल थी। मेरे ये विचार अब बहुत बदल गये हैं। हेतु सदा अेक ही था — सत्यकी खोज। अब मैं देखता हूं कि अिस तरह घर बदलना आत्माके गुणोंका अज्ञान प्रकट करना है। अिसका अर्थ यह नहीं कि किसी भी समय और कुछ भी हो जाय तो भी घर न बदला जाय। घर जल रहा हो तो खाली करेंगे ही। घरमें सांप, बिच्छू अितने निकलें कि अुसमें रहना तत्काल मौतको बुलाना हो, तो वैसी हालतमें भी घर बदला जाना चाहिये। हां, मेरा कहना यह नहीं है कि अैसा करनेमें भी दोष नहीं है। जिसने आत्माको पूरी तरह पहचान लिया है, अनुभव कर लिया है, अुसके लिअे तो छप्पर आकाशका ही हो सकता है। वह जंगलमें रहनेवाले सांप-बिच्छुओंको मित्रके समान मानता है। अिस स्थितिको न भोगनेवाले हम लोग सरदी-गरमीसे डर कर घरोंमें रहते हैं, अिसीलिअे वहां डर पैदा होने पर घर छोड़ भी देते हैं। फिर भी मनमें यह आशा रखें कि हमें जल्दी ही आत्माके दर्शन होंगे। कमसे कम मुझे तो अैसा ही मालूम होता है। प्लेगके समय मो... चले गये और अपने पटेलको घर संभालनेको रख गये। अैसा करना अनुचित है। अगर मकान जल रहा होता तब तो पटेल भी चला जाता। अिस अुदाहरण परसे तुम भेद समझ सकते हो।

"प्लेग वगैराके भयको मैं मामूली भय मानता हूं। मुसलमान घर नहीं छोड़ते, परन्तु अीश्वर पर भरोसा रखकर पड़े रहते हैं। अगर अुसके साथ ही वे जरूरी अुपाय भी करें तो और अच्छा हो। जब तक हम भागदौड़ करते हैं, तब तक प्लेगके जानेकी कम ही संभावना रहती है। जिस जिस गांवमें प्लेग हो वहींसे हम अुसका कारण न ढूंढ़कर भाग निकलें, तो यह हमारी दीनता है। अिस जवाबसे मुझे ही सन्तोष नहीं होता तब तुम्हें तो होगा ही कैसे? तुम और मैं कभी मिल जायं और अनायास प्रश्न पूछे जायं, तभी तुम जान सकते हो कि मेरे मनमें क्या बसा हुआ है। मैं अपनी बात पूरी तरह नहीं समझा सकता, अिसके दो कारण हैं। अभी मैं अैसे कामोंमें लगा हुआ हूं कि मुझे सोचकर लिखनेकी फुरसत नहीं है। और दूसरा कारण यह है कि मेरे कहने और करनेमें फर्क है। अगर मैं चाहता हूं

अुतनी अेकता मेरे कहने और करनेमें हो, तो अैसे शब्द हाथ लग जायं जिनसे तुम्हें तुरन्त अपनी बात मैं समझा सकूं। प्लेगके डरसे जब बड़े-बूढ़े तुम्हें घर या गांव छोड़नेको कहें, तब तुम्हारा छोड़ना ही ठीक है। जहां नीतियुक्त जीवनको धक्का न पहुंचे वहां बड़ोंकी आज्ञा पर चलना हमारा धर्म है। अुसीमें हमारा कल्याण है। तुम मौतके डरसे नहीं, परन्तु माता-पिताको खुश करनेके लिअे प्लेगवाला घर छोड़ो, तो यह काम बिलकुल निर्दोष है। यह समय कुछ जगहोंमें और कुछ लोगोंके लिअे अैसा मुश्किल हो गया है कि बड़ोंकी आज्ञा पालनेके बारेमें विचार करना पड़ता है। मुझे तो अैसा लगता है कि माता-पिताका प्रेम अितना गूढ़ है कि बहुत सबल कारणोंके बिना अुनका जी नहीं दुखाया जा सकता। परन्तु दूसरे बड़ोंके बारेमें मन अितना स्वीकार नहीं करता। जहां हमें नीतिके सवालोंमें कुछ भी संशय हो, वहां भी कम दरजेके बुजुर्गोंकी आज्ञाका अुल्लंघन हो सकता है — अुल्लंघन करना ही फर्ज हो सकता है। परन्तु जहां नीतिको हानि पहुंचनेकी जरा भी शंका हो, वहां माता-पिताकी आज्ञाका अुल्लंघन हो सकता है — अुल्लंघन करना ही फर्ज है। अगर मेरे पिता मुझे चोरी करनेको कहें तो मुझे नहीं करनी चाहिये। मेरा विचार ब्रह्मचर्य पालनेका हो और अुसमें माता-पिता दूसरी ही आज्ञा दें, तो मुझे अुनकी आज्ञाका विनयपूर्वक अुल्लंघन करना चाहिये। म...और रा...की सगाअी जब तक वे होशियार न हो जायं तब तक हरगिज न की जाय, अिसे मैं धर्म समझता हूं। माता-पिता जीते होते और अुनका विचार अिससे अुलटा होता, तो भी मैं विनयपूर्वक अुनका विरोध करता और मैं यह भी मानता हूं कि वे मेरी बात मान लेते।

"अितना काफी है। और शंकाअें हों तो पूछना चाहिये। यह जानकर कि तुम्हारी सद्वृत्ति अैसी है कि तुम मेरी बातका अनर्थ नहीं करोगे, मैंने तुम्हें यह सब लिखा है। पाखंडी मनुष्य हो तो या तो अिस तरह लिखनेके कारण मुझे अुद्धत मानेगा या मेरे वचन पर अन्धविश्वास रखकर, अुसका गलत अर्थ निकाल कर झूठे कारणोंसे बड़ोंकी आज्ञाका अुल्लंघन करेगा; और प्लेगके बारेमें जो कुछ लिखा गया है अुसका यह अर्थ लगायेगा कि अुचित अिलाजमें शराब, मांस वगैरा खाये जा सकते हैं।"

स्वामी शंकरानन्दजी नामके अेक संन्यासी वैदिक धर्मके प्रचारककी हैसियतसे सन् १९१०–११ में नेटालमें रहते थे। वे अपनेको वैदिक धर्मके

धर्म-धुरंधर कहते थे। आर्यसमाजी मंडलोंमें वे काफी प्रसिद्ध थे। अुनकी नेटालकी प्रवृत्ति वहांके मीठे वातावरणमें बेसुरी आवाज मालूम होती थी। गांधीजीकी समभावकी दृष्टि अुन्हें पसन्द नहीं थी। अैसे कुछ कारणोंसे अुन्होंने गांधीजीको अेक पत्र लिखा था। अुसके अुत्तरमें गांधीजीने यह पत्र लिखा था :

"आपका पत्र मिला। पहले आपका डेपो रोडमें दिया हुआ 'कर्ज़न वायली' सम्बन्धी भाषण मैंने पढ़ा। शिक्षा-सम्बन्धी पत्र भी पढ़ा। ये तीनों लेख पढ़कर मुझे अफसोस हुआ। मुझे लिखा हुआ पत्र अिस्लाम धर्मके विषयमें आपके विचार बताता है। और दूसरे दो लेख अुस धर्मके माननेवालोंके प्रति आपका रुख बताते हैं। अिस्लाम धर्म सम्बन्धी आपके विचारोंके बारेमें मैं कुछ नहीं कहता। परन्तु मैं यह जानता हूं कि अिस्लाम धर्म पर आपका कटाक्ष हिन्दू धर्मके रहस्यके विरुद्ध है। कटाक्ष भले करें। पर अुसे करनेमें आपने नीतिविरुद्ध अैसा व्यवहार किया कि वह और भी दुःखद हो गया है। अंग्रेजोंको हिन्दू धर्मके रक्षक मानकर तो आपने बहुत ही दीनता दिखाअी है। अगर मैं अपने धर्मकी रक्षा करनेके लायक नहीं हूं, तो परधर्मी अुसकी क्या रक्षा करेंगे? शिक्षा-सम्बन्धी आपके विचारोंको मैं केवल हिन्दू-मुसलमानोंमें विरोध पैदा करनेवाले मानता हूं। अगर हिन्दू-मुसलमानोंके बीच अितना ज्यादा अन्तर रखनेकी जरूरत हो, तब तो हिन्दुस्तानको पराधीन ही रहना चाहिये। अिसमें विदेशियोंको दोष भी कैसे दिया जाय? और अितना अन्तर रखनेसे तो हिन्दू धर्मका लोप ही हो सकता है। सौभाग्यसे हिन्दू धर्मकी स्थिति अचल है। हजारों वर्षोंसे जिसकी रक्षा होती रही है, अुसका नाश हमारे धर्मगुरुओंके हाथों भी नहीं हो सकता, यह मेरी अटल श्रद्धा है। आपको मैं क्या लिखूं? आपके ज्ञानके लिअे मुझे आदर है। परन्तु आपके व्यवहार पर दुःख होता है।"

गांधीजीके अेक भतीजे बम्बअीमें रहते थे। अुन्हें लिखा हुआ पत्र पढ़ कर हमें यह मालूम हो जाता है कि गांधीजी कैसी समझसे हिन्दू धर्मके भक्तोंकी कथाअें अपने जीवनमें चरितार्थ करनेकी कोशिश करते हैं। वह पत्र अिस प्रकार है :

"तुम्हारा पत्र मुझे मिल गया। वहां रहकर भी तुम यहांके अुद्देश्योंमें सहायक हो सकते हो। मैं देखता हूं कि लड़ाअी वहां भी खूब लड़नी होगी। अैसा करनेके लिअे तुम्हारा चारित्र्य बनना चाहिये। तुम हमारे धर्मके मूल-

तत्त्व जानते हो? शायद तुम कहोगे कि मैं तो सारी गीताजी जबानी सुना सकता हूं और अुसका अर्थ भी मुझे आता है, फिर आप मूल तत्त्वोंकी बात क्या पूछते हैं? मूल तत्त्वोंको जाननेका अर्थ मैं यह करता हूं कि अुनके अनुसार आचरण किया जाय। दैवी सम्पद्‌का पहला गुण 'अभय' है। यह श्लोक तुम्हें याद होगा। तुमने अभयपद किसी भी अंशमें प्राप्त किया है? या जो करना अुचित है अुसे निडर होकर, प्राणोंका खतरा अुठाकर भी तुम कर सकोगे? जब तक यह स्थिति न हो जाय तब तक अुसका सेवन करके अुसे प्राप्त करनेकी कोशिश करो। तब तुम जीवनमें बहुत कुछ कर सकोगे। अिस प्रसंग पर तुम्हें प्रह्लादजी और सुधन्वा वगैराके दृष्टान्त याद करनेकी जरूरत है। यह न मानना कि ये सब दन्तकथाअें हैं। अैसे काम करनेवाले भारतके सपूत हो चुके हैं। अिसीलिअे हम ये आख्यान जबानी याद करते हैं। आज भी प्रह्लाद और सुधन्वा, हरिश्चन्द्र और श्रवण, हिन्दुस्तानमें नहीं हैं, अैसा नहीं मानना चाहिये। हम लायक हो जायंगे तब हमारी अुनसे भेंट भी हो जायगी। वे कोअी बम्बअीके मकानमें मिलने नहीं आयेंगे। पथरीली जमीनमें गेहूंकी फसलकी आशा नहीं रखी जा सकती। बम्बअीमें रहना हो तो मनमें यह मान्यता दृढ़ बना लेना कि बम्बअी नरककी खान है। अुसमें कुछ सार नहीं।"

* * *

"सुदामाजीका चरित्र मैंने पढ़ लिया था। अुनकी और नरसिंह मेहताकी गरीबीसे स्पर्धा करनेका अुत्साह मुझमें पैदा हुआ था और है। अुस परसे मैंने लिखा है कि ... का ज्ञान शुष्क है और सुदामाजीका सच्चा और अनुकरणीय है। ... श्रीकृष्णको मैं परमात्माके रूपमें जानता हूं। वे श्रीकृष्ण अर्जुनके साथी, सुदामाजीके मित्र और नरसिंह मेहताके रणछोड़ हैं। अुनके बारेमें आलोचना करनेका स्वप्नमें भी मेरा विचार नहीं था। तुम्हारे मनमें मेरे पत्र परसे अैसा भाव जिस हद तक आया, अुस हद तक मैं पापी हूं। मेरे हाथसे अिस विषयमें अेक अक्षर भी कैसे लिखा गया, यह विचार करके मैं कांप अुठता हूं। तुम्हारा पत्र आया तभीसे मैं अुद्विग्न रहता हूं। ... सुदामाजीकी स्त्रीने ताने मारे, अिसे मैं अलंकृत भाषा समझता हूं। परन्तु वह शब्दशः वैसा ही बोली हो तो भी कोअी आश्चर्य या विरोध मालूम नहीं होता। स्त्री तो यही कहेगी। सुदामाजीका अिरादा सब कष्ट सहन करनेका

हो तभी स्त्री अैसा कहेगी यह बात नहीं है। श्रीकृष्ण जैसे मित्र हों तो अुनकी मदद क्यों न ली जाय? अितना तो सच है कि सुदामाजी बहुत गरीब थे और अुस हालतमें अुन्हें संतोष भी था और वे पक्के भक्त भी थे। नरसिंह मेहताने श्रीकृष्णकी भक्ति की, फिर भी अपनी गरीबीकी स्थितिसे छुटकारा पानेकी अुन्होंने अिच्छा तक न की।

* * *

"सियराम-प्रेमपियूष-पूरन, होत जनम न भरतको।
मुनिमन-अगम यम नियम शम दम, विषम व्रत आचरत को।
दुख दाह दारिद दम्भ दूषन, सुयश मिसु अपहरत को।
कलिकाल तुलसीसे शठन्हि हठि राम सन्मुख करत को।

"यह छन्द अयोध्याकांडमें अंतिम है; अिस पर विचार करना। मेरे कानोंमें अिसकी झंकार सदा सुनाअी देती है। कठिन कालमें भक्तिको प्रमुखता दी गअी है। वह भक्ति करनेके लिअे भी यम-नियमादि तो जरूर चाहिये। अुसमें हमारी शिक्षा जड़ है। अुनके बिना सारी होशियारी बेकार है, यह मैं हर क्षण देख रहा हूं। तुम्हें दूसरा आशीर्वाद क्या दूं?"

गांधीजीके पुत्र भाअी मणिलाल जोहानिसबर्गमें श्री कैलनबैकके साथ रहते थे। अुन्हें गांधीजीने नीचे लिखा पत्र भेजा था। अुस पत्रको पढ़नेसे हमें धर्मकी कथाओंमें जो समानता होती है वह मालूम हो जाती है।

"... मि० कैलनबैक चाहें तब सोयें, परन्तु तुम्हें तो अेक ही नियम रखना चाहिये। खानेके बारेमें भी यही बात है। तुम जिन वाक्योंको न समझ सके अुनका अर्थ यह है: 'जो कर्म सिर्फ नियमसे (अक्षरार्थ करके) किये जाते हैं अुनके लिअे तो शाप है। फिर भी अैसा लिखा हुआ है कि जो नियममें बताये हुअे कर्म नहीं करते रहते वे सब शापित हैं।' भावार्थ यह है कि केवल पुस्तकीय ज्ञान पानेवाले लोग कभी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते। अैसा ही वचन गीताजीमें है, अुस पर विचार कर लेना। 'त्रैगुण्य-विषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन'— यह वाक्य अर्जुनसे श्रीकृष्णने कहा था। अिसका यह अर्थ नहीं कि शास्त्रविहित कर्म न किये जायं। परन्तु अुन्हें करना ही काफी नहीं है। अर्थ यह है कि अुनका गूढ़ अर्थ समझ कर, अुनका हेतु समझ कर हम अुससे आगे बढ़ें। जो आदमी विहित कर्म छोड़कर शुष्क ब्रह्म-

वादी बन जाता है, वह न तो अिधरका रहता न अुधरका। वह शास्त्रका सहारा खो बैठता है; और ज्ञानका आधार अुसे मिलता नहीं, अिसलिअे वह गिरता ही है। अिसीलिअे 'गेलेशियन्स' को सन्त पॉलने कहा था: 'तुम लोग शास्त्रके अनुसार कर्म तो करो ही; परन्तु अीसा पर श्रद्धा रखकर अुनकी शिक्षाका अनुसरण नहीं करोगे तो शापित रहोगे।' यही भावार्थ 'बॉण्ड मेड' और 'फ्री वुमन' के सम्बन्धमें है। बॉण्ड यानी बन्धन। शास्त्रको स्थूल माताकी अुपमा दी गअी है और कहा गया है कि वह तो गुलामीके दर्जेकी है, अिसलिअे अुसकी सन्तान भी गुलाम ही होती है।

"श्रद्धा अर्थात् भक्तिको दिव्य माताकी अुपमा दी गअी है और दिव्य माताकी सन्तान देवरूप होती है। यह भावार्थ समझकर आगे-पीछेके वाक्योंका विचार करना और लिखना कि अच्छी तरह समझमें आया या नहीं। पहले 'कोरिन्थियन' के १५ वें प्रकरणके ५६ वें श्लोकका अर्थ यह है कि पाप ही मौतका डंक है, यानी पापी मनुष्यके लिअे ही मौत डंकके रूपमें है। और दूसरे वाक्यका अर्थ यह है कि पुण्यशालीके लिअे मृत्यु मोक्षका साधन है; और शास्त्रोंके शुष्क ज्ञानमें शापका बल होता है। यह हम पग-पग पर देखते हैं। शास्त्रोंके नाम पर सैकड़ों पाप होते हैं। पांचवें 'रोमन्स' के २० वें श्लोकका अर्थ तो आसान है। अुसके सिवा, शास्त्र घुसा और अपराध बढ़े। लेकिन जब जब पापका पुंज बढ़ा तब तब अीश्वरकी कृपा भी बढ़ी। यानी अैसे कलिकालके समय भी शुष्क ज्ञानके बन्धनसे छूटनेवाले आदमी मिल गये। अुन्होंने भक्तिमार्ग बता कर शास्त्रोंका गूढ़ार्थ सिखाया, यह अीश्वरकी कृपा है। 'जॉन' के १५ वें प्रकरणके तीसरे श्लोकका अर्थ यह है: 'जो वचन मैंने तुमसे कहे हैं, अुन वचनोंके अनुसार चलनेसे तुम शुद्ध बनोगे।' 'are' को भविष्यका वाचक समझो और 'through' का अर्थ 'अनुसार चलनेसे' करो।

"जीवनमें सभ्यता-सम्बन्धी परिवर्तन करनेसे पहले विचार करना। पर मैं चाहता हूं कि परिवर्तन करनेके बाद अुनसे जोंककी तरह चिपटे रहो। मि० कैलनबैकके गुणों पर मुग्ध रहो। अुनकी कमजोरी दिखाअी दे तो अुसे समझकर अुससे दूर रहो। तुमने जो नया परिवर्तन किया है वह विचार-पूर्वक नहीं किया। जितने परिवर्तन मि० कैलनबैक करें वे सब करनेको तुम बंधे हुअे नहीं हो। तुम्हें स्वतंत्र विचार करना और अुन पर दृढ़ रहना

चाहिये। अैसा करनेमें कभी भूल भी होगी। अुसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। निर्मल चित्तसे खूब विचार करनेके बाद तुम्हें मेरे विचारोंका विरोध करनेका भी अधिकार है। और जहां अैसा करनेमें नीति दिखाअी दे वहां विरोध करना तुम्हारा फर्ज है। तुम मोक्षका तत्त्व समझो और मोक्षेच्छु बनो, यह मेरी तीव्र अिच्छा है। और यह तब तक कभी नहीं होगा जब तक तुममें स्वतंत्र विचार करनेकी शक्ति और दृढ़ता नहीं आयेगी। अभी तो तुम्हारी हालत किसी लताके जैसी है। लता जिस वृक्ष पर चढ़ती है, अुसीका रूप ले लेती है। यह दशा आत्माकी नहीं है। आत्मा तो स्वतंत्र है और मूल रूपमें सर्व-शक्तिमान है।"

* * *

"काम अेषः क्रोध अेष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणम्॥

"जब अर्जुनने श्रीकृष्ण भगवानसे पूछा कि मनुष्य अिच्छाके विरुद्ध भी किसलिअे पाप करता है, तो भगवानने अुसे अुपरोक्त अुत्तर दिया। अिसका अर्थ यह है कि 'पापका कारण काम है, क्रोध है; वह रजोगुणसे अुत्पन्न होता है। वह बहुभक्षी है और बहुत पाप करानेवाला है। अुसे जरूर अपना बैरी समझो।' यह सिद्धान्त है। अिसलिअे जब मि० कैलनबैकको गुस्सा आया तब तुम्हें शांत रहना चाहिये था। अपने बड़े-बूढ़े क्रोध करें तब हम नम्र रहें, चुप रहें, और जवाब देना पड़े तो कहें कि 'मैं अपनी भूल सुधारूंगा, अब मुझे माफ कीजिये।' अिसमें यह स्वीकार करनेकी बात नहीं है कि तुमने जान-बूझ कर अपराध किया है। फिर जब बड़े लोग शांत हों तब जहां शंका हो वहां विनयपूर्वक अुनसे पूछा जाय। मिस्टर कैलनबैक शांत हो जायं तब तुम अुनसे पूछ सकते हो कि सेब सड़े जा रहे थे, अतः अुनमें से कुछ देनेमें क्या दोष हुआ?"

"डेविडके 'साम' समझने लायक हैं। अुनमें अुन्होंने दुष्टोंका नाश करनेकी जो अिच्छा बताअी है अुसका रहस्य यह है कि अुनसे बुराअी सहन नहीं हो सकती थी। यही विचार रामायणमें है। राक्षसोंका संहार देवताओं और मनुष्योंने भी चाहा है। 'जय राम रमा' की स्तुतिमें भी यही भावना है। अुसका आध्यात्मिक अर्थ यह है कि डेविड (अर्जुन — दैवी संपत्ति) अपने शत्रु (दुर्योधन आदि — आसुरी संपत्ति) का नाश चाहता है। यह सात्त्विक

वृत्ति है और भक्तिभावमें यह दशा रहती है। जब ज्ञानदशा अुत्पन्न होती है तब दोनों प्रवृत्तियां दब जाती हैं और सिर्फ शुद्ध भाव — केवल ज्ञान — रहता है। अिस दशाका वर्णन बहुत करके बाअिबलमें नहीं आता। डेविड दोषयुक्त होने पर भी भक्त थे। और 'साम' में अुनके जो अुद्गार हैं अुनकी भाषा सरल है। वे महान होने पर भी औश्वरके सामने दीन बनकर रहते हैं और अपनेको तिनकेके बराबर समझते हैं।"

गांधीजीने मेरे अधीर मनको धीरज बंधानेके लिअे सन् १९१३ में जोहानिसबर्गसे नीचेका पत्र फिनिक्स भेजा था। अिस पत्रमें अद्भुत वस्तु है। यह बार बार पढ़कर मनन करने योग्य है:

"तुम्हारा पत्र पढ़ा और फिर पढ़ा। शंकराचार्यने अेक श्लोकमें कहा है कि समुद्रके किनारे बैठ कर घासके तिनके पर पानीकी बूंद रखकर समुद्र अुलीचनेवाले मनुष्यको जितने धैर्य और समयकी आवश्यकता है, अुससे ज्यादा धैर्य और समयकी आवश्यकता मनको मारनेमें यानी मोक्ष साधनेमें है। तुम तो अुतावले हो गये दीखते हो! मैंने बहुत विचार किया है तो भी मृत्युका डर तो मेरा भी नहीं गया। परन्तु मैं अधीर नहीं होता। प्रयत्नवान रहता हूं — अिसलिअे किसी न किसी दिन जरूर मुक्त हो जाअूंगा। प्रयत्न करनेका अेक भी मौका न छोड़ना हमारा कर्तव्य है। परिणाम लाना या चाहना प्रभुके अधीन है। फिर झंझट किस बातकी? माता बालकको दूध पिलाते समय परिणामका विचार नहीं करती। अुसका परिणाम तो आता ही है। मौतका डर मिटाने और मनोविकार नष्ट करनेका प्रयत्न करके प्रफुल्लित रहो तो वह मिट जायगा। नहीं तो अैसा होगा कि बन्दरका विचार न करनेका विचार करनेसे अुसके विचार मनमें आते ही रहते हैं। हम पापयोनिसे जन्मे हैं, पापकर्मसे शरीरधारी बने हैं; यह सब मैल तुम पलभरमें कैसे धो सकोगे?

'सुतर आवे तेम तुं रहे,
जेम तेम करीने हरिने लहे।'*

"यह ज्ञान अखा भगतने दिया है। तुलसीदासजी कहते हैं कि संकट हो या न हो, परन्तु रामनाम जपनेसे सब कुछ सिद्ध हो जाता है। हमें

* तुझे जैसा भी जीवन अनुकूल आवे वैसा जीवन तू बिता। परन्तु किसी भी तरह श्रीहरिको पहचान।

तो यही अर्थ सिद्ध करना है। अिसलिअे यह जप करते रहना। राम कैसे हैं, यह मनमें निश्चय कर लेना। वे राम निरंजन हैं, निराकार हैं। वे राक्षसी वृत्तियोंके समूह-रूपी रावणका दैवी वृत्तियों रूपी अनेक प्रकारके शस्त्रोंसे संहार करनेवाले हैं। वे शक्तिके लिअे १२ वर्षकी तपस्या करनेवाले हैं। अन्तमें, शरीर या मनको अेक क्षण भी निठल्ला न रहने देना। अुत्साहपूर्वक दोनोंको काममें लगानेसे तुम्हारी सब मुसीबतें मिट जायेंगी। वैसे तो भगवान पर भरोसा रखना। मुझ पर भरोसा रखना व्यर्थ है। ये सब भरोसे अूपरकी बातें करनेके बाद काम आयेंगे।

"यह याद रखना कि जैसे देव हम चाहते हैं वैसे ही देव हमें मिलते हैं। जब तुलसीदासने रामचंद्रके दर्शन करना चाहा तब श्रीकृष्ण राम बन गये और लक्ष्मीजी सीता बन गअीं। म...की खांसी मिटाना। अुसका कारण खोजना।"

* * *

"हृदय पवित्र हो तो विकारेन्द्रियके विकारी होनेकी बात नहीं रहती। परन्तु हृदय क्या है? अुसे कब पवित्र मानें? हृदय ही आत्मा है या आत्माका स्थान है। अुसमें पवित्रता मानी कि शुद्ध आत्मज्ञान हुआ; और अुसके रहते अिन्द्रिय-विकार संभव ही नहीं है। परन्तु साधारण मान्यता अैसी है कि जब हम हृदयको पवित्र बनानेकी खूब कोशिश करते हैं, तब अुसे पवित्र हुआ मानते हैं। तुम पर मेरी प्रेमवृत्ति है। अिसका अर्थ अितना ही है कि वैसी वृत्ति रखनेकी मैं कोशिश करता हूं। यदि अखंड प्रेमवृत्ति हो तो मैं ज्ञानी हो गया। सो तो है नहीं। जिसके प्रति मेरा सच्चा प्रेम होगा वह मेरे हेतुका या वचनका अनर्थ नहीं करेगा। वह मेरा तिरस्कार तो करेगा ही नहीं। अतः अिससे यह साबित होता है कि जब कोअी मनुष्य हमें शत्रु मानता है तब दोष पहले तो हमारा ही है। यह बात हमारे और गोरोंके सम्बन्धमें भी लागू होती है। अिसलिअे सर्वांशमें हृदयकी पवित्रता अन्तिम स्थिति है। तब तक जैसे जैसे हम पवित्रतामें अूंचे चढ़ेंगे, वैसे वैसे हमारे विकार शान्त होते जायंगे। विकार अिन्द्रियोंमें हैं ही नहीं। 'मन अेव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः'। अिन्द्रियां तो मनोविकारोंके प्रगट होनेके स्थान हैं। अुनके द्वारा हम मनोविकारोंको जानते हैं।

"अिस प्रकार अिन्द्रियोंका नाश करनेसे मनोविकार मिट नहीं जाते। हिजड़े लोगोंमें विकार पूरी तरह पाये जाते हैं। जन्मसे नपुंसक पुरुषोंमें

अितने अधिक विकार होते हैं कि वे बहुत बुरे काम करते देखे गये हैं। मेरी गंधशक्ति मन्द है, फिर भी सुगन्ध लेनेको जी चाहता है; और जब कोअी गुलाब वगैराकी सुगन्धकी बात करता है, तब मन गधेकी तरह अुस तरफ चला जाता है और मैं जबरन् अुसे वशमें रखा पाता हूं। जब मन पर काबू न होने पर भी विचारधारा तीव्र होती है, तब सुना गया है कि मनुष्य अिन्द्रियको काट डालते हैं। संभव है अुस समय यही अुनका कर्तव्य हो। मान लो कि मेरा मन विचलित होता है और मैं अपनी बहन पर कुदृष्टि डालता हूं। मुझे कामदेव जला रहा है, परन्तु मैं सिर्फ मूढ़ नहीं बन गया हूं। अैसे समय अगर और कोअी अुपाय न हो तो अैसा लगता है कि अिन्द्रिय-च्छेदन कर डालना ही मेरा पवित्र कर्तव्य है। धीरे धीरे अूपर अुठनेवाले पुरुषोंका यह हाल नहीं होता। जिसे तीव्र वैराग्य हो गया हो, परन्तु जिसका पूर्व आचरण ठीक न रहा हो, अुसका यह हाल जरूर हो सकता है। अैसे पुरुषका विकार पैदा न हो और अिन्द्रिय विचलित न हो, अिसके लिअे तात्कालिक अुपाय (अिलाज) चाहना बांझ द्वारा पुत्रकी अिच्छा करनेके बराबर है। वह काम बहुत ही धीरजसे होगा। जैसे जादूका आम सिर्फ देखनेका होता है, वैसे ही तात्कालिक होनेवाली मनकी शुद्धिके बारेमें समझो। हां, अितना होता है : मन पवित्र होनेके लिअे तैयार हो गया होता है और सिर्फ संत-समागमरूपी पारसमणिको ढूंढ़ता है। अुसके मिलने पर अुसे अपनी पवित्रताके अेकाअेक दर्शन हो जाते हैं और अपवित्रता सपनेकी-सी बात मालूम होने लगती है। यह कोअी तात्कालिक हुआ नहीं माना जायगा। बल्कि साधारण, थोड़ेसे थोड़े समयमें होनेवाला और अुस हद तक तात्कालिक अिलाज माना जायगा।

"अेकान्त-सेवन, सत्संग, शुद्धि, सत्कीर्तन, सद्वाचन, निरंतर शरीर-मन्थन, अल्पाहार, फलाहार, अल्पनिद्रा, भोगविलासका त्याग — जो अितना कर सकता है अुसे मनोराज्य हस्तामलकवत् प्राप्त हो जाता है। अितना किया जाय और दूसरी चीजोंका ध्यान रखा जाय। जब जब मनोविकार अुत्पन्न हों तब तब अुपवासादि व्रत पाले जायं।

* * *

गांधीजीके हिन्दुस्तान आनेसे पहले फिनिक्स आश्रमके विद्यार्थियोंको लेकर स्व० मगनलाल गांधी यहां आ गये थे और फिनिक्स आश्रमके नियमानु-

सार बोलपुर–शान्तिनिकेतनमें रहते थे। गांधीजी अिंग्लैण्ड होकर सन् १९१५ के फरवरी मासमें देश आये और थोड़े दिन यहां ठहरकर रंगून गये। वहांसे अुन्होंने भाअी श्री मगनलाल गांधीके नाम अेक पत्र लिख कर बताया था कि हमारे आश्रमके विद्यार्थियों और आश्रममें रहनेवालोंके व्यवहारमें कैसा नियमन रखा जाय। वह पत्र नीचे दिया जाता है। अुसे पढ़कर हमें अिस बातकी कुछ कल्पना होगी कि श्री रामायणकी कथाको हम अपने जीवनमें किस तरह चरितार्थ करें:

"अहिंसाके बारेमें तुम्हारा खयाल ठीक है। दया, अक्रोध, अमान आदि अहिंसाके अंग हैं। अहिंसा-धर्म सत्याग्रहकी बुनियाद है। यह बहुत स्पष्ट रूपमें कलकत्तेमें मैंने देखा और वहीं विचार किया कि अिसे हमें व्रतके रूपमें आश्रम-व्रतोंमें दाखिल करना चाहिये। अिस विचारमें से यह निकल आया कि हमें सभी यम पालने चाहिये, और व्रतके रूपमें पालते हुअे हम अुनकी सूक्ष्म स्थितिको समझ सकते हैं। यहां सैकड़ों लोगोंके साथ मैं जो बातें करता हूं, अुनमें सारे यमोंको सर्वोच्च स्थान देता हूं।

सियराम-प्रेमपियूष-पूरन होत जनम न भरतको।
मुनिमन-अगम यम नियम शम दम विषम व्रत आचरत को॥

"यह छंद मुझे अिस अवसर पर कलकत्तेमें याद आ गया और अुसका मैंने खूब मनन किया। मैं स्पष्ट देख सकता हूं कि अिन व्रतोंके पालनमें ही हिन्दुस्तानका और हमारा मोक्ष समाया हुआ है।

"अपरिग्रह-व्रतके पालनमें ध्यानमें रखनेकी मुख्य बात यह है कि अनावश्यक कुछ भी संग्रह न किया जाय। खेतीके कामके लिअे बैल न हों तो बैलोंका और अुनके लिअे जरूरी सामानका संग्रह करेंगे। दुष्कालका डर जहां हमेशा रहता होगा वहां अनाज जमा करेंगे। परन्तु यह सवाल हमेशा पूछेंगे कि बैलोंकी या अनाजकी जरूरत है या नहीं। सभी यमोंको हमें विचारपूर्वक पालना है। अिसलिअे अुनमें दिनोंदिन दृढ़ता बढ़ती जायगी और हमें नये नये त्याग सूझने लगेंगे। त्यागकी कोअी हद ही नहीं है। ज्यों ज्यों हमारा त्याग बढ़ेगा त्यों त्यों आत्माके दर्शन हम अधिक करेंगे। मनकी गति परिग्रह छोड़नेकी तरफ होगी और शरीरकी शक्तिके अनुसार हम त्याग करेंगे, तो अपरिग्रह-व्रतका पालन हुआ माना जायगा।

"अिसी तरह अस्तेयके बारेमें। अपरिग्रहमें अनावश्यक वस्तुओंके संग्रहका समावेश होता है। अस्तेयमें वैसी चीजोंके अुपयोगका समावेश होता है। मेरा काम अेक कुर्तेसे शरीर ढंककर चल जाये और फिर भी मैं दो पहनूं, तो मैं दूसरेकी चोरी करता हूं। क्योंकि जिस कुर्तेका अुपयोग दूसरे कर सकते हों वह मेरा नहीं कहला सकता। अगर मैं पांच केलोंसे गुजर कर सकता हूं, तो छठा केला खाना मेरे लिअे चोरी है। मान लो हमने सबके लिअे जरूरी समझ कर ५० नीबुओंका परिग्रह रखा। मुझे सिर्फ दो नीबूकी जरूरत है। परन्तु ज्यादा हैं अिसलिअे यदि मैं तीसरा ले लेता हूं तो वह चोरी हुआी।

"अिस प्रकार अधिकके अुपयोगसे अहिंसा-व्रतका भी भंग होता है। अगर अस्तेयकी भावनासे अुपयोगको घटायें तो हममें अुदारता बढ़ेगी। अगर अहिंसाकी भावनासे अुपयोगको घटायें तो दयाकी भावना बढ़ेगी। प्राणीमात्र, जीवमात्रको हम अभयदान दें, तो अिसमें दया–प्रेमका चिन्तन है। जो यह चिन्तन करेगा अुसका विरोध सपनेमें भी कोआी जीव नहीं करेगा, यह शास्त्रोंका खास निश्चय है और मेरा अनुभव है।

"अिन सब व्रतोंका सूत्र सत्य है। मनको धोखा देकर चोरीको अचोरी माना जा सकता है, और मनको धोखा देकर परिग्रहको अपरिग्रह माना जा सकता है। अिसलिअे बहुत सूक्ष्म विचारसे हम पग-पग पर सत्यको प्रगट कर सकते हैं। जब किसी चीजके बारेमें यह शंका हो कि अुसका संग्रह करें या न करें, तब संग्रह न करना ही सीधा नियम है। त्यागमें सत्यका भंग नहीं है। जहां बोलनेके बारेमें शंका हो, वहां मौन रहना ही सत्यव्रतीका कर्तव्य है।

"मैं यह चाहता हूं कि तुम सब जो व्रत स्वतंत्र विचारसे लिया जा सकता है अुसे ही लो। लेनेकी जरूरत तो मुझे हमेशा दीखती ही है। परन्तु जब तुममें से प्रत्येकको व्रत लेना जरूरी मालूम हो तभी लेना चाहिये और जितने व्रत लेने हों अुतने ही लेने चाहिये।

"रामचन्द्रजी कितने ही प्रतापी हो गये हों, कितने ही पराक्रम करके अुन्होंने लाखों राक्षसोंका नाश किया हो, परन्तु अुनके पीछे यदि लक्ष्मण और भरत जैसे भक्त न होते, तो रामको आज कोआी न जानता। सारांश यह कि रामचन्द्रजीमें केवल असाधारण क्षात्रतेज ही होता, तो अुनका माहात्म्य थोड़े समय तक रहकर नष्ट हो जाता। अुनकी तरह राक्षसोंका संहार

करनेवाले तो अनेक पराक्रमी हो गये हैं। अुनमें से किसीकी कीर्ति और महिमा घर घर नहीं गाअी जाती। परन्तु रामचन्द्रजीमें कोअी अनोखा तेज था। अुस तेजको लक्ष्मणमें और भरतमें वे अुतार सके अिसी कारणसे लक्ष्मण तथा भरत जैसे महातपस्वी निकले। और अिस तपका माहात्म्य गाते हुअे तुलसीदासजीने कहा कि जो तप महामुनियोंके लिअे भी अगम्य है अुस तपके करनेवाले भरतजी न जन्मे होते तो मेरे जैसे मूढ़को रामके सम्मुख कौन रखता? अिसका अर्थ यह हुआ कि लक्ष्मण और भरतजी मानो रामके यशके अर्थात् अुनकी शिक्षाके द्वारपाल हों। और सिर्फ तपमें ही सब कुछ नहीं समा जाता। क्योंकि चौदह वर्ष तक आहार-निद्राका त्याग तो जैसे लक्ष्मणने किया था वैसे ही अिन्द्रजितने भी किया था। परन्तु तपका जो हार्द रामचन्द्रजीसे लक्ष्मणको प्राप्त हुआ था, वह अिन्द्रजितको नहीं हुआ था। अितना ही नहीं, अुसकी वृत्ति तपके प्रभावका दुरुपयोग करनेकी थी। अिसलिअे वह राक्षस कहलाया और भक्त तथा मुमुक्षु तपस्वी लक्ष्मणके हाथसे अुसकी पराजय हुअी। अिसी तरह गुरुदेवका आदर्श कितना ही अूंचा हो, परन्तु यदि कोअी अुस आदर्शको अमलमें लानेवाला पैदा नहीं होगा, तो वह आदर्श जमानेके गहरे अंधकारमें पड़ा रहेगा। अिसके विपरीत यदि अुस आदर्श पर चलनेवाले निकल आयेंगे, तो वह अपना प्रकाश अनेक गुना फैला सकेगा। तप आदर्शको व्यवहारमें लानेकी सीढ़ी है। अिसलिअे यह समझने लायक बात है कि वह तप — डिसिप्लिन — बच्चोंके जीवनमें अुतारना कितना आवश्यक है।"

गांधीजीकी साधना

तीसरा भाग

१

विश्वासघात !

हम पहले जान चुके हैं कि दक्षिण अफ्रीकाकी सत्याग्रहकी लड़ाअीमें मुख्यतः धार्मिक तत्त्व था। गांधीजीने यह लड़ाअी अपनी राजनीतिक विचारसरणीके आधार पर नहीं छेड़ी थी, परन्तु धार्मिक विचारसरणीके आधार पर छेड़ी थी। अिसलिअे अिस बातकी खास सावधानी रखी गअी थी कि धार्मिक विचारोंसे अंकित हुअी अिस लड़ाअीके किसी भी अंगमें सत्याग्रहके सिद्धान्तोंके खिलाफ आचरण न हो। सन् १९०७ में जनरल स्मट्सने गांधीजीको धोखा दिया था। गांधीजी मानते हैं कि, "अैसा व्यवहार करनेमें जनरल स्मट्सका अिरादा जान-बूझकर हिन्दुस्तानियोंको धोखा देनेका नहीं था। अितनी नीचता जनरल स्मट्समें नहीं है। गोरोंकी प्रधानता और अुन्हींके हितोंकी रक्षा करना वे अपना फर्ज समझते हैं और अैसा करनेमें हिन्दुस्तानियोंके साथ अन्याय करनेकी और जरूरत पड़ने पर अुन्हें सता-सता कर निकाल देनेकी नीति अुनकी सरकारने अख्तियार की। यह रीति-नीति सार्वदेशिक नीतिके या मानव-प्रेमके सिद्धान्तकी दृष्टिसे घटिया दर्जेकी कही जायगी। परन्तु साधारण नैतिक सिद्धान्तकी दृष्टिसे अुसे विश्वासघात या धोखा देना नहीं कहा जा सकता।" यह तो गांधीजीने अपने प्रतिपक्षीके प्रति अुदारताकी दृष्टिसे अपना विचार बताया। परन्तु जिस समाजमें जनरल स्मट्स अेक विशाल देशका कारबार चलाते थे अुस पर अुनके जीवनका क्या असर पड़ा था, अिसकी जांच करनेसे अैसा जान पड़ता है कि समाज पर तो यही असर पड़ा था कि जनरल स्मट्सने सन् १९०७ में हिन्दुस्तानियोंको धोखा दिया। अगर दो पक्षोंमें झगड़ा हो और अुनके बीच हुअे समझौतेके अर्थके बारेमें शंका पैदा हो, तो जो पक्ष दूसरे पक्षसे अुचित न्यायकी मांग करे अुसका समझा हुआ अर्थ ही स्वीकार करना चाहिये; अर्थात् किसी सरकार और अुसकी प्रजाके बीच हुअे समझौतेके अर्थके बारेमें बादमें गलतफहमी पैदा हो, तो प्रजापक्षने समझौतेका जो अर्थ समझौतेके समय समझा हो वही अर्थ माना जाना चाहिये। यही अुचित न्याय माना जायगा। परन्तु सरकारी पक्ष अपनी हुकूमतके नशेमें वह अर्थ स्वीकार न करे और अपने हितमें तथा सामनेवालेके अहितमें ही अुसका अर्थ निकाले, तो अुसे विश्वासघातके सिवा और क्या कहा जा सकता है?

फिर भी गांधीजीने हिन्दुस्तानियोंके सामने अितना अूंचा नैतिक आदर्श रख दिया कि अुस आदर्श तक पहुंच सकनेमें असमर्थ होने पर भी हिन्दुस्तानी अुसका अनादर नहीं कर सके। और बादमें भी अिस लड़ाअीमें गांधीजीने अितनी नैतिक सूक्ष्मता बरती कि अुसे सार्वजनिक जीवनकी बुनियाद माना जा सकता है। अुस नीतिके गहरे संस्कार जनताके हृदयमें जमते रहे। सत्याग्रहकी लड़ाअीमें गांधीजीने पग पग पर मर्यादाअें रखी थीं। अुन मर्यादाओंसे हमारी लड़ाअी पूर्ण शुद्ध रही। ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानी अपने सामाजिक हकोंके लिअे लड़ रहे थे; अुसमें दूसरे पड़ोसी प्रान्तोंके हिन्दुस्तानी निवासी भी अुनकी मदद करनेको अुत्सुक थे। फिर भी पड़ोसी प्रान्तोंके हिन्दुस्तानियोंको अैसा करनेसे मना कर दिया गया था। अिसका अेक ही अुद्देश्य था कि अेक प्रान्तकी सरकारके अन्यायके विरुद्ध लड़ी जानेवाली लड़ाअीमें दूसरे प्रान्तोंके हिन्दुस्तानियोंको शामिल करके सरकारको घबरा देना और अुससे लाभ अुठाना गांधीजीको ठीक नहीं मालूम हुआ। और जिन प्रश्नोंके साथ सम्बन्धित लड़ाअीमें हिन्दुस्तानी गिरमिटिया मजदूरोंका हित-सम्बन्ध नहीं था, अुनमें अुन्हें शामिल होनेको प्रेरित करना या अुकसाना और अुन मजदूरोंके मालिकोंको कठिनाअीमें डालकर सरकार पर परोक्ष दबाव डालना और विजय प्राप्त करना भी सत्याग्रहकी दृष्टिसे गांधीजीको अनुचित मालूम हुआ। अिसके सिवा, जिस लड़ाअीमें हिन्दुस्तानी नौजवान और बूढ़े शामिल हुअे, अुसमें अुनकी पत्नियोंमें से बहुतसी स्त्रियां भी शरीक होनेको तैयार थीं। परन्तु लड़ाअीमें स्त्रियोंको आगे करके वहांकी सरकारको बदनाम कराना, बेअिज्जतीसे बचनेके लिअे सरकारको समझौता करनेकी स्थितिमें डाल देना भी गांधीजीको अनुचित प्रतीत हुआ। अिस प्रकार गांधीजीने सत्याग्रहकी लड़ाअीमें अनेक नैतिक सूक्ष्मताओंका पालन किया। गांधीजीने अिस लड़ाअीमें विपक्षीकी किसी भी कठिनाअीका अनुचित लाभ अुठानेकी कोशिश नहीं की। अैसा संयम रखना किसी भी प्रजाके लिअे मुश्किल है। अनेक कठिनाअियोंमें मुट्ठीभर सत्याग्रहियोंके लिअे प्राणोंको खतरेमें डालकर सत्यकी विजय होने तक जूझना और टिके रहना आसान है; परन्तु प्रतिपक्षी कठिनाअीमें हो तब अपनी बात आगे रखकर, अुसके विरुद्ध लड़कर तथा अुसकी कठिनाअीमें वृद्धि करनेकी धमकी देकर अपना काम बना लेनेकी कुनीतिसे बच जाना बहुत कठिन है। लड़ाअी तो कामचलाअू समझौतेके कारण रुक गअी थी। परन्तु अुसके बाद सन् १९१३

के अप्रैल मासमें यूनियन पार्लियामेण्टमें 'न्यू अिमिग्रेशन बिल' सरकारने पेश कर दिया। यह बिल हिन्दुस्तानी जातिके लिअे बिलकुल असंतोषजनक था। अुसमें हिन्दुस्तानियोंकी अुस समय तककी सत्याग्रहकी लड़ाअीके प्रश्नका फैसला नहीं हुआ था। रंगभेद कायम रखा गया था। अिस मौके पर भी हिन्दुस्तानियोंमें बिलकी खूब चर्चा हुअी। ट्रान्सवालमें तो मअी महीनेकी तीसरी तारीखको हिन्दुस्तानियोंने विराट सभा करके सत्याग्रहका प्रस्ताव पास किया।

अितनेमें अेक और चौंकानेवाली घटना हुअी। केपटाअुनके अेक मुसलमान व्यापारीकी पत्नी हिन्दुस्तानसे केपटाअुन गअी। अिमिग्रेशन-विभागने अुस महिलाको अुतरनेकी अधिकारिणी न मानकर अुतरने नहीं दिया। अुस महिलाके पतिने अिमिग्रेशन-अफसरके अिस निश्चयके खिलाफ केपटाअुनके हाअीकोर्टमें अपील की। हाअीकोर्टके जज मिस्टर सरलेने यह फैसला दिया कि जो भाअी अिस महिलाका पति होनेकी बात कहता है वह केपकॉलोनीका निवासी होनेका हक रखता है। अिसलिअे अुसकी पत्नीको भी वह हक होना ही चाहिये। परन्तु जिसे वह अपनी विवाहिता स्त्री कहता है वह वास्तवमें अुसकी विवाहिता स्त्री ही है अैसा कोअी कानूनी सबूत वह हिन्दुस्तानी नहीं दे सका। अिसलिअे अदालत अैसा निर्णय नहीं कर सकती कि यह महिला अुस हकदार हिन्दुस्तानीकी जायज पत्नी है। और अिसलिअे अुस स्त्रीको केपटाअुनकी हकदार निवासिनी नहीं ठहराया जा सकता। यह फैसला देकर हाअीकोर्टने अुस महिलाको वापस धकेल दिया। यह फैसला हिन्दुस्तानियोंके लिअे भयंकर माना गया। यह फैसला कायम रहता तो आयंदा अुसका प्रमाण सभी फैसलोंमें लिया जाना स्वाभाविक था। अितना ही नहीं, अिस फैसलेको सरकार स्पष्ट कानूनका रूप भी दे सकती थी। अैसा होने पर दक्षिण अफ्रीकासे हिन्दुस्तानियोंकी जड़ जल्दी ही अुखड़ जाती। अुनकी करोड़ोंकी संपत्ति नष्ट हो जाती। अिसका अर्थ यह होता कि अपने अपने धर्मके अनुसार हुअे विवाहोंको सरकारी अदालतोंमें दर्ज कराना चाहिये। हिन्दुस्तानियोंमें अैसा कोअी रिवाज नहीं है। विवाह अुनमें अेक सामाजिक कर्तव्य माना जाता है और धार्मिक विधिसे किया जाता है। अिस प्रकार हिन्दुस्तानी लोग सामाजिक और धार्मिक संस्थाओंसे राज्यसंस्थाको ज्यादा महत्त्व नहीं देते। और अदालतोंमें विवाह दर्ज करानेकी प्रथा हिन्दुओं, मुसलमानों, या पारसियों किसीमें भी नहीं है। अिसलिअे अूपरके फैसलेका सीधा अर्थ यह हुआ कि :

(१) हिन्दू, मुसलमान और पारसी धर्मके अनुसार हुअे विवाह नाजायज माने जायेंगे, क्योंकि वे ब्रिटिश अदालतोंमें दर्ज नहीं कराये गये हैं और अुन विवाहों पर सरकारकी मुहर नहीं लगी है। अिस तरह तीनों धर्मोंका अपमान होगा।

(२) जो जो हिन्दुस्तानी विवाह हुअे हैं और आगे होंगे, वे सभी गैरकानूनी माने जायेंगे। अर्थात् हिन्दुस्तानी स्त्रियां अपने पतियोंकी विवाहिता पत्नी न मानी जाकर रखेल समझी जायेंगी। अिस प्रकार हिन्दुस्तानी स्त्रीत्वका भी अपमान होगा।

(३) हिन्दुस्तानी स्त्री नाजायज मानी जाय तो अुससे पैदा हुअी संतान भी नाजायज मानी जायगी। अिस प्रकार अैसी स्त्रियां या अुनसे अुत्पन्न होनेवाली संतान दक्षिण अफ्रीकाके बाकायदा निवासी नहीं माने जायेंगे। अतः अुन्हें दक्षिण अफ्रीकासे निकाल दिया जायगा।

(४) जब सन्तान नाजायज मानी जायगी तो अुस संतानके पिताकी जायदादका कानूनी वारिस कौन होगा? कोअी नहीं।

(५) जब किसी आदमीका कोअी बाकायदा वारिस न हो तब अुस आदमीके मरनेके बाद अुसकी संपत्ति भी लावारिस मानी जायगी।

(६) अंग्रेजी कानूनके अनुसार लावारिस संपत्तिकी मालिक सरकार मानी जायगी।

बस, अन्यायकी हद हो गयी। अिस अेक ही तीरसे सरकारने अनेक चिड़ियोंका शिकार करना चाहा। अुसने अैसी अधम चाल चली कि दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानी आबादीका नामोनिशान न रह जाय; अितना ही नहीं, अुसकी करोड़ोंकी जायदाद भी हड़प कर ली जाय।

अितनेमें ही हिन्दुस्तानियों पर अेक और बम गिरा। गिरमिटसे स्वतंत्र होनेवाले हिन्दुस्तानियों परसे तीन पौण्डका मुंड-कर अुठा लेनेका मंत्रियोंने श्री गोखलेको वचन दिया था। अुसके अनुसार बिल पार्लियामेण्टमें पेश करनेके लिअे हिन्दुस्तानी नेताओंने दबाव डाला, तो यूनियन सरकारने बताया कि चूंकि तीन पौंडका कर अुठा देनेके खिलाफ नेटालके गोरोंका सख्त विरोध है, अिसलिअे सरकार पार्लियामेण्टमें अैसा बिल पेश करके नेटालके गोरोंको नाराज करनेके लिअे तैयार नहीं है। अिसके अलावा, गोखलेजीको दिलाये हुअे विश्वासकी बात गलत है। अैसा कोअी भी आश्वासन मंत्रियोंने गोखलेजीको अधिकृत रूपमें नहीं दिया। अिस पर गांधीजीने श्री गोखलेसे यह स्पष्टी-

करण मंगवा लिया कि मंत्रियोंने अुनके साथ हुअी मुलाकातमें यह विश्वासपूर्ण आश्वासन दिया है कि पार्लियामेण्टकी अगली बैठकमें तीन पौंडका कर अुठा देनेका बिल पेश करके अुसे अुठा लिया जायगा। परन्तु मंत्रियोंको सच-झूठकी क्या परवाह थी? श्री गोखलेने मंत्रियोंकी मुलाकातके बाद दक्षिण अफ्रीकामें ही अनेक सार्वजनिक सभाओंमें और प्रसिद्ध गोरोंकी मुलाकातोंमें कअी बार जाहिर कर दिया था कि मंत्रियोंने तीन पौंडका कर अुठा लेनेका मुझे आश्वासन दिया है। परन्तु अुस समय अिस बातका किसी भी मंत्रीकी तरफसे जरा भी विरोध नहीं किया गया था। अिस सम्बन्धमें बहुत अूहापोह हुआ। सरकारने अिस प्रश्नको खटाअीमें डालनेकी चाल चलना शुरू किया और अेक बिल पेश किया। अुसमें अेक खास अुम्रसे बड़ी स्त्रियों परसे तीन पौंडका कर अुठा देनेकी सूचना की। अुस समय मि० श्राअिनर और मि० मेरीमैन वगैरा सहृदय सदस्योंने अुसका सख्त विरोध किया; और वह अिस हेतुसे कि तीन पौंडके करवाले बिलका अितना भाग सुधार दिया जायगा, तो फिर भविष्यमें वह कर पूरी तरह अुठाया नहीं जायगा। अिससे अुन्होंने तो अैसा रवैया अख्तियार किया कि तीन पौंडका कर ही भयंकर है, अिसलिअे वह बिलकुल अुठ जाना चाहिये; नहीं तो भले जैसा है वैसा ही रहे। अिस प्रकार सरकारका यह प्रपंच नहीं चला और तीन पौंडका कर लगा ही रहा।

श्री गोखलेके प्रति यानी समस्त हिन्दुस्तानी प्रजाके प्रति यूनियन सरकारके अिस विश्वासघातसे हिन्दुस्तानियोंके दिलोंमें भारी खलबली मच गयी। अगर श्री गोखलेका और अिसलिअे सारे हिन्दुस्तानका घोर अपमान हिन्दुस्तानी लोग सहन कर लेते, तो वे 'निर्जीव और निष्प्राण' माने जाते, कायर और निकम्मे समझे जाते।

सरकारकी ये भूलें सुधारने और हिन्दुस्तानियोंको सत्याग्रहकी लड़ाअीमें पड़नेको बाध्य न करनेके लिअे गांधीजीने सरकारसे बहुत कुछ कहा, अनेक सूचनाअें दीं और समझौतेके प्रयत्न किये, परन्तु सरकारने अुन पर कोअी ध्यान नहीं दिया। अिसलिअे अिस विषयमें अप्रैल महीनेकी ३० तारीखसे यूनियन सरकारके मंत्री मि० फिशरके साथ गांधीजीने जो पत्र-व्यवहार किया, वह मअी मासकी २४ तारीखको प्रकाशित कर दिया गया। अिससे यूनियन सरकारका विश्वास-भंग और अुसके विरुद्ध हिन्दुस्तानियोंकी तरफसे शुरू होनेवाली सत्याग्रहकी लड़ाअीकी आवश्यकता सबको मालूम हो गअी।

२

आखिरी लड़ाओकी तैयारी

सरकारने हिन्दुस्तानियोंको केवल धोखा ही नहीं दिया, बल्कि भगवानसे डरकर अपना गुजर चलानेके लिअे अथक मेहनत करनेवाले हिन्दुस्तानियोंको दक्षिण अफ्रीकासे अत्यन्त क्रूरतासे अुखाड़ फेंकनेकी चालें चलीं। अिस बुरे व्यवहारके विरुद्ध हिन्दुस्तानियोंने अत्यंत सच्चा और शुद्ध व्यवहार करके दिखाया। आज तक जो जो समझौते हुअे अुनमें जिस कारणके लिअे लड़ाओ छेड़ी गओ थी अुस पर सत्याग्रही मजबूतीके साथ कायम रहे। मौकेका फायदा अुठाकर न तो अुन्होंने अपनी मांगको थोड़ा बढ़ाया और न अुसे थोड़ा कम किया। फिर भी नीतिके सिद्धान्तोंका ढोंग करनेवाली सरकारने अैसे अनेक आरोप लड़ाओके दिनोंमें हिन्दुस्तानियों पर लगाये। पिछली लड़ाओमें तीन पौंडका कर अुठा देनेकी और हिन्दुस्तानी विवाहोंको जायज करार देनेकी मांगें जोड़ी गओं, तब सद्गुणी (?) जनरल स्मट्सने यही आरोप हिन्दुस्तानियों पर लगाया! सत्याग्रहकी लड़ाओ हो रही हो और अुसके बीचमें सरकार नये नये कारण अुपस्थित करे, तो वे कारण लड़ाओमें अवश्य जोड़े जा सकते हैं और अैसा करना सत्याग्रहीके लिअे जरा भी अनुचित नहीं माना जायगा। अैसा न करें तो प्रतिपक्षी चालाकी करके लोटा पकड़ा कर घड़ा ले जाय और सत्याग्रहियोंको मूर्ख बनाये; साथ ही लड़ाओका अन्त भी न आये। जनरल स्मट्स तो कलम और बरछी दोनोंमें बड़े चालाक ठहरे। वे नीति और सत्याग्रहके सिद्धान्तोंकी सूक्ष्मता अच्छी तरह समझते थे, अिसलिअे हिन्दुस्तानी निरे पोथी-पंडित होते तो अपने ही सिद्धान्तोंमें पूरी तरह फंस जाते। परन्तु जनरल स्मट्सकी यह चालाकी गांधीजीके सामने न चली। हिन्दुस्तानियों पर लगाये गये आरोपोंका करारा जवाब देकर गांधीजीने अुनका मुंह बन्द कर दिया।

अिस तरह अेक तरफ यूनियन पार्लियामेण्टकी बैठक, दूसरी तरफ तीन पौंडके करके बारेमें सरकारका विश्वासघात, तीसरी तरफ अिमिग्रेशन-कानूनका पार्लियामेण्टमें पास होना और चौथी तरफ जज सरलेका हिन्दुस्तानी विवाह-सम्बन्धी निर्णय — अिस प्रकार चारों ही तरफका वातावरण गरमा-

गरम था। अितनेमें ही अेक अैसी खास घटना घटी जो सत्याग्रही हिन्दुस्तानियोंकी परीक्षा करनेवाली थी। दक्षिण अफ्रीकामें अेक बड़ी हड़ताल हुअी। रेलवे वगैरा तमाम सरकारी महकमे अिस हड़तालसे अव्यवस्थित हो गये। अिस हड़तालकी जड़में राज्यक्रान्तिका अुद्देश्य था। दक्षिण अफ्रीकामें कुछ गरम दलके लोगोंको ब्रिटेनके साथ यूनियनका सम्बन्ध जरा भी पसन्द नहीं था और वे दक्षिण अफ्रीकामें ब्रिटिश साम्राज्यका नामोनिशान भी नहीं रहने देना चाहते थे। अैसे लोगोंने अिस हड़तालका कार्यक्रम बनाकर सारे देशमें, खास कर ट्रान्सवालमें, अंधाधुंधी फैला दी। सरकार भी बड़ी परेशानीमें पड़ गअी। अिस विकट अवसर पर हड़तालियोंके नेताओंने गांधीजीसे कहा कि हिन्दुस्तानी भी सत्याग्रहकी अपनी लड़ाअी अिसी समय शुरू कर दें। साधारण राजनीतिकी दृष्टिसे तो यह मौका स्वागत करने लायक था। परन्तु सत्याग्रही गांधीजीने अैसी अनुचित कार्रवाअी करनेसे साफ अिनकार कर दिया और बता दिया कि, "सत्याग्रही विरोधीकी कठिनाअीसे फायदा नहीं अुठाना चाहेगा। अैसी कमजोरी सत्याग्रहीको शोभा नहीं देती। सरकारकी भारी कठिनाअीमें लड़ाअी शुरू करना तो मरतेको मारने जैसा होगा। सत्याग्रहीकी वीरता अैसी नीतिको निन्द्य मानती है।" गांधीजीने हड़तालियोंके नेताओंको और हिन्दुस्तानियोंमें से जो भाअी अिस मौकेसे लाभ अुठानेकी सलाह दे रहे थे अुन्हें भी अैसा ही जवाब दिया।

अैसी वीरता और शुद्ध नीतिकी शत्रु भी तारीफ करता है। अिसका असर समझदार मनुष्यों पर अच्छा पड़ा। सरकार हड़तालसे निपट सकी। अुसने खास खास नेताओंको अेकदम पकड़कर और चुपचाप जहाजमें बिठाकर अिंग्लैंड भेज दिया। सेनाकी सहायता ली और देशमें फौजी कानून जारी कर दिया। दो महीनेकी लगातार कोशिशोंके बाद शान्ति स्थापित हुअी। अिस अर्सेमें हिन्दुस्तानी रुके रहे और अुन्होंने अपनी लड़ाअी नहीं छेड़ी। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी हालतको देखते हुअे यह कार्रवाअी बड़ी चतुराअी भरी कही जायगी। सत्य पर कायम रहकर चलनेवाले मनुष्यकी नीतिमें कअी तरहकी चतुराअियोंका समावेश होता है। सरकारकी अिस कठिनाअीका लाभ अुठानेको हिन्दुस्तानी सत्याग्रही ललचा जाते, तो सरकारकी भारी परेशानीसे फायदा अुठानेके बजाय हिन्दुस्तानी जाति पर गंभीर जोखिम आनेकी पूरी संभावना थी; और शायद सूखेके साथ गीला भी जल जाता।

परन्तु सत्याग्रहियोंकी रक्षा अुनका सत्य करता ही है। अिसी समय श्री गोखलेकी सलाहसे अेक डेप्युटेशन अिंग्लैण्ड भेजा गया। श्री गोखले भी वहीं थे। अुन्होंने बहुत प्रयत्न किये। परन्तु यूनियन सरकारने अपना दुराग्रह नहीं छोड़ा और हिन्दुस्तानियोंकी मांगको भी स्वीकार न करनेका अपना निश्चय बड़ी सरकारको बता दिया।

दक्षिण अफ्रीकाकी हड़ताल खत्म हुअी और सब जगह शान्ति हो गअी, तो गांधीजीने हिन्दुस्तानियोंकी बात छेड़ी। लेकिन बुरा तो अपनी बुराअीसे बाज नहीं आया। सरकारने नया अिमिग्रेशन-कानून पास करके सम्राटकी मंजूरी भी हासिल कर ली। यह मंजूरी सन् १९१३ के जून मासमें मिली। जुलाअीमें यह कानून सरकारी गजटमें प्रकाशित किया गया और अगस्तमें तो अुसके अमलके लिअे अलग अलग विभाग भी स्थापित कर दिये गये। अिस कारणसे हिन्दुस्तानियोंने भी तैयारी की। 'अिण्डियन ओपीनियन' अखबारके जरिये सारे देशके हिन्दुस्तानियोंमें गरमागरम वातावरण फैल गया। लड़ाअीके आसार दिखाअी देने लगे और सितम्बरकी १३ तारीखको गांधीजी तथा सरकारके बीच हुआ सारे महत्त्वपूर्ण मुद्दोंवाला पत्र-व्यवहार प्रकाशित करके हिन्दुस्तानी सत्याग्रहियोंने सत्याग्रहकी घोषणा कर दी और अपनी नीचे लिखी मांगें पेश कीं :

१. दक्षिण अफ्रीकाके किसी भी कानूनमें रंगभेद न रखनेका सिद्धान्त सरकारको मान लेना चाहिये और अुसके अनुसार फ्री स्टेटके कानूनसे जातिभेद दूर होना चाहिये।

२. अेक पत्नीवाले हिन्दुस्तानी विवाहोंको जायज मानना चाहिये।

३. तीन पौंडका कर बिलकुल अुठा देना चाहिये।

४. दक्षिण अफ्रीकामें पैदा हुअे हिन्दुस्तानियोंके केपकॉलोनीमें प्रवेश करनेके हकोंकी रक्षा होनी चाहिये।

५. भविष्यमें हिन्दुस्तानियों पर जो कानून लागू होंगे, अुनका अमल नरमी और न्यायसे करनेकी नीति स्वीकार होनी चाहिये।

अूपरके पांच मुद्दे पेश करके हिन्दुस्तानियोंने सन् १९१३ के सितम्बर मासमें सत्याग्रहकी लड़ाअी शुरू कर दी।

३

'चालीसके चालीस हजार'

अिन सब संधिवार्ताओं और सरकारके साथके पत्र-व्यवहारके दरमियान फिनिक्स आश्रम सत्याग्रहकी लड़ाअीकी तालीमका मुख्य केन्द्र बन गया। वहां रहनेवाले बड़ी अुम्रके सब लोग तो प्रेसका काम करते ही थे, अिसलिअे अखबारके तेज और अुत्साहप्रेरक लेख कम्पोज करते करते शब्दशः अुनके हृदयमें अंकित हो जाते थे। कम्पोजीटर कोअी पेशेवर लोग नहीं थे, वे तो सत्याग्रही योद्धा ही थे। गांधीजीके लेख छपनेसे पहले कम्पोजीटर युवक अुनके वीररसका पान कर लेते थे, और अुनके सत्यके सिद्धान्तोंको अपनी रग-रगमें अुतार लेते थे। सारे दिन खेतीका, शालाका, प्रेसका या और कोअी काम करनेके बाद शामको प्रार्थना पूरी होने पर दिनभरकी घटनाओंकी चर्चा होती। गांधीजी लड़ाअीके मुद्दोंको समझाते थे और अुसके सिलसिलेमें जो प्रश्न पूछे जाते अुनका जवाब देते थे। जेलकी मुश्किलें, जेलकी तालीम, जेलकी खुराक, जेलमें सत्याग्रहीका व्यवहार वगैरा विषयों पर अनेक सवाल गांधीजीसे पूछे जाते और गांधीजी अुनका जवाब देते चले जाते। अमुक कठिनाअीके अवसर पर सत्याग्रहीको किस ढंगसे चलना चाहिये, अिसका निर्णय गांधीजी नीतिकी सूक्ष्मताको कायम रखकर देते थे। अिस प्रकार लड़ाअी शुरू होनेसे पहले डेढ़ महीने तक प्रार्थनाके बाद होनेवाली अेक अेक घंटेकी अिस चर्चामें लड़ाअी-सम्बन्धी आवश्यक ज्ञान गांधीजीसे सबको मिल गया। अनेक शंकाओंका निवारण हो गया, हृदयकी कअी गांठें खुल गअीं और सबके दिलोंमें शुद्ध सत्यके प्रति श्रद्धा अुत्पन्न हो गअी।

अिन प्रसंगोंमें से अेक सुन्दर प्रसंग यहां लिखने जैसा है।

लड़ाअीका वातावरण जमने लगा था। अेक रविवारको मैं प्रेसके कामसे डरबन गया था। जहां जहां हिन्दुस्तानियोंकी दुकान या मकान पर मैं जाता, वहीं सवाल होता, "अब क्या करना है?" यह पूछनेके पीछे किसीके हृदयमें जिज्ञासा होती, किसीके हृदयमें लड़ाअीका अुत्साह मालूम होता, किसीके हृदयमें लड़ाअीके प्रति श्रद्धा जान पड़ती और किसीके हृदयमें लड़ाअीके प्रति

निरुत्साह और अुसके परिणामोंके विषयमें अश्रद्धा मालूम होती थी। बहुतोंके साथ हुअी बातोंमें मुझे आखिरी बात ज्यादा मालूम हुअी और वातावरणमें हिन्दू-मुसलमानोंके बीच कुछ बेदिली भी दिखाअी दी। गंभीर झगड़ेकी कोअी बात नहीं थी, परन्तु आपसमें संकोचकी वृत्ति तो थी ही। हृदयका मिलन नहीं था।

अिस सारे वातावरणका असर लेकर मैं शामकी गाड़ीसे फिनिक्स लौटा। रातको प्रार्थनाके बाद बातें हुअीं। मैंने गांधीजीसे पूछा :

"हमने सरकारके साथ हुआ अंतिम पत्र-व्यवहार प्रकाशित करके और अपनी मांगें पेश करके लड़ाअी शुरू कर दी। परन्तु अभी तक हममें कोअी दोष मुझे मालूम नहीं होता। डरबनमें आज मैं खूब घूमा, परन्तु मुझे लड़ाअीके बारेमें कोअी अुत्साह नजर नहीं आया। अितना ही नहीं, अधिकांश लोगोंमें तो लड़ाअीके बारेमें अश्रद्धा ही भरी है। बहुतेरे लोग यह मानते हैं कि 'गांधीभाअी नाहक पेट दबाकर दर्द खड़ा कर रहे हैं। सिद्धान्तकी और मान-अपमानकी बातको छोड़कर जो कुछ रोटी पैदा होती है अुसे करने दें तो बहुत अच्छा। गोरोंके साथ झगड़ा खड़ा करनेसे तो अुलटे वे हमें ज्यादा दुःख देंगे। अिसके बजाय आजकी स्थितिमें ही रहें तो क्या अच्छा नहीं होगा? जरा मूंछ नीची रखकर चलेंगे। यहां हम रुपया कमानेको आये हैं, बरबाद होनेको नहीं आये। स्वाभिमान रखना होता और अुसके लिअे जेलमें जाकर खराब होना होता तो यहां किसलिअे आते!'" अैसी जो साफ साफ बातें बहुतसे भाअियोंने मुझसे की थीं वे सब मैंने गांधीजीको सुना दीं। अुन परसे मेरे हृदय पर जो असर हुआ था अुससे दुःखी होकर मैंने पूछा : "बापूजी, अिस यूनियन सरकारके साथ लड़नेमें हमारी ताकत कितनी है? सात सालसे सत्याग्रहकी लड़ाअी शुरू हुअी है, परन्तु अुससे हमें कितना बल मिला? और अितनी बड़ी सरकारके साथ लड़नेके लिअे हमारे पास आदमी कितने हैं? क्या आपने अिसका हिसाब लगाया है?

गांधीजीने हंसते-हंसते जवाब दिया : "मैंने तो रात-दिन हिसाब लगाया है। फिर भी तुम गिन लो। हमारे सत्याग्रही कौन अपरिचित हैं?"

मैंने फिनिक्ससे ही शुरुआत की। नेटाल, ट्रान्सवाल और फिर केप-कॉलोनीमें से सत्याग्रहकी लड़ाअीमें अन्त तक जूझनेवाले योद्धाओंके नाम मैं अंगुलियोंके पोर पर गिनने लगा। तीनों प्रान्तोंके नाम गिन लेनेके बाद जब

अेक भी नया नाम मुझे या गांधीजीको याद नहीं आया, तब कुल संख्या चालीसकी हुअी। मैंने कहा :

"बापूजी, चालीस पूरे हो गये।" गांधीजीने गंभीर स्वरमें पूछा : "परन्तु ये चालीस योद्धा कैसे हैं?"

मैंने अिस प्रश्नका मर्म मनमें समझकर जवाब दिया: "ये चालीस अैसे हैं जो अन्त तक जूझेंगे; वे जीकर भी जीतेंगे और मरकर भी जीतेंगे।"

गांधीजी यह सुनकर अपूर्व जोशमें आ गये और बोल अुठे: "बस, बस। अैसे चालीस सत्याग्रही योद्धा, प्राणोंकी बाजी लगाकर अन्त तक जूझनेवाले चालीस सत्याग्रही योद्धा काफी हैं। तुम देख लेना अैसे चालीसके चालीस हजार हो जायेंगे!" गांधीजी यह वाक्य बोलते समय बहुत भावावेशमें आ गये। अुनके रोंगटे खड़े हो गये। और वे आगे बोले: "भले ही ये चालीस भी न हों; मैं अकेला ही गोखलेजीके अपमानका बदला लेनेको काफी हूं। कितनी ही बड़ी सल्तनत हो, परन्तु गोखलेजीके साथ विश्वासघात करनेवाले और अुनका अपमान करनेवालेके खिलाफ मैं अकेला ही काफी हूं। जब तक गोखलेजीको दिया हुआ वचन नहीं पाला जायगा, तब तक पागल बनकर मैं गोरोंका द्वार खटखटाअूंगा। गोखलेजीका अपमान! यह हो ही कैसे सकता है? यह कैसे सहन हो सकता है?"

सब शान्त होकर सुनते रहे। हमारे हृदयमें जो कुछ अश्रद्धा थी वह अिस अजेय श्रद्धाकी प्रचंड अग्निमें जलकर भस्म हो गअी। आज भी वह प्रसंग मेरे स्मृति-पटल पर ताजा ही है। गांधीजीकी वही भव्य मुखाकृति आंखोंके सामने खड़ी हो जाती है। और अुसी हृदयके करुणापूर्ण निश्चयकी प्रतिध्वनि कानोंसे टकराती है।

लड़ाअी हुअी, अुसका अन्त आया और समझौता भी हुआ। अुसके बाद अिस लड़ाअीमें कितने मनुष्योंने भाग लिया, यानी कितने आदमी जेलमें गये थे, जेलका खतरा अुठाकर भी हड़तालमें शामिल हुअे थे और जेलमें जानेकी कोशिश करने पर भी पकड़े नहीं गये थे, अिसकी गिनती करने बैठे तो कुल तादाद चालीस हजारकी हुअी। मैं चौंका। मुझे अुस रातकी और अुस समयकी भविष्यवाणी याद आअी: "चालीसके चालीस हजार हो जायेंगे!"

४

शुभ आरम्भ

लड़ाओीकी रणभेरी बजने लगी। हिंसक लड़ाओी हो तो हजारों आदमी केसरिया बाना पहनकर निकलें, शस्त्रास्त्रके भंडार खाली हो जायं, तोपखाने खाली हो जायं, भयंकर और प्राण-घातक जहरीले शस्त्रोंसे मनुष्य अपने मानव-बंधुओंका खून चूसनेके अुत्साहमें पागल बन जायं; जो विपक्षका है वह हमारा शत्रु है, अैसा मानकर अुसमें से जितनोंको मारा जा सके अुतनोंको मारकर वाहवाही या अिनाम लेनेकी अिच्छासे प्रेरित होकर मनुष्यके बजाय पशुवृत्ति धारण किये हुअे मानव-पशुओंके झुंडके झुंड रणक्षेत्रमें झोंक दिये जायं और बादमें वे अेक-दूसरे पर भूखे गीधोंकी तरह टूट पड़ें। परन्तु अिस तरहकी कोओी धांधली फिनिक्स आश्रममें नहीं थी। थोड़े दिन बाद दक्षिण अफ्रीकाकी यूनियन सरकारको हिला देनेवाली जो लड़ाओी लड़नी थी, अुसकी तैयारी देखनेके लिअे कोओी फिनिक्स आश्रममें आता तो अुसे कुछ भी पता न चलता। वह बेचारा जैसे आता वैसे ही लौट जाता! किस बातकी तैयारी? औरोंको मारनेकी? यहां तो औरोंको मारनेकी मनाही थी। तब तैयारी किस बातकी? स्वयं मर मिटनेकी? हां, पर अुसके लिअे बाहरी शस्त्र-साधनोंकी या बाहरी तालीमकी कोओी जरूरत नहीं थी। अिसके अलावा, अिस अहिंसक लड़ाओीमें मर्द ही अकेले भाग ले सकते हों अैसी बात नहीं थी। सिर्फ नौजवान ही भाग ले सकते हों अैसी भी बात नहीं थी। स्त्री-पुरुष, फिर वे शरीरसे बलवान हों या कमजोर, तन्दुरुस्त हों या रोगी, सभी भाग ले सकते थे। अरे, बूढ़ी मां या छोटा बच्चा तक अुसमें भाग ले सकता था। अुसके लिअे केवल हृदयकी सत्याग्रही वृत्ति ही आवश्यक थी। अुसे सिखानेके लिअे शिक्षा-शालाअें खोलनेकी जरूरत नहीं थी। आश्रमका वातावरण ही अुसकी तालीम दे रहा था।

अिस आखिरी लड़ाओीमें दो प्रचंड शक्तियोंकी वृद्धि हो गओी। आज तक तो किसी स्त्रीकी अिच्छा होने पर भी अुसे लड़ाओीमें शामिल होनेकी मनाही की जाती थी। परन्तु अिस लड़ाओीमें हिन्दुस्तानी स्त्रियोंके स्त्रीत्व पर

किये गये हमलेका विरोध करना था। अिसमें तो हिन्दुस्तानी स्त्रियोंके स्वाभिमानकी रक्षा करनेका सवाल था। अिसीलिअे यह फैसला हुआ कि स्त्रियोंको भी जरूर शरीक होना चाहिये। अिसी तरह गिरमिटिया मजदूरोंको आज तक लड़ाअीमें शामिल होनेकी सलाह या प्रेरणा नहीं दी जाती थी, परन्तु तीन पौंडके करकी लड़ाअीमें भाग लेना अुनका भी फर्ज हो गया। और हजारों गिरमिटिया मजदूर भी अिस लड़ाअीमें भाग ले सके। अिस प्रकार ये दो शक्तियां अिस लड़ाअीमें और जुड़ गअीं।

परन्तु अिन शक्तियोंको पैदा करके अुनका संग्रह करनेकी भी ताकत होनी चाहिये। गांधीजीको विश्वास तो था कि बहुतसी हिन्दुस्तानी बहनें जेल जानेको तैयार होंगी। परन्तु स्वयं मरे बिना स्वर्ग जानेकी बात किसीने सुनी है? गांधीजीको लगा कि कस्तूरबा अिस लड़ाअीके लिअे तैयार हो जाय और जेलमें चली जाय, तो सारी बाजी जीत ली जाय। परन्तु बाको तैयार कैसे किया जाय? अुसे हुक्म देकर जबरदस्ती तैयार करनेमें क्या मजा है? बादमें अैसे बल पर विश्वास कैसे रखा जा सकता है? कस्तूरबामें यह शक्ति तो जरूर है कि अेक बार किसी बातको वह समझ ले तो फिर अुस पर डटी रहती है। परन्तु यह भी सवाल है कि अुस बातको समझा कर अुसके लिअे बामें दृढ़ता कैसे पैदा की जाय? गांधीजी अिसीका विचार करते रहते थे और मौका मिलने पर अुन्होंने यह कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया।

अेक दिन सदाके नियमानुसार पाखाना साफ करनेके बाद नहा-धोकर मैं लगभग साढ़े नौ बजे भोजनालयमें गया। गांधीजी भी अुसी समय शालासे आये। कस्तूरबा तो वहां थीं ही। रोटीका आटा गूंध कर अुन्होंने रख दिया था। अुन्होंने रोटियां बेलना शुरू किया और मैंने सेंकना शुरू किया। गांधीजी फुटकर काम कर रहे थे। काम करते करते गांधीजीने अेकाअेक कस्तूरबासे पूछा : "तुम्हें कुछ मालूम हुआ?"

"क्या?" कस्तूरबाने जिज्ञासासे पूछा।

गांधीजीने जरा हंसते-हंसते जवाब दिया : "आज तक तुम मेरी विवाहिता स्त्री थीं। लेकिन अब तुम मेरी विवाहिता स्त्री नहीं रहीं।"

कस्तूरबाने जरा भौंहें चढ़ाकर कहा : "यह किसने कहा? तुम तो रोज नअी नअी समस्यायें ढूंढ़ निकालते हो!"

गांधीजी हंसते हंसते बोले : "मैं कहां ढूंढ़ निकालता हूं? वह जनरल स्मट्स कहता है कि ओसाओ विवाहकी तरह हमारा विवाह अदालतमें दर्ज नहीं हुआ, असलिओ वह गैरकानूनी माना जायगा। और असलिओ तुम मेरी विवाहिता स्त्री न मानी जाकर रखेल मानी जाओगी।"

कस्तूरबाने गुस्सेमें आकर कहा : "कहा अुसने अपना सिर! अुस निठल्लेको अैसी-अैसी बातें कहांसे सूझती हैं?"

गांधीजीने संक्षेप करके कहा : "परन्तु अब तुम स्त्रियां क्या करोगी?"

"हम क्या करेंगी?" कस्तूरबाने पूछा।

"हम लड़ते हैं वैसे तुम भी लड़ो। सच्ची विवाहिता स्त्री बनना हो और रखेल न बनना हो, साथ ही तुम्हें अपनी अिज्जत प्यारी हो, तो तुम भी सरकारके खिलाफ लड़ो।"

"तुम तो जेलमें जाते हो!"

"तुम भी अपनी अिज्जतके खातिर जेलमें जानेको तैयार हो जाओ।" गांधीजीका वाक्य सुनकर कस्तूरबा आश्चर्यमें पड़ कर बोलीं : "जेलमें! औरतें भी कहीं जेलमें जाती हैं?"

"हां, जेलमें। स्त्रियां जेलमें क्यों नहीं जा सकतीं? पुरुष जो सुख-दुःख भोगते हैं, वह स्त्रियां क्यों नहीं भोग सकतीं? रामके पीछे सीता गओ। हरिश्चन्द्रके पीछे तारामती गओ। नलके पीछे दमयन्ती गओ। और सबने जंगलमें बेहद दुःख अुठाये।"

गांधीजीका विवेचन सुनकर कस्तूरबा बोल अुठीं : "वे सब तो देवियोंके समान थीं। अुनके कदमों पर चलनेकी शक्ति हममें कहां है?"

गांधीजीने गंभीरतापूर्वक कहा : "असमें क्या है? हम भी अुनकी तरह व्यवहार करें तो अुनके जैसे हो सकते हैं, देवता बन सकते हैं। रामके कुलका मैं और सीताके कुलकी तुम। मैं राम बन सकता हूं और तुम सीता बन सकती हो। धर्मके खातिर अगर सीता रामके पीछे न गओ होती और महलमें ही बैठी रहती, तो अुसे कोओ सीतामाता न कहता। हरिश्चन्द्रके सत्यव्रतके खातिर तारामती बिकी न होती, तो हरिश्चन्द्रके सत्यव्रतमें कमी रह जाती। अुसे कोओ सत्यवादी न कहता और तारामतीको कोओ सती न कहता। दमयन्ती नलके पीछे जंगलोंके दुःख सहनेमें शामिल न हुओ होती, तो अुसे भी कोओ सती न कहता। अब अगर तुम्हें अपनी

आबरू रखनी हो, मेरी विवाहिता स्त्री बनना हो और रखेल समझी जानेके कलंकसे मुक्त होना हो, तो तुम सरकारके खिलाफ लड़ो और जेलमें जानेको तैयार हो जाओ।"

कस्तूरबा चुप रहीं। मैं देखता रहा कि बा क्या जवाब देती हैं। यह सब सुननेमें मुझे मजा आ रहा था। अितनेमें कस्तूरबा बोल अुठीं : "तो तुम्हें मुझे जेलमें भेजना है न? अब अितना ही बाकी रहा है। खैर! परन्तु जेलका खाना मुझे अनुकूल आयेगा?"

"मैं तुमसे नहीं कहता कि तुम जेलमें जाओ। तुम्हें अपनी अिज्जतके खातिर जेलमें जानेकी अुमंग हो तो जाओ। और जेलका भोजन अनुकूल न आये तो फलाहार करना।"

"जेलमें सरकार फलाहार देगी?"

गांधीजी फलाहार प्राप्त करनेका अुपाय बताते हुअे बोले :

"फलाहार न दे तब तक वहां अुपवास करना।"

कस्तूरबाने हंसकर कहा : "क्या खूब! यह तो तुमने मुझे मरनेका रास्ता बता दिया। मुझे लगता है कि जेलमें गअी तो मैं जरूर मर जाअूंगी।"

गांधीजी सिर हिला कर खिलखिला पड़े और बोले :

"हां हां, मैं भी यही चाहता हूं। तुम जेलमें मर जाओगी तो मैं जगदम्बाकी तरह तुम्हें पूजूंगा।"

"अच्छा, तब तो मैं जेल जानेको तैयार हूं।" कस्तूरबाने दृढ़तासे अपना निश्चय बताया।

गांधीजी खूब हंसे। अुन्हें बड़ा आनन्द हुआ। कस्तूरबा किसी कामसे बाहर गअीं कि मौका देखकर गांधीजीने मुझसे कहा, "बामें यही खूबी है कि वह मन या बेमनसे मेरी अिच्छाके अनुसार चलती है।"

गांधीजीने तो यह वाक्य अपने गृहस्थाश्रम धर्मके सिलसिलेमें कहा था। परन्तु अुनकी अिच्छानुसार कस्तूरबाने व्यवहार किया, अिससे भारतीय स्त्रियोंके अुद्धारका मार्ग खुल गया। और आज हिन्दुस्तानमें स्त्रीशक्तिकी जो पवित्र और प्रचंड ज्वाला प्रगट हो गअी है, मुझे लगता है कि अुसका बीज अिसी अवसर पर बोया गया था।

पिछले प्रकरणवाली घटना हुअी अुसी दिन श्री मगनलाल गांधी और श्री छगनलाल गांधीकी पत्नीसे पूछा गया। वे भी तैयार ही थीं। गांधीजीके

रंगूनवाले मित्र डॉ० प्राणजीवनदास मेहताकी पुत्री सौ० जयाकुंवर बहन भी वहीं रहती थीं। अुनकी भी लड़ाअीमें शामिल होनेकी प्रबल अिच्छा थी। फिर तो यह व्यवस्था होने लगी कि कौन जेलमें जाय और कौन फिनिक्समें रहकर प्रेसकी, अखबारकी और वहां रहनेवाले छोटी अुम्रके बच्चोंकी देखरेख करे। जेल जानेमें स्पर्धा होने लगी। अंतमें सारा निर्णय गांधीजीकी अिच्छा पर छोड़ा गया। गांधीजीने श्री मगनलाल गांधीको हुक्म दिया कि तुम जेल जानेकी अिच्छा न करो। जेलसे भी जेलके बाहर ज्यादा विकट कर्तव्य पूरा करना था। और अुस कामको कर सकनेकी शक्तिवाले तो श्री मगनलाल गांधी अकेले ही थे। अुन्होंने गांधीजीकी यह अिच्छा मान ली। अिस तरह योद्धाओंकी तैयारी करके गांधीजी जोहानिसबर्ग गये और अिसका भी विचार किया कि वहांके योद्धाओंका कैसा व्यूह रचा जाय। परन्तु अिस बार तो सारी लड़ाअी नेटालमें ही होनेवाली थी, अिसलिअे लड़ाअीका मुख्य केन्द्र नेटालमें ही रहना जरूरी था। फिनिक्सको लड़ाअीका केन्द्रस्थान बनाया गया। दूसरी ओर हिन्दुस्तानमें श्री गोखलेको भी लड़ाअीकी चिंता हुअी। तीन पौण्डके करके मामलेमें यूनियन सरकार द्वारा श्री गोखलेके साथ विश्वासघात करनेसे गांधीजीके दिलको कितनी सख्त चोट लगी होगी अिसका खयाल श्री गोखलेको था। और अुन्हें अैसा भी लगा कि जब सरकारने अैसी निन्द्य कार्रवाअी की है, तो वह हिन्दुस्तानियोंको कुचलनेके लिअे अपनी पूरी शक्ति काममें लेगी और लड़ाअी लंबे समय तक चलेगी। अिस प्रकार लड़ाअी लम्बी चली तो रुपयेकी भी जरूरत पड़ेगी। श्री गोखलेने गांधीजीसे हिसाब मांगा कि फिलहाल कितने आदमी लड़ाअीमें भाग लेनेको तैयार हैं और कितने रुपयेकी जरूरत होगी। गांधीजीने बताया कि "अभी तो ज्यादासे ज्यादा साठ और कमसे कम सोलह सत्याग्रही हैं। और रुपयेके लिअे आप कोअी चिन्ता न करें।" यह सोलहकी संख्या जो अुन्होंने बताअी वह फिनिक्स आश्रमके दलकी थी। अिस दलके बारेमें गांधीजीको अैसा विश्वास था कि धधकती आगमें कूद पड़नेका हुक्म अुनकी तरफसे मिले तो भी अुसमें कोअी जी नहीं चुरायेगा। सभी आश्रममें रहनेवाले गांधीजीके अपने आदमी थे। बाहरके दो सज्जन थे: (१) प्रसिद्ध देशभक्त पारसी रुस्तमजी सेठ और (२) जोहानिसबर्ग वाले बैरिस्टर जोसफ रॉयपनके भाअी सोलोमन रॉयपन। श्री रुस्तमजी सेठ तो यह जानकर कि लड़ाअीका

निश्चय हो गया है और कस्तूरबा भी तैयार हो गअी हैं, आग्रहपूर्वक अुम्मीदवारी करने लगे। परन्तु अुनके साथ अुनके पुत्र वीर सोराबजीने स्पर्धा शुरू कर दी। अन्तमें श्री रुस्तमजी सेठ जीते। "बा जेलमें जायं तब मैं किसकी व्यवस्था करनेको रहूं? व्यवस्था करनी हो तो तुम करना। व्यवस्था न हो तो भले अव्यवस्था हो जाय। परन्तु मैं तो पहले ही दलमें जाअूंगा।" अैसा निश्चय पुत्रको बताकर वे डरबन छोड़कर दस दिन पहले ही फिनिक्समें आ डटे थे। श्री सोराबजी भी पिताजीको जेलमें भेज कर घर नहीं बैठे रहे। अुन्होंने जेलसे भी ज्यादा कठिनाअियां अुठाअीं और अधिक काम किया। बादकी बड़ी हड़तालमें बेकार होनेवाले मजदूरोंको भोजन बांटनेके लिअे वे सारे नेटालमें घूमे और गरीब मजदूरोंको अुन्होंने लड़ाअीमें टिकाये रखा। श्री सोलोमन रॉयपन पिछले दो माससे फिनिक्समें आकर रह रहे थे। अिसलिअे अुनके बहुत आग्रहके कारण अुन्हें भी शामिल किया गया। अिस प्रकार पहला दल चार स्त्रियों और बारह पुरुषोंका बना। अुनके नाम ये हैं:

(१) सौ० कस्तूरबा गांधी
(२) सौ० जयाकुंवर मणिलाल डॉक्टर
(३) सौ० काशीबहन छगनलाल गांधी
(४) सौ० संतोकबहन मगनलाल गांधी
(५) सेठ पारसी रुस्तमजी जीवणजी घोरखोदू
(६) श्री छगनलाल खुशालचन्द गांधी
(७) श्री रावजीभाअी मणिभाअी पटेल
(८) श्री मगनभाअी हरिभाअी पटेल
(९) श्री सोलोमन रॉयपन
(१०) श्री रामदास मोहनदास गांधी
(११) श्री राजू गोविन्द
(१२) श्री शिवपूजन बदरी
(१३) श्री गोविन्द राजुलू
(१४) श्री कुप्पूस्वामी मुदालियार
(१५) श्री गोकुलदास हंसराज
(१६) श्री रेवाशंकर रतनशी सोढा

अिन सोलह आदमियोंका दल निश्चित हुआ। यह भी तय हुआ कि लड़ाअी कब शुरू की जाय। किसीको पता नहीं था। जैसे दो हाथोंसे ताली बजती है, अेक हाथसे नहीं बजती, अुसी तरह लड़नेवाले पक्ष भी दो चाहिये। अेक पक्ष दूसरे पक्षको लड़नेका मौका ही न दे, तो लड़नेकी अिच्छा रखनेवाला पक्ष भी कुछ नहीं कर सकता। अिसलिअे कुछ भी शोर मचाये बिना अचानक हमला करना था।

जहां तक मुझे याद है सन् १९१३ के सितम्बरकी १४ तारीख थी। गांधीजीके फिनिक्सके मकानमें सुबहसे अैसी तैयारियां हो रही थीं, मानो कोअी विवाहोत्सव हो। सबको अपने-अपने पहननेके कपड़े, ओढ़ने-बिछानेके लिअे कम्बल और चादर, पानी पीनेके लिअे प्याला वगैरा सामान फौजी सिपाहियोंकी तरह अपने साथ ही रखना था। सबने याद कर करके अपनी अपनी गठरियोंमें सामान अिस तरह बांधा कि कंधेसे लटकाया जा सके। कस्तूरबाने सबको कुमकुमका तिलक लगाया। दोपहरके बारह बजे। आश्रमके सभी निवासी वहां आ पहुंचे। सब मुख्य खंडमें बैठे। गांधीजीने काले रंगका सूती पतलून और वैसा ही कमीज पहन रखा था। सारे खंडमें शान्ति छाअी हुअी थी। प्रार्थना शुरू हुअी। सबने अेकाग्रतासे भक्त नरसिंह मेहता रचित गांधीजीका प्रिय भजन 'वैष्णवजन' गाया। दूसरा भजन 'सुखदुःख मनमां न आणीअे घट साथे रे घडियां' गाया। प्रार्थना पूरी हुअी। हम सबने अेकके बाद अेक अुठकर गांधीजीको प्रणाम करके अुनके आशीर्वाद लिये। प्रफुल्ल चित्त और हृदयकी आशाभरी अुमंगसे आशीर्वाद देते हुअे गांधीजीने किसीको धप्पा मारा, किसीका कान अैंठा और किसीकी पीठ थपथपाअी। अिस प्रकार सबको अमृत-रस पिलाया। सबने अेक-दूसरेका आलिंगन किया। बिछुड़नेवाले आश्रममें रहनेवालोंसे प्रेमपूर्वक मिले। अिस पवित्र प्रसंगका वर्णन करनेकी शक्ति मुझमें नहीं है। केवल अुसका स्मरण ही कर सकता हूं। हमारे हृदयके अुत्साहका पार नहीं था — मानो रणमत्त रणवीरोंको स्वर्गके द्वारके समान धर्मयुद्ध प्राप्त हुआ हो! अैसे अुल्लासमें अेक घंटा बीत गया। हमने आश्रमको प्रणाम किया। अब तो विजयके आनन्दमें ही भगवान आश्रमके दर्शन कराये, अैसी प्रार्थना करते हुअे हम सब स्टेशनकी तरफ रवाना हुअे। गांधीजी भी अेक छोटे बच्चेको गोदमें लेकर स्टेशन तक हमें बिदा करने आये। हम स्टेशनके नजदीक पहुंचे कि गाड़ी आ गअी। गाड़ी दो मिनट ही ठहरनेवाली थी; अितनेमें डिब्बेकी तलाश

कहां करें? वहांकी रेलोंमें दूसरे दर्जेके डिब्बे हिन्दुस्तानियोंके लिअे अलग रखे जाते थे। परन्तु अिस छोटी लाअिनमें अेक ही डिब्बा होता था। अुसमें आठ मुसाफिर बैठ सकते थे। हम तो शुरूसे ही सोलह आदमी थे। अिसलिअे अलग डिब्बा ढूंढ़नेकी झंझटमें न पड़ कर जो डिब्बा सामने दिखा अुसीमें बैठ गये। हमारा यह कदम रेलके नियमके विरुद्ध था। रेलवे अिन्स्पेक्टरका ध्यान हमारी तरफ जानेसे पहले गाड़ीकी सीटी हो गअी और गाड़ी चल पड़ी। गांधीजीको दूरसे प्रणाम करते करते हम अुनकी दृष्टिसे ओझल हो गये।

परन्तु यहां अेक मुश्किल पैदा हुअी। गाड़ी दूसरे स्टेशन पर खड़ी हुअी कि अिन्स्पेक्टर आया और अुसने हमसे डिब्बेमें से अुतर जानेको कहा। मैंने कारण पूछा तो अुसने कहा: "यह डिब्बा रिजर्व्ड नहीं है, यह गोरोंके लिअे है।" हमने कहा: "सोलह मुसाफिरोंको बैठाने लायक रिजर्व्ड स्थान तुम्हारे पास है ही नहीं। हमें तुम कहां बिठाओगे?"

अुसने कहा: "दूसरी जगह बिठाकर रिजर्व्डका लेबल लगा दूंगा और अुस जगहको रिजर्व्ड बना दूंगा।"

मैंने कहा: "तो फिर भले आदमी, अिसी डिब्बे पर लेबल लगा दो तो यही डिब्बा रिजर्व्ड हो जायगा।"

परन्तु अुसने मेरी बात मानी नहीं। हम काले आदमी चाहे जहां कैसे बैठ सकते थे?

हमने तो निश्चयपूर्वक कह दिया: "हम नहीं अुतरेंगे। तुमसे जो हो सके सो कर लो।"

अुसने स्टेशन-मास्टरको बुलवाया। स्टेशन-मास्टरने हमें पहचान लिया और वह समझ गया कि अिन लोगोंको छेड़नेमें सार नहीं है। अुसने अुस अिन्स्पेक्टरको भी यही सलाह दी। पर मदमें चूर अिन्स्पेक्टरने अुसकी सलाह नहीं मानी। अुसने पुलिसको बुलाया और हमें अुतार देनेको कहा।

हमने कहा कि हमें अुतारना हो तो हमें गिरफ्तार किया हुआ जाहिर करो या हरअेकको अुठा अुठा कर बाहर फेंक दो। अुसके बिना हम नहीं अुठेंगे। वह दोनोंमें से अेक भी काम नहीं कर सकता था। पन्द्रह मिनिटकी धांधलीके बाद गाड़ी आगे चली। तीसरे स्टेशन पर भी वही झगड़ा हुआ। परन्तु वह सफल न हुआ। हम मजबूत रहे। हम अिस निश्चयसे अटल रहे

कि चार सौ मील दूर जाकर गिरफ्तार होनेसे तो यहां घरके आंगनमें पकड़ा जाना ज्यादा अच्छा है। अिन्स्पेक्टर थक गया। चलती गाड़ीमें वह हमारे डिब्बेमें आया और गुस्सेमें बोलने लगा। मैंने कह दिया: "तुम क्रोध करो या न करो अुससे कुछ नहीं होगा। तुम्हारी ताकत हो तो हमें पकड़ लो या हमें अुठा अुठाकर गाड़ीमें से बाहर फेंक दो। अिन दोमें से अेक भी काम तुमसे न हो सकता हो तो समझदारीसे काम लेकर अगला स्टेशन आने पर रिजर्व्डके दो लेबल दोनों डिब्बों पर लगा दो तो सारा झगड़ा मिट जायगा।"

अन्तमें अुसे यही करना पड़ा। कस्तूरबा खुश हुआीं। आनन्दमें आकर मुझसे कहने लगीं: "रावजीभाअी, हमें शुभ शकुन हो गये। हमारा शुभ आरम्भ हुआ। हम जीत गये।"

५

पहली गिरफ्तारी

हमारा दल डरबन होकर रातको जोहानिसबर्ग पहुंचनेवाली डाकगाड़ीमें बैठा। हमें तीसरे दर्जेका अेक सीधा जानेवाला डिब्बा मिल गया, जिसमें हम सबका समावेश हो गया। दूसरे दिन चार बजे न्यूकैसल स्टेशन पर श्री कैलनबैक हमसे मिलने आये। वे वॉलक्रस्टमें छावनी डाले बैठे थे और सरकार यदि हमें वहां अुतार दे और पकड़ ले, तो हमारी व्यवस्थाके लिअे अुन्होंने वहां तजवीज कर रखी थी। नेटालका आखिरी स्टेशन चार्ल्सटाअुन आने पर वे हमसे मिलकर चले गये। गाड़ी वहांसे चली और वॉलक्रस्ट स्टेशन आया। वॉलक्रस्ट ट्रान्सवालकी हदमें पहला स्टेशन था। वॉल नामकी नदीको पार करनेके बाद वह पहला गांव आता है। अिस परसे अुसका नाम वॉलक्रस्ट पड़ गया है। ट्रान्सवाल अिलाकेका नाम भी अिसी तरह पड़ा है। ट्रान्स = अुस पार; वॉल नदीके अुस पारका प्रदेश ट्रान्सवाल कहलाया। सरकारके अिमिग्रेशन-कानूनके अनुसार यहां अिमिग्रेशन-अफसर मुकर्रर किया गया था। नेटालसे आनेवाली कोअी भी गाड़ी यहां ठहरती थी। अिमिग्रेशन-अफसर हर मुसाफिरकी जांच करता था। मुसाफिरके पास ट्रान्सवालका निवासी होनेका परवाना होता तो अुसे देखकर वह जाने देता

था। जिनके पास अैसा परवाना न होता अुन्हें पुलिसके हवाले कर दिया जाता था। अिस प्रकार पुलिसकी देखरेखमें जांच करके अिमिग्रेशन-अफसर अनुमति देता तब गाड़ी वहांसे आगे बढ़ती। हमें ट्रान्सवालका यह अिमिग्रेशन-कानून तोड़ना था। परन्तु हमें भय था कि लड़ाअी करनेकी सरकारकी अिच्छा न हो तो वह हमें थका भी सकती है। हमारे दलमें लगभग सभी गांधीजीके सगे-सम्बन्धी और अपने आदमी थे। सबके नाम जान लेती तो सरकार किसीको न पकड़ती और जाने देती। अैसा होता तो हमारा पहला ही वार व्यर्थ जाता। अिसलिअे हमने निश्चय किया कि किसीका पूरा नाम न बतायें और झूठ भी न बोलें। यानी कस्तूरबा अपना नाम सिर्फ कस्तूरबा ही बतायें और कुछ न कहें। और, सबकी तरफसे अेक ही आदमी बात करे यह भी तय किया। अुसके लिअे श्री छगनलाल गांधीको चुना गया। और किसीसे पूछा जाय तो हमने पूछनेवालेसे यह कहनेका निर्णय किया: "क्या पूछते हो? तुम गुजरातीमें बोलो।"

स्टेशन आया। अिमिग्रेशन-अफसर हमारे डिब्बेमें आया। अुसने ट्रान्सवालका पास मांगा। श्री छगनलालने बताया, "पास हमारे पास नहीं है।"

अमलदारने कहा: "पासके बिना तुम कैसे जा सकते हो?"

श्री छगनलाल: "हमें जोहानिसबर्ग जाना है और पास तो किसीके पास नहीं है।"

अफसर: "अिस प्रकार मैं कैसे जाने दूं? तुम सब नीचे अुतर जाओ।"

श्री छगनलाल: "हम यों तो नीचे नहीं अुतरेंगे। हमें नीचे अुतारना हो तो गिरफ्तार कर लो।"

यह वाक्य सुनकर वह चौंका। अुसने सबकी तरफ ताक ताक कर देखा। कोअी भी चोर-डाकू नजर नहीं आया। सब अुसे सीधे-सादे देहाती जैसे मालूम होते थे। परन्तु वह सोचमें पड़ गया। दूसरे अफसरके साथ कुछ सलाह करके अुसने हमसे फिर पूछा: "तुम अुतरोगे नहीं?"

श्री छगनलाल: "हमें गिरफ्तार नहीं करोगे तो हम नहीं अुतरेंगे। हमें तो जोहानिसबर्ग जाना है। हमें अपराधी मानकर पकड़ लो तो हम फौरन अुतर जायेंगे।"

अफसर: "अच्छा तो मैं तुम्हें पकड़ता हूं। तुम सब मेरे कैदी हो। सब नीचे अुतर जाओ।"

हम सब तैयार ही थे। चुपचाप नीचे अुतर गये। स्टेशन पर गोरों और हिन्दुस्तानियोंकी भीड़ जमा हो गअी। यह क्या मामला है? क्या सत्याग्रहकी लड़ाअी छिड़ गअी? अफसरोंको यह शंका हुअी। हमें नीचे अुतारनेके बाद अुन्होंने सबके नाम श्री छगनलाल गांधीसे जान लिये। अुन्होंने संकेतके अनुसार सबके नाम दे दिये। बादमें अफसर सभ्यतासे बोला:

"आप सब मेरे कैदी जरूर हैं, परन्तु आपको रखनेके लिअे मेरे पास जगह बिलकुल नहीं है। सिर्फ दो हब्शियोंके पड़े रहने लायक अस्वच्छ स्थान मेरे पास है। अिसलिअे आप यहां अपनी सुविधायें जुटा लें तो आपके लिअे ठीक रहेगा। आप जैसे लोगोंको मैं मुसीबतमें नहीं डालना चाहता।"

श्री छगनलालने कहा: "परन्तु हम आपको वचन नहीं देते कि हम आगे नहीं चल देंगे।"

अफसर हंसकर बोला: "मुझे विश्वास है कि आप भागेंगे नहीं। परन्तु कल दस बजे सब मेरे दफ्तरमें आ जाअिये।"

श्री कैलनबैकने पहलेसे ही अिंतजाम कर रखा था और वॉलक्रस्टके हिन्दुस्तानी व्यापारी हमें लेनेके लिअे स्टेशम पर आये भी थे। अुनमें से मि० अे० अेम० बदात नामके अेक मुसलमान व्यापारीके यहां हमें ठहराया गया।

दूसरे दिन दस बजे हम अिमिग्रेशन-विभागके दफ्तरमें गये। अफसरको जो विधि करनी थी अुसे करके वह हमसे कहने लगा: "अब आप ठहर जाअिये। अेक दो दिन आपको रुकना पड़ेगा। मुझे जब तक सरकारका हुक्म न मिल जाय तब तक मैं कोअी जल्दी नहीं कर सकता।"

हमें वहां छह दिन हो गये। परन्तु अफसर कोअी फैसला नहीं दे सका। नेटाल और जोहानिसबर्गसे सब हमें पूछते रहते कि तुम्हारा क्या हुआ? क्यों अभी तक निपटारा नहीं हो रहा है? हमारे बारेमें सरकार जो कदम अुठाती अुस परसे हमें आगेका व्यूह रचना था। दूसरी तरफ सरकारके लिअे भी यह कोअी खेल नहीं था। वह हमें सजा देती तो यह निश्चय हो जाता कि सरकारने हिन्दुस्तानियोंके साथ लड़ाअी छेड़ दी है। जनरल स्मट्सको लड़ाअीके रंगका कुछ अनुभव था। अिसलिअे हमें सजा देनेका

कदम अुनके लिअे गंभीर विचारका विषय बन गया । लगभग चार-पांच दिनके सलाह-मशविरेके बाद वहांका मंत्रि-मंडल निर्णय पर पहुंचा और रविवारके दिन सवेरे अिमिग्रेशन-अफसरको हुक्म मिला कि पहले तो हमें ट्रान्सवालसे निर्वासित किया जाय और फिर भी यदि हम अुसका हुक्म न मानें तो हमें पकड़कर सजा दे दी जाय। रविवारको सुबह ९ बजे दो पुलिस अफसर हमारे मकान पर आये और अुन्होंने वारंट दिखाये । निर्वासनके वारंटका अर्थ हम समझते थे । हमने सोच लिया था कि सरकार अैसा भी कर सकती है। वारंट मिलते ही हम सब तैयार हो गये। पुलिस अफसरोंने कहा कि आपका सामान हो तो ले लीजिये। हमने कहा: "अिस तरह क्यों तंग करते हो? बादमें हमें यहीं होकर तो ले जाओगे। तब लौटते हुअे हम अपना सामान ले जायेंगे।"

पुलिस अफसर समझ गये । वे हंसे और हम सब रवाना हुअे । अखबारोंमें 'पैसिव रेज़िस्टर्सका वॉलक्रस्टमें जमाव' अैसे बड़े शीर्षकसे खबर छपी । 'पैसिव रेज़िस्टर्स' कैसे हैं, यह देखनेको बहुतसे गोरे झुंड बनाकर आये। शायद देखनेके बाद अुन्होंने अपने मनमें हमें मूर्ख या पागल समझा होगा । गांवसे करीब अेक मील पर वॉल नदी बहती है । छोटेसे झरने जैसी है। अुस पर अेक पक्का पुल बना हुआ है। अुस पुलके बीचमें सफेद पत्थरकी लकीर खींची हुअी है । अुस लकीरको ट्रान्सवाल और नेटालके बीचकी हदका निशान माना गया है । वहां हमें ले गये । अुस लकीरके अन्दर हमें खड़े रखकर दोनों तरफकी दीवारों पर खड़े रहकर पुलिस अफसरोंने सम्राटके नाम पर हमें निर्वासन देनेका ढिंढोरा पढ़कर सुनाया और फिर हलके हाथसे पीछेसे जरा नेटालकी हदकी तरफ हमें धकेल दिया। हमने अेक कदम नेटालकी हदमें रखकर वापस दूसरा कदम ट्रान्सवालमें रखा। अिसलिअे पुलिस अफसरोंने कहा: "तुम सरकारका हुक्म तोड़कर ट्रान्सवालमें घुसे, अिसलिअे हम तुम्हें पकड़ते हैं।"

यह तो छोटे बच्चोंका खेल हो गया। अितनी क्रियामें हमें निर्वासित कर दिया, सम्राटकी सरकारका अनादर करके हम वापस देशमें भी आ गये और हमें पकड़ भी लिया गया। हम सब जैसे गये थे वैसे ही वापस आ गये । हम मुकामके सामने आये और अपना सामान हमने ले लिया। हमें ले जाकर अेक बंगलेमें रखा गया और बताया गया कि हमारा मुकदमा मंगलवार २३ ता० को चलेगा।

मंगलवारको हमें वॉलक्रस्टके मजिस्ट्रेटकी अदालतमें ले जाया गया। सोलहों आदमियोंको अिकट्ठा खड़ा रखा गया। हम पर यह आरोप लगाया गया कि, "तुम ट्रान्सवालके निवासी होनेका हक नहीं रखते। तुम खुद भी अिससे अिनकार करते हो कि तुम्हारे पास अैसा हक है। तुम्हारे पास वैसा परवाना है अिससे भी तुम अिनकार करते हो। अिसलिअे तुमको निर्वासित किया गया। अुस हुक्मका अनादर करके तुम वापस ट्रान्सवालमें घुसे। यही आरोप तुम पर लगाया जाता है।"

हमने अिस आरोपको स्वीकार किया।

हमसे पूछा गया: "तुम्हें अिस बारेमें कोअी सफाअी देनी है?"

हमने कहा: "हमें कोअी सफाअी नहीं देनी है।"

मजिस्ट्रेटने फैसला सुनाया: "तुम सबको तीन तीन महीनेकी सख्त सजा दी जाती है।"

आजकल हिन्दुस्तानकी सत्याग्रहकी लड़ाअीमें मजिस्ट्रेटोंकी अदालतोंमें चलनेवाले हमारे मामलोंमें जो नाटक होता है, अुसके साथ तुलना करने पर ट्रान्सवालका हमारा यह मुकदमा बहुत ही हंसने लायक मालूम होगा। सोलह आदमियोंका अिकट्ठा मामला, सब पर अिकट्ठा अभियोग, सबके खिलाफ अेक ही अिकट्ठी शहादत और सबको अेक ही अिकट्ठी सजा। अिस तरह सोलह आदमियोंको मुकदमा चलाकर सजा देनेमें अदालतको कोअी आधा घंटा लगा होगा।

रूटरके प्रतिनिधि और अखबारोंके प्रतिनिधि वहां मौजूद ही थे। अुन्होंने देश-विदेशोंमें चारों ओर समाचार भेजे कि कस्तूरबा वगैरा सोलह आदमियोंके पहले दलको सजा दी गअी। बाहर कैसा अूहापोह मचा होगा, अिसका हमें पता नहीं चला। चार बहनोंके सिवा सभी पुरुषोंको हथकड़ियां पहना दी गअीं और वहांकी जेलमें ले गये।

६

दक्षिण अफ्रीकाके जेलखाने

अब आगे क्या लिखा जाय, यह सवाल पैदा हो गया है। बाहर क्या क्या हुआ यह लिखूं या जेलके भीतर हमें क्या क्या अनुभव हुअे यह लिखूं। जिस समाजमें यह पढ़ा जायगा, अुस समाजके बहुतसे भाअी-बहनोंको कअी बार जेलका अनुभव हुआ होगा। अुन्हें मेरे अिस वर्णनमें रस आयेगा या नहीं, यह भी अेक सवाल है।

लेकिन मुझसे सुनी हुअी बातों परसे मित्रोंने यह लिखनेका मुझसे आग्रह किया है। अिसलिअे मैं दक्षिण अफ्रीकाकी जेलोंका खयाल देनेकी यहां कोशिश करता हूं। लड़ाअीका क्या हुआ वगैरा बातें तो गांधीजीके ही शब्दोंमें 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' के दो भागोंमें मिल जाती हैं। अुससे ज्यादा मैं और क्या दे सकता हूं? लेकिन गांधीजीने स्वयं 'अिण्डियन ओपीनियन' के सुनहरी अंकमें सन् १९१४ में आखिरी लड़ाअीका जो अनुभव थोड़ेमें सुन्दर ढंगसे चित्रित किया है, वह अिस पुस्तकके अंतमें परिशिष्ट – १ में दिया गया है। वह अिस पुस्तककी पूर्तिके रूपमें और दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहकी लड़ाअीकी अैतिहासिक दृष्टिसे भी अुपयोगी मालूम होगा।

मुझे कहना चाहिये कि हम सब मामूली दर्जेके कैदी थे। आदर्श कैदी तो हम कहला ही नहीं सकते थे। हिन्दुस्तानकी जेलोंमें जैसे व्यवहारके लिअे हम 'तिकड़म' शब्दका अिस्तेमाल करते हैं, अुसमें विश्वास रखनेवाले तो हम नहीं थे। लेकिन कमजोरीके कारण वैसा व्यवहार करनेका मौका आता तब हम पीछे भी नहीं रहते थे। अितना ही नहीं, हमें अपने अैसे व्यवहारके लिअे पछतावा भी नहीं होता था। परन्तु मेरे यह स्वीकार करनेसे अैसा मान लेनेकी जरूरत नहीं कि सज्जनोंको शोभा न देनेवाले अुस व्यवहारको हम अच्छा समझते थे। नैतिक दृष्टिसे अवांछनीय आचरण हम कभी नहीं करते थे। लेकिन जेलके नियमोंकी दृष्टिसे जो करने लायक नहीं होता अुसे जेल-कर्मचारियोंके जाने बिना हम कर लेते थे। अैसा करने पर हम पकड़े जाते तो झूठ कभी न बोलते थे। सच बात कह देते थे और नियम तोड़नेका

अपराध स्वीकार करके अुसकी सजा भी खुशीसे भोग लेते थे। अिससे अधिक सूक्ष्म दृष्टिसे सत्य और नीतिका आचरण करनेकी हमने कभी अपेक्षा तो नहीं की, परन्तु अपनी शक्तिकी मर्यादा समझकर हमने अपने व्यवहारकी भी मर्यादा बना ली थी। अिसलिअे यह प्रकरण लिखनेका हेतु किसीको कोअी अनुकरणीय आचरण बताना नहीं है, बल्कि दक्षिण अफ्रीकाकी जेलोंका वर्णन करना, वहांके अनुशासन पर प्रकाश डालना और वहां हमारे ९० दिन किस तरह बीते अिसका थोड़ासा वर्णन देना है।

वॉलक्रस्टकी जेल घर जैसी थी। जेलर भले आदमी थे। बाहरसे भी फिनिक्समें अिस्तेमाल होनेवाली रोटी और केक — मीठी रोटी तथा केले वगैरा फल मिल सकते थे। बहनोंके रहनेका भाग अलग था। परन्तु वहां तो हमें छह दिन ही रखा गया। सातवें दिन हम सबको वहांसे हटा दिया गया। बहनें भी हमारे साथ ही थीं। नेटालकी राजधानी मेरित्सबर्गकी सेंट्रल जेलमें हमें ले जाया गया। जेलमें घुसते ही बहनोंको अलग कर दिया गया। अुसके बाद हमने अुनकी परछाअीं तक नहीं देखी। बाहर आनेके बाद ही अुनके दर्शन किये।

मुझे तो जेलकी कोअी कल्पना भी नहीं थी। वज्र जैसी कठोर बड़ी बड़ी दीवारें और चारों ओर सुनसान! मेरा पहला ही अनुभव कड़वा रहा। हमें दवाखानेमें ले जाया गया। सबकी जांच की गअी। जांचमें रुस्तमजी सेठकी सदरी और जनेअू (कस्ती) देखा गया। अब तक हिन्दुस्तानियोंको ट्रान्सवालकी जेलोंका अनुभव था। नेटालकी जेलमें हम सत्याग्रही हिन्दुस्तानी पहले ही पहल आये थे, अिसलिअे जेलके कर्मचारी हमसे अपरिचित थे और हम जेलके प्रबन्धसे अनजान थे। पहलेकी लड़ाअीमें जेलके अधिकारियोंने रुस्तमजी सेठकी सदरी और जनेअू धार्मिक चिह्नके रूपमें अुनके पास रहने दिये थे; परन्तु यहां तो नया ही नियम था। अिसलिअे डॉक्टरने अुनकी सदरी और जनेअू अुतार डालनेकी सूचना की। अुससे कहा गया कि ट्रान्सवालकी जेलमें अिन्हें रखने दिया गया था; और अुनके टिकिट पर अिस बारेमें जो कुछ लिखा हुआ था वह भी बताया गया। परन्तु डॉक्टरने कुछ नहीं सुना। "यह ट्रान्सवाल नहीं, यह तो नेटाल है। अिसलिअे विभागके मुखियाकी तरफसे जब तक अैसा हुक्म न मिलेगा तब तक हम अैसा करनेकी अिजाजत नहीं देंगे।" अिस तरह डॉक्टर गरजने लगा। और पुलिसको अुसने हुक्म दिया, "यह बुड्ढा अपने

हाथसे न निकाले तो दो आदमी अिसे पकड़ कर जबरन् ये चीजें खींच लो।" दो पुलिसवालोंने रुस्तमजी सेठकी सदरी और जनेअू जबरन् अुतार लिये। रुस्तमजी सेठ विरोध करते हुअे बोले: "मेरे धर्मकी आज्ञानुसार सदरी और जनेअूके बिना मैं अन्न नहीं खा सकता।" हम दूसरोंका भी फर्ज हो गया कि जब तक रुस्तमजी सेठको अुनके सदरी-जनेअू न मिलें और अिसलिअे जब तक वे अुपवास करें तब तक हम भी अुपवास करें।

वहां सुपरिन्टेन्डेन्टको जेलका गवर्नर कहते थे। वह आया। अुसने भी अैसा ही कहा। हमें अपनी कोठरीमें ले जाकर बन्द कर दिया गया। वह सारा दिन पूरा हुआ। अुस दिन रातको ही श्री रुस्तमजी सेठ और श्री छगनलाल गांधीको वहांसे हटा कर डरबनकी जेलमें ले गये। हमें अिस बातका पता सुबह लगा। सवेरे नौ बजे गवर्नर हमारे पास आया। अुसने हमसे भोजन लेनेको कहा। हमने बता दिया कि: "जब तक रुस्तमजी सेठ भूखों मरते हों तब तक हम भोजन नहीं कर सकते।" अुस पर हमारी दृढ़ताका असर पड़ा। अुसने कहा: "हमने जेल-विभागके मंत्रीसे पुछवाया था। अुनकी अिजाजत हमें मिल गअी है कि रुस्तमजी सेठको अुनके धार्मिक चिह्न दे दिये जायं। अुन्हें डरबन भेज दिया गया है। परन्तु ये चिह्न वहां अुन्हें मिल जायंगे और वे खाना जरूर खायेंगे।" हमने कहा: "हमें यह विश्वास दिला दीजिये कि रुस्तमजी सेठको अुनके धार्मिक चिह्न मिल गये हैं।" गवर्नरने तुरन्त कर्मचारियोंसे जेल-विभागके मंत्रीका तार दफ्तरसे मंगा कर हमें बताया। हमें यकीन हो गया और हमने अुपवास छोड़ दिया। हमने खाना खाया। रुस्तमजी सेठने भी डरबन जानेके बाद अुनकी सदरी और जनेअू मिल जाने पर खाना शुरू कर दिया। जेलमें सत्याग्रह करनेका हमें यह पहला पाठ मिला।

वहांकी जेल यहांके जैसी साफ-सुथरी परन्तु कम हवा-रोशनीवाली और दुमंजिला थी। आमने-सामने कमरोंके ब्लाक और बीचमें गैलरी थी। हर कमरेके पीछे जाली होती और वह खुले यार्डमें पड़ती थी। परन्तु अगला दरवाजा गैलरीमें होता। अिसलिअे आवश्यक हवा-रोशनी कमरेमें आ नहीं सकती थी। कमरा अितना बड़ा होता जिसमें पांच आदमी समा सकें। परन्तु आम तौर पर हर कमरेमें तीन कैदी रखे जाते थे। यहांकी तरह वॉच या वार्डरकी संस्था वहां नहीं है। वहां जेलकी वैतनिक पुलिसकी पूरी देखरेखमें

ही सब कैदी रहते हैं। पुलिसमें गोरे और काले दोनों होते हैं। काले पुलिसवालोंमें मुख्यतः वहांके मूल निवासी हब्शी होते हैं। अैसा होनेके कारण, हिन्दुस्तानकी जेलोंमें नीच वृत्तिके वॉच-वार्डर जैसा आतंक फैलाते हैं वैसा आतंक वहां नहीं पाया गया। अिन पुलिसवालोंको वार्डर नाम दिया जाता है। जमादारको हेड वार्डर कहते हैं। हवालदारको यार्ड-वार्डर कहते हैं। गोरे पुलिसवालोंको सार्जण्ट-वार्डर कहते हैं। और काले पुलिसवालोंको वार्डरके सादे नामसे पुकारा जाता है। अिसके सिवा, हेड जेलर और डेप्युटी-जेलर भी होते हैं। जो गवर्नर होता है अुसका अधिकार यहांकी जेलोंके सुपरिन्टेन्डेन्टके बराबर ही होता है।

खुराकमें सुबह मक्कीके आटेका दलिया होता — जरा गाढ़ा, अंगुलियोंसे खाने जैसा। अुसमें सिर्फ नमक होता था। अुसे वहां 'पुपु' कहा जाता है। दोपहरको हिन्दुस्तानियोंके लिअे चावल और साग रहता। चावल और साग कहनेसे ललचा जानेकी जरूरत नहीं। चावल बहुत ही हलकी किस्मके और कंकरोंसे भरपूर। हम अूपर अूपरसे बचाकर खाते और आधे जो बाकी रहते अुनमें पानी डाल देते। टीनके जिस कटोरेमें खानेको दिया जाता अुसे हिलानेसे सब कंकर नीचे बैठ जाते। फिर चावलका अेक अेक दाना बीनकर खा जाते। कोअी पूछे कि सागका क्या हाल था? सागका अर्थ था अेक बैंगन या अेक गोभीका टुकड़ा या किसी दिन अेक-दो आलू। जो भी हो अुबालकर दे देते थे। नमक थोड़ासा चावल पर अेक तरफ रखा होता अुतना ही। स्वादमें बिलकुल संयमी कहूं या सात्त्विक कहूं? जरा भी सन्तोष न हो, अैसा दोपहरका भोजन होता था। सुबह तो कुछ सन्तोष हो भी जाता था। शामको छह अौंस डबल रोटी और मक्कीके आटेकी नमकीन कांजी दी जाती। जिसे तीन महीनेसे ज्यादाकी सजा होती अुसे कांजीके बजाय दूधके बिना तैयार की हुअी चाय दी जाती थी। रविवारको मटरके जैसी बीन्स नामकी अेक तरहकी दाल दी जाती, जो यहांकी 'वाल'की दालसे ज्यादा स्वादिष्ट होती थी। अुसे अुबालकर अुसमें मसाला डालकर अच्छी तरह पकाया जाता और चावलके साथ दिया जाता था। अुसे ही हमारा पकवान कहिये या गोठ कहिये। यह खाना खानेके बाद वहां अेक आश्वासन मिलता था, और वह यह कि खानेके बाद जूठे कटोरे हटा कर रख देने होते थे। ले जानेवाले अुन्हें ले जाते और धोनेवाले धो डालते थे।

हमने पहला दिन पूरा किया और रात बीती। छत्तीस घंटेका अुपवास था, अिसलिअे हमें कहीं बाहर नहीं निकाला गया। हमने भोजन लिया तब तक हमारी कोठरीके सिवा और कुछ दिखाअी नहीं दिया। नहाना-धोना भी कैसे होता? परन्तु खानेके बाद गवर्नर फिर आया। मैंने अुससे नहानेकी व्यवस्था कर देनेकी प्रार्थना की। अुसने हेड वार्डरको हुक्म दिया कि हरअेकको बड़ा तौलिया दिया जाय और शामको काम करके खाना लेनेके लिअे भोजनालय जानेसे पहले हमें नहा लेने दिया जाय।

पहले दिनके अुपवाससे कुदरती हाजतका कुछ ठिकाना नहीं था। परन्तु दूसरे दिन सुबह हम अुठे कि तुरन्त दरवाजा खुला। कोठरीके भीतर जो बालटी पेशाब या पाखानेके लिअे दी गअी थी वह हमींको अुठानी पड़ी। हमें अुसकी कोअी सूग तो थी नहीं। अुस बालटीको साफ करनेके बाद जिसे पाखाने जाना था अुसे ले गये। मैं तो वहांका दृश्य देखकर घबरा गया। गली लगभग छह फुट चौड़ी थी। अुसके दोनों ओर छोटी पानीकी नालियां थीं। अुनमें हमेशा पानी बहता रहता था। वहां किसी भी मर्यादाके बिना साथ साथ और आमने-सामने बैठना पड़ता था। अितना ही काफी नहीं था। पाखाने बैठे हुओंके सिरमें हब्शी वार्डर धप मार मार कर जल्दी करनेको कहते रहते। अिस जंगली तरीकेसे हम तंग आ गये। फिर तो हम कभी वहां पाखाने गये ही नहीं। जहां काम पर जाते वहीं चले जाते या रातको बालटीका अुपयोग करते थे।

तीसरे दिनसे हमें काम पर ले गये। जेलसे बाहर जेलका अेक बगीचा था। वहां लगभग सौ आदमी काम करते थे। हमें अुस बगीचेके अेक कोनेमें हब्शी पुलिसके साथ भेजा जाता था। बगीचेके अेक कोनेसे लगा हुआ सुन्दर मीठे पानीका छोटासा झरना बहता था। वह झरना लगभग पच्चीस फुट चौड़ा था। अुसमें से झारेमें पानी लेकर हम सागभाजीके पौधोंको सींचते, मिट्टी खोदते और नये पेड़ लगाते। अिस तरह हमारा काम चला। दातुन करने और झरनेके पास अूंची-नीची जमीनमें पाखाने जानेकी भी अच्छी सुविधा थी। अिस प्रकार हमारे दिन बीतने लगे।

७

जेलमें तिकड़म

हमारे दिन तो गुजरने लगे। कोअी खास तकलीफ नहीं थी। परन्तु दिल बेचैन रहता था। "हम जेलमें आ गये, अिसका असर बाहर क्या हुआ होगा? लोगोंका अुत्साह कैसा होगा? सोचते थे कि जेल स्वर्ग जैसा होगा, परन्तु यह तो नरक जैसा है। यहां जीभका संयम रखना पड़ता है वह भी जबरदस्तीसे। तू-तड़ाक सुनना पड़ता है। बापूजी कहते हैं कि जेलमें बाहरसे भी कअी गुने अधिक अपमान सहने पड़ेंगे। तो क्या अिस प्रकार जीवन बितानेसे कौमकी जो सेवा करनेको बापूजी कहते हैं वह हो सकेगी? किस तरह? हमारे दुःख अुठानेसे किसीका फायदा होता हो, हमारे जीवन-समर्पणसे किसीको जीवन-दान मिलता हो, हमारे दुःख सहन करनेसे दूसरे लोगोंका खून अुबलता हो और हमारे बाद हमारी तरह अन्य लोग मरनेको तैयार होकर लड़ाअीमें पड़ते हों, तब तो जेलमें हमारा आना भी कामका है, दुःख अुठाना भी सार्थक है। परन्तु निश्चिन्त भावसे और बिना सोचे-विचारे विश्वास रखकर जेलमें जानेसे हमारे दुःख मिट जायेंगे और कौमकी जीत हो जायगी, यह कैसे माना जाय?" अिस तरहके विचार आते रहते थे। फिर आश्वासन मिलता: "अैसी अश्रद्धा न रखनी चाहिये। हम तो सिपाही हैं। सिपाहीको सरदारके हुक्मकी तामील करनी चाहिये। प्रश्न या आशंका करना अुसका काम नहीं है।" फिर यह खयाल आता: "बाहर क्या हाल होगा? क्या वातावरण बिलकुल ठंडा होगा? कोअी आता-जाता मालूम नहीं होता। क्या लोग लड़ाअीमें भाग नहीं लेते होंगे?" अिस प्रकार हृदयमें प्रश्नोत्तर होते ही रहते थे। परन्तु कोअी रास्ता नहीं सूझता था। हम बारहमें से दस रह गये थे। हममें से कोअी जेल-जीवनका अनुभवी नहीं था। किसीसे हमारा परिचय नहीं था। बाहरकी नयी पुरानी खबरें कैसे जानी जायं और किससे कैसे पूछी जायं? यही बात रोज मनमें रमी रहती। अितनी रटन सत्यकी की होती तो सत्यके मूर्तस्वरूपमें दर्शन हो जाते। परन्तु जो जिसे भजता है अुसे वही मिलता है। सब अपने स्वभावके अनुसार रटन करते हैं। हमारी भावना राजसी थी। और हृदयकी

तीव्रताके कारण वह भावना किस तरह सफल हुअी, यह विचार करने पर सचमुच आश्चर्य होता है।

अुस मीठे झरनेके दूसरी ओर दूर दूर छोटे छोटे घर दिखाअी देते थे। वहांसे कभी कभी लड़कियां पानी भरने आती दिखाअी पड़ती थीं। वे घर स्वतंत्र हिन्दुस्तानियोंके — मद्रासियोंके थे। अेक दिन मैं सागके पौधोंकी क्यारियां खोद रहा था। अितनेमें दूरसे दो मद्रासी युवकोंको हाथोंमें लम्बी लकड़ी और अुसके सिरे पर मछली पकड़नेका कांटा लटकाये आते हुअे मैंने देखा। अुस जूलू सिपाहीको विश्वास था कि हम सब सज्जन हैं और भाग नहीं जायंगे। गोरा वार्डर बहुत दूर था। किसी भी तरह देखा नहीं जा सकता था। अिसलिअे जूलू वार्डर हमारे बारेमें निश्चित था। अुन दो जवानोंको झरनेके परले किनारे खड़े देखकर मैं भी हाथमें झारा लेकर नीचे अुतरा। धीरेसे मैंने अुनसे पूछा, " तुम कहां रहते हो ? "

अुन्होंने जवाब दिया : " मेरित्सबर्गमें। वे हमारे घर दीख रहे हैं। "

" तुम दोनों शालामें पढ़ते हो ? "

" हां। "

" मेरित्सबर्गमें हिन्दुस्तानी कांग्रेसका दफ्तर है, अुसे तुम जानते हो ? "

" हां। "

" तुम मि० नायक और मि० बी० अेम० पटेलको जानते हो ? "

" हां, वे ही तो कांग्रेसका सब काम करते हैं। "

" हम सत्याग्रही हैं। मैं तुम्हें अेक सन्देश देता हूं, अुसे अुनके पास पहुंचा दोगे ? "

" जरूर, बड़ी खुशीसे। "

" तो मेरी तरफ अेक कागजका टुकड़ा और पेंसिल फेंको। कागजमें पेंसिल रखकर, साथमें छोटासा पत्थर रखकर और डोरी लपेट कर मेरी ओर फेंको, तो वह यहां पहुंच जायगा।

अुन युवकोंने बड़े अुत्साहसे वैसा ही किया। मैंने बहुत छोटासा पत्र लिख दिया :

" हम यहां हैं। यह पत्र लानेवाला जहां बताये वहां आइये। साथमें 'अिंडियन ओपीनियन' और लड़ाअीसे सम्बन्ध रखनेवाली अखबारोंकी दूसरी कतरनें भी लेते आअिये। "

वे युवक तुरंत चल दिये। साअिकलों पर गये अुन्हें पूरा अेक घंटा भी नहीं हुआ होगा कि मैंने दूरसे चार साअिकलोंसे अुतरते हुअे चार आदमियोंको देखा। दो युवक वही थे और दो दूसरे थे। जरा दूरसे मैंने पहचान लिया कि ये तो वही आ गये। वे झरनेके अुस पार खड़े हो गये। मैं भी हाथमें झारा लेकर झरनेमें अुतरा और अुन्हें प्रणाम किया। मेरे सभी साथी दूरसे अुन्हें देखते रहे।

मैंने शुरूमें ही कहा: "तुम्हारे पास सिगरेटकी डिबिया हो तो अुसमें छह पेन्स रखकर मेरी तरफ फेंक दो।"

अुन्होंने वैसा ही किया। अुन्हें आश्चर्य तो हुआ। मैं सिगरेटका शत्रु था। मैंने डिबिया लेकर अुस जूलू सिपाहीको दे दी और कह दिया: "तुम दूर जाकर बैठो। वहांसे किसीको आते देखो तो मुझे खबर देना। तुम्हें यह तो विश्वास है न कि मैं भागकर नहीं जाअूंगा? मुझे अुन लोगोंसे बातें करनी हैं।"

अुस सिपाहीने मेरा आभार माना। और "मुझे पूरा भरोसा है कि तुम भागकर हरगिज नहीं जाओगे। तुम्हें जो बातें करनी हों आरामसे करो," यह कहते कहते वह मेरी बताअी हुअी जगह पर जा बैठा। अुन भाअियोंसे 'अिंडियन ओपीनियन' और दूसरे अंग्रेजी अखबारोंकी कतरनें मैंने लीं। बहुतसी बातें कीं और हर तीसरे दिन असी जगह मुकर्रर की हुअी सामग्री लेकर नियमित आनेका वचन देकर वे विदा हुअे। वे भी बहुत दिनोंसे सोच रहे थे कि हमसे किस तरह मिला जाय।

बस, जिसकी जरूरत थी वह खुराक मिल गअी। सबके दिलोंकी तमाम अुदासी और शिथिलता अुड़ गअी। अिस घटनाके बाद बाहरका गरमागरम वातावरण जानकर हमें खूब आनंद हुआ और हमारे दिन भी अुमंगमें बीतने लगे।

८

जेलमें सत्याग्रह

मुझे कितनी ही जेलोंका अनुभव हुआ । परन्तु देश और विदेशकी सभी जेलोंमें हर बातका अेकसा ही अनुभव हुआ, मानो वे सब अेक ही पक्षीके पंख हों। सभी जगह कर्मचारियोंकी अेक ही मनोवृत्ति। अैसा लगा कि सिर्फ हृदय ही नहीं, बल्कि अुसके साथ जिसे हम साधारण बुद्धि — Common sense— कहते हैं अुसे भी गिरवी रखकर वे नौकरी करते हैं। और छोटेसे मामूली सिपाहीसे लेकर बड़े अफसर तक सब अेक-दूसरेके प्रति सन्देह और भयकी नजरसे देखते हैं। सरलता और सचाअी तो किसीमें होती ही नहीं। 'जेल मेन्युअल' ही अुनकी धर्म-पुस्तक होती है । कोअी जिज्ञासु हृदय अितनी अंधतासे कहिये या वफादारीसे कहिये, बाअिबल, गीताजी या अन्य किसी धर्मग्रंथका अध्ययन करे और अुसके अनुसार चले, तो जरूर अुसके जीवनका कल्याण हो जाय। अिन तीन मामलोंमें मैंने सभी जेलोंमें समानता देखी। जो बात जेलके डॉक्टरोंके बारेमें हम यहांकी जेलोंमें अनुभव करते हैं वही अनुभव मुझे दक्षिण अफ्रीकामें भी हुआ। अैसा लगा जैसे डॉक्टरके धंधेको शोभा देनेवाला प्रेमपूर्ण हृदय वे जेलके दरवाजेके बाहर रखकर ही जेलमें घुसते हैं। लेकिन यह सब वर्णन करनेकी यह जगह नहीं। अिसलिअे मैं मूल बात पर आता हूं।

अब तो जेलमें सत्याग्रहियोंकी बाढ़ आने लगी। परिचित स्नेही आने लगे। हृदयकी सारी अुदासी जाती रही। परन्तु जेलके कुछ कष्ट खटकते थे। जो सत्याग्रही वहां जमा हुअे — हिन्दू या मुसलमान — वे मांस नहीं खाते थे। मांसाहारियोंको सप्ताहमें दो बार मांस दिया जाता था। और डॉक्टरोंकी रायके अनुसार शरीरकी शक्ति बनाये रखनेके लिअे शरीरमें चिकने पदार्थ अेक खास मात्रामें पहुंचना जरूरी था। सख्त मेहनत करनेवाले कैदियोंके लिअे तो यह और भी जरूरी था। अिसलिअे हम घीकी मांग करने लगे। गवर्नरने हमारी मांगको हंसीमें अुड़ा दिया। हमने डॉक्टरसे प्रार्थना की कि हमारी तन्दुरुस्तीके खयालसे हम जो मांसाहारी नहीं हैं अुन्हें घी मिलना चाहिये। वे ताने मारने लगे: "यहां तुम घी खाने आये हो? कौन तुम्हें

न्यौता देने गया था कि जेलमें चलो? आज घी मांगा है, कल शक्कर और मक्खन मांगोगे। तुम्हें जेलको नानाका घर बना देना है, क्यों?"

अब क्या किया जाय? क्या लड़ना चाहिये? अिसकी चर्चा होने लगी। अितनेमें मुझे किसी कारणसे चार-पांच दिन दवाखानेमें जाना पड़ा। वहां भाअी प्रागजी देसाअी मिले। अुन्हें दूसरी जेलमें जबरन् चेचकका टीका लगाया गया था, अिसलिअे बुखार आता था। अिस कारणसे अुन्हें सीधे दवाखाने ही ले आये थे। हमने अेक-दूसरेका आलिंगन किया। फिर दो-चार दिनमें ही भाअी सुरेन्द्रराय मेढ और भाअी मणिलाल गांधी आये। ये सब तो ट्रांसवालकी जेलके योद्धा थे। भाअी प्रागजी देसाअीने पूछा: "यहां क्या हाल हैं?" मैंने सब हाल कहा और बताया कि, "हमें कुछ न कुछ करना चाहिये। घी और स्वाभिमान दोनोंके लिअे लड़ना चाहिये। और भी कुछ बातें शामिल करके लड़ना चाहिये। मुझे जेलके जीवनका अनुभव नहीं है। मैं तो नया ही हूं। अब आप सब आ गये, अिसलिअे मेरी जिम्मेदारी कम हो गअी।"

सबको अलग अलग बन्द किया जाता था, परन्तु दिनमें तो सब मिलते ही थे। वातावरण गरम होने लगा। हमने अधिकारियोंसे विनती करनेका अेक भी अुपाय बाकी न छोड़ा। अिसलिअे आखिरमें अुपवास करनेका ही निर्णय किया। यह तय हुआ कि रविवारके चावल और 'बीन्स' खाकर सोमवारसे अुपवास शुरू किया जाय। सत्याग्रहियोंकी संख्या लगभग अेकसौ हो गअी थी। सबसे कहा गया, सबको समझाया गया कि, "जेलकी लड़ाअी कठिन होती है। अुपवास करते हुअे भी काम करना पड़ता है। काम करते करते शरीर लाचार हो जाय तब वह अपने-आप काम बन्द कर देता है। अुपवास कितने करने पड़ेंगे, यह निश्चित रूपमें नहीं कहा जा सकता। धर्म-प्रतिज्ञा करनी होगी। कमसे कम मांग रखी जायगी, परन्तु जिस मांगके लिअे सत्याग्रहकी प्रतिज्ञा ली हो, वह तो जानको जोखिममें डालकर भी पूरी करनी होगी। अुसमें समझौता नहीं हो सकता। अैसा करनेमें शरीरके चले जानेकी भी संभावना है। अिसमें चालाकी करें तो आत्माकी अधोगति होती है।" बहुतसे भाअी तैयार हो गये। सोमवारकी राह देखने लगे।

सोमवारकी सुबह हुअी। अुठनेका घंटा बजा। दरवाजे खुले। सब दातुन-कुल्ला करने लगे। दातुन-कुल्ला करनेके बाद लौटने पर भोजनालयके

पास अेक कतारमें खड़े रहना पड़ता था और 'पुपु' के तैयार रखे कटोरोंमें से अेक अेक अुठाकर अपनी कोठरीमें ले जाना पड़ता था। हमने वहीं यार्ड-वार्डरको बता दिया कि हमने फैसला किया है कि जब तक हमारी मांग पूरी न की जायगी तब तक हम अुपवास करेंगे, अिसलिअे हम 'पुपु' नहीं लेंगे। आप गवर्नर साहबको खबर दे दीजिये। यार्ड-वार्डर हम सबको अेक तरफ खड़े रहनेका कहकर साहबको बुलाने गया। गवर्नरको सुबह सात बजेके बजाय छह बजे अुठना पड़ा। वे शरीरसे जरा गोलमटोल थे। स्वभावसे चिल्लानेवाले। अपनी सत्ताका पूरा भान होनेके कारण जरा ढोंगी थे। फिर भी दिल अुनका कमजोर था। वे जल्दी जल्दी वहां आये। मैं तो अुनकी आंखोंमें पहले से ही आया हुआ था। कअी मौकों पर मैंने दूसरोंकी तरफसे शिकायतें की थीं और यहां भी अुन्होंने मुझे देखा। नयोंको तो वे जानते भी नहीं थे। मेरा बिस्तर सवा महीने पुराना हो गया था, अिसलिअे वे मुझे ही भला-बुरा सुनाते हुअे आये: "ये सब तुम्हारे ही काम हैं। नये आदमियोंके आते ही अुन्हें अुकसाकर तुम झगड़ा करने लगे।"

"क्यों तूफान शुरू कर दिया?" अुन्होंने पूछा।

मैंने नम्रतासे कहा: "साहब, तूफान नहीं मचाया। हमने प्रतिज्ञा की है कि जब तक हमें घी न मिलेगा और अपमानजनक व्यवहार न होनेका आश्वासन नहीं मिलेगा, तब तक हम खाना नहीं लेंगे।"

"अच्छा, घी खाना है! खाना खाना! अब तो तुम्हें घी ही खिलाअूंगा — सीधे कर दूंगा। जाओ, बिलकुल मूर्ख न बनो। खाना ले लो।" अुन्होंने पहले धमकीकी आवाजमें बोलकर बादमें अैसे भावसे कहा मानो सिखावन दे रहे हों।

मैंने शांतिसे जवाब दिया: "जब तक घी न मिलेगा तब तक न खानेका ही हमारा निश्चय है।"

साहबका पारा अूपर चढ़ गया। खूब चिल्लाये और बादमें बड़े रोषके साथ हुक्म दिया: "मैं जेलके गवर्नरकी हैसियतसे हुक्म देता हूं कि जेलके नियमके अनुसार हर कैदीको अपना अपना खाना यहांसे ले ही जाना चाहिये और कोठरीमें अपने सामने अेक घंटे पड़ा रहने देना चाहिये। अिसलिअे सब खाना लेकर अपनी अपनी कोठरीमें जाओ।"

मैंने कहा: "हम आपका हुक्म मान लेते हैं।"

अेक अेक करके खानेका कटोरा अुठाकर हम अपनी कोठरियोंमें घुसे। सब कोठरियां बन्द करके हमें अेक घंटे तक बन्द रखा गया। साढ़े

सात बजते ही घंटी हुअी। कोठरियां खोलकर चौकमें सब कैदियोंको कतारमें खड़ा करके अलग अलग दलोंमें काम पर भेजनेका अिन्तजाम हो रहा था। अुस समय गवर्नर आये। जेलमें गवर्नरका बड़ा दबदबा होता है। वे फौजी ठाठमें रहते हैं। अुन्होंने हुक्म दिया: "जिसने खाना न खाया हो वह यहां अलग कतारमें खड़ा रहे।" हम लोग अलग कतारमें खड़े हो गये। कुल ७२ आदमी थे। जो छोटी अुम्रके थे अुन सबको अलग कर दिया और हुक्म दिया कि, "बाकी सबको पत्थरके पहाड़ पर ले जाओ। वहां अिन्हें पत्थर फोड़नेका काम सौंपो। अिनसे सख्त काम लिया जाय। जेलमें अुपवास करके तूफान मचाना कितनी मूर्खताका काम है, यह मैं तुम्हें अच्छी तरह बता दूंगा।" यह कहकर वे चले गये। हमने तो अिन सब बातोंकी आशा रखी ही थी, अिसलिअे हमें अुनसे कोअी डर नहीं लगा। परन्तु पत्थरकी खानों पर पहुंचे तो वहां मालूम हुआ कि वार्डरोंको खानगी तौर पर हुक्म दिया गया है कि हममें से किसीको काम करते करते चक्कर आ जायं, तो अुसे डोलीमें डालकर तुरंत दवाखाने ले जाया जाय। यह जानकर और डोली देखकर हमें आश्चर्य हुआ; हम समझ गये कि साहब बहादुरका दिल घबरा रहा है। कोअी खास अुल्लेखनीय सख्ती मालूम नहीं हुअी।

अुन लड़कोंको तो बगीचेमें ही भेजा गया। अुसी दिन वे दोनों भाअी मिलने आये। लड़कोंने अुन्हें अुपवासका सारा हाल सुनाया और यह भी कहा कि गवर्नरने धमकी दी है और सबको पत्थरके पहाड़ पर भूखे पेट ले गये हैं। फिर क्या था? दोनों वहांसे भागे। शहरमें जाकर हिन्दुस्तानी बाजारोंमें जोरदार हड़ताल कराअी। बड़ी भारी सभा हुअी। "मेरित्सबर्गकी जेलमें सत्याग्रहियों पर बड़ा अत्याचार हो रहा है। बिलकुल निकम्मी खुराक खानेको दी जाती है और अुनका अपमान किया जाता है। अिसलिअे सत्याग्रहियोंने जब तक अिस तरहका व्यवहार बंद न हो तब तक भूखों रहनेका निश्चय करके अुपवास शुरू कर दिया है।" वगैरा गरमागरम भाषण हुअे। मन्त्रियों पर विरोधके तार भेजे गये और अिस मामलेका तुरंत निपटारा करनेकी अुनसे प्रार्थना की गअी। अैसी हड़तालें, अैसी सभाअें और अैसे प्रस्ताव दक्षिण अफ्रीकाके सभी बड़े गांवोंमें हुअे। मंत्रियोंके नाम अनेक तार गये। अखबार तो अिसी बातसे भर गये। जेलके कर्मचारी चौंक अुठे और घबरा गये। अुन्हें भी अैसा अनुभव पहली ही बार हुआ। मेरित्सबर्गकी जेलमें किये गये

अुपवासकी बात पांच हजार मील पार करके हिन्दुस्तानमें भी पहुंच गअी। अुस दिन शामको काम परसे लौटने पर भाअी श्री प्रागजी देसाअी, सुरेन्द्रराय मेढ, मणिलाल गांधी, पंडित भवानीदयाल (अब संन्यासी भवानीदयाल) और मैं अिस तरह पांच आदमियोंको अलग कर दिया और जूलू अपराधी कैदियोंके अंधेरे ब्लाकमें बन्द कर दिया गया। हममें से कोअी अेक-दूसरेका मुंह नहीं देख सकता था। काम भी हमको अिसी वार्डमें अलग अलग सौंपा गया। अिस तरह दूसरा दिन भी बीत गया। दूसरे दिन सिटी मजिस्ट्रेट आकर हमारा हालचाल पूछ गये और हमें थोड़ी धमकी भी दे गये। तीसरा दिन बुधवार शुरू हुआ। दवाखानेमें मिस्टर डीक नामके अेक कम्पाअुण्डर थे। हमारा अुपवास अुन्हें कुछ खटका। मेरे साथ वे कुछ हिलमिल गये थे, अिसलिअे कहने लगे: "तुम यह सब बेवकूफी कर रहे हो। जेलके गवर्नरकी स्थिति भी विषम बना रहे हो। तुम्हें घी देना अुसके हाथकी बात नहीं है। यूनियन पार्लियामेंटने जो खाना निश्चित किया है, वह तुम किस तरह बदलवाओगे? तुम मर जाओ तो भी पार्लियामेंट जेलकी खुराक क्यों बदलेगी? अिसलिअे तुम्हें अपनी मर्यादा समझनी चाहिये। अब भी चेत जाओ और घीके सिवा दूसरी मांगें स्वीकार हो जायं तो अुपवास छोड़ दो।" मैंने भले मि० डीकके भाषणके जवाबमें अितना ही कहा: "अिसमें हमारी बड़ी परीक्षा हो सकती है। लेकिन हमें विश्वास है कि अन्तमें सरकारको हमारी मांग स्वीकार करनी ही पड़ेगी। जब आप यह बात साबित हुअी देखेंगे तब आप ही हमें समझदार कहेंगे। आपकी सद्भावनाके लिअे मैं आपका आभार मानता हूं।"

जब हम पांच आदमियोंको अलग किया गया, तब हमने विचार किया: "बहुत अच्छा हुआ। हमारी लड़ाअीका आधार अब पांच आदमियों पर ही रह गया है। सब हार जायं तो भी जब तक हम पांच अटल रहेंगे तब तक हमारी जीत है।" लेकिन दूसरे ही दिन सवेरे बहुत बीमार हो जानेके कारण पं० भवानीदयालको दवाखाने भेज दिया गया। अिसके सिवा, अुपवासके कारण काम करते करते बेहोश हो जानेवाले पांच-सात अन्य लोगोंको भी दवाखाने ले जाया गया। तीसरे दिन बारह बजे भाअी रामदास गांधी अन्य विद्यार्थियोंके साथ कतारमें बैठे थे। अुपवासको बावन घंटे हो गये थे। रामदास जरा सिर दुखनेके कारण जमीन पर लेटे हुअे थे। सामने

खुराकसे भरे हुअे कटोरे पड़े थे। अितनेमें जेलका बड़ा जेलर वहांसे गुजरा। रामदासको पड़ा हुआ देखकर वह रुका और पूछने लगा: "अिस तरह क्यों पड़े हो?" रामदासने कहा: "सिरमें चक्कर आ रहा है।" यह सुनकर वह विचारमें पड़ गया। तुरंत ही लौट पड़ा। गवर्नरके दफ्तरमें गया और गवर्नर साहबसे कहा "साहब, अिन सत्याग्रहियोंका कुछ न कुछ निपटारा कीजिये। अिन लोगोंको बावन घंटे तो हो गये। मेरी स्त्री मुझे सुबहकी चाय देनेमें पांच मिनटकी भी देर कर देती है, तो मेरे पैर लड़खड़ाने लगते हैं और मेरा सिर चक्कर खाता है। अिन्हें तो बावन घंटे हो गये हैं। अुस गांधीके लड़केके सिरमें चक्कर आ रहे हैं। अिस तरह भूखों मरनेसे किसी लड़केको कुछ हो गया तो मेरी और आपकी क्या दशा होगी? मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप अिसका जल्दी निपटारा करें, नहीं तो कोअी अघटित घटना हो गअी और अिन छोटे लड़कोंमें से कोअी मर गया, तो अुसकी जिम्मेदारी मेरे सिर नहीं होगी।"

हेड जेलरकी बात सुनकर गवर्नर और दूसरोंने कुछ विचार किया और वे खानेके लिअे जिन कोठरियोंमें हमें बन्द किया गया था वहां आये। अेकाअेक समयसे पहले दरवाजा खुला। हमने जेलके अनुशासनके खातिर खड़े होकर अुन्हें सलाम किया। गवर्नरने मुझसे कहा: "तुम जानते हो कि घीकी बात मेरे हाथमें नहीं है? मुझे हुक्म मिलनेमें देर भी हो सकती है। मैं तो मानता हूं कि सरकार तुम्हारी मांग स्वीकार नहीं करेगी; और बादमें तुम्हें थक कर भी अुपवास छोड़ना पड़ेगा। परन्तु अुन छोटे बच्चोंको तुमने किसलिअे अुकसाया है? अुनसे कह दो कि वे खाना खायें।"

मैंने जवाब दिया: "साहब, आपका खयाल गलत है। वे लड़के तो अैसे हैं कि मैं यदि अुन्हें खानेकी सलाह देने जाअूं तो वे तिरस्कार करके मुझे निकाल दें। अुन्होंने जो प्रतिज्ञा ली है अुसकी जोखिम भी वे अच्छी तरह समझते हैं। अिसलिअे अिस विषयमें वे किसीका कहना नहीं मानेंगे। और मानें तो भी अुन्हें अपनी प्रतिज्ञा तोड़नेकी सलाह देना मेरा धर्म नहीं है।"

मेरा पिछला वाक्य सुनकर साहब चिढ़े: "हां, हां, मैं समझ गया। तुम मुझे धोखा देने चले हो! यह सब कारस्तानी तुम बड़ोंकी ही है। अिनमें से कोअी लड़का मर गया तो अुसकी जिम्मेदारी तुम लोगों पर होगी।"

मैंने तुरंत कहा: "नहीं साहब, हममें से किसीकी भी मृत्युके लिअे हम जिम्मेदार नहीं होंगे, बल्कि सरकार होगी। यहां सरकारके प्रतिनिधि आप हैं। असलिअे सारी जिम्मेदारी आपके सिर मानी जायगी।"

"अच्छा, नहीं मानना हो तो न मानो," यह कहकर वे वहांसे चले गये। कोठरी बन्द हो गअी। अुसके बाद भाअी रामदासको तुरंत दवाखाने ले जाया गया।

अिस तरह बुधवारका दिन भी बीत गया। अंतमें गुरुवारका सूर्य अुगा। तलाश करने पर मालूम हुआ कि ७२ के बजाय ४१ अपनी प्रतिज्ञा पर टिके रहे। अुनमें से सच्चे तो ३० थे। बाकी लोगोंने चालाकी की। बन्द कोठरीमें तीन चारको बन्द करके खाना दिया जाता था, असलिअे अधिकारियोंको पता न चलता था कि किसने खाया और किसने नहीं खाया। अुन्हें तो सिर्फ अितना मालूम होता था कि अमुक संख्याने नहीं खाया। अिससे फायदा अुठाकर कुछ लोग बारी बारीसे खाते थे। अिस प्रकार संख्या बनाये रखना सर्वथा अनुचित था। जो प्रतिज्ञा ली गअी हो अुसे शुद्ध स्वरूपमें पालना चाहिये। अुसमें चालाकी शोभा नहीं देती। गुरुवारको सुबह हमें काम करने बिठाया गया। काम तो नामको ही था। वहां अेक सार्जण्ट-वार्डर बन्दूक लेकर आया और मेरे पास मेज पर बैठ गया। बैठते ही अुसने मुझसे कहा: "सुनो, मुझे साहबकी तरफसे हुक्म मिला है कि तुम जरा भी किसीसे बात करो तो मैं तुम्हें गोलीसे अुड़ा दूं।" अुसके बोलनेके ढंगसे मैं समझ गया कि किसीसे बात न करने देनेकी गवर्नरकी सूचनाकी वह हंसी अुड़ा रहा है। थोड़ी देर हुअी कि मि० डीक आ गये। वे मेरे सामने बैठ गये और मुझसे कहने लगे: "मुझे सचमुच तुम्हारे साथ हमदर्दी है। तुमने कमाल कर दिया।" अिस प्रकार हमें मूर्ख कहनेवालेका विचार कैसे बदला, यह मैं कुछ समझा नहीं। परन्तु थोड़ी देरमें वे बोल अुठे, "मि० गांधी बड़ा खतरा अुठा रहे हैं। पांच हजार आदमियोंकी कूच और अुसमें डेढ़ सौ छोटे छोटे बच्चोंवाली स्त्रियां! डॉक्टरी दृष्टिसे यह बड़ा खतरा है।" मैं समझ गया कि बाहर कोअी न कोअी भारी गड़बड़ होनी चाहिये। पिछले सात दिनोंकी हमें कोअी खबर नहीं थी। मि० डीक तो और कुछ बोले बिना चले गये। थोड़ी देर हुअी और अस्पतालका जूलू वार्डर आया। मुझे पाखानेकी हाजत हो रही थी। मैंने सार्जण्ट-वार्डरसे अिजाजत मांगी: "मुझे पाखाने जाना है। तुम अिजाजत दो

तो मैं दवाखानेके साफ पाखानेमें अिस वार्डरके साथ हो आअूं।" अुसने अुस वार्डरसे मुझे ले जानेको कह दिया। वार्डर चालाक था। दवाखानेमें कोअी था नहीं। अुसने मुझे पाखानेके पास ठहरनेको कहा और आफिसमें जाकर 'नेटाल विटनेस' नामका अंग्रेजी दैनिक लाकर पाखानेमें रख दिया और मुझे कहा: "अिस पाखानेमें जाओ।" मुझे आश्चर्य हुआ। मुझे तो जरा भी खयाल नहीं था। मैंने अखबार मांगा भी नहीं था। परन्तु अुसके हृदयमें अैसी अुमंग अुठी होगी। मैंने दरवाजा खोला। पाखानेमें घुसकर दरवाजा बन्द करके वह अखबार हाथमें लिया। गांधीजी, मि० पोलाक, मि० कैलनबैक और कूच करनेवाले हजारों मनुष्योंके फोटो और कूचका विस्तृत वर्णन, तीनों नेताओंकी गिरफ्तारी और अुन्हें दी गअी सजा वगैरा समाचारोंसे सारा अखबार भरा था। मैंने शांतिसे पढ़ा। ठीक पौन घंटा लगाया और फिर बाहर निकला।

फिर तो जेलकी पत्रिकाकी आवृत्ति निकलती ही। अिस प्रकार अुपवासमें भी खूब आनंददायक घटनाओंके समाचार मिल जानेसे हमें अुपवासकी कमजोरी कुछ मालूम नहीं होती थी। यह न पूछिये कि मुझे जो समाचार मिले थे अुन्हें मैंने सब जगह कैसे पहुंचाया गया। लेकिन चौथे दिनका अुपवास हमसे डॉक्टर और गवर्नरके लिअे ज्यादा भारी हो गया। फिर तो डॉक्टरको अस्पतालमें स्थायी रूपसे रख लिया गया। कुल मिलाकर १८ अुपवासी दवाखानेमें पड़े थे। डॉक्टर और गवर्नर दोनोंको चिन्ता होने लगी। गवर्नर साहब दस दस मिनटसे दवाखानेमें आकर अुपवासियोंकी तबीयतके बारेमें पूछताछ करते थे। डॉक्टर चिन्तातुर हृदयसे सबकी जांच करते थे। "चार दिनके अुपवास! अुनका भरोसा नहीं; कमजोर दिल घड़ीभरमें बन्द हो सकता है। अिसलिअे यह तो बड़ा खतरा कहा जायगा। अिस गांधीके लड़केको कुछ दूध पिलाया जाय तो बहुत अच्छा हो। अुसके गलेकी नली सूज गअी है। जैसे-जैसे अुपवास लम्बा होगा, वैसे-वैसे ज्यादा सूजेगी और अन्तमें श्वास लेना भी मुश्किल हो जायगा। वह थोड़ा दूध पीले तो खतरेसे बच जाय। अिन लड़कोंने तो गजब कर दिया! अुपवासको १०० घंटे होने आये। कैसे रहा जाता है अिन लोगोंसे?" अिस प्रकार चिन्तातुर होकर डॉक्टर बोलते और गवर्नर घबराते। यह सब तमाशा देखकर जूलू वार्डरोंका जमादार मेरे पास आया। ७ फुट अूंचा, लगभग

२५० पौंडसे भी ज्यादा वजन। मानो त्रेतायुगके भीमसेनका कलियुगी संस्करण हो! हाथमें सीसमकी चमकीली गदा घुमाता हुआ वह आया। गोरा वार्डर अुस समय नहीं था। यह जमादार मेरे सामने बैठ गया। हंसते हुअे चेहरेसे मानो प्राण-विनिमय कर रहा हो अिस तरह मेरे सामने देखता रहा और मेरे कंधेको थपथपाते हुअे कहने लगा: "मधोता, म...खूला मधोता" (सच्चा मर्द, सच्चा मर्द)। मैंने पूछा: "क्यों जमादार, क्या है?" अुसने फिर अिधर अुधर नजर डालकर मुझे शाबाशी देते हुअे कहना शुरू किया: "अिन गोरे लोगोंको तुमने खूब सीधा किया है। वह बड़ा साहब दिनमें शायद ही अेक बार जेलमें घूमने आता था। अुसके बजाय अब बार-बार जेलमें भाग-दौड़ करता है। और अुसका दिल तो जैसे अुड़ ही गया हो, अिस तरह परेशान दिखाअी देता है। परन्तु तुम सच बात बताओ। अितने अधिक दिन क्या खाये बिना रहा जा सकता है? तुम लोगोंने कुछ मंत्र साध रखा दीखता है। तुम्हारे पास कोअी मंतर-जंतर होना चाहिये! मैं तो अेक दिनकी भूखसे ही मर जाअूं। परन्तु तुम चार-चार दिनके अुपवासके बाद भी शान्तिसे काम कर रहे हो!" मैंने कहा, "जमादार, हमारे पास कोअी मंतर-जंतर नहीं है; परन्तु भगवानके प्रति हमें श्रद्धा है और वही हमें बचाता है।"

"सच बात है, सच बात है। तुम भगवानके बंदे हो।" यह कहकर वह चला गया।

अुसको गये आधा घंटा हुआ होगा कि जेलके गवर्नर यार्डके दरवाजेमें घुसे। वे अकेले ही थे। अुनकी मुखमुद्रा पर घबराहटकी छाया फैली हुअी थी। वे मेरी तरफ आने लगे। मेरे नजदीक आ पहुंचे तो अनुशासनके खातिर मैं खड़ा होने लगा। परन्तु अुन्होंने लम्बा हाथ करके मुझे पकड़कर वापस बिठा दिया। "बैठ जाओ, तकलीफ न करो", यह कहकर वे मेरे सामने अुकड़ू बैठ गये। फिर मुझसे कहने लगे: "मेरा अेक काम करो। गांधीका वह लड़का दवाखानेमें है। डॉक्टर कहता है कि वह लड़का थोड़ा भी दूध न पियेगा तो अुसके गलेकी नली सूज जायगी और सांस नहीं लिया जायगा। अिसका अुलटा नतीजा होगा। वह मेरा कहना नहीं मानता। तुम चलो और अुसे थोड़ा दूध लेनेको कहो। अैसा कहनेसे अुसकी या तुम्हारी प्रतिज्ञा हरगिज नहीं टूटेगी। मेरे और परमेश्वरके खातिर भी

तुम मेरे साथ चलो।" गवर्नरकी आवाज और बोलनेके अुनके ढंगसे अुनके हृदयकी घबराहट मैं समझ गया। अुन्हें अिनकार करनेकी मेरी हिम्मत नहीं हुअी। अिसी तरह रामदाससे कहने जानेका साहस भी नहीं हुआ। लेकिन अिस धर्म-संकटसे बचनेका अुपाय मुझे सूझ गया। भाअी मणिलाल गांधीको मुझसे कोअी पचास फुट दूर बिठा रखा था। अुनकी तरफ अिशारा करके मैंने कहा : "वे मणिलाल गांधी बैठे हैं। वे अुस लड़केके बड़े भाअी हैं। मेरे बजाय आप अुन्हें ले जायेंगे तो संभव है वह लड़का मान जाय।" मेरे यह कहते ही गवर्नर साहब मेरे पाससे अुठ गये। मणिलालका हाथ पकड़कर अुन्हें दवाखाने ले गये। मणिलालने रामदासको गवर्नर साहबकी बात सुनाअी। रामदास सोते सोते घुड़के : "तुम क्या समझकर मुझे कहने आये हो? क्या मैं अितना कमजोर हूं कि जीनेके लिअे भी ली हुअी प्रतिज्ञा तोड़ दूंगा? अिसलिअे तुम जिस दरवाजेसे आये हो अुसीसे वापस चले जाओ।" रामदासने जो कुछ कहा वह मणिलालने गवर्नर साहबको समझाया। वे निराश हो गये। यह बात लगभग दोपहरके ढाअी-तीन बजे हुअी। दो घंटे बीत गये। साढ़े चार या पांच बजे होंगे कि हेड वार्डर हमें बुलाने आया : "तुम चारोंको गवर्नर साहब यार्डमें बुला रहे है।" हम अुठे। धीरे-धीरे यार्डमें गये। दूसरे अुपवासी भी यार्डमें लाये गये थे। वहां गवर्नर साहब पहले दिनकी तरह ही रोबसे हमें कहने लगे : "मुझे अभी तार मिला है कि सरकारने तुम्हारी घीकी मांग मंजूर की है। तुम्हें रोज आधी छटाक घी मिलेगा। आज हमारे पास घी नहीं है। परन्तु मैं तुम्हें वचन देता हूं कि कलसे तुम्हें घी मिलेगा। आअिन्दा तुम अैसा मूर्खताका काम कभी न करना। तुमने कोअी फसाद किया होता, अुद्धतता की होती तो मैं तुम्हें सीधा कर देता। पर तुम तो मूर्खतापूर्ण कदम अुठाकर अुपवास करने लगे। मैं तुम्हें सजा भी किस बातकी दूं?"

गवर्नर साहबका कहना सुनकर हमें हंसी आ गअी। फिर तो हमने सारी बातोंकी सफाअी की। घी अच्छी किस्मका होना चाहिये। अुसका नमूना भी हमने ही पसन्द किया। दूसरा मुद्दा हमारे स्वाभिमानका था। कुछ गोरे वार्डर हमें 'कुली' कहकर हमारा अपमान किया करते थे। वह अपमान अब न हो, अिसका हमने आश्वासन मांगा। गवर्नर साहबने घंटी बजाकर सबको अिकट्ठा किया और वैसा अपमान न करनेकी और साथ ही

हमें कोअी तकलीफ न देनेकी सख्त हिदायत दी। फिर हममें से कुछ लोगोंको तकिये, गद्दे और जूते नहीं मिले थे; अिन सबकी हमने मांग की। जेलके भंडारमें जितना सामान मौजूद था वह सब वहीं हमारे सामने रख दिया गया और बाकी तैयार करा देनेका वचन दिया गया। फिर आखिरी मांग हमने यह की कि सत्याग्रहके पहले हम सब जैसे अेक साथ रहते थे वैसे ही सबको फिरसे अेक साथ कर दिया जाये। यह भी अुन्होंने मंजूर किया। बस, काम पूरा हुआ। सब जगह आनंद ही आनंद छा गया। गवर्नर साहबके सामने ही जेलके अनुशासन जैसी कोअी चीज नहीं रही। कितने ही यार्ड-वार्डर और हेड वार्डर तो हमें जीत पर मुबारकबाद देने आये। चार दिन पहलेकी जेल चार दिनकी तपश्चर्याके बाद मंदिर जैसी लगने लगी। अुसकी सारी भयानकता दूर हो गअी और स्वाभिमानके साथ हमारे दिन बीतने लगे।

अुपवासके बाद भोजनके मामलेमें असंतोष रहा, परन्तु वह भोजनालयके कर्मचारियोंकी बदमाशीके कारण रहा; मौका मिलने पर वह भी सब ठीक हो गया। जेलवालोंने भोजनालयकी देखरेख रखनेके लिअे सत्याग्रहियोंमें से किसी अेकको रखना मंजूर किया। और हम सबने भाअी सुरेन्द्रराय मेढको रख दिया। अिस प्रकार भोजनालयकी शिकायत भी दूर हुअी।

परन्तु यहां हमारी तीन महीनेकी मियाद पूरी नहीं हुअी। लगभग पचीस दिन रहे कि हममें से सौ आदमियोंको डरबन सेंट्रल जेल भेज दिया गया। वहां फिर नया दूल्हा और नअी बारातवाली बात हुअी। वहां भी चार दिनके अुपवास हुअे। वहांके सुपरिन्टेन्डेन्टको डीन कहा जाता था। वह बड़ा क्रूर और घाघ आदमी था। अुपवासके दिनोंमें भाअी प्रागजी देसाअी पर हमला हुआ, जिससे अुन्हें अेक महीने खाटमें पड़ा रहना पड़ा। चार दिनके अुपवासके अन्तमें डीन समझौता करने आया। वह बोला: "मेरे मातहत दो हजार डच फौजी कैदी रह चुके हैं, लेकिन किसकी मजाल थी जो मेरा अनुशासन तोड़ सके? तुम्हींने मेरा अनुशासन भंग किया है। तुमने मुझे जितना तंग किया अुतना और किसीने नहीं किया।" अुसके कहनेका हेतु भी यही था कि अुसे यह नहीं सूझता कि वह अिससे कैसे निपटे। हमने अुसे गालियां दी होतीं, अुसके साथ अुद्धत बरताव किया होता या अुसका हुक्म न माना होता, तो अुसने हमें

कभीका सीधा कर दिया होता। परन्तु हमने अपनी नम्रता और स्वयं दुःख अुठा लेनेकी कार्रवाअीसे अुसके सब रास्ते बंद कर दिये थे।

सत्ताअीस दिनके निवाससे वह जेल भी, जो जूनी-पुरानी थी और जहां पृथ्वीके नरक जैसा कष्ट था, रहने लायक बन गअी और २२ दिसम्बर १९१३ को पहले-पहल पकड़ी गअी टोलीका छुटकारा हुआ।

९

लड़ाअीका रंग जमा

पहले दलको सजा होनेके बाद पहलेसे की हुअी व्यवस्थाके अनुसार वीर स्त्री-पुरुष क्या रुकनेवाले थे? खास तौर पर अिमिग्रेशन और व्यापारी परवानोंके कानून तोड़नेके रास्ते तो सबको मालूम ही थे। दूसरे कानून तोड़नेकी कल्पना तक नहीं की गअी थी। श्री कस्तूरबाके जेलमें जाते ही ट्रांसवालमें ग्यारह बहनोंका अेक दल तैयार हो गया। अिन बहनोंने पहलेसे ही तैयारी कर रखी थी। गांधीजीने अुन्हें बहुत चेतावनी दी। अुन्होंने जेलकी असुविधाओं और कष्टोंका वर्णन अिन बहनोंको सुनाया। खाने-पहनने, ओढ़ने-बिछाने और बैठने-अुठने तकमें हर घड़ी अंकुशमें रहना पड़ता है, सख्त काम करना पड़ता है, कपड़े धोनेका, पीसनेका और अन्य काम वहां खूब करना पड़ता है, वगैरा बहुतेरी चेतावनियां दीं। पर अुनमें से कोअी बहन पीछे हटनेवाली नहीं थी। सबके मनमें बड़ी अुमंग थी। अुनमें से कुछ बहनोंके पास दूध-पीते बच्चे थे। फिर भी वे सब तैयार हो गअीं। अुनके नाम ये हैं:

१. श्रीमती थंबी नायडू, २. श्रीमती अेन० पिल्ले, ३. श्रीमती के० मुरगेसा पिल्ले, ४. श्रीमती अे० पी० नायडू, ५. श्रीमती पी० के० नायडू, ६. श्रीमती चिन्नस्वामी पिल्ले, ७. श्रीमती अेन० अेस० पिल्ले, ८. श्रीमती आर० अे० मुर्डलिगम्, ९. श्रीमती भवानीदयाल, १०. श्रीमती अेम० पिल्ले, और ११. श्रीमती अेम० बी० पिल्ले।

ये बहनें जेलमें जानेको तैयार हुअीं, लेकिन जायं कहां? जोहानिसबर्गमें बिना परवानेके फलोंकी फेरी लगाने पर सरकार पकड़ नहीं रही थी। अिसलिअे ये बहनें ऑरेंज फ्री स्टेटमें गअीं, जहां अिमिग्रेशन-कानून कड़ाअीके साथ अमलमें लाया जा रहा था। वहां भी किसीने अुन्हें नहीं पकड़ा। तब वे

सब वहां फेरी लगाने लगीं। फिर भी कोओी नतीजा नहीं आया। अिस पर वे सब ट्रांसवालमें होकर परवानेके बगैर नेटालमें घुसीं, परन्तु वहां भी नहीं पकड़ी गओीं। सरकार अुन्हें कैसे पकड़ती? अुनके लिअे तो भविष्यके गर्भमें महान कार्य नियत हो चुका था।

नेटालमें जब अुन्हें पकड़ा नहीं गया, तो अुन्होंने न्यूकैसल नामके गांवमें जाकर रहनेका निश्चय किया। वहां कोयलेकी खानें हैं। खानोंमें हजारों हिन्दुस्तानी गिरमिटिये थे। अुन्हें काम छोड़कर हड़ताल करनेको अुकसाना था। सब बहनें न्यूकैसल गओीं और मि० लेजरस नामके अेक हिन्दुस्तानी ओीसाओी सज्जनके यहां ठहरीं। ये भाओी मध्यम श्रेणीके थे। जमीनके अेक छोटेसे टुकड़े पर मेहनत करके अपना गुजारा करते थे। अुन्होंने अिन बहनोंका आदर-सत्कार किया। बहनोंने दिनभर मजदूरोंके बीचमें घूमना शुरू किया। लगभग सभी बहनें मद्रासी थीं और मजदूरोंमें भी अधिकांश मद्रासी ही थे। बहनोंके प्रेमपूर्वक समझानेसे मजदूरोंके दिल पिघल गये। अुन्हें जीवनमें आज तक जो बात समझमें नहीं आयी थी वह अब समझमें आ गओी। अुनके हृदयमें विश्वास हो गया कि "यह लड़ाओी तो हमारे भलेके लिअे है। हम परसे तीन पौंडका कर अुठवा देनेके लिअे 'गांधी राजा' ने यह लड़ाओी छेड़ी है। राजाके समान बड़े गांधी राजाकी रानीको सरकारने जेलमें डाल दिया है, अुनके कुंवरोंको जेलमें डाल दिया है; यह सब हमारे भलेके लिअे हो रहा है, तब हम कैसे बैठे रह सकते हैं? और जो बहनें हमें कहने आओी हैं अुन्हें तो तीन पौंडका कर देना नहीं पड़ता। अिसलिअे अुनकी सिखावन अुनके स्वार्थके लिअे हरगिज नहीं है।" अिस सीधी-सादी समझसे अुन भोलेभाले लोगोंका हृदय लड़ाओीमें शरीक होनेके लिअे प्रेरित हुआ। धीरे-धीरे वातावरण गरम हुआ और हड़ताल शुरू हो गओी। अब सरकारको यकीन हो गया कि अिन बहनोंको आजाद रहने देनेसे काम नहीं चलेगा। अिसलिअे अुन ग्यारह बहनोंको अुसने पकड़ लिया। अुन्हें भी तीन-तीन महीनेकी सजा देकर मेरित्सबर्गकी जेलमें भेज दिया गया।

सरकारकी अिस कार्रवाओीका असर अुसने सोचा था अुससे अुलटा हुआ। वीर बहनोंकी वीरतासे हजारों मजदूरोंके दिलोंमें जोश भर गया। अुन्होंने अेकके बाद अेक कोठीमें हड़ताल करना शुरू कर दिया। बहनोंकी विदाओीके बाद श्री थंबी नायडूने वहां जाकर डेरा जमाया, हड़तालियोंकी तादाद

बढ़ने लगी। यह सब हकीकत गांधीजीको हर रोज मिलती रहती थी। गांधीजी फिनिक्समें रहते हुअे वहांसे अेक दो बार जोहानिसबर्ग हो आये थे। अुन्होंने आते-जाते अिमिग्रेशन-अफसरको परवाना नहीं बताया तो भी अुन्हें पकड़ा नहीं गया। जब थंबी नायडूके सिर पर हड़तालियोंकी जिम्मेदारी बढ़ गअी, तो अुन्होंने गांधीजीको न्यूकैसल बुलाया। गांधीजी वहां गये। जिन सज्जनने ग्यारह बहनोंका सत्कार किया था, अुन्हींके यहां वे ठहरे। वहां यह जानकर कि 'गांधी राजा' आये हैं मजदूरोंकी भीड़ अुलट पड़ी। खानोंके मजदूरोंकी सारी कोठियोंमें तुरन्त हड़ताल हो गअी। मि० लेजरसके घरवालोंने तो हद ही कर दी। अुनका घर अेक तीर्थस्थान बन गया। अुन्होंने अपने घरकी सारी सामग्री, तमाम सामान आनेवाले लोगोंकी सेवामें हाजिर कर दिया। सैकड़ों मनुष्योंको खिलानेका काम भी अुन्होंने अपने कंधों पर ले लिया। लेकिन दो चार दिनमें ही लोगोंका जोर बढ़ गया। अिन सबका प्रबन्ध कसे किया जाय? अितने ही में खानोंके मालिकोंने गांधीजीको बुलवाया। अुनसे गांधीजीने कहा, "हिन्दुस्तानियोंको अनेक दुःख हैं, परन्तु अुनके लिअे मैं अिस सत्याग्रहकी लड़ाअीमें मजदूरोंका अुपयोग करना नहीं चाहता। सरकार मजदूरों परसे तीन पौंडका कर अुठा दे तो मैं शांतिसे मजदूरोंको काम पर लग जानेकी सलाह दे दूंगा।" मालिकोंने बताया कि यह अुनके हाथकी बात नहीं है, पर अैसी हड़तालका नतीजा खराब होगा। हड़तालियोंको बहुत दुःख अुठाना पड़ेगा, वे परेशान होंगे, आदि बहुतसी चेतावनियां और धमकियां अुन्होंने गांधीजीको दीं। खानोंके मालिकों और गांधीजीकी अिस मुलाकातकी बात सुनकर हड़ताली और भी अुत्तेजित हो गये।

गांधीजीने सोचा कि जिन लोगोंने हड़ताल की है अुन्हें अपनी कोठरियां छोड़ ही देनी चाहिये, नहीं तो मालिक अुन्हें तंग करेंगे, कअी कठिनाअियां खड़ी करेंगे और हड़ताली टिक न सकेंगे। अिसलिअे गांधीजीने अुन लोगोंको अपनी कोठरियां बन्द करके अपने साथ सिर्फ पहनने-ओढ़नेका सामान लेकर बाहर निकल आनेकी सलाह दी। यह सलाह सुनकर हजारों स्त्री-पुरुष गठरियां ले लेकर तैयार हो गये। वे सब न्यूकैसलमें अिकट्ठे हुअे। अुन्हें शुरूसे ही समझा दिया गया कि हड़ताल करोगे तो तुम्हें जेलमें जानेकी तैयारी रखनी पड़ेगी; जेलमें जो भी कष्ट अधिकारी देंगे अुन सबको सहन करना पड़ेगा; यह सब सहन करनेकी शक्ति न हो तो हड़तालमें शामिल न हो और

वापस काम पर चले जाओ। परन्तु अुनमें से कोओी भी अैसा कमजोर न निकला। अुन्होंने यही कहा कि "आप जब तक लड़ेंगे तब तक हम भी नहीं थकेंगे।" लेकिन अिस तरह जमा हुअे मनुष्योंके लिअे क्या किया जाय? अुन्हें भी शुरूकी सोलह आदमियोंकी टोलीकी तरह सरहद पार करना हो, तो सरकार पकड़ेगी और अिस तरह छोटे-छोटे कअी दल पकड़े जायेंगे। लेकिन अधिक विचार करने पर यह खयाल गलत मालूम हुआ। अुसमें देर होनेका और सरकारके न पकड़नेका भी डर था। तो क्या अिन लोगोंकी भीड़को अेक जगह बिठा रखा जाय? अिससे तो वे अुत्पात करने लगेंगे। अुनमें कअी तरहकी वृत्तिके आदमी थे। चोरीका अपराध किये हुअे थे, हत्याके मुजरिम थे, व्यभिचारके अपराधी थे और शराबके व्यसनमें चूर रहनेवाले भी थे। अैसे लोगोंके विशाल समूहको लम्बे समय तक सुलह-शांतिकी बात पर टिकाये रखना बहुत मुश्किल था। अिसलिअे गांधीजीको अेक विलक्षण विचार सूझा। सभी लोगोंकी अेक कूच टॉल्स्टॉय फार्मकी तरफ ले जाअी जाय। वहां जाते हुअे सरहद पर वॉल्क्रस्टसे आगे सबको सरकार पकड़ ले तो भी अच्छा; और ठेठ तक जाने दे और पांच हजार मनुष्योंके सरकारको चुनौती देकर कानून तोड़ने पर भी सरकार अुनका कुछ न करे, तो अुस कानूनकी कीमत ही क्या रहेगी? अिसके अलावा, अैसी जबरदस्त कूचसे अूहापोह और जागृति भी खूब होगी। अुन्होंने अपना यह विचार सबको बताया। सबने सम्मति दी। गांधीजीने कूचमें शामिल होनेवाले सब भाअियों और बहनोंके लिअे नीचे लिखी शर्तें रखीं :

१. कोओी भी शराब न पिये और बीड़ी वगैरा व्यसनकी चीजोंके लिअे दाम न मांगे।

२. रास्तेमें चोरी या दंगा-फसाद न किया जाय।

३. जहां पड़ाव डालना हो वहां आकाशको छप्पर और जमीनको बिछौना समझकर सब रहें।

४. खानेकी सुविधा की जायगी, परन्तु जो कुछ और जितना कुछ मिल जाय अुसीमें संतोष मानना पड़ेगा।

५. मुकर्रर की हुअी जगह पहुंचनेसे पहले या बादमें गांधीजीको सरकार पकड़ ले, तो शान्ति रखी जाय और अुनकी जगह पर जिसे नियत किया जाय अुसके अधिकारमें रहकर अुसकी आज्ञाका पालन किया जाय।

६. सबको या थोड़ोंको पुलिस पकड़ने आये, तो झगड़ा किये बिना खुशीसे पुलिसके अधीन हो जायं।

७. अैसा करते हुअे भी पुलिस जुल्म करे और शायद मारपीट करे, तो अुसे भी सहन कर लिया जाय, परन्तु अुसका सामना न किया जाय और पलटकर वार न किया जाय।

अूपरकी सब शर्तें अुन लोगोंने मंजूर कर लीं। आखिरी शर्त अुनमें से कुछ लोगोंको कड़ी लगी, फिर भी सबने अपने नेताकी बात मान ली। फिर कूच आरंभ हुअी। रंग-बिरंगी पोशाकवाले, अपढ़, अज्ञान, कुछ हद तक जंगली जैसे, व्यसनी, नीति या अनीतिका कुछ भान न रखनेवाले, चरित्र क्या और धर्म क्या अिसका भी जिनमें से अधिकांशको पता नहीं, अैसे हजारों आदमियोंकी भीड़ चली। चमड़ीसे ढंकी हुअी मुट्ठीभर हड्डियोंके कंकालवाले अेक अलौकिक पुरुषके हाथमें सबकी डोर थी। अुसके पास कोअी सत्ता नहीं थी, केवल हृदयका प्रेम था। वह सरदार होते हुअे भी सरदार न बना, परन्तु सेवक बना। अुसने लोगोंकी सरदारी नहीं की, बल्कि सेवा की। सबकी सेवा करके अुन्हें सेवक बनाया। फिर तो कोअी भी किसीके लिअे भार न बना। अिस प्रेम और सेवाभावके अप्रतिम बन्धनके कारण विशाल मानव-समुद्र अिस पुरुषकी मर्यादामें रहा। जहां पड़ाव डाला जाता वहां ढेरों अनाजकी बोरियां पड़ी ही होतीं। व्यापारियोंने भी गजब कर दिया। आवश्यकतासे कअी गुना अधिक अनाज और भोजन वे तैयार रखते थे। जहां ठहरते वहां मसजिदके चौकमें खाना बनाया जाता और पांच हजारके हिस्सेमें आनेवाला भोजन गांधीजी बांट देते थे। कम हो या ज्यादा हो, अच्छा हो या बुरा हो, कच्चा हो या पक्का हो, परन्तु गांधीजीके हाथसे बांटा हुआ भोजन लेकर सब बड़े संतोषके साथ खाते और किसी भी शिकायत या झगड़ेके बिना आगे बढ़ते चले जाते। न्यूकैसलसे रवाना होकर चार्ल्संटाअुन गांव आया। वहां ज्यादा ठहरना पड़ा। यह गांव नेटालकी सरहदमें था। अुसके बाद जो गांव आता था वह ट्रांसवालकी सरहदमें था। अिसलिअे ट्रांसवालकी सरहदमें घुसनेसे पहले सरकारको सूचना देना गांधीजीने अुचित समझा। गांधीजीकी मर्यादा और विवेक-दृष्टिने अुन्हें बहुतेरी गलतफहमियों और अनर्थोंसे बचाया है। अिस गांवमें पड़ाव डालकर गांधीजीने ट्रांसवालकी सरकारको नीचे लिखा सन्देश भेजा :

"हम ट्रान्सवालमें बसनेकी गरजसे प्रवेश नहीं करना चाहते। हमारा प्रवेश सरकारके वचन-भंगके खिलाफ अमली पुकार है; और हमारे स्वमान-भंगसे होनेवाले दुःखकी शुद्ध निशानी है। हमें आप यहीं चार्ल्सटाअुनमें पकड़ लेंगे तो हम निश्चित हो जायेंगे। अगर आप अैसा नहीं करेंगे और हममें से कोओी गुप्त रूपमें ट्रान्सवालमें घुस जायगा तो अुसके लिअे हम जिम्मेदार नहीं होंगे। हमारी लड़ाओीमें कोओी भी गुप्त चीज नहीं है। किसीको व्यक्तिगत स्वार्थ साधना नहीं है। कोओी छिप कर प्रवेश करे यह हमें पसंद नहीं है। परन्तु जहां हजारों आदमियोंसे काम लेना हो और जहां प्रेमके सिवा दूसरा कोओी बंधन नहीं हो, वहां किसीके कार्यके बारेमें हम जिम्मेदार नहीं हो सकते। और आप यह भी समझ लीजिये कि आप तीन पौंडका कर हटा देंगे तो गिरमिटिये वापस अपने काम पर चले जायेंगे और हड़ताल बन्द हो जायगी। अपने दूसरे दुःख मिटवानेके लिअे हम अुन्हें सत्याग्रहमें शरीक नहीं करेंगे।"

सरकारको अिस तरहका संदेश भेजनेके बाद वह किसी भी क्षण हड़तालियोंको पकड़ सकती थी। परन्तु अैसा कुछ मालूम नहीं हुआ। निमंत्रण भी नहीं आया और पत्र भी नहीं आया। पांच हजारकी आबादीवाले चार्ल्सटाअुन गांवमें दूसरे पांच हजार आदमियोंको लेकर अधिक समय पड़ा रहना सलामत नहीं था। हमारी जरूरतें भी कुछ विचित्र होती हैं। सफाओी हम रख नहीं सकते। अपने रहनेके या सार्वजनिक स्थानोंको हम स्वच्छ नहीं रख सकते। अिन सब कुटेवोंके कारण भी और अधिक समय तक अस्थिर दशामें पड़े रहनेसे अुपद्रव होनेकी संभावना थी। अिसलिअे गांधीजीने ट्रान्सवालकी सीमा पार करनेकी तैयारी की। तैयारी करनेसे पहले फिर गांधीजीने शिष्टता दिखाओी। जनरल स्मट्सके मंत्रीको टेलीफोनसे सारी बात बतायी। परन्तु आधे ही मिनटमें गांधीजीको अशिष्ट अुत्तर मिला: "जनरल स्मट्स आपके साथ बात भी नहीं करना चाहते; आपकी अिच्छा हो वैसा कीजिये।" अब तो सरकारकी तरफसे किसी कार्रवाओीकी आशा नहीं रही। कूच शुरू हुओी। रास्तेमें कओी बाधायें आओीं। सबको जोहानिसबर्ग पार करके टॉल्स्टॉय फार्ममें पहुंचना था। रास्तेमें जो बीमार पड़ जाता अुसे गाड़ीमें रवाना कर देते। सबको गाड़ीमें ले जाना संभव नहीं था। अिसलिअे यह यात्रीसंघ पैदल ही रवाना हुआ। रास्तेमें दो बच्चे मृत्युकी शरणमें चले गये। अेक बालकको सर्दीका बुखार

चढ़ा और वह मर गया। दूसरा बच्चा अेक छोटेसे पानीके झरनेको पार करते हुअे अपनी माताके हाथसे गिर पड़ा, प्रवाहमें बह गया और मर गया। लेकिन अिससे न किसीने हार मानी और न कोअी निराश हुआ। सब बोल अुठे: "हम जानेवालोंका शोक करेंगे तो अुससे वे वापस तो आयेंगे ही नहीं। जीनेवालोंकी सेवा करना ही हमारा धर्म है।" अिस तरह साधुओं और साध्वियोंकी वह जमात आगे बढ़ती रही। अंतमें ट्रान्सवालकी हद आअी। वॉलक्रस्टके नालेके पास घुड़सवार पुलिसका दल खड़ा था। वह अिस संघको रोकनेके लिअे नहीं खड़ा था, परन्तु अिसलिअे कि वॉलक्रस्टके गोरोंने अुत्पात शुरू कर दिया था। अुनका अिरादा था कि गांधीजी अिस संघको लेकर ट्रान्सवालमें घुसें, तब बंदूकें लेकर सामने जायें और तूफान मचाकर अुन्हें वापस निकाल दें। दो दिन पहले वहां अेक सभा हुअी थी। अुसमें सभी गोरोंको बुलाया गया था। मिस्टर कैलनबैक वहां जानेवाले संघके लिअे व्यवस्था करनेको पहलेसे ही पहुंच गये थे। वे भी सभामें गये थे। खूब गरमागरम भाषण हुअे और सभाका पारा खूब अूंचा चढ़ गया तब मि० कैलनबैक खड़े हुअे। अुन्होंने सबके रवैयेके खिलाफ अपना विरोध प्रकट किया। अुन्होंने कहा कि, "हिन्दुस्तानी राजनीतिक हकोंके लिअे नहीं लड़ रहे हैं। वे तो सामाजिक हकोंके लिअे लड़ रहे हैं। वे अपने स्वाभिमानके लिअे लड़ रहे हैं। अुनकी लड़ाअी बिलकुल अुचित है। अितने सारे गोरोंमें मैं अेक अैसा हूं कि तुम्हारी अमानुषिक वृत्तिके विरुद्ध अपनी आवाज अुठा रहा हूं।" अिस तरह अुन्होंने गोरोंका खूब विरोध किया। बहुतसे गोरे शरमा गये, कुछ दब गये, कुछ गुस्सेमें आकर अुन्हें गाली देने लगे और मारनेको अुठे। अेक आदमीने तो मि० कैलनबैकको द्वन्द्वयुद्धकी चुनौती भी दे डाली। मि० कैलनबैक अैसे पहलवान थे कि अुससे अच्छी तरह निपट सकते थे। परन्तु अुन्होंने बहुत शांतिसे जवाब दिया: "मैंने शांतिधर्म स्वीकार न किया होता तो मैं तुम्हारी चुनौती बड़ी खुशीसे स्वीकार करता। फिर भी तुम्हें मुझ पर जितने वार करने हों तुम कर सकते हो।" अंतमें सब ठंडे पड़े और बिखर गये। अिस सभाके कारण सरकार सावधान हो गअी और अुसने सत्याग्रहियोंके संघके जानेसे पहले पुलिस-दल भेज दिया। गांधीजीको अिस सभाकी बात पहलेसे मालूम हो गअी थी। अुन्होंने सबको चेता दिया था कि अगर वॉलक्रस्टके गोरे हमला करने आ जायं तो किसी भी हालतमें पीछे न हटकर सब आगे

ही बढ़ते चले जायं। लेकिन वॉलक्रस्ट गांवमें से गुजरने पर अैसी कोओी बात नहीं मालूम हुओी। सभी गोरे अिन यात्रियोंके संघको खड़े खड़े देखते रहे। सारा संघ वॉलक्रस्ट पार करके आगे बढ़ा और वहांसे आठ मील दूर जाकर अुसने पड़ाव डाला।

पड़ाव पर रातके अंधेरेमें पुलिस अफसर आया और अुसने गांधीजीको जगाया। कोओी न जान सके अिस तरह गांधीजी श्री पी० के० नायडूको अिस सारे संघकी जिम्मेदारी सौंपकर पुलिस अफसरके साथ चले गये। पासके स्टेशनसे गाड़ीमें बैठकर वॉलक्रस्ट पहुंचे। वहां अदालतमें दूसरे दिन सवेरे अुन पर मुकदमा चला। गांधीजीने अदालतमें मजिस्ट्रेटके सामने बयान दिया: "मेरी देखरेखमें हजारों पुरुष, सैकड़ों स्त्रियां और छोटे छोटे बच्चे हैं। अुन्हें जंगलमें निराधार रखकर मुझे पकड़ लिया गया है। अिसलिअे सरकारको मुझे पकड़ना ही हो तो या तो अुन सबको जोहानिसबर्गके पास टॉल्स्टॉय फार्ममें पहुंचा देना चाहिये या सबको पकड़ लेना चाहिये। अिन दोनों बातोंमें से सरकार अेक भी न कर सके तो जब तक वे टॉल्स्टॉय फार्ममें पहुंच न जायं तब तककी मुझे मोहलत मिलनी चाहिये।" मजिस्ट्रेटने गांधीजीकी यह मांग स्वीकार करके अुन्हें जमानत पर छोड़ दिया और वे फिर कूचमें शामिल हो गये। कूच फिर शुरू हुओी। जब स्टैण्डरटन गांवके पास सारा संघ पहुंचा तो वहां गांधीजीको फिर गिरफ्तार कर लिया गया। साथ ही कुछ साथियोंको भी पकड़ लिया गया। स्टैण्डरटनके मजिस्ट्रेटने भी गांधीजीको अूपर बताये कारणसे ही छोड़ दिया। फिर कूच आगे बढ़ी। अब संघ लगभग जोहानिसबर्ग पहुंच गया। हेडलबर्ग नामके स्टेशनके पास फिर अिमिग्रेशन-अफसर जा पहुंचा और गांधीजी पर नेटालके डंडी गांवके मजिस्ट्रेटका वारंट तामील किया। अिस समय मि० पोलाक हिन्दुस्तानको जानेवाले डेप्युटेशनके सदस्यकी हैसियतसे जानेके पहले गांधीजीसे मिलने आये थे। हिन्दुस्तानकी जनताके सामने अिस सत्याग्रहका सब विवरण रखनेके लिअे श्री गोखलेने मि० पोलाकको हिन्दुस्तान आनेके लिअे लिखा था। मि० पोलाक अपने सफरका सारा सामान डरबन भेजकर कूचमें गांधीजीसे मिलने और अुनसे कुछ सलाह लेने आये थे। अिसी समय गांधीजीको तीसरी बार गिरफ्तार किया गया। गांधीजीने मि० पोलाकसे कहा, "अब तो हमारा सच्चा डेप्युटेशन यहीं हो सकता है। तुम्हीं मेरी जगह ले लो।"

मि० पोलाकने गांधीजीकी जगह ले ली। गांधीजीको डंडी ले जाया गया। वहां अुन पर खानोंके मजदूरोंको खानोंसे निकालकर हड़ताल करानेका अभियोग लगाया गया, जिसमें अुन्हें नौ महीनेकी सजा हुअी। वहांसे अुन्हें वॉलक्रस्ट ले गये। गांधीजीको पकड़नेके बाद हेडलबर्ग स्टेशन पर संघके सभी लोगोंको तुरंत गिरफ्तार घोषित कर दिया गया और दो तैयार रखी हुअी स्पेशल गाड़ियोंमें बिठाकर सबको न्यूकैसलकी अपनी अपनी खानोंमें ले जाकर अुतार दिया गया। खानोंको जेल-प्रदेश घोषित करके सबको वहीं रखा गया।

मि० पोलाकको भी मुक्त रखकर हिन्दुस्तान जाने देना सरकारको पसन्द नहीं था। अिसलिअे अुन्हें भी पकड़ लिया गया। मि० कैलनबैक बादके दलके नेता बनकर कूच कर रहे थे। अुन्हें भी सबके साथ पकड़ लिया गया। अिस प्रकार दोनों मित्रोंको भी वॉलक्रस्ट ले जाया गया। वॉलक्रस्टकी जेलमें गांधीजी, मि० पोलाक और मि० कैलनबैक अिकट्ठे हो गये। परन्तु अिन तीनोंको सात ही रोज वहां साथ रहने दिया गया। बादमें गांधीजीको ऑरेंज रिवर फ्री स्टेटके ब्लोमफोण्टीन शहरके अेकान्त जेलमें रखा गया, मि० पोलाकको जरमिस्टन जेलमें रखा गया और मि० कैलनबैकको प्रिटोरिया जेलमें रखा गया। अिस प्रकार सभी दलोंको अुनके नेताओंके साथ पकड़कर सरकारने कूच करनेवाले हिन्दुस्तानी मजदूरोंको अपनी अपनी खानोंमें विदा कर दिया, खानोंको जेलकी हद घोषित कर दिया और बैरकोंको जेल बनाकर वहां सबको रख दिया।

१०

‘पुरानी संस्कृतिका प्रताप’

नेटालके अुत्तरी भागमें जो जागृति पैदा हुअी और लड़ाअी जमी, अुस पर हम पिछले प्रकरणमें लिख चुके हैं। लेकिन हिन्दुस्तानियोंकी आबादी तो सारे नेटालमें फैली हुअी है। नेटालके वायव्य और नैअृत्य प्रदेशमें गन्नेकी पैदावार खूब होती है और सारा प्रदेश अिस तरह दिखाअी देता है जैसे कोअी अलौकिक अुद्यान हो। वह प्रदेश हिन्दुस्तानियोंके पसीनेके प्रतापसे रमणीय बना है और अुत्तरके हिन्दुस्तानी किसानोंसे ये नैअृत्य और वायव्य भागके हिन्दुस्तानी किसान ज्यादा संस्कारी और होशियार हैं। गिरमिटिया मजदूरोंकी

हालत तो सभी जगह अेकसी है। गांधीजीकी धारणा थी कि न्यूकैसलकी तरफके हिन्दुस्तानियोंकी हड़ताल और अुसके कारण होनेवाली जागृति तथा लड़ाअीसे पैदा होनेवाला जोश लड़ाअीको सफल बनानेके लिअे काफी है। अिसके सिवा, सारे नेटालमें सब जगह हड़ताल फैल जाय तो हड़तालियोंको काबूमें रखना भी मुश्किल हो जायगा। गिरमिटियोंकी संख्या लगभग ५५ से ६० हजार थी। वे सब हड़ताल कर दें तो अुन्हें शान्त रखना, अुनकी हड़तालको टिकाये रखनेके लिअे अुनके खानेका बन्दोबस्त करना, अुसके लिअे जरूरी आर्थिक सहायता, काफी सेवक और व्यवस्था करनेके लिअे आवश्यक जिम्मेदार आदमी जुटाना भी जरूरी था। परन्तु अिनमें से कुछ भी गांधीजीके पास नहीं था। जो कुछ था वह सिर्फ आरम्भ की हुअी कूचके लिअे ही काफी था। गांधीजीके पास जो कार्यकर्ता थे अुन्हें सरकारने गांधीजीके साथ या आगे-पीछे पकड़ लिया था। अब तो श्री काछलिया सेठ सारे ट्रान्सवालके आन्दोलनकी देखरेख करनेवाले अकेले ही रह गये थे। मिस श्लेशिन ट्रान्सवालकी हद लांघनेकी व्यवस्था करनेवाली और सारी लड़ाअीका तफसीलवार हिसाब रखनेवाली अकेली रही थीं। 'अिंडियन ओपीनियन' सत्याग्रहकी लड़ाअीका अमूल्य मुखपत्र था। अुसके गुजराती विभागकी जिम्मेदारीके सिवा आश्रममें रहनेवाले छोटे-छोटे बच्चोंकी देखरेख करनेवाले और कअी दृष्टियोंसे विचार करके अनेक कामोंकी निश्चित व्यवस्था करनेवाले सिर्फ श्री मगनलाल गांधी ही रह गये थे। 'अिंडियन ओपीनियन' के अंग्रेजी विभागकी जिम्मेदारीके सिवा लड़ाअीके रोजमर्राके सारे समाचार तार या पत्र द्वारा हिन्दुस्तानमें श्री गोखलेको भेजनेवाले और सारे आन्दोलनकी विगतवार सच्ची खबरें जुटाकर अुनका अुचित प्रकाशन करनेवाले श्री वेस्ट अकेले थे।

अिस तरह गिनतीके आदमी ही बाहर रहे थे। अुनसे भला क्या हो सकता था? फिर भी गांधीजीको पकड़कर, श्री कैलनबैक और श्री पोलाकको पकड़ कर तथा सभी प्रसिद्ध और कसे हुअे योद्धाओंको जेलखानेमें बन्द करके सरकारने आरामकी सांस लेकर यह समझा होगा कि "अब शान्ति हो जायगी"। परन्तु राष्ट्रीय जागृति कभी अकेला आदमी भी कर सकता है? मनुष्योंके — अुनके नेताओंके पीछे कोअी अलौकिक पृष्ठबल होता है, जो विलक्षण काम करता है। गांधीजीको अैसी अेकान्त जेलमें बन्द

किया था कि अुनके विचारोंकी छूत तक हिन्दुस्तानी जगतको न लगने पाये। परन्तु गांधीजीकी गिरफ्तारीके बादका सप्ताह तो सत्याग्रहकी ज्वालासे धधकता हुआ जान पड़ा। अमज़िन्टो, स्टैनगर, वेटलम वग़ैरा परगनोंमें न्यूकैसलके मजदूरोंके यात्रीसंघकी कथा बिजलीकी तरह घर-घर पहुंच गअी। जिन्होंने कभी गांधीजीका नाम तक न सुना होगा, जिन्हें यह कल्पना भी नहीं होगी कि गांधीजी कौन हैं और कैसे हैं, अैसे हजारों अज्ञान और कुछ हद तक जंगली वातावरणमें रंगे हुअे गिरमिटिया मजदूरोंके दिल अुछल पड़े। "गांधी राजा जेलमें क्यों गये? अुनकी रानी जेलमें कैसे गअी? अुनके कुंवर जेलमें किसलिअे गये? सरकारने अिस राजा जैसे आदमीको अुसके कुटुम्बके साथ कारावास क्यों दिया? हमारे लिअे! तीन पौण्डका कर अुठवानेके लिअे!" अैसी सीधी और सरल समझसे वे प्रेरित हुअे। अुन्हें कोअी दूसरा रास्ता दिखानेवाला नहीं था, कोअी समझानेवाला नहीं था, कोअी अुकसानेवाला नहीं था। अपने अपने कारखानेके लोगोंने जमा होकर हड़ताल करनेका निश्चय किया। हड़तालें की गअीं। अितना ही नहीं था, कुछ कारखानोंमें से दो दो सौ हिन्दुस्तानी मजदूर हड़ताल करके परगनेकी अदालतके चौकमें जाकर बैठ जाते और पुलिस तथा मजिस्ट्रेटको पकड़नेकी चुनौती देते: "हमें सजा दो, हमें जेलमें भेजो। हमने गिरमिटका कानून तोड़ा है; हम गिरमिटिया मजदूर हैं, और हड़ताल करके अपने मालिकोंकी अिजाजतके बिना भाग आये हैं। अिसलिअे हम पर मुकदमा चलाकर हमें जेलमें भेजो।" अिस प्रकार वे निडर होकर बोलते रहते थे। पुलिसवाले कोड़े लिये फिरते रहते; कुछको मारते, मगर वे अुठते ही नहीं थे। मजिस्ट्रेट कहता: "तुमने कोअी गुनाह नहीं किया, तुम चले जाओ।" जवाबमें वे कहते: "हमारे गांधी राजा और अुनकी रानी तथा कुंवरोंने क्या अपराध किया था? हमें भी अुनके साथ जेलमें भेजो या अुन्हें छोड़ो।" अन्तमें मजिस्ट्रेट कहता: "जाओ, तुम्हें अेक हफ्तेकी जेलकी सजा दी जाती है।" वह झुण्ड आग्रह करता: "नहीं, तीन महीनेकी सजा दीजिये।" अन्तमें मजिस्ट्रेट हारकर अेक अेक मासकी सजाका हुक्म देकर सबके नाम वग़ैरा लिखकर पुलिसको सौंप देता। पुलिस सबको जेलमें भेज देती और वे जेलके दरवाजेमें घुसते ही "गांधी राजाकी जय, वन्देमातकी जय" बोल कर सारी जेलको गुंजा देते थे।

अिस प्रकार नेटालकी छोटी-बड़ी जेलें जयनादोंसे गूंजने लगीं। दूसरी तरफ, गोरे लोगोंके यहां, गोरे व्यापारियोंके यहां या गोरोंकी किसी भी संस्थामें नौकरी करनेवाले हिन्दुस्तानी अपना काम छोड़ने लगे। ये लोग तो अैसी हालतमें अपने पैरों पर खड़े रह सकनेकी स्वतंत्र स्थितिमें थे, पर गिरमिटिया हड़ताली क्या करें? डरबनके आसपासके पचास-साठ मीलके विस्तारमें हड़ताल फैल गअी। हर रोज हड़तालके नये-नये समाचार आने लगे और अुसे चलानेके लिअे जिन लोगोंसे जरा भी आशा नहीं रखी जा सकती थी अैसे अनेक लोग सेवकके रूपमें निकल आये। व्यापारी भी बैठे नहीं रहे। व्यापारियोंने हड़तालियोंको भोजन देनेके लिअे काफी अनाज दिया। सेवक अनाजकी लारियां भर-भर कर सारे प्रदेशमें घूमे; किसीको भूखा न रहने दिया। हजारों मजदूर अैसा अनाज लेना ही नहीं चाहते थे। वे हड़तालमें अन्त तक डटे रहनेका निश्चय कर चुके थे। सारे कारखाने खाली पड़ गये। खेतीके काम, शक्करके कारखानोंके काम और दूसरे धंधेवालोंके सारे काम बन्द हो गये।

अिस प्रकार नायकके बिना भी हिन्दुस्तानी लोग लड़ाअीमें सत्याग्रहके नियमोंका कड़ाअीसे पालन करते रहे। डरबनमें हड़ताल शुरू हुअी। खानगी मकानोंके दरवाजे-दरवाजे पर धरना दिया गया, परन्तु अुसमें विवेककी रक्षा की गयी। दवाखानोंमें, बीमारोंकी देखरेखमें और म्युनिसिपैलिटीके सफाअी-काममें जो हिन्दुस्तानी मजदूर या नौकर थे अुन्हें अपना काम छोड़नेकी मनाही कर दी गअी। अिसका असर गोरोंमें भी अच्छा हुआ। हमारी मर्यादा-पालनकी वृत्तिसे हमारा निश्चय-बल बढ़ा। व्यवस्था अच्छी हुअी। अिस निरंकुश हड़तालमें भी नैतिक अनुशासन कायम रहा। सरकारसे यह सब कैसे सहन होता? अुसने यथासंभव अपना जोर आजमा लिया। जुल्म भी खूब किये। हड़ताली दंगा-फसाद करें, अैसे मौके भी पैदा किये। दंगे होंगे अिस आशासे दमनकी सारी सामग्री तैयार रखी गअी थी। हजारोंका सफाया करके अुन्हें अिस तरह कुचल देनेकी सरकारने तैयारी की थी कि भविष्यमें हिन्दुस्तानी लोगोंमें किसी भी तरहका आन्दोलन करनेकी शक्ति न रह जाय। परन्तु अुसके सारे मंसूबे धूलमें मिल गये। अैसे समय भी पुलिसने अैसे प्रसंग पैदा कर दिये, जिनमें हड़तालियोंके पत्थर मारने आदिका कारण बताकर गोली चलाअी गअी और अुन पर अमानुषिक अत्याचार किये गये। अिसमें कोअी चार गरीब मजदूरोंकी हत्या हुअी। कुछ घायल हुअे। बेपढ़े,

व्यसनी, अज्ञान और चरित्रहीन माने जानेवाले अिन मजदूरों पर क्या क्या बीती, अिसका अेक प्रतिष्ठित सज्जनका आंखों देखा और अुन्हींका किया हुआ वर्णन यहां लिख डालूं, तो मैं जो कहना चाहता हूं वह स्पष्ट हो जायगा।

लड़ाअीका प्रताप यूनियन सरकारसे सहन नहीं हुआ। अुसने समझौता करनेके लिअे अेक कमीशन नियुक्त किया। सब नेताओंको छोड़ दिया। सत्याग्रहियोंको भी छोड़ दिया। अिसी बीच हिन्दुस्तानसे दीनबन्धु अेण्ड्रूज और अुनके मित्र मि० पियर्सन वहां पहुंचे। अेण्ड्रूज तो गांधीजीके साथ प्रिटोरिया गये। मगर मि० पियर्सन फिनिक्स आश्रममें हमारे साथ रहे। फिनिक्ससे मील डेढ़ मील दूर जूलू युवक-युवतियोंको आधुनिक प्रगतिशील युगके लिअे तैयार किया जाता था। खेती, बढ़अीगिरी, लुहारी, मोचीगिरी और साथ ही शिक्षाके अलग अलग विभागोंका ज्ञान कराकर प्रत्येक युवक-युवतीको भावी जीवनके लिअे तैयार किया जाता था। अिस संस्थाके संस्थापक और व्यवस्थापक जेम्स डूबे और जॉन डूबे नामक ग्रेज्युअेटकी पदवीवाले दो सेवाभावी सज्जन थे। अमरीकाके हब्शी अिस संस्थाको अपनी संस्था मानकर खूब मदद करते थे। ये दोनों सज्जन दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासियोंकी महासभाके भूतपूर्व अध्यक्ष भी हैं और अुसका सारा कारबार वे ही चलाते हैं। अिस संस्थाको 'नान्दा अिन्स्टिटचूशन' कहते थे। अिसके कार्यकर्ता फिनिक्स आश्रमके साथ अच्छा सम्बन्ध रखते थे। अमरीकाकी हब्शी महिला मिस ब्लैकबर्न छात्रालयकी सुपरिन्टेन्डेन्ट थीं। वे फिनिक्स आश्रममें बार बार आती थीं। वहांसे दक्षिण अफ्रीकाके जूलू लोगोंकी तरफसे अेक साप्ताहिक पत्र भी निकलता था। यह पत्र अंग्रेजी लिपि और जूलू भाषामें छपता था। मि० पियर्सनने अिस संस्थाको देखनेकी अिच्छा प्रगट की। हम दोनों वहां अेक दिन गये। सारी संस्थाका कामकाज देखनेके बाद जूलू लोगोंकी स्थितिके सम्बन्धमें जाननेके लिअे हम मि० जॉन डूबेके पास बैठे। सामाजिक और आर्थिक स्थितिके बारेमें बातें करते करते जूलू लोगोंकी राजनीतिक स्थिति जाननेके लिअे मि० पियर्सनने पूछा: "आपको सरकारकी तरफसे कोअी राजनीतिक अधिकार दिये गये हैं या नहीं?"

"कुछ नहीं। अिसमें तो हमारी हालत हिन्दुस्तानियोंसे भी बुरी है। जहां समानताका नामोनिशान न हो वहां राजनीतिक समानताकी तो बात ही क्या की जाय?"

मि० पियर्सन भौंहें चढ़ाकर बोले : "यह तो बड़ा अन्याय है। आप अिस भूमिके असली मालिक हैं। अुसके अिंतजाममें आपको अुचित हिस्सा न मिले तो कहा जायगा कि आपके साथ बड़ा अन्याय होता है।"

मि० जॉन डूबेने जवाबमें कहा : "न्याय-अन्यायकी बात क्या करते हैं? यहांके गोरोंको तो अिसीमें शंका है कि हम लोग मानव-जातिके भी हैं या नहीं। वे तो हमें मनुष्य ही नहीं समझते।"

"तो आप गोरे लोगोंकी अिस वृत्तिके विरुद्ध कोअी आन्दोलन नहीं करते? अिस तरह पोथी-पंडित तैयार करके आप अपनी जातिका क्या भला करेंगे?" मि० पियर्सन जोशमें बोले।

"हम क्या हलचल या आन्दोलन करें?" मि० जॉन डूबेने निराशासे पूछा।

"मैं तो देख रहा हूं कि यहांके अज्ञानी, असंस्कारी गिरमिटिया मजदूरोंको थोड़े ही अर्सेमें गांधीजीने अेक खास वातावरणकी शिक्षा दे दी और अुन्हें अपने हकोंके लिअे तथा अपने प्रति होनेवाले अन्यायका विरोध करनेके लिअे सत्याग्रहकी लड़ाअीमें शामिल कर दिया। जनसमूहको शिक्षा देनेका वह अच्छेसे अच्छा रास्ता है। आप भी अैसा आन्दोलन शुरू करें तो आपकी जाति तैयार हो जाय। आपको अपने जन्मसिद्ध अधिकारोंके लिअे सरकारसे लड़ना चाहिये। सत्याग्रह और शान्तिके रास्ते लड़कर हब्शी जनताको अिन गोरे लोगों और गोरी सरकारके सामने निडर बनाना चाहिये।"

मि० पियर्सन सच्चे और मानव-प्रेमसे पूर्ण हृदयकी अुमंगसे ये वाक्य बोले कि तुरन्त मि० जॉन डूबे अिस तरहसे सीधे होकर बैठ गये मानो नींदसे जागे हों और बोले :

"हां मि० पियर्सन, आपकी बात मैं समझता हूं। मैंने अिस पर बहुत विचार किया है। गांधीजीके नेतृत्वमें हिन्दुस्तानियोंने जो लड़ाअी लड़ी है, अुसका मैंने बहुत बारीकीसे अध्ययन किया है और मेरी आंखोंने अुस लड़ाअीके बहुतसे प्रसंग देखे हैं। अुन्हें देखनेके बाद तो हिन्दुस्तानी मजदूरोंको जंगली समझ कर नफरतकी नजरसे देखनेके बजाय अब सारे हिन्दुस्तानियोंके लिअे मेरे मनमें आदरभाव पैदा हो गया है। मि० पियर्सन, हिन्दुस्तानियों जैसा काम हमसे नहीं हो सकता। हममें वह दिव्य शक्ति नहीं है। अपनी आंखोंसे अुनका काम देख कर मैं तो आश्चर्यचकित हो गया हूं। सत्याग्रहकी

लड़ाअी चल रही थी। तब अेक दिन मैं डरबनसे आ रहा था। फिनिक्स स्टेशन पर अुतरा। यहां आते हुअे स्टेशनसे थोड़ी दूर पर रास्तेमें अेक मैदान पड़ता है। वहां लगभग पांच सौ हिन्दुस्तानी अिकट्ठे बैठे थे। वे अपने कारखानेमें हड़ताल करके वहां आये हुअे थे। गोरे मैनेजर, अुनके कर्मचारी और गोरी पुलिस अुनको चारों तरफसे घेरे हुअे थी। मैं वहां आधे घंटे तक यह देखनेके लिअे रुक गया कि देखें अब क्या होता है? बैठे हुअे हिन्दुस्तानियोंकी पीठ पर सटासट कोड़े पड़ने लगे। गोरे लाठियोंसे अुन्हें मारते थे और कहते थे: "अुठो काम करो; काम पर जाते हो कि नहीं?" परन्तु कोअी अुठता नहीं था। अुनका रोआं तक नहीं हिलता था। वे शान्तिसे जवाब देते थे: "जब तक गांधी राजा जेलमें हैं, तब तक हम काम नहीं करेंगे।" कोड़ों और लाठियोंसे काम न चला तो बंदूकोंके कुन्दोंका अुपयोग हुआ। पुरुषोंके साथ स्त्रियों और बच्चोंको भी गोरे मारने लगे। कुछ लोग रोते-चिल्लाते रहे, परन्तु वहांसे हटे नहीं। अंतमें घुड़सवार आये और अुन पर घोड़े दौड़ाये गये। "अुठो नहीं तो कुचल जाओगे।" वे चिल्लाये। घोड़े कुछ आदमियोंके पैरों और पीठ परसे गुजर गये। अुनकी चमड़ी अुतर गअी। घोड़ोंके पैरोंके घाव पड़ गये, परन्तु वे वहांसे अुठे नहीं। अितनेमें पुलिस अेक हिन्दुस्तानी जमादारको वहां पकड़ लायी। वह अुन मजदूरोंका नेता माना जाता था। अुसने हिम्मतसे जवाब देना शुरू किया। अुसके निडर जवाबोंके अिनाममें अुस पर जुल्म होने लगा। अुस पर होनेवाला जुल्म देखकर मैं कांप अुठा। अितनेमें अेक पुलिस अफसरने मेरी जातिके पुलिसवालेको हुक्म दिया: "अिसे भालेसे छेद डाल। तू क्या देख रहा है? यह सब अिसी बदमाशकी कारस्तानी है!" अुस पुलिसने हुक्मकी फौरन तामील की और मजदूरोंके अुस नेताको भालेसे छेद डाला। मजदूरोंमें थोड़ी अुत्तेजना फैली तो अुसके बहाने गोली चलाकर अेक दोको और छेद डाला। वह नेता यमराजके दरबारमें पहुंच गया। दूसरे घायल हुअे। परन्तु वे जहां बैठे थे वहांसे जरा भी नहीं हिले। मैं अुन गोरोंकी क्रूरतासे कांपता हुआ और हिन्दुस्तानियोंकी अिस हिमालय जैसी दृढ़ता पर आश्चर्य करता हुआ यहां आया। मि० पियर्सन, मैं अपने लोगोंको अिस भयंकर रास्ते पर चलाअूं, तो हमारा सर्वनाश हो जाय। हिन्दुस्तानी मजदूर कितने ही अपढ़, अज्ञान, असंस्कारी और जंगली क्यों न हों, परन्तु हिन्दुस्तानियोंकी प्राचीन संस्कृतिके प्रतापसे

अुस संस्कृतिसे रंगा हुआ खून अुनकी रगोंमें दौड़ रहा है। गांधीजी जैसे नेताके मिल जानेसे वह संस्कृति ताजी हो गअी। अुनकी मूल दैवी शक्ति प्रकट हो गअी और वे विलक्षण सहनशक्ति दिखला सके। अुनकी जगह हमारे हब्शी लोग हों तो अुनका तामसी स्वभाव किसीके भी हाथमें नहीं रह सकता। अपने बचावके खातिर भी वे सामना जरूर करेंगे। और यहांके गोरोंको तो अितना ही चाहिये। मेरा कोअी भाअी अुत्तेजित होकर किसी गोरेको मार दे तो हमारी शामत आअी समझिये! अेक ही क्षणमें मेरे हजारों भाअियोंका शिकार हो जाय और हमारा सर्वनाश हो जाय। सत्याग्रहकी लड़ाअी लड़नेका हमारा बूता नहीं है। अिसमें हिन्दुस्तानियोंकी शक्ति ही टिक सकती है।"

मि० पियर्सन और मैं मि० जॉन डूबेके अिस हृदयद्रावक वर्णनको सुनकर गद्‌गद हो गये। अीसामसीहके सच्चे अनुयायी मि० पियर्सन हिन्दुस्तानियोंके लिअे आंखें बन्द करके अीश्वरसे दुआ मांगते हुअे अुठे। अिस प्रकार अुन दोनों सज्जनोंसे मिलकर हम फिनिक्स आश्रमको लौटे आये।

११

हिन्दुस्तानकी मदद

पिछले प्रकरणमें जिस घटनाका वर्णन किया गया है वैसी कुछ घटनाअें नेटालमें भी हो गअीं। फिनिक्स आश्रमकी भी कड़ी परीक्षा हो गअी। सारी लड़ाअीका केन्द्रस्थान फिनिक्स है, यह बात तो सभीको मालूम थी। और बहुतसे भड़के हुअे गोरे जमीदारों और पुलिस कर्मचारियोंकी वक्र-दृष्टि भी फिनिक्स पर ही थी। फिनिक्सके चारों ओर जमींदारोंके अड्डे थे। आश्रममें बड़ी अुम्रके लोग बहुत नहीं थे। श्री मगनलाल गांधी और मिस वेस्ट दो ही थे। मिस वेस्टका पूरा नाम मिस आदादेवी वेस्ट था। ये बहन बहुत ही सरल, भली, ममतालु और सेवाभावी थीं। आश्रममें छोटी अुम्रके बच्चोंकी देखरेखका काम अुन्हींने किया। खाना बनाना, परोसना, बरतन साफ करना वगैरा सारे काम वे ही करती थीं। अिसके सिवा, विद्यार्थियोंको अंग्रेजीकी शिक्षा देना, प्रेसका काम करना, प्रेसका हिसाब रखना और खेतीका काम करना — अिस तरह मिस आदादेवी वेस्टने बहुत

बड़ी सेवा की। लड़कोंने भी आश्रममें रहकर लड़ाअीमें पूरा हिस्सा लिया। भयवाले वातावरणमें ढाअी मील दूर स्थित स्टेशन तक डाक ले जाना और वहांसे लाना, अखबारकी प्रतियां नियमित रूपसे पहुंचाना, सामान ले जाना व लाना, और आसपासके सैकड़ों हड़ताली मजदूरोंके फिनिक्समें आकर रहनेके दिनोंमें सबके लिअे खानेका अिन्तजाम करना, रहनेकी व्यवस्था करना, वगैरा बेहद मेहनतका काम अिन बहादुर बच्चोंने निडरतासे किया। फिनिक्सकी संस्था भी अेक यात्राधामके समान हो गअी थी। सैकड़ों हड़तालियोंका वहां जमाव हो गया था। मि० वेस्ट सारे आन्दोलनका पूरा हाल लम्बे तारों द्वारा श्री गोखलेको हिन्दुस्तान भेजते थे, अिसलिअे सरकारको वे बहुत खटकते थे। यह सूचना शुरूसे ही कर दी गअी थी कि फिनिक्स संस्थामें जो लोग हैं वे जेल जानेकी अुम्मीदवारी हरगिज न करें। परन्तु जब बुलावा आ जाय तब कौन वीर अुसका अनादर कर सकता था?

अिस प्रकार जब नेटालमें चारों तरफ आग सुलग अुठी तब हिन्दुस्तानने भी कमाल किया। हिन्दुस्तानके विशाल क्षेत्रमें काम करनेवाले सभी दल — सामाजिक क्षेत्रके दल और राजनीतिक क्षेत्रके दल — दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी सत्याग्रहकी लड़ाअीमें अेक-दूसरेसे हाथ मिलाकर अपनी मदद देने लगे। रुपयेकी तो वर्षा ही होने लगी। श्री गोखलेने धनवानोंसे रुपयेकी मांग नहीं की, परन्तु जनतासे हृदयभेदी अपील की। और हिन्दुस्तानी जनताने अुसका कितना सुन्दर जवाब दिया! अुसमें मालदारोंने दिया और गरीब बूढ़ी विधवाओंने भी दिया। पुरुषोंने दिया और स्त्रियोंने भी दिया। युवकोंने दिया और युवतियोंने भी दिया। बाल-छात्रालयोंके बच्चोंने मिठाअीका त्याग करके अुस पर खर्च होनेवाली रकम पांच हजार मील दूर दक्षिण अफ्रीकाकी जेलोंमें दुःख भोगनेवाले और गोलियोंके सामने छाती खोलकर खड़े रहनेवाले अपने गरीब भाअियोंकी लड़ाअीमें दी। गुरुकुल कांगड़ी और शान्तिनिकेतनके सैकड़ों विद्यार्थियोंने अिस लड़ाअीमें सहायता देनेके लिअे गांवोंसे चन्दा करनेको हाथोंमें झोली धारण की। हिन्दुस्तानका अेक भी भाग अैसा नहीं होगा, जहां अिस सत्याग्रहकी लड़ाअीकी बात न पहुंची हो। हिन्दुस्तानमें अेक भी सार्वजनिक सेवक अैसा नहीं होगा, जिसने दक्षिण अफ्रीकाकी सरकारके अिस जुलमके बारेमें अपना विरोध प्रकट न किया हो। श्री गोखले तो रोगशय्या पर पड़े होने पर भी अिसी कामके पीछे पागल

बन गये थे। अुन्होंने रात-दिन कुछ न देखा और दक्षिण अफ्रीकाका छोटेसे छोटा समाचार जानकर देशके कोने कोनेमें पहुंचा दिया। अिसके सिवा, अुस समयके वाअिसरॉय लॉर्ड हार्डिजको भी गोखलेजी लड़ाअीके पूरे तथ्योंसे परिचित रखते थे। देशके तमाम बड़े गांवों और शहरोंमें सभाअें हुअीं। सभाओंमें सार्वजनिक फण्ड अिकट्ठा हुआ, दक्षिण अफ्रीकी सरकारके जुल्मोंका सख्त विरोध हुआ। लाहौरकी अेक विराट सभामें दीनबन्धु सी० अेफ० अेण्ड्रूजने श्रोताओंको दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके दुःखोंका वर्णन करके करुणरससे रुला दिया और अुनकी वीरताका वर्णन करके श्रोताओंको अुत्साहित किया। अिसी सभामें दीनबन्धुने अपनी अुम्रभरकी बचतके दो हजार रुपये दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहके फण्डमें दे दिये। करोड़ोंका स्वामी लाख रुपये दे, अुससे दीनबन्धुने लाखों गुना अधिक दे दिया। अपना सर्वस्व दे दिया। दीनबन्धुकी अैसी तीव्र सहानुभूति देखकर श्री गोखलेने मि० वेस्टकी गिरफ्तारीकी खबर मालूम होने पर अुनकी जगह काम करनेके लिअे दीनबन्धु अेण्ड्रूजको भेजनेका विचार किया। दीनबन्धु तैयार हो गये और अुनके साथ अुनके मित्र मि० पियर्सन भी तैयार हो गये। दोनों आदमी नेटालके लिअे रवाना हो गये। सारे देशमें वातावरण अितना गरम हो गया कि लॉर्ड हार्डिज चेते। अुन्होंने जनताकी तीव्र भावनाको पहचाना और जनताकी आवाजके साथ अपनी आवाज मिलाकर हिन्दुस्तानियोंके प्रतिनिधिके रूपमें अपना फर्ज अदा किया। मद्रासके अपने स्मरणीय भाषणमें अुन्होंने दक्षिण अफ्रीकाकी सरकारकी कड़ी टीका की और बड़ी सरकारको चेतावनी दी कि १८५७ के बाद हिन्दुस्तानमें अैसा असंतोष कभी भी सर्वव्यापी नहीं हुआ था; ब्रिटिश सरकारको बीचमें पड़कर कोअी निर्णय जरूर करना चाहिये। औपनिवेशिक स्वराज्य भोगनेवाले अुपनिवेशोंकी अितनी सख्त आलोचना और हस्तक्षेपके लिअे ब्रिटिश सरकारसे की गअी विनती अुसे जरूरतसे ज्यादा मालूम हुअी। परन्तु लॉर्ड हार्डिज अपनी बात पर डटे रहे और हिन्दुस्तानियोंकी सत्याग्रहकी लड़ाअीको अुचित बताकर अुसकी बड़ी तारीफ करने लगे। अिस तरह सारे हिन्दुस्तानने दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी अिस लड़ाअीके प्रति सहानुभूति दिखाअी और अपूर्व अुत्साहसे अुसमें मदद दी।

१२

समझौतेकी राह पर

'हिम्मते मरदा मददे खुदा'—यह सूत्र जितना अिस लड़ाअीमें सच्चा साबित हुआ, अुतना और किसी मौके पर नहीं हुआ होगा। लड़ाअी शुरू करते समय जिन बलोंका जरा भी खयाल नहीं था अैसे बल भी लड़ाअीकी मददमें दौड़ पड़े। गांधीजी तो शुरूसे ही कहते थे कि हम खुद सच्चे होंगे तो सारा संसार हमारी तरफ दौड़ता आयेगा। मि० पोलाक डेप्युटेशनके सदस्यके रूपमें हिन्दुस्तान आनेसे पहले कूचमें गांधीजीसे मिलने गये थे। और अुसी समय गांधीजीको सरकारने पकड़ लिया था। तब अेक ही क्षणमें हिन्दुस्तानका सफर रोक कर अपनी जगह लेनेकी सूचना देते हुअे गांधीजीने मि० पोलाकसे कहा था कि, "हमारा सच्चा डेप्युटेशन तो अब यहीं रहनेमें है। हम अपनी शक्ति बतायेंगे तो डेप्युटेशनके बिना ही सारा हिन्दुस्तान हमारी सब बातें जान लेगा।" यह कहकर हिन्दुस्तानके लिअे रवाना होनेवाले मि० पोलाकको, जो पांच-सात मिनटके लिअे मिलने आये थे, अपनी जगह सौंपकर गांधीजी पकड़नेके लिअे आये हुअे अफसरके अधिकारमें चले गये। मि० पोलाकने वह जगह ले ली और बादमें सरकारने अुन्हें भी पकड़ लिया। हिन्दुस्तानकी जनताने जब यह जाना कि डेप्युटेशनमें आनेवाले मि० पोलाक जेलमें चले गये, तब अुनके हिन्दुस्तानमें अुपस्थित रहनेसे जो असर होता अुससे कहीं ज्यादा अच्छा असर अुस पर हुआ। अिस प्रकार गांधीजीने अिस लड़ाअीका आधार अुसके शोरगुलकी अपेक्षा जनताकी शक्ति पर ज्यादा रखा था। अिस शक्तिने हिन्दुस्तानमें खलबली मचा दी और अिंग्लैण्डमें भी खलबली मचा दी। लॉर्ड अेम्पथीलने ब्रिटिश सरकार पर खूब दबाव डाला और अुस सरकारको भी आखिर बीचमें पड़ना पड़ा।

यूनियन सरकारकी तो सांप-छछूंदर-जैसी गति हो गअी। अुसे हिन्दुस्तानियोंकी अैसी प्रचंड शक्तिका खयाल ही नहीं था। अुसने सोचा था कि गांधी अपने कुछ साथियोंको भड़का कर लड़ाअी छेड़ेगा, परन्तु सबको जेलमें बन्द करके हम अिस लड़ाअीको दबा देंगे और शान्त कर देंगे। परन्तु

दो ही मासमें अुसे वस्तुस्थितिका पता लग गया। हिन्दुस्तानियोंको कुचल कर किसी भी तरह दक्षिण अफ्रीकासे निकाल देनेके लिअे नये-नये कानून बना कर जनरल स्मट्सने वहांके गोरोंको बहुत भड़काया था। ट्रान्सवालका खूनी कानून और नया अिमिग्रेशन-कानून वगैरा पार्लियामेण्टमें पेश करते हुअे सन् १९०७ से १९०९ तक जनरल स्मट्सने जो जो अुद्गार प्रकट किये थे, अुन परसे हम समझ सकेंगे कि जनरल स्मट्सने गोरोंको अुभाड़कर यह मुसीबत खड़ी की थी। परन्तु अब तो हालत अुलटी हो गअी। हिन्दुस्तानी सत्याग्रहियोंका यह प्रचंड बल यूनियन सरकारसे हजम नहीं हो सकता था। हजारों आदमियोंको जेलमें बन्द रखनेकी अुसकी शक्ति नहीं थी। और निःशस्त्र सत्याग्रही लोगों पर अुसने जो जुल्म गुजारे अुससे दुनियाके सभ्य देशोंमें अुसकी निन्दा होने लगी। अितना ही नहीं, खुद दक्षिण अफ्रीकामें भी समझदार गोरे सरकारकी अिस जालिम नीतिको धिक्कारने लगे। अिससे जनरल स्मट्स और अुनके साथी अब घबरा गये थे। अुन्हें भी अिसका कुछ न कुछ निपटारा करना ही था। परन्तु कैसे किया जाय? अेकदम सरकार झुकती है तो अिज्जत जाती है और वहांके गोरे अुसे भला-बुरा कहते हैं। अुसे तो दोनों तरफकी बात रखनी थी। अिसलिअे लोकमतसे डर कर चलनेवाली सरकार जिस ढंगसे अैसे झगड़ोंका निपटारा करती है वही ढंग यूनियन सरकारने अख्तियार किया।

यूनियन सरकार जानती तो थी ही कि हिन्दुस्तानी क्या मांगते हैं, क्योंकि अुसके पास खुली मांगें मौजूद थीं। वह यह भी जानती थी कि अिस लड़ाअीमें हिन्दुस्तानियों पर क्या क्या जुल्म हुअे हैं, क्योंकि वे सब अुसकी मंजूरीसे ही हुअे थे। फिर भी अुसने अिन सब बातोंकी जांच करके अुनका निपटारा किस तरह किया जाय, अिसकी रिपोर्ट देनेके लिअे अेक कमीशन नियुक्त किया। कमीशनके अध्यक्ष सर विलियम सॉलोमन नामक अेक प्रतिष्ठित सज्जन थे। अिससे कमीशन सॉलोमन कमीशन कहलाया। अुसके दो और सदस्योंमें मि० अेसलीन और मि० वायली नामक दो नेटाली सज्जन थे। यह कमीशन नियुक्त करके अुसकी सूचना ब्रिटिश सरकारको दे दी गअी। भारत-सरकारने अिस मौके पर यह आग्रह किया कि अिस कमीशनमें सारे प्रश्नका फैसला अुचित रूपमें हो और हिन्दुस्तानियोंके हितोंकी रक्षा हो, अिसके लिअे भारत-सरकारकी तरफसे भी कोअी समझदार प्रतिनिधि रहना

चाहिये। ब्रिटिश सरकारकी मंजूरीसे वाअिसरॉयने अुस समयके संयुक्त प्रान्तके लेफ० गवर्नर सर बेन्जामिन रॉबर्टसनको भारत-सरकारके प्रतिनिधिके रूपमें भेजा।

कमीशनको तो वैसा ही काम करना था जैसी यूनियन सरकारकी तरफसे प्रेरणा मिले। अिसलिअे पहले तो अुसने यह सिफारिश की कि हिन्दुस्तानियोंकी मांगोंकी जांच करनेका जो काम कमीशनको सौंपा गया है वह हिन्दुस्तानी नेता जब तक जेलोंमें होंगे तब तक नहीं हो सकेगा; अिसलिअे कमीशनके कामकी सरलताके लिअे सर्वश्री गांधी, पोलाक और कैलनबैकको छोड़ दिया जाय। सरकारने अिस सिफारिश पर तुरन्त अमल किया। गांधीजीको ब्लोमफोन्टीनसे प्रिटोरिया लाकर बताया गया कि आप रिहा कर दिये गये हैं। गांधीजी जोहानिसबर्ग पहुंचे कि मि० पोलाक और मि० कैलनबैक भी अुन्हें मिल गये। तीनों नेटाल पहुंचे। ये तीनों नेता १९ दिसम्बरकी शामको डरबन स्टेशन पर अुतरे। सारे नेटालमें बड़ा अुत्साह फैल गया। घर घर रोशनी की गअी और आनन्दोत्सव मनाया गया। गांधीजी डरबन पहुंचे तब तक अुन्होंने अपनी कोअी राय जाहिर नहीं की। वहां पहुंचनेके बाद जो कार्यकर्ता बाहर थे अुनसे वे मिले, परिस्थिति पर विचार किया और अब क्या किया जाय अिसका निर्णय किया। बात यह थी कि नेताओंको छोड़नेसे पहले या बादमें सरकारने अुनके साथ कोअी बातचीत नहीं की और न नेताओंको अुसने यही बताया कि सरकार क्या करना चाहती है। तब अिसे समझौता कैसे कहा जाय?

सरकारने घोषणा की कि हिन्दुस्तानियोंके प्रश्नकी जांच करके अुनकी शिकायतोंका निपटारा करनेके खातिर अुचित सूचनाअें देनेके लिअे कमीशन नियुक्त किया गया है। परन्तु अुसमें हिन्दुस्तानियोंका क्या हाथ होगा? कमीशनमें हिन्दुस्तानियोंका अेक भी प्रतिनिधि-सदस्य नहीं था। कमीशन नियुक्त करनेमें हिन्दुस्तानियोंकी सलाह नहीं ली गअी थी। सबसे बड़ी कठिनाअी तो यह थी कि कमीशनमें जो दो सदस्य मि० अेसलीन और मि० वायली नियुक्त किये गये थे, अुन दोनोंके पिछले कार्यों पर हिन्दुस्तानियोंके हित-विरोधी होनेका कलंक लगा हुआ था और अुन्हें सब कोअी जानता था। अिसलिअे पहले तो सब नेताओंने निश्चय किया कि अैसा कमीशन स्वीकार करनेमें हिन्दुस्तानियोंका अपमान है, अतः अुसे अस्वीकार करके अुसका बहिष्कार किया जाय।

अैसा निर्णय करनेका और भी अेक कारण था। हिन्दुस्तानियोंकी सत्याग्रहकी लड़ाअीसे पहले दक्षिण अफ्रीकामें मजदूर-दलका बड़ा फसाद हुआ था। अुसमें बहुतसे आदमी मारे गये थे। लोगोंके जान-माल भी खतरेमें पड़ गये थे। आम जनताका और सरकारका बहुत नुकसान हुआ था। सरकारको फौजी कानून घोषित करना पड़ा था। अिस फसादके बाद अुसकी जांच करके फैसला देनेके लिअे जो कमीशन सरकारने नियुक्त किया था, अुसमें दोनों पक्षोंसे पूछकर दोनों तरफके प्रतिनिधि नियुक्त किये गये थे और बादमें मामलेकी जांच हुअी थी। हिन्दुस्तानियोंका सवाल भी अैसा ही था। लेकिन दोनोंमें बहुत बड़ा फर्क था। और वह यह था:

(१) हिन्दुस्तानियोंको गोरे मजदूरोंकी तरह राज्यक्रान्ति नहीं करनी थी। अुन्हें तो हिन्दुस्तानियोंके प्रति जो अन्यायपूर्ण व्यवहार किया जाता था और अन्याय तथा रंगभेदवाले जो कानून बनाये जाते थे अुन्हींको हटवाना था।

(२) हिन्दुस्तानियोंने जान-मालको कोअी हानि नहीं पहुंचाअी थी।

(३) अुलटे, हिन्दुस्तानियोंने जेल भुगत कर, मार-पीट सहकर और अपने जान-मालका खतरा अुठा कर भी अहिंसक व्यवहार किया था और शान्ति कायम रखी थी।

अिसलिअे सीधा न्याय प्राप्त करनेकी हिन्दुस्तानी अधिक पात्रता रखते थे। फिर भी जैसी स्वाभिमानपूर्ण संधिवार्ता करके गोरे मजदूरोंके प्रश्नकी जांचके लिअे कमीशन नियुक्त किया गया था, वैसी संधिवार्ता हिन्दुस्तानियोंके प्रश्नके लिअे सरकारने नहीं की। बल्कि कमीशनमें जो सदस्य नियुक्त किये गये वे भी विरोधी मनोवृत्तिवाले ही नियुक्त किये गये। हिन्दुस्तानियोंके प्रति यह खुला अन्याय था और अुनका खुला अपमान था। अिस आशासे कि भविष्यमें यह कमीशन किसी न किसी तरहका लाभ पहुंचायेगा, अुसे स्वीकार कर लेना अपमानजनक समझौता होगा और अिससे स्वाभिमानकी हत्या होगी — अिस बातको पूरी तरह समझकर हिन्दुस्तानियोंके नेताओंने कमीशनका बहिष्कार करनेकी प्रतिज्ञा लेनेका निश्चय किया।

हमने गांधीजीकी आज तककी देशसेवा या जनसेवाकी सभी प्रवृत्तियोंमें देखा है कि आत्मशुद्धिका हेतु अुनमें मुख्य होता है। गांधीजीको छोड़नेसे पहले नेटालमें सरकारने हिन्दुस्तानी मजदूरों पर जो जुल्म ढाया और जिसके

परिणामस्वरूप कोअी चार हत्यायें हुअीं और कुछ लोग घायल हुअे, अुसके बारेमें सारा हाल जानकर गांधीजीको गहरा दुःख हुआ। अुनके हृदयमें जो वेदना हुअी अुसका वर्णन अुनके हृदयसे बाहर होनेके कारण मैं भला कैसे कर सकता हूं? परन्तु अुस वेदनाके कारण कमीशनके साधारण बहिष्कारके साथ अुन्होंने दो व्यक्तिगत प्रतिज्ञाअें लीं:

(१) जिस तीन पौण्डके अत्याचारपूर्ण करको अुठवानेकी लड़ाअीमें चार भाअियोंने अपना बलिदान दिया है, वह कर जब तक न अुठे तब तक मैं अेक बार ही भोजन करूंगा और वह भी सिर्फ फल ही खाअूंगा।

(२) जब तक यह कर अुठ न जाय तब तक मरे हुअे चारों मद्रासी भाअियोंके शोकमें मद्रासी रिवाजके मुताबिक मैं शोककी पोशाक पहनूंगा। यानी कोट-पतलून छोड़कर पांच हाथकी लुंगी और मोटे कपड़ोंका घुटनों तकका कुर्ता ही पहनूंगा तथा सिरके बाल और मूंछें मुंड़वाअूंगा।

ये दो व्रत भी गांधीजीने साथियोंसे पूछकर अुनकी सम्मतिसे लिये। २० दिसम्बरकी रातको डरबनमें हिन्दुस्तानियोंकी अेक विराट सभा हुअी। वहां गांधीजी अूपरकी विचित्र लगनेवाली पोशाकमें अुपस्थित हुअे और अुन्होंने अपने पुण्यप्रकोपकी जो ज्वाला सभामें प्रकट की अुससे हजारों श्रोतागण स्तब्ध हो गये। अुनके जीवनमें अिस पुण्यप्रकोपके प्रतापसे अनोखी शक्ति पैदा हुअी। और जब गांधीजीने कमीशनके बहिष्कारका प्रस्ताव पेश करके अुसके कारण समझाये, तब अेक भी बेसुरी आवाजके बिना हिन्दुस्तानियोंने अेकमतसे अुस प्रस्तावका स्वागत किया।

अिस प्रस्तावसे हिन्दुस्तानियोंने यह घोषित किया कि यूनियन सरकारने जो कमीशन नियुक्त किया है वह अेकतरफा है। अुसमें हिन्दुस्तानियोंकी राय नहीं ली गअी है। अितना ही नहीं, बल्कि हिन्दुस्तानियोंके हितकी दृष्टिसे देखनेवाले सदस्योंकी नियुक्ति भी नहीं की गअी है। अिसलिअे अिस कमीशनमें जब तक हिन्दुस्तानियोंके प्रतिनिधि या हिन्दुस्तानियोंके प्रति हमदर्दी रखनेवाले सिनेटर डब्ल्यू० पी० श्राअिनर और सर जेम्स रोज़अिन्स जैसे सज्जनोंको नियुक्त न किया जाय, तब तक अिस कमीशनका बहिष्कार किया जायगा।

अुन्होंने यह भी निश्चय किया कि सरकारकी तरफसे हिन्दुस्तानियोंकी मांगोंका आशाजनक अुत्तर अिसी महीनेमें न मिल जाय, तो १ जनवरी १९१४ के दिन डरबनसे ट्रान्सवाल तककी अेक बड़ी कूच शुरू की जाय और

अुसमें यथासंभव अधिकसे अधिक हिन्दुस्तानियोंको शामिल होनेका निमंत्रण दिया जाय।

ये दो प्रस्ताव अुस रातको पास हुअे, अिसलिअे दक्षिण अफ्रीकाके अंग्रेजी अखबारोंने अैसा शोर मचाया, मानो अेक नया धड़ाका हुआ हो। हिन्दुस्तानके राजनीतिक हलकोंमें और अिंग्लैण्डमें भी अैसा ही असर हुआ। अिन दोनों प्रस्तावोंके बारेमें कैसा अूहापोह मचा, यह हम आगे देखेंगे। अभी तो मैं अिस प्रस्तावके बादके दो दिनोंमें हुआी अेक अपूर्व घटनाकी तरफ मुडूंगा।

१३

प्रेम और शौर्यकी प्रतिमा

ता० २२–१२–'१३ के दिन पहले दलको जेलमें गये तीन मास पूरे हुअे। श्रीमती कस्तूरबा वगैरा बहनें मेरित्सबर्गकी सेन्ट्रल जेलमें थीं। गांधीजी डरबनसे मेरित्सबर्ग जाकर सब बहनोंका स्वागत करनेके लिअे जेलके दरवाजे पर खड़े थे। साथमें मि० कैलनबैक भी थे। अस्थि-पंजर पर मढ़े हुअे चमड़ेमें प्रबल आत्माको लेकर माता कस्तूरबा दूसरी बहनोंके साथ ता० २२–१२–'१३ के रोज सुबह जेलके बाहर निकलीं। अुन्हें लेकर गांधीजी डरबन पहुंचे। अुसी दिन दूसरे भाअी भी डरबन जेलसे छूटे।

शामके पांच बजे होंगे। डरबनमें रुस्तमजी सेठका मकान लोगोंसे खचाखच भरा था। आगे दफ्तरके भागके नीचे पीछेकी ओर खुला चौक था। वहां हड़तालमें बलिदान होनेवालोंके आप्तजनों और घायलोंकी अेक बड़ी भीड़ बैठी थी। अुन सबको आज मिलनेके लिअे ही बुलवाया गया था। सभी गांधीजीके दर्शनोंकी अभिलाषाके साथ मृत आत्माओंके शोकपूर्ण स्मरणमें बैठे थे। मैं गांधीजीके पास ही बैठा था। थोड़े समय बाद गांधीजी अुठे। मि० लेजरस नामके अेक मद्रासी भाअीको अपना दुभाषिया बनाकर अुन्होंने साथ लिया। मैं भी पीछे पीछे गया।

'गांधी राजा' को आते देखकर विलाप करते हुअे सब खड़े हो गये। अेक बहन, जिसका निर्दोष पति जालिम सरकारकी पुलिसकी गोलीसे मारा गया था, अेकदम आगे बढ़ आअी, 'गांधी राजा' के चरणोंमें लेट गअी और अपने विलापाश्रुओंसे 'गांधी राजा' के चरणोंको भिगोने लगी।

बस अितना काफी था! अुस समय मैंने क्या देखा? कोअी अनोखी बात देखी। भगवान बुद्ध या अीसाके जीवनमें जो पढ़ा और सुना था, परन्तु देखा नहीं था, वही दृश्य वहां देखा। सैकड़ों वर्षोंकी गुलामी, परतंत्रता और भूखके दुःखोंसे पीड़ित, मारकाट और लूटसे दीन बनी हुअी, चिथड़ोंके भीतर करुण दशामें खड़ी अेक अश्रुपूर्ण स्त्रीकी मूर्तिके सामने अुसके कंधों पर अपने दोनों हाथ रखकर अुसका अुद्धार करनेवाला कोअी अलौकिक पुरुष मैंने वहां खड़ा देखा। दुःखी, दीन, युगोंसे लुटी हुअी और अनेक प्रहारोंसे जर्जरित भारतमाताकी अश्रुपूर्ण आंखोंकी ओर वह पुरुष टकटकी लगाकर देखता ही रहा। वातावरण बिलकुल शान्त था। अपूर्व पवित्रता, गंभीरता, दुःख और प्रचंड पुण्यप्रकोप अुस वातावरणमें भरा था। प्रेम और शौर्यकी अुस प्रतिमाने भारतमाताके सारे दुःखोंका दर्शन अुस मूर्तिमें किया। आंखोंमें आंसुओंके मोती चमक अुठे। अन्तमें मृदु स्वरसे वह पुरुष बोला: "बहन, रो मत। तुझे विधवा बनानेवाला मैं हूं। अपना सिर मैं तेरी गोदमें रखता हूं। मुझे तू माफ कर। तेरा पति अमर हो गया है। वह देशकी सेवामें जालिमोंके हाथों मारा गया है। फिर भी वह अमर है। बहन, शान्त रह। रो नहीं। अिस दुःखका अन्त क्या अिस तरह होगा? मेरी हजारों बहनें, लड़कियां और मेरी अपनी पत्नी भी जब तेरी तरह प्यारी मातृभूमिके अिस सेवायज्ञमें विधवा होंगी, तभी अिस दुःखका अन्त होगा।" अितना कहकर वह पुरुष शान्त हो गया। अुसने अुस माताके आंसू करुणार्द्र होकर पोंछे, अुस माताको नमस्कार किया और वहांसे हटकर दूसरोंकी तरफ गया।

मैं तो स्तब्ध होकर खड़ा ही रहा। दूसरी तरफ घूमकर मैंने अपनी आंखोंके आंसू पोंछ डाले। मैंने अिस बातका अितमीनान किया कि मैं जाग रहा हूं या सपना देख रहा हूं।

अुस बहनको आश्वासन मिला और वह शान्त हुअी। मैं भी अिस घटनाको याद करता हुआ अुस पुरुषके पीछे पीछे घूमा।

अिस पवित्र प्रसंगके दूसरे ही दिन दीनबन्धु अेण्ड्रूज और भाअी पियर्सन डरबनके बन्दरगाह पर अुतरनेवाले थे। गांधीजी और दूसरे सब लोग रातको फिनिक्स जाते थे और सुबह डरबन वापस आते थे। दीनबन्धु और पियर्सन हिन्दुस्तानसे रवाना हुअे तब तो अिस जानकारीके साथ जहाजमें बैठे थे कि गांधीजी वगैरा सब जेलमें हैं। पन्द्रह दिनके सफरके दरमियान

दक्षिण अफ्रीकामें क्या क्या हुआ, अिसका अुन्हें कुछ भी पता नहीं था। न कमीशनका पता था, न नेताओंको छोड़नेका पता था। अुनके खयालसे पहली कठिनाअी तो यह थी कि डरबन जाकर किससे मिलेंगे और गांधीजी या पोलाकसे जेलमें किस तरह मिलेंगे। स्टीमर डरबन पाअिण्टमें पहुंचा। गांधीजी, मि० पोलाक, मि० कैलनबैक और कछ प्रमुख व्यापारी पाअिण्ट पर खड़े थे। वहांके दो अंग्रेजी अखबारोंके प्रतिनिधि भी मौजूद थे। दीनबन्धु और भाअी पियर्सन जहाजसे नीचे अुतरे। हिंदुस्तानियोंकी भीड़में अुन्होंने मि० पोलाकको देखा। मि० पोलाकके सिवा और किसीको अुन्होंने पहले देखा नहीं था। परन्तु मि० पोलाक अुनसे मिले अिसके पहले गांधीजी अुनसे अस्पष्ट रूपसे मिले। गांधीजीका फकीरी भेस देखकर अुन्होंने समझा कि हिन्दुस्तानी लोग साधुओं या फकीरोंको हर शुभ कार्यमें आगे रखते हैं, अिसी तरह आज भी किसी फकीरको आगे रखा है। दूसरे नम्बर पर मि० पोलाक थे। दीनबन्धु मि० पोलाकसे मिले और बहुत ही आतुरताके साथ बोल अुठे:

"मुझे जरा भी अुम्मीद नहीं थी कि मैं आपको यहां देख सकूंगा। अब तो मेरी सारी चिन्ता दूर हो गअी। अब मुझे बताअिये कि गांधीजी किस जेलमें हैं? मैं अुनसे कब मिल सकूंगा और किस तरह मिल सकूंगा? मुझे पहले अुन्हींसे मिलना है।"

दीनबन्धुकी बात सुनकर मि० पोलाक कुछ हंसे और बोले:

"गांधीजीसे तो आप सबसे पहले मिल लिये! वे रहे गांधीजी। वे भी छूट गये हैं।"

दीनबन्धु अेण्ड्रूजको आश्चर्य हुआ। अुस त्यागमूर्ति जैसे पुरुष पर अुन्होंने नजर डाली। आश्चर्यचकित दृष्टिसे और पूज्य भावसे अुन्होंने गांधीजीके सिरसे पैर तक नजर घुमाअी। दो कदम पीछे हटकर, नमस्कार करके, गांधीजीकी चरणरज अुन्होंने अपनी आंखों पर रखी। भाअी पियर्सनने भी नम्रता और स्नेहपूर्ण हृदयसे गांधीजीको और अन्य सबको हाथ जोड़कर प्रणाम किया। मानो बहुत दिनोंके बिछुड़े हुअे आत्मीय जनोंका आज फिर मिलाप हुआ हो, अैसे आनन्द और आत्मीय भावसे सब डेरे पर आये। रातको हम सब फिनिक्स गये।

दूसरे दिन वहांके अंग्रेजी अखबारोंमें दीनबन्धु और भाअी पियर्सनने बन्दरगाह पर गांधीजीको जिस तरह प्रणाम किया अुसके विरुद्ध सख्त

आलोचना हुअी। "मि० गांधी कैसे ही सन्त या महान हों, फिर भी वे हिन्दुस्तानी हैं। दक्षिण अफ्रीकाकी भूमि पर अुतर कर रेवरेण्ड अेण्ड्रूज जैसे अंग्रेज सज्जन अैसा व्यवहार करें तो अिससे गोरोंकी अिज्जतको नुकसान पहुंचता है। रेवरेण्ड अेण्ड्रूजको जानना चाहिये कि यह हिन्दुस्तान नहीं, परन्तु दक्षिण अफ्रीका है।" दीनबन्धुने अिसका करारा जवाब देकर अुनके मुंह बन्द कर दिये।

१४

कमीशनका बहिष्कार क्यों?

दीनबन्धु अेन्ड्रूज आये और अुसी रात फिनिक्समें देर तक जागकर अुन्होंने गांधीजीसे सारा हाल जान लिया। पहले तो कमीशनके बहिष्कारकी बात अुन्हें अच्छी नहीं लगी। अिस लड़ाअीके लिअे हिन्दुस्तानमें श्री गोखलेने जो कुछ किया और वाअिसरॉयकी भी लड़ाअीके प्रति सहानुभूति प्राप्त की तथा वाअिसरॉयने भी जिस अच्छे भावसे बड़ी सरकार पर दबाव डाला, अुस सबके परिणामस्वरूप यूनियन सरकारने जो कुछ करनेका विचार किया हो अुसे वह कमीशनके जरिये कराये तो अुसमें क्या बुराअी है? अैसे कमीशनका हिन्दुस्तानी लोग बहिष्कार करें, तो अुसका असर भारत-सरकार पर, बड़ी सरकार पर और हिन्दुस्तानके राजनीतिक क्षेत्रोंमें कितना बुरा होगा, यह विचार दीनबन्धुके मनमें घुटने लगा। परन्तु जब गांधीजीने सत्याग्रहकी रीति-नीति, हिन्दुस्तानियों द्वारा की गअी प्रतिज्ञाओंके विस्तृत कारण और कमीशनको मान लेनेमें हिन्दुस्तानियोंके भयंकर अपमानकी बात विस्तारसे बतायी, तो दोनों मित्रोंको यकीन हो गया कि हिन्दुस्तानियोंका बहिष्कारका कदम सत्य और सिद्धान्तके अनुसार है। जब यह विश्वास हो गया तो दोनों मित्रोंने कमीशनके बहिष्कारमें पूरी सम्मति दी। अितना ही नहीं, अीसाअी नववर्षके मंगल-दिवस पर गांधीजी जो कूच आरंभ करनेवाले थे, अुसमें शामिल होनेकी अपनी तैयारी भी बताअी।

परन्तु कमीशनके बहिष्कारकी बातने सभी जगह बड़ी गलतफहमी पैदा कर दी। दक्षिण अफ्रीकाके अखबार तो यही कहने लगे कि हिन्दुस्तानी

लोग अुद्धतता और मूर्खता कर रहे हैं। हिन्दुस्तानके अखबार कहने लगे, "गांधीने कमीशनका बहिष्कार घोषित करनेमें जल्दबाजी की है। अिसमें अुनका हठीलापन है। सत्याग्रहीका अैसा कदम भले ही अुचित माना जाता हो, परन्तु राजनीतिक सूझ-बूझवाला पुरुष अैसा पागलपन नहीं करेगा।" बम्बअीके शेर सर फीरोजशाह मेहता तो नाक-भौंह सिकोड़ कर कहने लगे: "यह तो गांधीका हठ और अविचारीपन माना जायगा।"

अिस तरह सारे हिन्दुस्तानका वातावरण डांवाडोल हो गया। अिंग्लैंडमें भी लॉर्ड अेम्पथीलकी कमेटी नाराज हुअी। अुन्होंने गांधीजीको तार दिया: "हिन्दुस्तानियोंको कमीशनकी बात स्वीकार कर लेना चाहिये। अुनके अिस निश्चयके लिअे हमें बड़ा अफसोस है।" गांधीजीने अिस तारका अुतनी ही दृढ़तासे जवाब दिया: "हिन्दुस्तानी लोग कौमके स्वाभिमानकी रक्षाके लिअे दृढ़ हैं। कमीशनको स्वीकार कर लेनेमें हिन्दुस्तानका अपमान है। आपकी सलाहके लिअे हम आपका आभार मानते हैं। परन्तु हमें अफसोस है कि हम आपकी सलाहको मान नहीं सकते।" अिस तरह पत्र, तार और अखबारोंमें आलोचनाअें आती रहतीं और अुन्हें पढ़कर अुन पर चर्चायें होती रहतीं। शामका समय अिन चर्चाओंमें ही जाता। अितनेमें हिन्दुस्तानसे श्री गोखलेका तार आया। तारका भावार्थ यह था कि "कमीशनको न मानकर नव-वर्षके दिनसे दूसरी कूच शुरू करनेके समाचारोंसे मुझे बड़ा दुःख हुआ। आपके अिस निश्चयसे मेरी और वाअिसरॉय लॉर्ड हार्डिंजकी स्थिति बड़ी विषम हो गअी है। यह विश्वास रखकर कि यूनियन सरकार आपके प्रश्नोंका निपटारा जरूर करेगी कमीशनको स्वीकार कर लीजिये। अुसके सामने जरूरी सबूत दीजिये और कूच बन्द रखिये।"

अैसा स्पष्ट तार, अुसमें गोखलेजीकी हार्दिक प्रार्थना, अिस प्रश्नके साथ अुनकी तीव्र सहानुभूति आदि बातोंको सोच कर सभीका दिल धड़कने लगा। गोखलेजीकी सलाह न मानी गअी तो अुन्हें कितना बुरा लगेगा और अुनकी तबीयत पर अिसका कितना बुरा असर होगा? परन्तु गांधीजी जैसे कुसुमकी भांति कोमल थे वैसे ही वज्रकी भांति कठोर भी थे। वे तो दृढ़ ही रहे। रातकी चर्चाके समय अुनसे पूछा गया कि:

"श्री गोखले वाअिसरॉयके आश्वासन पर यकीन दिलाते हैं कि कमीशनको स्वीकार करके कूच बन्द रखनेसे कमीशन अच्छी सिफारिशें

ही करेगा और सरकार अुन्हें मंजूर करके हमारे प्रश्नका फैसला करेगी; तो फिर श्री गोखलेके आश्वासन पर विश्वास रख कर अुनकी सलाह माननेमें क्या हर्ज है?"

गांधीजीने अटल रहकर जवाब दिया: "सम्राट् महोदय खुद आकर मुझे आश्वासन दें कि यह कमीशन स्वीकार करनेसे तुम्हें हिन्दुस्तानका स्वराज्य दे दूंगा, तो भी मैं कहूंगा कि अैसा निकम्मा और अपमानभरा स्वराज्य मुझे नहीं चाहिये। हिन्दुस्तानको अपमानित करके नीचा मुंह रखकर मैं स्वराज्य लूं तो वह स्वराज्य कैसा होगा? और कितने दिन तक टिकेगा? हिन्दुस्तानका स्वाभिमान पहले। अैसा होगा तो हिन्दुस्तानका स्वराज्य स्वाभिमानके पीछे पीछे अपने-आप चला आयेगा।"

हम तो सब चुप रहे। अिन वचनोंके सामने क्या कहा जा सकता था? गांधीजीने तुरंत ही श्री गोखलेके तारके जवाबमें अेक लम्बा तार अिस तरह भेजा:

"आपके दुःखको मैं समझ सकता हूं। बड़ीसे बड़ी बातको छोड़कर आपकी सलाहका आदर करनेकी मेरी अिच्छा रहती है। लॉर्ड हार्डिंजने जो सहायता दी है वह अमूल्य है। मैं यह भी चाहता हूं कि वह सहायता आखिर तक मिलती रहे। परन्तु मैं चाहता हूं कि आप हमारी स्थितिको समझें। अिसमें हजारों आदमियोंकी प्रतिज्ञाका सवाल है। प्रतिज्ञा शुद्ध है। सारी लड़ाअीकी रचना अिस प्रतिज्ञा पर हुअी है। अगर प्रतिज्ञाका बन्धन न होता तो हममें से बहुतसे लोग आज तक गिर गये होते। हजारोंकी प्रतिज्ञा पर अेक बार पानी फिर जाय तो फिर नीति-बंधन जैसी कोअी चीज ही नहीं रहती। प्रतिज्ञा लेते समय लोगोंने पूरा विचार कर लिया था। अुसमें किसी प्रकारकी अनीति तो है ही नहीं। बहिष्कारकी प्रतिज्ञा लेनेका कौमको अधिकार है। मैं चाहता हूं कि आप भी अैसी सलाह दें कि अिस प्रकारकी प्रतिज्ञा किसी भी व्यक्तिके लिअे न टूटे और हर तरहका खतरा अुठाकर भी अुसका पालन होना चाहिये। यह तार लॉर्ड हार्डिंजको बता दीजिये। मैं चाहता हूं कि आपकी स्थिति विषम न हो। हमने लड़ाअी अीश्वरको साक्षी रखकर, अुसीकी सहायता पर आधार रखकर आरंभ की है। अिसमें बुजुर्गोंकी और बड़े आदमियोंकी मदद हम मांगते हैं और चाहते हैं। वह मिले तो हमें खुशी होती है। परन्तु मदद मिले या न मिले, मेरी नम्र राय यह है कि

प्रतिज्ञाका बन्धन हरगिज न टूटना चाहिये। अुसके पालनमें मैं आपका समर्थन और आशीर्वाद चाहता हूं।"

अिस तरह गांधीजी पर बड़े दबाव पड़े, परन्तु वे हिन्दुस्तानके स्वाभिमान और ली हुअी प्रतिज्ञाके नाम पर दृढ़ रहे। श्री गोखलेको और वाअिसरॉयको यह पसन्द नहीं आया। फिर भी अुनमें से किसीने अपनी हमदर्दी वापस नहीं ली। दूसरी तरफ जनरल स्मट्स भी मजबूत रहे, परन्तु अुनकी मनोदशामें बड़ा फर्क पड़ गया। जो जनरल स्मट्स अेक महीने पहले गांधीजीके साथ बात भी नहीं करना चाहते थे, वे अब किसी तरह हिन्दुस्तानियोंके सवालका सच्चे दिलसे निपटारा करना चाहते थे। अिसलिअे जब गांधीजीने जनरलको लिखकर यह बताया कि वे कमीशनको स्वीकार न करनेकी सलाह कौमको क्यों दे रहे हैं, तब अुन्होंने भी साफ दिलसे अपने कारण बता दिये कि वे कमीशनमें परिवर्तन क्यों नहीं कर सकते। गांधीजीने नीचेका प्रथम पत्र लिखा था:

"हम कमीशनका स्वागत करते हैं। परन्तु अुसमें दो सदस्य जिस ढंगसे नियुक्त किये गये हैं अुसके विरुद्ध हमें सख्त अेतराज है। अुनके व्यक्तित्वके प्रति हमारा कोअी विरोध नहीं है। वे प्रसिद्ध और समझदार नागरिक हैं। परन्तु अुन दोनोंने बहुत बार हिन्दुस्तानियोंके प्रति अपनी अरुचि प्रगट की है। अिसलिअे अनजानमें भी अुनसे हमारे साथ अन्याय हो सकता है। मनुष्य अपना स्वभाव अेकाअेक नहीं बदल सकता। ये दो सज्जन अपना स्वभाव बदल डालेंगे, यह मानना कुदरतके कानूनके खिलाफ है। फिर भी हम यह नहीं चाहते कि अुन्हें हटा दिया जाय। हमारी तो अितनी ही सूचना है कि अुसमें कोअी तटस्थ पुरुष और बढ़ा लिये जायं और अिसी हेतुसे हम सर जेम्स रोज़अिन्स और माननीय डब्ल्यू० पी० श्राअिनरके नाम सुझाते हैं। ये दोनों प्रख्यात व्यक्ति हैं और अपनी न्यायवृत्तिके लिअे मशहूर हैं। हमारी दूसरी प्रार्थना यह है कि तमाम सत्याग्रही कैदियोंको छोड़ दिया जाय। अगर अैसा न हुआ तो हमारे लिअे जेलसे बाहर रहना मुश्किल हो जायगा। अब अुनको जेलमें रखनेका कोअी कारण नहीं रह जाता। और अगर हम कमीशनके सामने सबूत दें तो हमें खानोंमें जहां-जहां गिरमिटिये काम करते हैं वहां जानेकी छूट होनी चाहिये। अगर हमारी प्रार्थना स्वीकार न हो, तो हमें अफसोसके साथ फिर जेलमें जानेके अुपाय ढूंढ़ने पड़ेंगे।"

गांधीजीके अिस पत्रके जवाबमें जनरल स्मट्सने कमीशनमें किसी भी तरहका फेरबदल करनेसे साफ अिनकार कर दिया। फिर भी अुन्होंने अेक दलील बहुत ही अुचित दी कि, "कमीशन किसीके पक्षके संतोषके लिअे नहीं है। वह सरकारके संतोषके लिअे है। जैसे हिन्दुस्तानियोंकी सम्मति नहीं ली गअी, वैसे ही जमींदारों या गोरोंकी अन्य किसी संस्थाकी सम्मति भी नहीं ली गअी। फिर भी कमीशनको निष्पक्ष और अदालती बनाया गया है।" गांधीजीने जनरल स्मट्सके जवाबकी अिस दलीलको पकड़ लिया। अिस मुद्देमें गांधीजीने देखा कि हिन्दुस्तानी प्रजा अपनी प्रतिज्ञा पर कायम रहकर भी समझौता कर सकती है। अिसलिअे अुन्होंने जनरल स्मट्ससे मुलाकात की।

अैसा करके गांधीजीने समझौता भी किया और कमीशनका बहिष्कार करनेकी हिन्दुस्तानियोंकी प्रतिज्ञाका पालन भी हुआ।

अिस लड़ाअीका समझौता होनेके बाद गांधीजीने अपनी विचारधारासे अेक नअी खोज की। की हुअी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेसे अुसके कितने मीठे परिणाम आये, अिस बारेमें अुन्होंने 'अिंडियन ओपीनियन' में अेक लेख लिखा था। अुसका सार यह था:

हिन्दुस्तानी प्रजाने कमीशनको स्वीकार किया होता तो क्या होता? हिन्दुस्तानी अपनी सारी शक्ति कमीशनके सामने अपने लाभके सबूत पेश करनेमें लगाते। हम पर कितने कितने जुल्म हुअे, तीन पौंडका कर कितना अनुचित है, हिन्दुस्तानियोंका कितना अपमान किया जाता है, वगैरा कअी बातें साबित करनेकी हम कोशिश करते। गोरी प्रजा, जमींदार और व्यापारी अिससे अुलटी बात साबित करनेका प्रयत्न करते। जो जुल्म हुअे अुन्हें बतानेमें भी किसी हद तक अतिशयोक्ति हो सकती थी। हमारी जरा भी अतिशयोक्ति होती, तो वे अुस सारी बातको गलत ठहरानेकी कोशिश करते। अैसा करनेमें स्पर्धा होती। अेक-दूसरेके खिलाफ कीचड़ अुछाला जाता। अेक-दूसरेको झूठा साबित करनेकी कोशिश की जाती। अंग्रेजी अखबार जमींदारों और व्यापारियोंकी मालिकीके ठहरे, अिसलिअे वे तो अुन्हींका पक्ष लेते; और अभी जो थोड़ा-बहुत पक्ष वे हमारा लेते हैं, अुसके बजाय वे भी हम पर धूल अुड़ाने लगते। अिस प्रकार दोनोंके हृदयकी बुरी वृत्तियां जाग्रत होतीं और स्पर्धामें अेक-दूसरेके प्रति शिष्टाचारका पालन करना भी हम भूल जाते। अैसी हालतमें प्रमाण देते देते छह महीने तो जांचमें ही पूरे हो जाते। शायद

अिससे भी ज्यादा समय लग जाता। कमीशनकी रिपोर्ट तैयार होनेमें भी बहुत देर लग जाती। नतीजा यह होता कि कमीशनकी रिपोर्ट अिसी मौसमकी पार्लियामेण्टमें तो हरगिज नहीं पेश हो पाती। अतः दूसरे वर्षके लिअे अुसकी मियाद बढ़ जाती। ये सारे परिणाम स्वाभाविक रूपमें किसी व्यक्तिके हेतुके बिना भी आ सकते थे।

परन्तु कमीशनका बहिष्कार करके हिन्दुस्तानियोंने अपनी धर्म-प्रतिज्ञाका पालन किया, यह अमूल्य परिणाम तो अुसका है ही। दीर्घ दृष्टिसे विचार करने पर हम देख सकेंगे कि कमीशनके बहिष्कारका अर्थ यह है कि अुसके सामने जो कोअी सबूत दे अुसका विरोध न किया जाय और न अुसका समर्थन ही किया जाय। अैसा करनेसे विरोधी पक्षके सामने खींचतान करके अपने पक्षको हमसे अधिक सबल बनानेकी आकांक्षा रखनेका कारण नहीं रहा। अुनके लिअे हजारों झूठी बातें खड़ी करके हमारी शिकायतोंको झूठी ठहरानेका कारण भी नहीं रहा। अिसलिअे अखबार वगैरा जिन अनावश्यक साधनोंकी मदद लेनेकी अुन्हें आवश्यकता नहीं पड़ी, अुनकी सहायता भी अुन्होंने नहीं ली। अिससे व्यर्थकी स्पर्धा पैदा नहीं हुअी। अितना ही नहीं, अखबारोंकी सहानुभूति हमारे प्रति वैसी ही बनी रही। न तो हमने अुनकी निन्दा की और न अुन्होंने हमारी निन्दा की। और पिछली लड़ाअीके समय हमारे स्वार्थ-त्याग और सहनशीलताके कारण सहानुभूतिशील गोरोंके दिलमें हिन्दुस्तानियोंके लिअे जो हमदर्दी पैदा हुअी थी वह कायम रही। जिस कमीशनका काम छह महीनेमें भी पूरा न होता अुसका काम अेक पक्षकी साक्षी लेकर पन्द्रह दिनमें ही पूरा हो गया। और अुसकी रिपोर्ट भी जल्दी ही पूरी हो गअी। सब मामला ताजा होनेके कारण रिपोर्ट भी अच्छी बनी। वह रिपोर्ट अिसी मौसमकी पार्लियामेण्टमें पेश हुअी और अुसके अनुसार जहां जरूरत हुअी वहां हिन्दुस्तानियोंकी मांगोंको संतुष्ट करनेके खातिर आवश्यक फेरबदल करके पार्लियामेण्टने कानून बनाये। और समझौता भी जल्दी हो गया। अिस प्रकार अपनी धर्म-प्रतिज्ञाका पालन करनेसे हमारे धर्म और कर्म दोनों सुधरे।

अिसे क्या कहा जाये? अिसे राजनीतिक कुशलताकी पराकाष्ठा कहा जाय या नहीं?

१५

सुलहके दूत

जनरल स्मट्सकी धारणा थी कि लड़ाईको लंबे अर्से तक चलाने देकर सत्याग्रहियोंको दबा दिया जाय। सत्याग्रहकी लड़ाईमें हार तो हो ही नहीं सकती। जीत अुसमें निश्चित है। परन्तु अुसमें समयका प्रश्न रहता है। समयका प्रश्न सत्याग्रहियोंके जोर पर निर्भर है। सत्याग्रहकी लड़ाईमें ज्यादा आदमी शामिल हों तो अुसका परिणाम जल्दी आता है और थोड़े आदमी हों तो अुसमें देर लगती है। अिसी तरह हमने देखा कि दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियोंने अैसी शक्ति बताअी कि तीन ही मासमें सरकारको झुकनेके सिवा कोअी चारा नहीं रहा। अिसलिअे अिस आखिरी समझौतेकी वृत्ति जनरल स्मट्सके दिलमें पैदा करनेवाली प्रथम वस्तु तो हमारी शक्ति ही कही जायगी। जब हमने पर्याप्त शक्तिका अुपयोग किया और अुचित पुरुषार्थ किया, तब हमारी मदद पर दूसरी शक्तियां भी आ गअीं। ये शक्तियां कौन कौनसी थीं, अिसे अब हम देखें।

हिन्दुस्तानका लोकमत हमारा सहायक बना यह हमने देख लिया। अुस लोकमतको तैयार करनेवाले श्री गोखले अिस लोकमतके जनक माने जायेंगे।

हिन्दुस्तानके लोकमतके जोरके कारण माननीय वाअिसरॉय लॉर्ड हार्डिजको भी हमारी मदद पर आना पड़ा। लोकमतने अुनके हृदयमें बसी हुअी न्यायवृत्तिको जाग्रत किया।

हिन्दुस्तानके लोकमतकी शक्ति और लॉर्ड हार्डिजकी दृढ़ताके कारण ब्रिटिश सरकारको भी हमारी सहायतामें आना पड़ा। अिन तीनों बलोंका हाल हम पहले जान चुके हैं। अिसके सिवा, कअी व्यक्तियोंने सुलहके दूतके रूपमें जो सुंदर काम करके दिखाया, अुसीको बताना अिस प्रकरणका हेतु है।

पहले तो आते हैं दीनबंधु अेण्ड्रूज और भाअी पियर्सन। अुन्होंने दक्षिण अफ्रीकामें जो काम किया, वह हृदयकी अुमंगसे और भ्रातृभावसे किया। अुन्होंने आज तक हिन्दुस्तानियोंके बीच रहकर हिन्दुस्तानमें और अुसके बाहर हिन्दुस्तानियोंके हितेच्छुओंके रूपमें नहीं, बल्कि हिन्दुस्तानियोंके रूपमें

ही काम किया है। दक्षिण अफ्रीकामें समझौता सरल और अच्छा हो, अिसलिअे अुन्होंने जी-तोड़ मेहनत की। अुन्होंने गांधीजीका रास्ता पकड़ लिया। गांधीजीका दृष्टिबिन्दु समझने और बादमें गोरे नेताओं, मंत्रियों और अखबारोंके प्रतिनिधियोंसे मुलाकात करने, अुनके विचार जानने और अिन सबके साथ गांधीजीके दृष्टिकोणका मेल बैठानेके लिअे अुन्होंने अथक प्रयत्न किया। जब प्रारंभिक समझौतेकी बातचीत शुरू हुअी, तब अेक घटना हो गअी। सब मंत्रियों और गांधीजीके साथ समझौतेकी शर्तें तय हुअीं। बातचीतके अनुसार समझौतेकी शर्तोंके विषयमें अेक-दूसरेको लिखे गये पत्रोंके मसौदे मंजूर हुअे। अिन पत्रोंको बाकायदा लिखकर और अुन पर हस्ताक्षर करके अेक-दूसरेके पास पहुंचाना बाकी था। अितनेमें फिनिक्ससे गांधीजीके नाम प्रिटोरियाके पते पर तार गया कि "कस्तूरबा बहुत बीमार हैं और खतरनाक हालतमें हैं। अिसलिअे जल्दी आअिये।" गांधीजीने तार पढ़ा और मि० अेण्ड्रूजको बताया। मि० अेण्ड्रूजने कहा: "हमें अिसी वक्त चलनेके लिअे तैयार हो जाना चाहिये।"

गांधीजी: "समझौतेके पत्रोंका क्या होगा?"

मि० अेण्ड्रूज: "वे डाकके जरिये भेज दिये जायेंगे और प्राप्त किये जायेंगे।"

गांधीजी: "अैसा कैसे हो सकता है? कौमका समझौता होता हो, और यह निश्चित हो कि चौबीस घंटोंमें पत्रोंका आदान-प्रदान हो जायगा, तब किसी भी कारणसे यहांसे जाकर समझौतेको कअी दिन तक आगे बढ़ानेके खतरेमें हिन्दुस्तानी कौमको डालनेका मुझे क्या अधिकार है?"

मि० अेण्ड्रूज: "लेकिन तारमें यह लिखा है कि मिसेज गांधीकी भयंकर स्थिति है। जानेमें दो दिन देर करनेसे कुछ भी परिणाम आ सकता है।"

गांधीजी: "मेरे अपने कर्तव्यको छोड़कर अेक दिन जल्दी चले जानेसे वह बच ही जायगी, अिसका भी क्या भरोसा है?"

मि० अेण्ड्रूज: "तब क्या करें?"

गांधीजी: "यह काम पूरा करके ही यहांसे हटना चाहिये; और कुछ हो ही नहीं सकता।"

मि० अेण्ड्रूज चुप रहे, बड़े चिन्तित हो गये। तुरंत ही वहांसे अुठे। टेलीफोन अुठाया। जनरल स्मट्सको बुलाकर बात की: "यहां हम पर

अेक धर्म-संकट आ पड़ा है। फिनिक्ससे तार आया है कि श्रीमती गांधी भयंकर रोगमें फंस गअी हैं। और मि० गांधीको तुरंत ही बुलाया है।"

जनरल स्मट्सने जवाबमें कहा: "मि० गांधी खुशीसे जा सकते हैं। हमारा समझौता अब निश्चित है।"

मि० अेण्ड्रूज: "आप मि० गांधीको तो जानते ही हैं। अुनका यह कहना है कि चाहे फिनिक्स जानेमें चौबीस घंटेकी देर हो, परन्तु कौमका काम छोड़कर मैं किसी हालतमें नहीं जा सकता। अिसलिअे आप मेरी अेक विनती सुनेंगे?"

जनरल: "हां, जरूर आप कहें वैसा करनेको मैं तैयार हूं।"

मि० अेण्ड्रूज: "शाम तो होनेवाली है, फिर भी मि० गांधीकी तरफका पत्र तैयार करके अुस पर अुनके हस्ताक्षर करवाकर मैं आपके पास आता हूं। आप अपना पत्र तैयार करवाकर और अुस पर हस्ताक्षर करके मुझे दे देंगे?"

जनरल: "देर तो बहुत हो जायगी। मुझे और भी दूसरे जरूरी काम हैं। फिर भी आप मि० गांधीका पत्र ले आअिये। मैं अपना पत्र यथासंभव जल्दी ही तैयार करके दे दूंगा।"

शाम हो गअी थी। मि० अेण्ड्रूजने तुरंत हिन्दुस्तानियोंकी तरफसे शर्तनामा तैयार कराया, अुस पर गांधीजीके हस्ताक्षर कराये और स्वयं दूत बनकर गये। रात हो जाने पर भी जनरल स्मट्स आफिसमें ही थे। अुन्हें बहुत रुकना पड़ा। अुन्होंने गांधीजीका पत्र पढ़ा और निर्णयके अनुसार सरकारकी तरफसे स्वयं पत्र लिखकर और अुस पर हस्ताक्षर करके मि० अेण्ड्रूजको दे दिया। मि० अेण्ड्रूजने जनरल साहबका बड़ा आभार माना और पत्र लेकर रातके दस बजे वापस डेरे पर आये। गांधीजी और अेण्ड्रूज तुरंत रातकी गाड़ीसे फिनिक्सके लिअे रवाना हुअे।

कस्तूरबाकी हालत बड़ी गंभीर थी। गांधीजी अैन वक्त पर आ पहुंचे। अैसे समय भी अुन्होंने डॉक्टरको नहीं बुलाया। खुद ही अुनकी बीमारीका अिलाज किया और कस्तूरबा खतरेसे पार हो गअीं।

दीनबन्धु अेण्ड्रूजने अिस तरह भ्रातृभावसे ही काम किया। अुन्होंने दक्षिण अफ्रीका जाकर वहांके वातावरणमें बड़ा सुन्दर परिवर्तन कर दिया। अिसमें भी केपटाअुनके गोरे श्रोताओंकी अेक विराट सभामें, जिसमें दक्षिण अफ्रीकाके गवर्नर जनरल लॉर्ड ग्लेडस्टन दीनबन्धुका भाषण सुनने गये थे,

दीनबन्धुने कमाल कर दिया । हिन्दुस्तानियों, हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानकी संस्कृतिके बारेमें अुन्होंने अैसा भावपूर्ण प्रवचन दिया कि अुसे सुनकर बहुतोंकी आंखोंसे आंसू बहने लगे। अिस तरह अनेक सेवायें करके दीनबन्धु और भाअी पियर्सन वहांसे सीधे अिंग्लैण्ड चले गये ।

अिन दोनों साधु पुरुषोंके अलावा हिन्दुस्तानसे गये हुअे भारत-सरकारके प्रतिनिधि सर बेंजामिन रॉबर्ट्सनने भी समझौतेके लिअे अच्छा काम किया। अुसके लिअे अेक अलग प्रकरण देनेकी मैं आशा रखता हूं, अिसलिअे यहां अिस सम्बन्धमें नहीं लिखता।

अूपर लिखे व्यक्तियोंके सिवा कुछ अज्ञात व्यक्तियोंने जो काम किया है, अुसके बारेमें दुनिया कुछ नहीं जानती। गांधीजीने अुनके विषयमें काफी लिखा मालूम नहीं होता। अुन व्यक्तियोंके बारेमें मैं जो कुछ जानता हूं अुसे यहां बता दूं तो अुपयोगी होगा। ये दो छिपे व्यक्ति हैं मिस हॉबहाअुस और मिस माल्टीनो नामक दो सहेलियां। अुनके बारेमें मैं अगले प्रकरणमें लिखूंगा।

१६

सेवाभावी सखियां

श्रीमती कस्तूरबाके जेलसे छूटनेके बाद अेक महिला फिनिक्समें आअीं। लगभग सत्तर वर्षकी अुम्र होने पर भी अुनके शरीरमें जवानीका जोश भरा था । शरीरसे खूब हृष्टपुष्ट और अूंची-पूरी थीं; चलनेमें अैसी तेज मानो धनुषसे तीर छूटा हो; हास्य तो अुनके मुंह पर सदा ही बना रहता था; हृदय प्रफुल्लित और अत्यन्त स्नेहशील था। सत्तर वर्षकी बूढ़ी होने पर भी वे अच्छे अच्छे नौजवानोंको शर्मानेवाली तन और मनकी स्फूर्तिसे भरपूर थीं।

अुन्होंने कस्तूरबाको पहचाना । हमारे रोजमर्राके कामोंमें वे घुलमिल गअीं। बादमें जेलकी बातें कीं। बड़े नम्र और स्नेहपूर्ण प्रश्न करके कस्तूरबासे जेलका हालचाल पूछने लगीं। खाने-पीनेकी तकलीफ, अुसके लिअे किये गये अुपवास, और जेलके सख्त काम वगैराकी बातें कस्तूरबाने टूटी-फूटी अंग्रेजीमें सुनाअीं। मानो सब कुछ समझ गअी हों, अिस तरह अुन महिलाने अेक दीर्घ

निश्वास लिया और बोल अुठीं: "गजब हो गया! यह भारी निर्दयता कही जायगी। यह सरकारको क्या सूझा? अिस महिलाको जेलमें डालनेकी बात अुसे कैसे सूझी? अिसने क्या अपराध किया था? यह अपराध करे, अैसी कोअी चीज ही अिसमें नहीं है। अिसके चेहरे पर तो बिलकुल निर्दोषता ही झलक रही है। निर्दोष पवित्र देवी जैसी यह कस्तूरबा जनरल स्मट्सका क्या अपराध कर सकती थी? देखो न, अिसके शरीरमें भी क्या रह गया है? निरी अस्थि-पंजर; खूनकी अेक बूंद भी कहीं नजर आती है? अरेरे, जनरल स्मट्सको यह क्या सूझा? मिसेज गांधी, मैं तो दूर केपटाअुनसे खास आप ही को देखने आअी हूं। मैं जनरल बोथासे सब हाल कहूंगी और अुनकी तो अच्छी तरह खबर लूंगी। अगर वे अैसी पवित्र निर्दोष देवियोंको जेलमें डालेंगे तो राज्य कैसे चला सकेंगे?"

वह महिला अिस तरह बोलती ही रहीं और कस्तूरबाकी तरफ देख देखकर पूछती रहीं: "मिसेज गांधी, मुझे सच कहिये, आपको जेलमें सरकारने बहुत सताया? आपका शरीर कितना दुबला हो गया है! बिलकुल पीला मालूम होता है।"

अुनका नाम था मिस माल्टीनो। अुनका माल्टीनो कुटुम्ब दक्षिण अफ्रीकामें मशहूर था। अुनके भाअीका नाम मि० जेम्स माल्टीनो था, जो दक्षिण अफ्रीकाकी पार्लियामेण्टके अध्यक्ष थे। अिस सत्तर वर्षकी युवा कुमारीने सारी जिन्दगी समाजकी सेवामें ही बिताअी है। या यों कहिये कि समाज-सेवाके साथ ही अुसने विवाह किया है। दक्षिण अफ्रीकामें निःशस्त्र सत्याग्रहकी लड़ाअी हुअी और अुसके सामने अंतमें यूनियन सरकारको भी झुकना पड़ा। अिसका असर दूर दूर तक हुआ। बहुतोंको यह लड़ाअी बड़े चमत्कारके समान लगी। मिस माल्टीनो और अुनकी सहेली मिस हॉबहाअुसको भी अैसा ही लगा। मिस हॉबहाअुसने अपनी सहेली मिस माल्टीनोको जांच करके सच बात मालूम करनेके लिअे फिनिक्स भेजा था। मिस हॉबहाअुस अेक अंग्रेज महिला हैं। अुनका नाम दक्षिण अफ्रीकाके बोअर लोगोंमें घर घर प्रसिद्ध है। बोअर लोग, छोटे-बड़े सभी, अिस महिलाको बड़ी बहनके नामसे सम्बोधन करते हैं। अंग्रेजों और बोअर लोगोंमें तो जैसे जन्मसे ही वैरभाव था। अैसा बेसुरा सम्बन्ध होने पर भी यह अंग्रेज महिला बोअर स्त्री-पुरुषों, बालकों, बूढ़ों और युवक-युवतियों सबकी बड़ी बहन कैसे बन गअी, अिसका अेक अितिहास है।

सन् १९०२ में दक्षिण अफ्रीकामें बोअर-युद्ध हुआ। लॉर्ड किचनर अुस समय सेनाके सेनापति थे। अुनकी अधीनतामें अंग्रेज सेनाने दक्षिण अफ्रीकामें अनेक निन्द्य अत्याचार किये थे। अन्याय, अत्याचार और दुराचार — किसी भी अुपायसे ट्रान्सवालके बहादुर और वीर मुट्ठीभर बोअर लोगोंको कुचल देना ही अंग्रेजोंका संकल्प था। अिसलिअे बोअर-युद्ध शुरू करनेमें अंग्रेज राजनीतिज्ञोंने धर्म-अधर्म या नीति-अनीतिको नहीं देखा। अिसी तरह लड़ाअी छिड़नेके बाद अंग्रेज सेनाने भी अत्याचार और निर्दय राक्षसी कृत्य करनेमें कोअी कसर नहीं रखी। बोअर लोगोंने अपने स्त्री-बच्चोंको अेक जगह जमा करके और अलग निवासस्थान बनाकर अिसलिअे वहां रख दिया था कि वे सही-सलामत रहें और अुन्हें लड़ाअीके कष्ट न अुठाने पड़ें। बोअर योद्धा देशके अलग अलग भागोंमें बहादुरीसे लड़नेमें मशगूल थे। अंग्रेज सेनाने अिसका लाभ अुठाया। अुसने बोअर स्त्री-बच्चोंके रहनेकी जगह पर हमला करके अुनके कैम्पको आग लगा दी। अंग्रेज सेनाके जंगली पशुओं जैसे सैनिकोंने अनेक स्त्रियों पर अत्याचार करके अुनकी लाज लूटी। और अनेक बालकों तथा कैम्पकी रक्षाके लिअे रखे हुअे गिनतीके वीर बोअर योद्धाओं पर अंग्रेज सेनाके डाकू टूट पड़े और अुन्हें कत्ल कर डाला। जब तक मानव-जाति जीवित रहेगी तब तक यह निन्द्य कार्य अंग्रेज जातिके अितिहासमें अुसका काला कलंक बनकर रहेगा।

यह सचाअी धीरे धीरे प्रकाशमें आअी। तार या अखबारोंके जरिये तो अैसे समाचार अधिकारी लोग अिंग्लैण्डमें जाने नहीं देते थे। परन्तु पत्रव्यवहारके जरिये और धर्म तथा नीतिके प्रेमी मनुष्योंके मारफत ये समाचार अिंग्लैण्ड पहुंचे। अुनकी चर्चा होने लगी। न्यायप्रिय और सहृदय अंग्रेजोंने अपने भाअियोंके अिस निन्द्य व्यवहारका विरोध किया। अुस समय अेक अंग्रेज युवा कुमारीका हृदय अुबल अुठा। पुण्यप्रकोपसे अुसके हृदयमें आग लग गअी। अुसने खुद दक्षिण अफ्रीकामें जाकर अैसे निर्दोष बच्चों और स्त्रियोंकी हत्याके बारेमें जांच करके अुनकी सेवामें ही सारा जीवन बितानेका निश्चय किया। अुसने अिंग्लैण्डमें भी अिन निन्द्य अत्याचारोंका खूब प्रचार किया। जब वह दक्षिण अफ्रीकाके जहाजमें डरबन बन्दरगाह पर अुतरी, अुस समय दक्षिण अफ्रीकाके अंग्रेजोंका मिजाज हाथमें नहीं रहा। अपने देशकी अेक पवित्र, दयाकी मूर्ति जैसी सेवाभावी कुमारीको दक्षिण अफ्रीकाके अंग्रेजोंने दुतकारा, गालियां दीं

और देशद्रोही बताया; कुछने अुस पर सड़े हुअे अंडे फेंककर हमला किया। फिर भी अिन सब अपमानों, तकलीफों और खतरोंकी परवाह न करके वह कुमारी ट्रान्सवालमें आअी। अुसने सारी हालत चल रही लड़ाअीके भयानक वातावरणमें भी खुद देखी, और जहां बोअर स्त्रियों और बच्चोंका कैम्प था, वहां जाकर अुनकी देखरेख और सेवाका काम अपने हाथमें लिया। अिसी वीर और न्यायप्रिय दयालु अंग्रेज कुमारीका नाम मिस हॉबहाअुस था। वहां अिस महिलाकी मदद करनेवाली दूसरी सेवाभावी बहनें भी मिल गअीं और अुन्होंने बोअर-युद्धके बीचमें पशुवृत्तिवाली अंग्रेज सेनाके खतरेसे सैकड़ों बोअर स्त्री-बच्चोंकी रक्षा की। जो काम सैकड़ों शस्त्रधारी योद्धा नहीं कर सकते, वह काम अिस वीर युवतीने अपने नैतिक बलसे कर दिखाया।

अुसके बादसे मिस हॉबहाअुस बोअर जातिकी जीवन-मित्र बन गअीं। अुन्होंने अुसीके बीच जीवन बिताया। और शुद्धहृदय बहादुर बोअर जातिने अुन्हें अपनी 'बड़ी बहन'का प्यारभरा नाम दिया। बोअर जाति जनरल बोथाको 'बड़ा भाअी' मानती थी और अिस अंग्रेज रमणीको 'बड़ी बहन' समझती थी।

मिस माल्टीनो फिनिक्स आअीं, सारा हाल जानकर केपटाअुन गअीं और मिस हॉबहाअुसको सब बातें सुनायीं। अुन दयालु और नीतिप्रिय बहनका हृदय जल अुठा। अुन्होंने खानगी तौर पर जनरल स्मट्स और जनरल बोथासे हिन्दुस्तानियोंके प्रश्नका निपटारा करनेका आग्रह किया और खुद आश्वासन प्राप्त करके १ जनवरी, १९१४ के दिन हिन्दुस्तानियोंकी घोषणानुसार बड़ी कूच शुरू होनेसे पहले गांधीजीको नीचेके आशयका तार दिया :

"मेरे जैसी अेक अबलाकी प्रार्थना पर अपनी कूच पन्द्रह दिनके लिअे मुलतवी रखिये।" वगैरा

जनरल स्मट्सके पत्रमें बताअी हुअी समझौतेकी कुछ आशाके साथ अिस तारसे भी गांधीजीके दिल पर बहुत अच्छा असर हुआ। गांधीजीका मिस हॉबहाअुसके साथ कोअी परिचय नहीं था, परन्तु वे अिस महिलाकी अच्छी प्रतिष्ठाके बारेमें कुछ जानते थे। अैसी निर्मल, न्यायनिष्ठ, नीतिप्रिय, सहृदय और वीर रमणीकी मांगका अनादर करना गांधीजीको पसन्द नहीं आया। अुन्होंने तुरन्त सबके साथ सलाह-मशविरा करके जाहिर कर दिया कि "कूच १५ जनवरी तक मुलतवी रखी जाती है।"

अिसके बाद ही गांधीजीने जनरल स्मट्ससे मुलाकात की। जनरल स्मट्स गांधीजीको देखकर खूब हंसे। अुनके विचित्र दिखावे, विचित्र वेश, और हाथमें बांसकी पतली और अूंची लकड़ीको देखकर लगता था मानो वे कोअी फकीर हों। जनरल स्मट्सने अपने आठ सालके विरोधीको अैसे वेशमें आज ही देखा और वे बोल अुठे:

"यह खूब रहा। अब मुझे मालूम हुआ कि अिन तीन महीनोंमें अितनी भारी गड़बड़ किस तरह हुअी। अिस लकड़ीमें ही कोअी जादू है! अिसीने यह सारा चमत्कार किया है। मुझे आपका यह लिबास और यह स्वांग अच्छा नहीं लगता।"

गांधीजीने भी मुक्तहास्य करके कहा: "यह स्वांग जिस घड़ी आप चाहें अुसी घड़ी मैं अुतार सकता हूं। अिसे अुतरवाना आपके हाथकी बात है।"

जनरल स्मट्स गांधीजीसे अिस तरह बातें करने लगे, जैसे अपने किसी मित्रसे मिले हों।

अुस मौके पर जनरल स्मट्स गांधीजीके साथ शुद्ध भावसे बोले थे। अिस बारेमें गांधीजीने अेक सार्वजनिक सभामें कहा था:

"The words that General Smuts so often emphasized still ring in my ears. He had said, 'Gandhi, this time we want no mental or other reservation, but all the cards be on the table, and I want you to tell me wherever you think that a particular passage or word does not read in accordance with your own reading.' And it was so."

"अुस समय जमरल स्मट्सने बार बार जो स्पष्टता की अुसकी गूंज अभी तक मेरे कानोंमें बनी हुअी है। जनरल स्मट्सने कहा था कि, 'गांधी, अिस बार हमें जरा भी अस्पष्टता नहीं चाहिये। मनका मैल या और कोअी चालाकी नहीं चाहिये। खेलके सारे पत्ते हम मेज पर खोलकर रख दें। मैं चाहता हूं कि हमारे समझौतेकी किसी कलम या शब्दका अर्थ आपको अपनी समझके अनुसार स्पष्टता करता हुआ न दीखे तो आप मुझे जरूर कहें।' और अन्तमें हमारा समझौता अैसा ही स्पष्ट और शुद्ध साबित हुआ।"

गांधीजी अुस समयकी जनरल स्मट्सकी यह मार्मिक वाणी समझ गये थे और अुन्होंने हंसकर कहा था कि, "आप कोअी भेद या चालाकी रखेंगे

तो भी अुससे मुझे या मेरी कौमको कोअी नुकसान नहीं होगा । आज तक मुझे लाभ हुआ है और आपकी भेदनीति या चालाकीसे अुलटे मेरी कौमको ज्यादा लाभ होगा।"

फिर दोनों विरोधियोंने बातचीत करके प्रश्नका निपटारा कर डाला। क्या निपटारा किया, यह हम अगले प्रकरणमें देखेंगे।

१७

प्रारंभिक समझौता

प्रारम्भिक समझौता होनेसे पहले गांधीजी और जनरल स्मट्सकी मुलाकातें कअी बार हुअी थीं और अुन्होंने काफी बातचीत की थी। अिसमें सर बेंजामिन रॉबर्ट्सनने भी मदद दी थी। अन्तमें समझौतेके चिह्नस्वरूप अेक-दूसरेको पत्र लिखनेका फैसला हुआ। वह पत्रव्यवहार अिस प्रकार है।

हिन्दुस्तानियोंकी तरफसे गांधीजीका जनरल स्मट्सको लिखा पत्र:

"हम अपनी प्रतिज्ञाके कारण कमीशनमें आपके बताये अनुसार मदद नहीं दे सकते। अिस प्रतिज्ञाको आप समझ सकते हैं, और अुसकी कद्र भी करते हैं। आप कौमके साथ संधिवार्ता करनेका सिद्धान्त स्वीकार करते हैं, अिसलिअे सबूत देनेकी बातके सिवा दूसरी तरहसे कमीशनको मदद देने और अन्तमें अुसके काममें बाधक न बननेकी सलाह तो मैं अपने देशभाअियोंको दे सकता हूं। और जब तक कमीशनका काम जारी रहे और नये कानून बनें तब तक सरकारकी स्थितिको विषम न बनानेके लिअे सत्याग्रहको मुलतवी रखनेकी सलाह मैं अुसे दे सकूंगा। हम पर जेलमें और हड़तालके दिनोंमें जो दुःख पड़े अुनके बारेमें मुझे कहना चाहिये कि अपनी प्रतिज्ञाके कारण हम अिन दुःखोंको साबित नहीं कर सकेंगे। सत्याग्रहीकी हैसियतसे जहां तक हो सके हम अपने दुःखोंकी शिकायत नहीं करते और न अुनका मुआवजा मांगते हैं। परन्तु अिस समयके हमारे मौनका यह अर्थ न होना चाहिये कि हमारे पास साबित करनेके लिअे कोअी सामग्री ही नहीं है। मैं चाहता हूं कि आप हमारी स्थितिको भी समझ सकें। और जब हम सत्याग्रह मुलतवी करते हैं, तो जो लोग अभी लड़ाअीके सिलसिलेमें जेलमें बन्द हैं वे छूटने चाहिये। हमारी मांगें क्या हैं यह भी मैं यहां बता देना अुचित समझता हूं:

(१) तीन पौण्डका कर रद हो।

(२) हिन्दू, मुसलमान अित्यादि विधियोंके अनुसार हुअे विवाह जायज माने जायं।

(३) पढ़े-लिखे हिन्दुस्तानी अिस देशमें आ सकें।

(४) ऑरेन्जियाके विषयमें जो करार हुअे हैं अुनमें सुधार हों।

(५) यह आश्वासन दिया जाय कि प्रचलित कानूनका अमल अिस तरह होगा कि हमारे मौजूदा हकोंको नुकसान न पहुंचे।"

यह पत्र २१ जनवरी, १९१४ को गांधीजीने लिखा। अुसी दिन जो जवाब जनरल स्मट्सकी तरफसे गांधीजीको मिला, अुसका आशय यह था:

"आप कमीशनके सामने गवाही नहीं दे सकते, अिसके लिअे सरकारको अफसोस है। परन्तु वह आपकी स्थितिको समझ सकती है। आपने कष्टोंकी बात छोड़ देनेका अिरादा जाहिर किया, अुसका हेतु भी सरकार समझती है। सरकार तो अिन कष्टोंसे अिनकार ही करती है, परन्तु जब आप अुनका सबूत पेश नहीं कर रहे हैं तो सरकारके लिअे अिस मामलेमें कुछ करनेकी जरूरत नहीं रह जाती। सत्याग्रही कैदियोंको छोड़नेके बारेमें आपका पत्र मिलनेसे पहले ही सरकार हुक्म भेज चुकी थी। कौमको होनेवाले कष्टोंकी जो सूची आपने दी है, अुसके बारेमें कमीशनकी रिपोर्ट मिलने तक सरकार अपनी कार्रवाअी मुलतवी रखेगी।"

अिस प्रकार प्रारंभिक समझौता हुआ। परन्तु जैसे दूधका जला छाछको भी फूंक कर पीता है, अुसी तरह बहुतसे हिन्दुस्तानियोंको भी डर लगा। अुन्हें अिस समझौते पर पूरा विश्वास नहीं हुआ। वे गांधीजीसे कहने लगे:

"आप फिर जनरल स्मट्सके जालमें फंस गये। वह कंजी आंखोंवाला बड़ा बदमाश है। आप बहुत सरल हैं। आपको वह दो बार धोखा दे चुका है, फिर भी आप अुस पर विश्वास कर बैठे। हिन्दुस्तानियोंकी शक्ति, लड़ाअीमें जाग्रत हुआ हमारा जोश, अुससे हिन्दुस्तानमें अुत्पन्न हुआ असंतोष और वहांके वाअिसरॉय तथा अुनके कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा यूनियन सरकार पर डाला हुआ दबाव — अिन सबके कारण जनरल स्मट्सने हां भर ली है। परन्तु सब कुछ शान्त हो जानेके बाद आप देखना वह जैसाका तैसा ही हो जायगा। जब तक धारासभामें कानून पास नहीं हो जाता, तब तक आपको सत्याग्रह बन्द ही नहीं करना था।"

अिस प्रकार बहुतसे मित्र कहते रहे। परन्तु दीनबन्धु अेण्ड्रूज जैसे साधु पुरुष और सर बेंजामिन रॉबर्ट्सन जैसे भारत-सरकारके प्रतिनिधिके बीच-बचावसे यह समझौता हुआ था, अिसलिअे गांधीजीको भविष्यमें धोखा होनेका डर नहीं था। और अिस बार तो जनरल स्मट्सने शुरूसे ही बहुत शुद्ध हृदयसे काम लिया था। अुसका भी गांधीजी पर अच्छा असर पड़ा था।

यह समझौता हो जानेके बाद थोड़े ही दिनोंमें कमीशनका काम पूरा हुआ। अुसमें अुन्हीं गिनतीके हिन्दुस्तानियोंने गवाही दी, जो सत्याग्रहकी लड़ाअीके बहुत विरोधी थे; और वह गवाही भी कौमके विरुद्ध तो थी ही नहीं। कमीशनने तुरन्त अपनी रिपोर्ट तैयार कर ली। अुस रिपोर्टके प्रकाशित होने और अुस पर कमीशनके सदस्योंके हस्ताक्षर होनेसे पहले जनरल स्मट्सकी तरफसे अुसकी अेक प्रति गांधीजीको मिली। गांधीजीने अुसमें कुछ सुधार सुझाये और अुन सुझाये हुअे सुधारोंके अनुसार रिपोर्टमें परिवर्तन भी हुआ। रिपोर्ट जैसा सोच रहे थे अुससे भी ज्यादा संतोषजनक निकली। अुसमें तीन पौण्डका कर रद करने, हिन्दुस्तानी विधिसे हुअे विवाहोंको जायज मानने, भविष्यमें हिन्दुस्तानियोंके मौजूदा हकोंकी रक्षा करने वगैराकी कितनी ही छोटी-छोटी सिफारिशें भी थीं। अब अिन सिफारिशोंको केवल पार्लियामेण्टमें कानूनके रूपमें पास ही करना बाकी था। अैसा करनेमें मदद देनेका आश्वासन भी पार्लियामेण्टके बहुतसे प्रमुख सदस्योंकी तरफसे गांधीजीको मिल चुका था। अिसलिअे गांधीजीको अब अंतिम समझौतेके बारेमें जरा भी शंका नहीं रही थी।

१८

सर बेंजामिन रॉबर्ट्सन

सर बेंजामिन रॉबर्ट्सन अेक प्रख्यात आअी० सी० अेस० थे। मध्यप्रान्तके कमिश्नर कहिये या गवर्नर कहिये, परन्तु वहांके मुखिया वे ही थे। वे लॉर्ड बर्कनहेडके कथित फौलादी ढांचेके अेक सुदृढ़ अंग, हिन्दुस्तानके सनदी नौकरोंके बुजुर्ग और ब्रिटिश साम्राज्यवादके अेक कट्टर पुजारी थे। भारत-सरकारने दक्षिण अफ्रीकामें अुन्हें भेजा तो था हिन्दुस्तानियोंके हितोंकी रक्षाके लिअे प्रतिनिधि बनाकर; परन्तु सर बेंजामिनसे दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके हितोंकी रक्षामें कुछ मदद हुअी हो तो वह मजबूरीसे ही हुअी। वे

अुनका कोअी अहित तो कर ही नहीं सकते थे। अिसलिअे वे नीचा मुंह करके चलती गाड़ीमें बैठ गये और समझौतेको सफल बनानेमें नाममात्रकी सहायता अुन्हें करनी पड़ी।

प्रथम तो दक्षिण अफ्रीकामें अुतरनेके बाद नेटालमें, जो लड़ाअीका मुख्य गढ़ था, किसी भी तरहकी पूछताछ किये बिना या जिनके दुःख मिटानेके लिअे वे वहां गये थे अुनके बारेमें थोड़ी भी जांच किये बिना, नेटाल पार करके वे प्रिटोरियामें यूनियन सरकारके मेहमान बन कर बैठ गये। भारत-सरकारके दबावसे अुसकी अिज्जत रखनेके लिअे यूनियन सरकारने कमीशन नियुक्त किया। गांधीजीने यह सलाह दी कि हिन्दुस्तानी अुसे स्वीकार न करें; अिसलिअे अुनके मनमें हिन्दुस्तानियों और गांधीजीके प्रति कुछ घृणा पैदा हो गअी। हिन्दुस्तानियोंकी अिस कार्रवाअीसे अुन्हें भारत-सरकारका अपमान हुआ लगा। हिन्दुस्तानियोंकी प्रतिज्ञा या कमीशनमें हुअे हिन्दुस्तानियोंके अपमानकी बात तो अुनके ध्यानमें ही नहीं आअी। अिसलिअे दक्षिण अफ्रीकामें जाकर अुन्होंने अुलटे प्रयत्न करना शुरू कर दिया।

हिन्दुस्तानमें बहुत अर्सेसे रहनेके कारण बनी आदतसे पहले तो अुन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानोंमें फूट डालनेका साहस किया: "दक्षिण अफ्रीकामें मुसलमानोंके बड़े बड़े व्यापार हैं। करोड़ोंकी जायदादें हैं। और हिन्दू तो अिनेगिने हैं। अुनमें भी बहुत थोड़े ही स्थायी निवासी और जायदादवाले हैं। अिसलिअे हिन्दू चाहे जैसे लड़ें तो भी अुनका नुकसान नहीं हो सकता। अुनके पास खोनेको है ही क्या? लेकिन मुसलमानोंको सरकारके विरुद्ध जानेमें बड़ा नुकसान है। अिसलिअे अैसा करना अुन्हें पुसायेगा नहीं। मुसलमानोंको अपनी भलाअीके खातिर दक्षिण अफ्रीकाकी सरकार और भारत-सरकारको खुश रखना चाहिये। कमीशन तो दोनों सरकारोंने सलाह करके मुकर्रर किया है। अिसलिअे मुसलमान अुसमें भाग लेंगे और अपने सबूत पेश करेंगे, तो भविष्यमें अुनका जो नुकसान होनेवाला है वह नहीं होगा। अितना ही नहीं, अुनके भलेकी कुछ सिफारिशें भी कमीशन करेगा।"

अैसी चालबाजी सर बेंजामिनने शुरू की, परन्तु अुनकी कुछ चली नहीं। जो थोड़ेसे हिन्दुस्तानी लोग लड़ाअीके बिलकुल विरोधी थे, वे सर बेंजामिनकी सिखावनके बिना भी सबूत देनेके लिअे जानेवाले थे; और वे गये भी।

परन्तु वे हिन्दुस्तानियोंकी आबादीका अेक फीसदी भाग भी नहीं थे। सारे हिन्दुस्तानी अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहे। सर बेंजामिनकी यह पहली चाल असफल रही। अुन्होंने यह भी देख लिया कि जनरल स्मट्सका गांधीजी पर सिर्फ बहुत विश्वास ही नहीं है, बल्कि गांधीजीको संतुष्ट किये बिना अब सरकारका काम ही नहीं चल सकता। सबको हिन्दुस्तानियोंकी शक्तिका भरोसा हो गया था और अुस शक्तिका सामना करनेकी अुनकी ताकत नहीं थी। अुन्होंने यह भी देखा कि शुरूमें मंत्रियों और गांधीजीके बीचकी बातचीतमें जनरल स्मट्सने सर बेंजामिनको शामिल रखनेकी भी जरूरत नहीं समझी। अुन्हें प्रिटोरियाके अेक होटलमें ही पड़ा रहना पड़ा। अुन्होंने यह भी देख लिया कि हिन्दुस्तानियोंके नेता अुनकी खुशामद करने या अुनका आदर-सत्कार करने या सभाओंमें अुन्हें निमंत्रण देने या अुन्हें सलाम करने नहीं आते। तब अुन्हें लगा कि हिन्दुस्तानके नेता कुछ दूसरी ही मिट्टीके बने हैं। शिष्टाचारके खातिर जब गांधीजी अुनसे मिलने अुनके निवासस्थान पर गये, तब गांधीजीकी विचित्रता देखकर अुन्हें कुछ आश्चर्य हुआ और बातचीतमें ही गांधीजीके मनोबल और काम करनेकी पद्धतिसे वे भोंठे पड़ गये।

अितनेमें अेक महत्त्वपूर्ण प्रसंग पैदा हो गया। समझौतेकी शर्तोंमें हिन्दुस्तानी विवाहको जायज साबित करानेवाली जो कलम थी, अुसके बारेमें कुछ मुसलमानोंका यह आग्रह था कि मुसलमानोंके मजहबके अनुसार चार स्त्रियां करनेकी अिजाजत है, अिसलिअे किसी मुसलमान हिन्दुस्तानीके चार स्त्रियां हों तो वे चारों शादियां जायज मानी जानी चाहिये। गांधीजीने यह स्पष्ट कह दिया था कि मैं अैसी मांग हरगिज नहीं कर सकता। अुनकी दलील यह थी कि मौजूदा जमानेमें अेक स्त्रीके साथका विवाह ही कानूनकी दृष्टिसे जायज और नीतिमय माना जाता है और कअी स्त्रियोंके साथ की गअी शादी जंगली समझी जाती है। अिस मान्यताके विरुद्ध जाकर, अनुचित मांग करके मैं विदेशी लोगोंके सामने हिन्दुस्तानियोंकी नैतिक दुर्दशाको स्वयं नहीं बताअूंगा। वे अैसी कोअी मांग करनेके लिअे तैयार नहीं थे, जिससे हिन्दुस्तानी प्रजा नैतिक दृष्टिसे पाश्चात्य लोगोंसे नीची सिद्ध हो। मुस्लिम मजहबके बारेमें गांधीजीकी यह दलील थी कि पैगम्बर मुहम्मद साहबके फरमान — 'चारसे ज्यादा स्त्रियोंके साथ शादी करे अुसे मुसलमान ही न समझा जाय' — का अर्थ नैतिक दृष्टिसे यही हो सकता है कि सच्चा और नेक मुसलमान खुदामें

ही लीन रहे और दुनियादारीमें कभी न पड़े। जो मुसलमान अितनी शक्ति न रखता हो वह संसार-धर्म स्वीकार करके और मनको संयममें रखकर अेक पत्नीके साथ विवाह-सम्बन्ध करे। लेकिन कोअी संतान-प्राप्तिके लिअे या मनकी कमजोरीके कारण या अन्य किसी कारणसे चार स्त्रियोंसे शादी करे तब तक तो वह क्षम्य माना जायगा। परन्तु मुसलमान होनेका दावा करनेवाला कोअी आदमी चारसे ज्यादा स्त्रियोंसे शादी करे, तो अुसे मुसलमानोंकी गिनतीमें से भी निकाल देना चाहिये। अिस प्रकार पैगम्बर साहबने मनुष्यमात्रकी दुर्बलताकी मर्यादा बांधकर मानव-समाजकी बहुत बड़ी सेवा की है। कितने ही मुसलमान भोग-विलासकी भारी लालसा रखते हुअे भी पैगम्बर साहबके फरमानके कारण अधोगतिसे बच गये होंगे। अिस समझके कारण गांधीजीने चार स्त्रियों तककी शादीको जायज माननेकी मांग करनेसे अिनकार कर दिया।

सर बेंजामिन रॉबर्ट्‌सनको यह बात मालूम हुअी। अुन्होंने अिस मतभेदका लाभ अुठानेकी कोशिश की। अुनसे मिलने जानेवाले कुछ मुसलमान सज्जनोंको अुन्होंने समझाया कि, "मुसलमान मजहबके अनुसार चार स्त्रियों तककी शादीको जायज माननेकी मांग गांधीजीको करनी चाहिये, परन्तु गांधीजी यह मांग अिसलिअे नहीं करते कि अैसा करनेमें हिन्दुओंका बहुत लाभ नहीं है।" अैसा समझानेसे कुछ मुसलमान भाअी विचलित हो गये और गांधीजी पर दोषारोपण करने लगे कि, "सर बेंजामिन तो तैयार हैं, परन्तु गांधीजी अिनकार करते हैं।" गांधीजीने अिसका निराकरण करनेके लिअे सर बेंजामिनसे मुलाकात की और अुन्हें बताया कि, "आपके दिलमें मुसलमान भाअियोंके लिअे जो सहानुभूति है, अुससे मुझे बहुत खुशी हुअी। मैं तो अेक ही स्त्रीके साथ हुअे विवाहको नीति-संगत मानता हूं। अेकसे ज्यादा स्त्रियोंके साथके विवाहको मैं नीति-विरुद्ध मानता हूं। अतः मुसलमान भाअियोंकी मांगके अनुसार अधिक स्त्रियोंवाली शादीको जायज माननेकी मांग स्वीकार करनेके लिअे सरकार तैयार हो, तो भी मैं हिन्दुस्तानियोंके प्रतिनिधिकी हैसियतसे वैसी मांग करके हिन्दुस्तानियोंको विदेशी लोगोंकी नजरमें नहीं गिराअूंगा। अितने पर भी सरकार अैसे विवाहोंको जायज माने, तो अुसमें मेरा जरा भी विरोध नहीं है। अिसी प्रकार आप खुद मुसलमानोंकी तरफसे अैसी मांग करें और सरकार आपकी

मांगका आदर करके अुसे मान ले, तो मैं अुसका भी विरोध नहीं करूंगा। अितना ही नहीं, मैं आपका और सरकारका अेहसान मानूंगा।"

गांधीजीका अैसा साफ जवाब सुनकर और अुनकी निश्चलता देखकर सर बेंजामिन समझ गये। और जिस कमीशनका गांधीजीने बहिष्कार किया, अुसी कमीशनकी रिपोर्ट गांधीजीके पास पहले भेजी गअी और अुसमें अुन्होंने जो जो सुधार सुझाये अुन्हें मंजूर करनेके बाद ही कमीशनके सदस्योंके हस्ताक्षर रिपोर्ट पर हुअे, यह जान कर तो सर बेंजामिन आश्चर्यचकित हो गये। और तभी वे साहब गांधीजीके प्रतापको समझ सके। बादमें तो अुन्होंने गांधीजीका जरा भी विरोध नहीं किया और भेदनीति या चालाकीसे कभी काम नहीं लिया। तबसे वे गांधीजीके साथ अधिक घुलने-मिलनेकी कोशिश करने लगे और गांधीजीके साथ अुन्होंने पत्र-व्यवहार भी शुरू कर दिया। अितना ही नहीं, दक्षिण अफ्रीका छोड़नेसे पहले फिनिक्सकी संस्था देखनेकी अिच्छा भी अुन्होंने प्रकट की।

अेक दिन गांधीजीने श्री मगनलाल गांधीको और मुझे बुलाकर कहा: "आज मि० पोलाकका पत्र आया है। वे आज ढाअी बजेकी गाड़ीसे सर बेंजामिन रॉबर्ट्सन और अुनके मंत्री मि० स्लेटरके साथ यहां आनेवाले हैं। अुनके साथ मि० पोलाक तो रहेंगे ही, फिर भी हमारी तरफसे तुम अुन्हें स्टेशन तक लेने जाओ तो ठीक रहेगा।" हम तीन-चार आदमी गये। स्टेशन पर गाड़ी आअी और मेहमान अुतरे। मि० पोलाकने हम सबका अुनसे परिचय कराया। सबके साथ हाथ मिला लेनेके बाद हम लोग चले। अुन्होंने शायद यह मान लिया होगा कि किसी सवारीमें बैठ कर फिनिक्स जाना होगा। परन्तु मि० पोलाकने स्टेशनकी हदसे बाहर निकल कर रास्ते पर आते ही कह दिया कि संस्थामें सवारी नहीं रखी जाती। वहांके लोग सब काम-काज खुद ही करते हैं। हम सब बातें करते हुअे चलने लगे। संस्थाके मकान आ गये। गांधीजी जहां खुद रहते थे अुस मकानके दरवाजेमें खड़े थे। अुन्होंने सर बेंजामिनका स्वागत किया। सब बीचके खंडमें बैठे। मेज पर हमेशा बिछाअी जानेवाली धुली हुअी स्वच्छ चादर बिछी थी। चौकके बगीचेके फूलोंको फूलदानियोंमें सजाकर मेज पर रखा गया था। वहां बैठकर बातें कीं; कुछ मिनटके बाद गांधीजीने फल वगैराके नाश्तेका सामान मंगाया। केले, अनन्नास, संतरे, नारंगी, पपीता, आम वगैरा ताजे फल लाकर रखे गये। गांधीजीने अुनमें से

कुछ फल लेनेकी सर बेंजामिनसे प्रार्थना करते हुअे कहा, "ये फल मेरे और मेरे साथियोंके लगाये, पाले और बड़े किये हुअे पेड़ोंके हैं। अिसलिअे शुद्ध स्वदेशी हैं। हमारे ही बगीचेमें हमारी ही मेहनतसे बड़े हुअे वृक्षोंके फल प्रेमसहित अर्पण करनेसे अधिक अच्छा स्वागत हम आपका क्या कर सकते हैं? अिसके सिवा, आपको पसन्द आये तो हम यहां जो गेहूंकी 'क्यूने ब्रेड' काममें लेते हैं और यहीं तैयार करते हैं, वह भी आपके लिअे हाजिर करें। जो कुछ हम आपकी सेवामें अर्पण करें अुसे स्वीकार करके हमें आभारी कीजिये।" सर बेंजामिन रॉबर्ट्सनको गांधीजीका शुद्ध शिष्टाचार देखकर बहुत आनन्द हुआ और तीनों ही मेहमान नाश्ता करने लगे। सर बेंजामिन फलोंकी मिठासका बखान करते जाते थे और खाते जाते थे। गांधीजीने हंस कर कहा, "यहांकी मीठी जमीनके फल मीठे होते हैं। परन्तु अिन फलोंमें हमारे पसीनेकी मिठास मिल गयी है, अिसलिअे वे और भी मीठे लगते हैं।" सर बेंजामिन गांधीजीके कहनेका भावार्थ समझ गये और आश्रमके सादे तथा स्वावलम्बी जीवनकी प्रशंसा करने लगे। लगभग पौन घंटा हो गया। सर बेंजामिनको संस्थामें घुमाना चाहिये, प्रेस वगैरा दिखाना चाहिये, अिस हेतुसे गांधीजीने नम्र भावसे क्षमा मांगते हुअे कहा: "मुझे माफ कीजिये, सर बेंजामिन, संस्थाकी सब जगहें, प्रेस, पुस्तकालय वगैरा आपको मि० पोलाक बतायेंगे। मिसिस गांधी बीमार हैं, अिसलिअे मैं आपके साथ नहीं आ सकूंगा। आशा है कि आप अिसके लिअे मुझे क्षमा करेंगे।"

सर बेंजामिन साहबने खड़े होकर अुतनी ही नम्रतासे कहा, "हां, हां, मुझे याद आया। यह बात तो मैं भूल ही गया था कि मिसिस गांधी बीमार हैं। अब अुनकी तबीयत कैसी है? मेरी अुनसे मुलाकात हो सकती है?"

गांधीजीने कहा: "जरूर, बड़ी खुशीसे। आअिये, वे यहीं पासवाले कमरेमें हैं।"

कस्तूरबा बिस्तर पर सोअी हुअी थीं। संस्थामें पलंग काममें नहीं लिया जाता था। दो लकड़ीके पटियोंको अिकट्ठा करके अुन पर कम्बल और अूपर चादर बिछाकर बिछौना बनाया गया था। सर बेंजामिनको वहां ले जाया गया। अुन्होंने कस्तूरबासे अुनकी तबीयतके बारेमें पूछा। गांधीजी और कस्तूरबाके घरकी यह साहबी और साज-समान देखकर अुन साहबके हृदय पर कैसा असर हुआ होगा यह तो वे ही जानें। परन्तु सर बेंजामिनने

कहा: "मि० गांधी, आप मिसिस गांधीकी सेवामें ही रहिये। हम मि० पोलाकके साथ सब जगह घूम आयेंगे। आप हमारे साथ चलनेकी जरा भी तकलीफ न कीजिये।"

यह कह कर सर बेंजामिन वगैरा वहांसे चले गये। प्रेस, पुस्तकालय, बगीचा वगैरा देखा। लौटकर गांधीजीके पास गये और अुनसे विदा ली। गांधीजीने मकानके द्वार पर खड़े रहकर अुनका स्वागत किया था और वहीं खड़े रहकर अुन्हें शिष्टतापूर्ण विदा दी। हिन्दुस्तानके मध्यप्रान्तके सर्व-सत्ताधारी राजा, सर बेंजामिन रॉबर्ट्सन गांधीजीके फिनिक्स आश्रममें आये और चले गये। जिन पैरों चलकर वे आये थे, अुन्हीं पैरों चल कर वापस गये। अुन्होंने कोअी अेक घंटा वहा बिताया। अुसमें अेक चीज वे छोड़ गये; वह था अुनका 'अपना तेज'। और अेक वस्तु वे अपने साथ ले गये। वह था वहांकी सब बातें देखकर अुनके दिल पर हुआ यह असर: "हिन्दुस्तानमें ब्रिटिश साम्राज्यका कोअी भयंकर शत्रु हो तो वह मि० गांधी हैं।"

१९

लड़ाअीका अन्त

प्रारम्भिक समझौतेके कारण सब सत्याग्रही छोड़ दिये गये। दोनों पक्ष शान्तिसे यूनियनकी सिनेटकी जून मासकी बैठकमें रिलीफ बिल पास होनेकी बाट देखने लगे। सन् १९१४ के जून मासमें सिनेटकी जो बैठक हुअी अुसमें जनरल स्मट्सने रिलीफ बिल पेश किया। अुस बिलको पेश करते समय पहलेके अक्खड़ जनरल स्मट्सने जो नम्रतापूर्ण छोटासा भाषण* दिया अुससे सत्याग्रहकी संपूर्ण विजय प्रकट होती है। अुन्होंने गांधीजीको दिलाये हुअे विश्वासके अनुसार खूब कोशिश की और अुस बिलको पास कराया। अुस बिलमें नौ कलमें हैं। अुसमें यह तय किया गया कि जो शादी हिन्दुस्तानमें जायज मानी जाती है, वह दक्षिण अफ्रीकामें भी जायज मानी जायगी। अेकसे ज्यादा स्त्रियोंके साथकी शादी जायज नहीं मानी जायगी और वे स्त्रियां भी पतिकी जायज पत्नियां नहीं मानी जायेंगी।

---

* जिज्ञासु पाठकोंको यह भाषण 'अिंडियन ओपीनियन' के स्वर्ण-जयंती अंकमें मिल सकेगा।

गिरमिटिया मजदूरोंकी मियाद पूरी होनेके बाद अुन्हें स्वतंत्र नागरिकके रूपमें दक्षिण अफ्रीकामें रहना हो, तो तीन पौण्डका मुंड-कर अुन्हें नहीं देना पड़ेगा अैसा तय किया गया।

दक्षिण अफ्रीकामें बाकायदा रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंको सरकारकी तरफसे जो प्रमाणपत्र दिये गये हों, अुनका मूल्य अिस बिलमें आंका गया है। यानी जिन हिन्दुस्तानियोंके पास अैसे प्रमाणपत्र हों अुन प्रमाणपत्रोंका हेतु कहां तक सिद्ध हो सकता है, अिसकी स्पष्ट व्याख्या अिस बिलमें की गअी है। अिन सब बातोंके बारेमें सिनेटमें प्रेमपूर्ण चर्चा हुअी और कानून पास हुआ। जिन-जिन बातोंको कानूनमें शामिल करना जरूरी न जान पड़ा, अुनके बारेमें जनरल स्मट्सने सरकारके प्रतिनिधिकी हैसियतसे गांधीजीको लिखे अपने पत्रमें सन्तोषजनक स्पष्टीकरण किया है। अुसमें केप-कॉलोनीके अन्दर शिक्षित हिन्दुस्तानियोंके आनेके हककी रक्षाके बारेमें, जिन्हें दक्षिण अफ्रीकामें आनेकी खास अिजाजत मिले अुनके बारेमें, जो शिक्षित भारतीय सन् १९१४ से पहले आ चुके हों अुनके बारेमें और अेकसे ज्यादा स्त्रियोंसे शादी करनेवालोंको अपनी दूसरी स्त्रियोंको मेहरबानीके तौर पर लाने देनेके बारेमें स्पष्टीकरण हुआ है। अिसके सिवा, जनरल स्मट्सके पत्रमें यह भी बता दिया गया है कि, "मौजूदा कानूनोंके बारेमें यूनियन सरकारकी सदा यह अिच्छा रही है और अब भी यह अिच्छा है कि अिन कानूनोंका अमल न्यायपूर्वक और भोगे जानेवाले हकोंकी रक्षा करके ही किया जायगा।"

अूपरके पत्रके जवाबमें ३० जूनको गांधीजीने जनरल स्मट्सके नाम जो पत्र लिखा, अुसका सार अिस प्रकार है:

"आपका आजकी तारीखका पत्र मुझे मिला। आपने धीरज और नम्रतापूर्वक मेरी बात सुनी अिसके लिअे मैं आपका आभारी हूं। हिन्दुस्तानियोंको राहत पहुंचानेवाले कानून और हमारे बीचका पत्र-व्यवहार सत्याग्रहकी लड़ाअीका अंत करते हैं। यह लड़ाअी सन् १९०६ में शुरू हुअी। अिसमें हिन्दुस्तानियोंको भारी दुःख सहने पड़े और आर्थिक हानि अुठानी पड़ी तथा सरकारको भी चिन्तामें पड़ना पड़ा है। मंत्री महोदय जानते हैं कि मेरे कुछ भाअियोंकी मांग बहुत ज्यादा थी। अलग अलग प्रान्तोंमें व्यापारिक परवानोंके कानून — जैसे ट्रान्सवालका 'गोल्ड लॉ', 'ट्रान्सवाल

टाअुनशिप अेक्ट' और सन् १८८५ का ट्रान्सवालका कानून नम्बर ३ — अैसे हैं, जिनमें कोअी अैसा फेर-बदल नहीं हुआ है जिससे रहनेके मकानोंके बारेमें हिन्दुस्तानियोंको पूरा हक मिले, व्यापारकी छूट मिले और जमीनके स्वामित्वका अधिकार मिले। अिससे अुन्हें असन्तोष हुआ है। कुछ लोगोंको तो अिसी कारणसे असंतोष रहा है कि अेक प्रान्तसे दूसरे प्रान्तमें जानेकी अुन्हें पूरी आजादी नहीं दी गअी है। कुछको अिस बातका असंतोष रहा है कि हिन्दुस्तानियोंको राहत देनेके कानूनमें शादीके प्रश्नके बारेमें जो कुछ हुआ अुससे अधिक होना चाहिये था। मुझसे अुन्होंने यह मांग की थी कि अूपरके सब मामले सत्याग्रहकी लड़ाअीमें शामिल किये जायें। परन्तु मैंने अुनकी मांग मंजूर नहीं की। अिस प्रकार सत्याग्रहकी लड़ाअीके मुद्दोंके रूपमें तो ये बातें शामिल नहीं की गअीं, फिर भी अिससे अिनकार नहीं किया जा सकता कि किसी दिन सरकारको अिन बातों पर अधिक विचार करके राहत देनी होगी। जब तक यहां रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंको नागरिकताके पूरे हक नहीं दिये जायेंगे, तब तक पूरे संतोषकी आशा नहीं रखी जा सकती। मैंने अपने भाअियोंसे कहा है कि आपको धीरज रखना चाहिये और हर अुचित अुपायसे अैसा लोकमत बनाना चाहिये, जिससे भावी सरकार अिस पत्र-व्यवहारमें बताअी हुअी शर्तोंसे भी ज्यादा आगे जा सके। मैं आशा रखता हूं कि दक्षिण अफ्रीकाके गोरे जब समझेंगे कि हिन्दुस्तानसे गिरमिटिया मजदूर अब आने बंद हो गये हैं और दक्षिण अफ्रीकामें नये आनेवालोंसे सम्बन्धित कानूनके द्वारा स्वतंत्र हिन्दुस्तानियोंका यहां आना भी रोक दिया गया है और जब वे समझेंगे कि यहांके राजकाजमें किसी भी तरहका हस्तक्षेप करनेकी हिन्दुस्तानियोंकी महत्त्वाकांक्षा है ही नहीं, तब अुन्हें अैसा लगेगा कि मेरे बताये हुअे हक हिन्दुस्तानियोंको देने ही चाहिये और अिसीमें न्याय है। अिस बीच अिस प्रश्नका निपटारा करनेमें पिछले कुछ महीनोंसे सरकारने जो अुदार रवैया अख्तियार किया है वही अुदार रवैया आपके पत्रमें बताये अनुसार मौजूदा कानूनोंका अमल करनेमें बना रहेगा, तो मुझे विश्वास है कि सारे यूनियनमें हिन्दुस्तानी कुछ शान्तिसे रह सकेंगे और सरकारके लिअे परेशानीका कारण नहीं बनेंगे।"

२०

गांधीजीका वसीयतनामा

अूपरका शीर्षक पढ़कर पाठकोंको आश्चर्य होगा। १८ वर्ष पहले गांधीजीका वसीयतनामा कैसा? वह अुन्होंने क्यों लिखा होगा? किसके हकमें लिखा होगा? कितनी जायदाद अुस वसीयतनामेमें लिखी होगी? समाजमें आम तौर पर तो यही रिवाज है कि मनुष्य मरनेसे पहले अपने वसीयतनामेमें यह बता देता है कि अुसकी सम्पत्तिका अुत्तराधिकार सच्चे अुत्तराधिकारीको मिले और अुसके बाद अन्य कोअी व्यवस्था करनी हो तो वह भी अुसमें बताअी जाती है। गांधीजीको भी अेक समय अपनी संपत्तिकी व्यवस्था करनेकी जरूरत मालूम हुअी।

पिछले प्रकरणमें बताये अनुसार केपटाअुनकी सिनेटमें अिंडियन रिलीफ बिल पास हुआ और बाकीका स्पष्टीकरण गांधीजीने जनरल स्मट्ससे पत्र द्वारा करा लिया। अुस पत्रमें बताये अनुसार शादीके कानूनसे मुसलमानोंको सन्तोष नहीं हुआ था। व्यापारके परवाने लेनेमें और बिकती जायदादें खरीदनेमें भी कठिनाअी थी। अुनकी यह मांग थी कि यह मौका अच्छा है, हमारा बल संगठित हो गया है और सरकार नरम पड़ी है, अिसलिअे समयका लाभ अुठाकर दूसरी मांगें भी मंजूर करा ली जायं। गांधीजीने नीति और सत्याग्रहके सिद्धान्तके विरुद्ध कोअी भी मांग करनेसे अिनकार कर दिया। लड़ाअीके आरम्भमें आगे चलकर हिन्दुस्तानी कितनी शक्ति दिखायेंगे अिसका गलत अंदाज लगाये बिना जिन प्रश्नोंके लिअे लड़ते लड़ते मुट्ठीभर सत्याग्रहियोंके मर-मिटनेका निश्चय हुआ था अुन्हीं प्रश्नोंके निपटारेकी मांगें पेश की गअी थीं। अुन मांगोंसे किसी भी हालतमें पीछे नहीं हटा जा सकता था। कौमने लड़ाअीमें साथ न दिया होता, तो अुतनी ही मांगोंके लिअे अंत तक लड़कर मर जाना पड़ता। अुनमें से अेक भी मांग कम नहीं हो सकती थी। अिसी तरह कौमने सत्याग्रहमें बहुत अच्छा साथ दिया, अिस कारण अुससे लाभ अुठाकर कोअी छोटीसी मांग भी अुनमें जोड़ी नहीं जा सकती थी। गांधीजीका कहना यह था कि मांगें अुचित हों और अुनकी प्राप्तिके लिअे हमारे पास काफी शक्ति हो, तो कितनी ही मजबूत सरकारको

भी अुन्हें मंजूर करना ही पड़ता है। जनताका सच्चा नैतिक बल और समझ कर किये हुअे त्यागका बल जनताको सतेज और जाग्रत रखता है। मनुष्य जिस बलसे अिच्छित वस्तु प्राप्त कर सकता है, अुस वस्तुको टिकाये रखनेके लिअे अुसी बलको सतेज रखना पड़ता है। पशुबलसे प्राप्त की हुअी वस्तुको टिकाये रखनेके लिअे पशुबलकी ही तैयारी रखनी पड़ती है। अुसके खंजरों, तलवारों और तोपोंको जंग लगने देनेसे काम नहीं चलता। अिसी तरह सत्याग्रहसे प्राप्त की हुअी वस्तुको टिकाये रखनेके लिअे सत्याग्रहके हथियारको जंग लगने देनेसे काम नहीं चल सकता। जनतामें अैसा सामर्थ्य होना चाहिये कि वह किसी भी क्षण किसी भी अन्यायके विरुद्ध लड़ सके। अैसी तैयारीसे जनता नष्ट नहीं होती बल्कि समृद्ध बनती है।

परन्तु पैसेको परमेश्वर माननेवाले कुछ बेसमझ भाअी अिसे न समझ सके। समझे हों तो भी जान-बूझकर फसाद करनेके लिअे असंतोष फैलाने लगे : 'गांधी तो तीन पौण्डके करके लिअे ही लड़े और अुसे अुठवा दिया, परन्तु अुसका फायदा सिर्फ हिन्दुओंको ही मिला। कारण, गिरमिटिया मजदूरोंमें अधिकांश हिन्दू ही हैं। और दूसरी बातोंमें मुसलमानोंको कोअी खास लाभ नहीं हुआ।' कुछ विघ्न-सन्तोषी और द्वेषी मनुष्य अिस तरहका शोर मचाने लगे। परिणाम-स्वरूप सन् १९०७ में जैसा वातावरण पैदा हो गया था वैसा ही वातावरण जोहानिसबर्गमें पैदा हो गया। कुछ गुण्डे गांधीजी पर हमला करके अुन्हें मार डालनेकी बातें खुले आम करने लगे। जोहानिसबर्गसे यह बात फिनिक्समें पहुंची। गांधीजी अिस मौके पर केपटाअुनमें थे। फिनिक्ससे गांधीजीको अेक पत्र लिखकर किसीने जोहानिसबर्गके खतरेका समाचार दे दिया। जोहानिस-बर्गसे भी अैसे पत्र वहां गये। मि० कैलनबैक अुस समय जोहानिसबर्गमें थे। वे यही कहते थे कि, "गांधीजीकी रक्षा करनेकी चिन्ता हमें करनेकी जरूरत नहीं। वे स्वयं अपना बचाव करनेकी ताकत रखते हैं।" कुछ लोगोंका गांधीजीसे यह आग्रह था कि केपटाअुनसे अुन्हें सीधा नेटाल जाना चाहिये और जोहानिसबर्गमें नहीं अुतरना चाहिये। परन्तु गांधीजी अैसे डर-पोक नहीं थे कि अपने पर हमला होनेके डरसे जोहानिसबर्ग न जाकर सीधे फिनिक्स जानेको तैयार हो जाते। अुन्होंने निश्चय कर लिया कि जोहानिसबर्ग जाना ही चाहिये। वहां जानेसे अुन पर हमला हो और अुसमें अुनकी मौत हो जाय, तो भी वह सत्याग्रहके सिलसिलेमें ही होगी; और अैसी मौत तो

वे चाहते ही थे। सत्यके पालनमें गलतफहमी पैदा होनेके कारण किसी भी बहाने अपने ही आदमी गांधीजीकी हत्या कर दें तो अैसी मृत्यु गांधीजी चाहते थे, अैसे अवसरका स्वागत करनेके लिअे वे तैयार थे। अिसलिअे वे जोहानिसबर्ग जानेको तैयार हुअे। अुन्हें भी लगा कि अैसा हमला हो सकता है जिससे अुनकी मृत्यु हो जाय। अिस खयालसे गांधीजीने फिनिक्सवासियोंके नाम अेक महत्त्वपूर्ण पत्र लिखा। वह पत्र अिस प्रकार है:

"केपटाअुन
फागुन सुदी १४, १९७०

"चि० छगनलाल,

"अिस समय मुझे फुरसत है। मेढ़ लिखते हैं कि मेरे प्राण लेनेके लिअे जोहानिसबर्गमें फिर प्रयत्न हो रहे हैं। अैसा हो तो वह वांछनीय है और अपना काम मैं पूरा हुआ समझूंगा। अिस कारणसे डर कर मुझे जोहानिसबर्गसे दूर नहीं रहना है। अैसी परिस्थितिमें या और किसी कारणसे मेरी मृत्यु हो जाय, तो मेरे विकसित किये हुअे कुछ विचार, जो मैंने तुम्हारे सामने नहीं रखे हैं, यहां मैं लिख डालना चाहता हूं।

"कुटुम्बकी सेवा पहले करना चाहिये, यह वाक्य परमार्थकी दृष्टिसे बहुत वास्तविक है। कुटुम्बकी सेवा जो कर सके वही कौमकी सेवा या देशकी सेवा कर सकता है। कुटुम्ब-सेवा किसे कहें, यही सोचनेकी बात है। अैसा लगता है कि शुद्ध आचरण अिस विचारको आसानीसे बता देता है।

"मुझे लगता है कि हम जो नौकरीका या राज्याश्रित जीवन बिताते रहे हैं वह कनिष्ठ जीवन है। हमारा कुटुम्ब मशहूर है, अिसलिअे हम लुटेरोंकी टोलीमें माने जाते हैं। बुजुर्गोंको दोष दिये बिना यह कहा जा सकता है कि अुन्होंने जनताकी सेवा तो की होगी, परन्तु वह स्वार्थसिद्धिके सिलसिलेमें हुअी है। साधारण दृष्टिसे देखें तो अुन्होंने ठीक न्याय किया लगता है। यानी प्रजा पर अुन्होंने थोड़ा जुल्म किया। आजकल हमारे कुटुम्बकी हालत खराब है। अगर नौकरी न मिले तो सब बेकार भटकते फिरें। सूक्ष्म दृष्टिसे देखें तो नारणदास बम्बअीमें गुलामी कर रहा है। दूसरे कुटुम्बी बेकार हैं या राज्यकी खटपटमें रचे-पचे रहकर अपना गुजारा करते हैं। सब सन्तान पैदा करने और शादियां करने वगैरामें मशगूल हैं। माताओंको बड़ा लोभ अपने बच्चोंका विवाह करनेका है।

"अिससे कैसे अुद्धार हो? हो सके तो रास्ता बदल दिया जाय। प्रथम तो किसान ही बना जाय। अुसमें हमारे कठोर भाग्यके कारण असह्य कष्ट सहने पड़ें तो हम जुलाहे वगैराकी मजदूरी करें। जिस हालतमें फिनिक्समें रहते हैं अुसी हालतमें रहें। अपनी जरूरतें कमसे कम रखें। भोजनकी पद्धति जैसी सोची गअी है अुसे यथासंभव कायम रखें। दूधको हमने पवित्र वस्तु मान लिया है। दूध हम लें परन्तु अपवित्र समझकर लें। यह महान परिवर्तन है। अिसकी जड़ें गहरी हैं। अिसके परिणाम ठोस हैं। यह दूसरी बात है कि सब अिस बातको मानेंगे या नहीं। परन्तु यह जान कर भी कि दूध करोड़ोंके लिअे अलभ्य है वह छोड़ने लायक है। यह विचार कभी मेरे मनसे नहीं निकल सकता कि दूध शुद्ध मांस है और अहिंसा-धर्मका विरोधी है। यह बात मुझे नहीं जंचती कि अिस शरीरसे अब दूध, घी वगैरा लेना चाहिये। आगका यथासंभव कम अुपयोग करके गुजर किया जाय। परिवारके जो लड़के आना चाहते हों अुन्हें हम लें और रखें। वे अूपरके विचारोंके साथ न चलें तो यहां नहीं रह सकते। जो विधवायें अिस तरहके जीवनमें शामिल न होना चाहें, अुन्हें आदरके साथ कह दिया जाय कि अिस रहन-सहनके अनुसार हर आदमी पर जो खर्च होता है अुसका ड्योढ़ा खर्च अुन्हें देकर हम अपना ऋण चुका देंगे। अिसके सिवा और कुछ नहीं दे सकते। किसीकी शादी-वादीके झगड़ेमें हम न पड़ें। बड़े होने पर जो विवाह करना चाहेंगे वे खुद अिस बारेमें देख लेंगे। लड़कियां होंगी तो अुनके लिअे वर ढूंढ़ने ही पड़ेंगे, परन्तु जो वर तुलसीके पत्तेसे सन्तुष्ट होकर विवाह करेंगे अुन्हें कन्यायें देंगे। अेक पाअी भी खर्च नहीं करेंगे। अैसा वर न मिलेगा तब तक हम अिन्तजार करेंगे और लड़कियोंको धीरज रखना सिखायेंगे। अैसा करनेसे लोगोंकी बातें सुननी पड़ेंगी और तिरस्कार होगा, तो सब प्रेमपूर्वक सह लेंगे। अगर हमारा आचरण अटल रहेगा, तो कोअी कठिनाअी नहीं आयेगी। संतान पैदा करना हमारे धर्मका अंग नहीं है। गृहस्थीको फैलाना हमारा कर्तव्य नहीं है। जो गृहस्थी है अुसके मोहमें फंसे बिना अिस तरह जीवन जीना चाहिये कि हमारे और दूसरोंके लिअे मोक्ष सुलभ हो जाय। यही जीवनका अेकमात्र रहस्य मालूम होता है। अिसीमें अपनी सेवा, कुटुम्बकी सेवा, कौमकी सेवा और राज्यकी सेवा आ जाती है। यह स्थिति आ जाय तो हमें वहीं रुक नहीं जाना है, बल्कि अिससे आगे बढ़ना है।

"अिस आचरणमें जो शामिल होगा वह भी हमारा कुटुम्बी ही बन जायगा। अुसमें रावजीभाअी, मगनभाअी, प्रागजीभाअी और जो कोअी दूसरे लोग आयेंगे अुन्हें हम लेंगे। मेरी अकाल मृत्यु हो जाय तो मेरी सिफारिश है कि तुम लोग अूपर लिखे अनुसार आचरण करना। तुम्हें फिनिक्स अेकाअेक नहीं छोड़ना चाहिये, परन्तु अुद्देश्योंको ध्यानमें रखकर जीवन जीना चाहिये। मगनलालसे मुझे पूरी आशा है। जमनादास तालीमसे तैयार हो जाय तो अुसमें यह सत्त्व है। अुसमें आग्रह भी है।

"मेरी मृत्यु हो जाने पर जिन विधवाओंका बोझा खास तौर पर मुझे अुठाना चाहिये अुनके लिअे रुपया तुम डॉक्टर मेहतासे मांगना। वहांसे न मिले तो तुम लोगोंको, जो अूपरके अुद्देश्योंको मानते हो, अनेक संकट सह कर, बेगार करके भी अितना रुपया जुटाना चाहिये। हरिलालको अपना निर्वाह स्वयं करना पड़ेगा। बच्चोंको वह तुम्हारे या जो लोग देशमें हों अुनके सुपुर्द कर दे। फूलीके पास रुपया है, अिसलिअे अुसे कुछ देनेकी जरूरत नहीं। अब रह गअी गोकीबहन, नन्दकुंवर भाभी, गंगा भाभी और गोकुलदासकी बहू। वे साथ रहें तो अुनकी मेहरबानी होगी, अुनकी शोभा बढ़ेगी। साथ न रहें तो हरअेकको अलग अलग निर्वाहका साधन दिया जाय। बच्चे अुन्हें दे दिये जायं। परन्तु जहां दूसरे रहते हों वहां वे भी आ जायं तो ज्यादा ठीक होगा। अैसा करने पर अुनके गुजरका खर्च कुल मिलाकर ४० रुपया भी नहीं होगा। बाका भी यही हिस्सा समझना चाहिये। बाको समझना चाहिये कि अुनके साथ ही रहना ठीक होगा। अुसे भी बच्चे सौंप देना चाहिये। जो लड़के अपनी मांका बोझा अुठा सकें, अुन्हें अैसा करनेकी स्वतंत्रता है ही। अूपरका जवाब जो बच्चे हमारी मदद मांगें अुनके लिअे है। हरिलाल बाका भार अुठाकर अुसे रख ले तो बहुत अच्छा। नन्दकुंवर भाभीको रखे तो और अच्छा। फिर तो गोकीबहन, गोकाकी बहू और गंगा भाभीका ही प्रश्न रह जाता है। काकू अपनी मांका बोझा अुठा ले तो ठीक ही है। और शामलदास अपनी मांका अुठा ले। जो निराधार रह जाय अुसके लिअे अूपरका रास्ता है। तुम जिस ढंगसे रहते हो अुससे ज्यादाकी आशा कोअी नहीं रख सकता, और न किसीको रखनी चाहिये। मैं अिसी तरहके जीवनको श्रेष्ठ मानता हूं, अिसलिअे अूपरके विचार मुझे क्रूर नहीं लगते। यह न्याय गरीबीके आधार पर है, और यही आधार मुझे सही मालूम होता है।

"मेरे मरनेके बाद अिस पत्रका अुपयोग किसीको भी बतानेमें कर सकते हो। अभी तो मगनलाल, रावजीभाअी, मगनभाअी, प्रागजी और जमुनादास अिसे पढ़ें। मैं चाहता हूं कि अिन लोगोंके सिवा और किसीके सामने अिसकी चर्चा न हो। अितने आदमियोंको भी न पढ़ना चाहिये अैसा तुम्हें लगे, तो जिसे तुम ठीक समझो अुसीको पढ़ाना।

"मेरे खयालसे यह पत्र अितना सम्पूर्ण है कि तुम्हारे मनमें जो सवाल अुठेंगे अुनका जवाब तुम्हें अिसीमें मिल जायगा। फिर भी कोअी बात रह गअी जान पड़े तो मुझसे पूछना। मुझसे चर्चा करनी हो तो प्रश्न लिख कर रखना। मुझसे मतभेद हो तो निःसंकोच बता देना। यह जिम्मेदारी तुम्हें अपनी शक्तिसे अधिक मालूम हो तो वह भी बता देना। तुम्हें जो सूझे वह सारी आलोचना करना।

मोहनदासके आशीर्वाद

"पुनश्च : मणिलाल वहां नहीं है। नहीं तो अुसे भी पढ़नेकी अिजाजत देता। अभी अिस पत्रकी नकल कर लेना। ठीक लगे तो रजिस्ट्रीसे अुसे पढ़नेके लिअे भेज देना और वापस मंगा लेना।"

अूपरका पत्र लिखकर गांधीजी जोहानिसबर्ग चले गये। वहां पहुंचने पर बहुत लोग अुनसे मिले। कुछ सभायें हुअीं। वहां अुनका स्वागत हुआ। दूसरे या तीसरे दिन अुन्हें अेक सभामें निमंत्रण दिया गया। सभा मुसलमान भाअियोंने की थी। कुछ लोगोंने गांधीजीको वहां न जानेकी सलाह दी। परन्तु अुन्होंने कहा : "मालिक नौकरको बुलाये और नौकर न जाये तो वह कितना अुद्धत और हरामी माना जायगा? देशभाअी मेरे मालिक हैं, वे मुझे किसी भी समय बुलावें तो मुझे जाना चाहिये।" गांधीजी वहां गये। सभामें अुनसे समझौतेकी बातें समझानेके लिअे कहा गया। समझाते वक्त अुनसे बीच बीचमें प्रश्न पूछना शुरू हुआ। और फिर असभ्यतासे शुरू करके अुत्पात क्रमशः बढ़ने लगा। अैसा मालूम होने लगा कि अभी दंगा हो जायगा। अितनेमें अेकाअेक अेक महाक्रूर पठान हाथमें अेक बड़ा खुला छुरा लेकर सामने निकल आया और बोल अुठा : "खबरदार, कुछ बदमाश गांधीभाअी पर हमला करनेको तैयार हैं। परन्तु किसीने अुन्हें जरा भी नुकसान पहुंचाया तो वह मेरे अिस छुरेका शिकार होगा।" यह कहकर विकराल पठान मीर आलम हाथमें छुरा लिये हुअे सिंहके समान खड़ा हो गया।

गांधीजी जरा हंसते हुअे चेहरेसे अुस पठानकी तरफ देखते रहे और बोले: "भाअी मीर आलम, अितना गुस्सा किसलिअे? मेरे पास आओ; हम सब भाअी भाअी हैं। कोअी मुझ पर हमला नहीं करेगा।"

मीर आलम वहीं खड़ा रहकर गरजा: "आप तो फकीर हैं; आपको पता नहीं। मैं सब जानता हूं। आप पर अुंगली भी अुठानेवालेको मैं खतम कर दूंगा।"

सारा तूफान शान्त हो गया। फसादी अेक अेक करके खड़े होकर चल दिये। गांधीजी, सेठ काछलिया और दूसरे मुसलमान मित्र रह गये। सभा पूरी हुअी। वहांसे अुठकर गांधीजी अपने डेरे पर पहुंचे। मीर आलम पठान वहां तक अुनके साथ रहा। गांधीजी पर पहला हमला करनेवाले मीर आलम पठानको ही भगवानने आज गांधीजीकी रक्षाके लिअे भेजा और सब धर्मोंका यह सिद्धान्त सच्चा साबित हुआ कि प्रेम ही सबकी रक्षा करता है।

२१

स्वदेश-गमन

समझौतेके बाद और अुससे सम्बन्ध रखनेवाला कानून यूनियनकी सिनेटमें पास हो जानेके बाद गांधीजीने कुछ समय फिनिक्समें बिताया। अब वे हिन्दुस्तान आनेके लिअे अधीर हो गये। श्री गोखलेकी भी प्रबल अिच्छा थी कि गांधीजी जहां तक हो सके जल्दी ही हिन्दुस्तान आ जायें। सत्याग्रहकी लड़ाअी न हुअी होती तो गांधीजी जल्दी ही आ गये होते। श्री गोखले बार-बार लिखते रहते थे और वे दक्षिण अफ्रीका गये तब अुन्होंने गांधीजीको रूबरू कहा था कि, "आप दक्षिण अफ्रीकाको छोड़िये; आपका काम तो हिन्दुस्तानमें है।" परन्तु हाथमें लिया हुआ काम अधूरा छोड़कर सारे हिन्दुस्तानकी सेवाकी महत्त्वाकांक्षामें पड़नेकी वृत्ति गांधीजीमें नहीं थी।

'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।'

अपना कर्तव्य भले ही बड़े परिणाम लानेवाला न हो, फिर भी अुसे छोड़ महत्त्वाकांक्षाके वश होकर अपना आरम्भ न किया हुआ —— या स्वाभाविक रूपमें न प्राप्त हुआ —— महान कार्य करनेका भी अुन्हें कभी लोभ नहीं होता था। परन्तु अन्तिम समझौता हो जानेके बाद तो गांधीजी हिन्दु-

स्तान आनेके लिअे अधीर हो अुठे। अिस समझौते और स्वदेश-गमनके बीचका समय अुन्होंने फिनिक्समें बिताया। अिस बीच अनेक हृदयस्पर्शी घटनाअें हो गअीं। रातको प्रार्थनाके बाद अनेक विषयों पर चर्चायें तो होती ही थीं और अब तो कभी-कभी ये बातें भी होने लगीं कि हिन्दुस्तान जाकर क्या किया जाय। हिन्दुस्तानमें भी बंगभंगके बाद राजनीतिक नवयुग आरम्भ हुआ था। हिन्दुस्तानके नेता भी अेक-दूसरेकी बराबरीके माने जाते थे। 'लाल, बाल और पाल' की त्रिमूर्तिका नाम घर-घर याद किया जाता था। बंगालमें सुरेन्द्रनाथ बेनर्जी सिंहकी-सी गर्जना करके बंगालको गूंजा रहे थे। बम्बअीमें बेताजके बादशाह माने जानेवाले सर फीरोजशाह मेहताका प्रभुत्व था। श्री गोखले बड़ी धारासभाको हिलाते रहते थे। श्री अरविन्द घोष युवकोंके हृदयोंमें नवचेतना अुंड़ेल रहे थे। अिसके सिवा, जब जब कांग्रेस या प्रान्तीय परिषदें होती थीं तब तब अनेक विद्वान और बुद्धिमान नेताओंकी बाढ़ आ जाती थी। कोअी बैरिस्टर, कोअी प्रोफेसर और कोअी रसायनशास्त्री; कोअी सर और कोअी नाअिट, कोअी माननीय, कोअी रावसाहब, कोअी खान बहादुर और कोअी दीवान बहादुर; अिस प्रकार विद्वत्तामें, भाषामें, लेखनमें, भाषण देनेमें, दलीलें करनेमें और पदवियां प्राप्त करनेमें जनताको आश्चर्यमें डालनेवाले अनेक नेताओंकी कतार कांग्रेस और परिषदोंके मंच पर जमा होती थी। यह सब सोचकर फिनिक्समें रहनेवाले अेक भाअीने गांधीजीसे पूछा :

प्रश्न : "बापूजी, हम देशमें कहां रहेंगे?"

अुत्तर : "जहां अनुकूलता और अुचित स्थान मिल जायगा वहीं।"

प्रश्न : "अनुकूलता और अुचित स्थान तो बहुत होंगे। परन्तु हमें अेकाअेक अैसा स्थान कैसे मिल जायगा?"

अुत्तर : "कोअी स्थान न देगा और अैसा स्थान प्राप्त करनेके लिअे हमारे पास पूंजी नहीं होगी, तो अन्तमें कबा गांधीका राजकोटका झोंपड़ा तो है ही। अुसीको हजम कर लेंगे। वहीं जाकर डेरा डाल देंगे।"

अेक और भाअीने सवाल किया : "वहां जायंगे तब हम बिलकुल अनजान होंगे। अैसी हालतमें देशसेवाका क्या काम करेंगे?"

अुत्तर : "जहां रहेंगे वहां अेक खेत ले लेंगे। अुसमें खेती करेंगे। कातने और बुननेका काम करेंगे। आसपासकी गंदगी हटा कर जगह साफ करेंगे और भगवानकी प्रार्थना करके वातावरणको शुद्ध और पवित्र बनायेंगे।"

यह अुत्तर सुनकर अेक तीसरे भाअीने पूछा :

"परन्तु देशमें तो लोग हमसे बड़ी-बड़ी आशायें लगाये बैठे होंगे। यहांसे सत्याग्रहकी लड़ाअीमें नअी विजय प्राप्त करके जायेंगे, अिसलिअे लोग तो हमारे बारेमें बड़ी बड़ी आशायें लगा कर आयेंगे। आपने कल कहा था कि आप देश जायेंगे तब काठियावाड़ी पगड़ी, अंगरखा और धोती पहनेंगे। और आप यह भी चाहेंगे कि हम भी देशकी देहाती पोशाक पहनें। प्रथम तो हमारे संघका यह देहाती ढंग देख कर ही लोग निराश हो जायंगे।"

अुत्तर: "निराश क्यों होंगे? लोग हमें बनावटी अंग्रेजोंकी तरह टोपवाले न देखकर अपने ही जैसे पायेंगे, तो हमारे पास विश्वास और अुमंगके साथ आयेंगे। हमारे शिक्षित भाअियोंने अंग्रेजी पोशाकके लिअे हमारे मनमें जो भ्रम पैदा कर दिया है वह दूर हो जायगा। हमारी देहाती पोशाकसे शिक्षित और अशिक्षित लोगोंके बीच जो अंतर होगा वह मिट जायगा। हम लोगोंके अधिक नजदीक पहुंच सकेंगे। हम अुन्हींके बन जायेंगे; अुनके हृदयमें स्थान प्राप्त कर सकेंगे। अुनके सुख-दु:ख जल्दीसे जान सकेंगे और अुनके सुख-दु:खमें भाग लेनेकी कोशिश करेंगे।"

अेक भाअी आतुरतासे बीचमें ही बोल अुठे: "परन्तु बापूजी, देशमें आपसे लोग अैसी आशा रख कर नहीं बैठे होंगे। वहां तो सर फीरोजशाह मेहता और सर सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी जैसे कौंसिलोंको गूंजाकर गवर्नर और वाअिसरॉयको हिलानेवाले धीर नेता हैं। आप अेक अहिंसक लड़ाअी जीत कर देशमें जायेंगे। जिस देशकी जनता अपनी गुलामीको दूर करनेके लिअे विदेशी सत्तासे लड़ी न हो, वह तो आपसे देशके लिअे योद्धा मांगेगी। तब आप अुनके सामने किसे रखेंगे?"

अुत्तर: "यह बात तुमने सच कही। अुस समय मैं अपने योद्धाओंको जनताके सामने पेश करूंगा। अुस समय जनताको मैं अपने योद्धाओंका परिचय दूंगा कि ये रहे मेरे योद्धा, जिन्होंने देशकी सेवाके लिअे कअी बार कारावास भुगतकर जेलको महल माना है। ये रहे मेरे योद्धा जिन्होंने देशकी सेवामें गरीबीका व्रत लेकर सारा जीवन अर्पण करनेका निश्चय किया है। ये रहे मेरे सिपाही जो देशसेवाके खातिर कोअी भी खतरा अुठानेको तैयार हैं। जरूरत पड़ने पर ये बीमारोंकी सेवा कर सकेंगे और जरूरत पड़ने पर भूखे पेट रहकर भी अपना रोटीका टुकड़ा दूसरोंके मुंहमें डाल देंगे। जरूरत

पड़ेगी तो ये लोगोंका मलमूत्र साफ करनेमें भी जी नहीं चुरायेंगे और जरूरत हुअी तो हिन्दुस्तानके लिअे जेल जाने या फांसीके तख्ते पर चढ़नेमें भी अिन्हें हिचकिचाहट नहीं होगी।

"अैसे अैसे वीर योद्धाओंको मैं हिन्दुस्तानकी जनताके चरणोंमें अर्पण करूंगा और यह भी देखूंगा कि अुनके मुकाबलेमें कौंसिलों और असेम्बलियोंको हिला देनेवाले नेता कैसे योद्धा पेश करते हैं। हिन्दुस्तानकी मुक्तिके लिअे राजा-महाराजा, राय बहादुर और खान बहादुर, सर और नाअिट या वकील और बैरिस्टर काम नहीं आयेंगे। हिन्दुस्तानके अुद्धारके लिअे कौंसिलों और असेम्बलियोंको हिला देनेवाले भी काम नहीं आयेंगे। हिन्दुस्तानकी मुक्तिके लिअे प्राण निछावर करनेवाले लोग चाहिये, त्यागी वीर और वीरांगनाअें चाहिये। अपना सारा जीवन देशसेवाकी आगमें तपा देनेवाले साधुचरित, निडर, निर्भय, विरोधियोंकी बन्दूककी गोलियां खुली छाती पर झेलनेवाले और फांसीके तख्ते पर दौड़ते दौड़ते चढ़नेवाले वीर सत्याग्रही योद्धा चाहिये। मेरे पास जो पूंजी है वह तो मैं देशके चरणों पर धर ही दूंगा। लेकिन मैं यह भी तो देखूंगा कि सारे देशमें अैसी पूंजी अभी और कितनी है?"

अिस तरह विनोदमें गांधीजीने बहुत कुछ कह दिया। अेक बात तो वे बार-बार कहा करते थे: "देशसेवाका मनोरथ दिलमें रखनेवाला कोअी भी युवक और कुछ नहीं तो छह आनेकी कुदाली खरीदकर खेतमें काम करेगा। वह बड़े वकील-बैरिस्टरसे भी ज्यादा देशसेवा करता है, यह नया पाठ तो मैं देशके सामने रखूंगा ही।"

अिस प्रकार बातचीत और हंसी-दिल्लगीमें हमारे आखिरी दिन बीते और स्वदेश-गमनकी तैयारी की गअी। फिनिक्समें प्रेस चलता रहे, साप्ताहिक पत्र 'अिण्डियन ओपीनियन' नियमित निकला करे, सत्याग्रह-सम्बन्धी दूसरा साहित्य भी प्रकाशित होता रहे, अिसके लिअे हममें से कुछके वहीं रहनेका प्रबन्ध किया गया। अन्य लोगोंके लिअे यह निर्णय हुआ कि वे गांधीजीके साथ हिन्दुस्तान आयें। अुस समय श्री गोखले अिंग्लैण्डमें थे। अुनकी यह अिच्छा थी कि गांधीजी हिन्दुस्तान आनेसे पहले अिंग्लैण्डमें अुनसे मिल लें। श्री गोखले बीमार थे, अिसलिअे तुरन्त हिन्दुस्तान आ नहीं सकते थे। अतः यह निश्चय हुआ कि गांधीजी अिंग्लैण्ड जायें और बाकी लोग

हिन्दुस्तान जायें। अिस प्रकार श्री मगनलाल गांधीके नेतृत्वमें लगभग तीस फिनिक्सवासियोंका यह संघ हिन्दुस्तान आया। और गांधीजी बा तथा मि० कैलनबैकके साथ अिंग्लैण्ड गये। मि० कैलनबैकको हिन्दुस्तानमें आकर गांधीजीके साथ रहकर जीवनके नये-नये प्रयोग करनेका बड़ा अुत्साह था। परन्तु अुनके अिंग्लैण्डकी हदमें घुसते ही १४ जुलाअी, १९१४ के दिन अिंग्लैण्ड यूरोपीय युद्धमें फंस गया। जर्मन होनेके कारण मि० कैलनबैकको सरकारने यह अिजाजत नहीं दी कि वे लड़ाअीके दरमियान गांधीजीके साथ हिन्दुस्तान आ जायें। गांधीजी श्रीमती कस्तूरबाके साथ अिंग्लैण्डके अनुभवोंकी बानगियां चखकर हिन्दुस्तान आ गये।

२२

अुपसंहार

दक्षिण अफ्रीकामें गांधीजीके जीवनके २१ वर्ष पूरे हुअे। सत्याग्रहकी लड़ाअी १९०६ में आरम्भ हुअी और १९१४ में पूरी हुअी। अिस आठ वर्षके अर्सेमें लोगोंने लड़ाअीका पानी अुतरते भी देखा और लड़ाअीके ज्वारकी प्रचंड लहरें भी देखीं। अंतमें अिन लहरोंसे दक्षिण अफ्रीकाकी यूनियन सरकार कांप अुठी और अुसने सत्याग्रहके ज्वारकी अुछलती हुअी लहरोंके सामने जाकर नम्र भावसे नमन किया और अुसके जोशको शान्त किया। आठ वर्षकी सत्याग्रहकी यह लड़ाअी गांधीजीके धार्मिक जीवनका महान प्रयोग थी। जिस सत्याग्रहकी वृत्ति पशुबलसे त्रस्त संसारको आंतरिक शान्ति देनेवाली है, जिस सत्याग्रहके महान संग्रामको सारी दुनिया आज आशाभरी निगाहसे देख रही है, अुस सत्याग्रहका पहला प्रयोग गांधीजीने दक्षिण अफ्रीकामें किया। युगोंसे होते आ रहे भयंकर और क्रूर युद्धोंमें मनुष्य मनुष्यके गले काटते हैं, भाअी भाअीकी गरदन काटते हैं, अेक-दूसरे पर भयंकर अस्त्रशस्त्रोंके साथ जंगली भेड़ियोंकी तरह टूट पड़ते हैं और अेक-दूसरेका खून पीते हैं, राक्षसी तोपों और दूसरे शैतानी साधनोंकी मददसे लाखों मनुष्यों द्वारा हजारों वर्षके प्रयत्नसे जुटाअी हुअी जीवनकी सामग्रियोंका पलभरमें नाश कर डालते हैं, और बादमें लड़ाअीका नशा, लाल खूनका नशा अुतरने पर थककर निराश हो जाते हैं और

ठंडी आहें भरते हैं — अैसे नाजुक समय पर सत्याग्रहकी जो वृत्ति निराश और भयभीत आत्माओंको विश्वास और आश्वासन देती है, अुस सत्याग्रह-वृत्तिकी साधना गांधीजीने अिन आठ वर्षोंमें की।

आज भी संसार अैसी अुथल-पुथलसे थक कर अब शान्ति चाहता है। अैसी शान्ति आज तक भारतवर्ष संसारको देता आया है। भारतभूमिने जगतकी आध्यात्मिक धात्रीके रूपमें आज तक अपना कर्तव्य पूरा किया है। दुनियाकी अलग अलग प्रजाओंकी अपनी कोअी न कोअी विशेषता होती ही है। और कुदरतकी अिस देनके आधार पर अिस जमानेमें प्रत्येक राष्ट्र प्रगतिके मार्गमें आगे बढ़ रहा है। पश्चिमके राष्ट्रोंने अपने पुरुषार्थसे प्रगतिका विलक्षण वेग बताकर संसारको दिङ्मूढ़ बना दिया है। अितने पर भी प्रगति करनेवाले राष्ट्रोंको, साहसके साथ अपनी नाव भर-समुद्रमें छोड़ कर तूफानमें फंस जानेवाले नाविककी तरह, कहीं भी अपने जीवनका किनारा दिखाअी नहीं देता। भारत-भूमि अिन राष्ट्रोंको आश्वासन देने और अुनकी जीवन-नौकाको तूफानसे बचानेके लिअे पैदा हुअी है। दक्षिण अफ्रीकाकी सत्याग्रहकी लड़ाअीके आठ वर्षका काल भविष्यकी महान क्रान्तिके प्रयोगका काल माना जा सकता है। अैसा मालूम होता है कि भगवानने गांधीजीको अिस प्रयोग-यज्ञकी वेदीका पुरोहित (अध्वर्यु) बनाया है। दक्षिण अफ्रीकाकी संस्कारहीन भूमिमें २१ वर्षकी कठिन तपश्चर्या करनेके बाद गांधीजीने सारे संसारके शान्तियज्ञके पुरोहितकी दीक्षा ली। जगतको सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक या धार्मिक अधोगतिके अंधकारसे बाहर निकाल कर अुसे अुत्क्रान्तिके प्रकाशमें लानेका अेकमात्र रामबाण अुपाय सत्याग्रह ही है, यह पाठ अुन्होंने जगतको सिखाया। हिन्दुस्तानने अज्ञानरूपी अंधकारसे, आर्थिक अधोगतिसे और विदेशियोंकी गुलामीसे मुक्त होकर बिलकुल स्वतंत्र होनेके लिअे जो शान्तिमय महायुद्ध छेड़ा है, अुसकी विजय निश्चित है। अुस विजयके मीठे और दीर्घजीवी फल भोगकर जगत शान्तिको प्राप्त करेगा। हजारों वर्ष बीत जायेंगे, गंगा-यमुनाके पुण्य-प्रवाहके घर्षणसे वज्रके समान पर्वतोंकी चट्टानोंकी रेतके थर महासागरमें जम जायेंगे। जलकी जगह स्थल और स्थलकी जगह जल हो जायगा। फिर भी भारतभूमिके अिस सत्याग्रह-युद्धका मुक्तिदाता मंत्र महासागरोंके अुस पार देश-देशान्तरमें और निर्जन वन या मरुस्थलके वातावरणमें गूंजा करेगा। हजारों वर्ष बादकी प्रजायें सत्याग्रहके अिस

महान प्रयोगके जन्मस्थान दक्षिण अफ्रीकाकी भूमिको पवित्र तीर्थके समान मानेंगी और हजारों यात्री अुसकी यात्राके लिअे जायेंगे।

भविष्यके गर्भमें क्या छिपा है, अिसका मनुष्यको कैसे पता चले? परन्तु अितिहासकी पुनरावृत्तियां भूतकालमें भी अनेक हुअी हैं और आज भी हो रही हैं। संसारके अिस होते आ रहे निश्चित अनुभवसे हम कह सकते हैं कि दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी सत्याग्रहकी लड़ाअी, हिन्दुस्तानियोंका अुस समयका तप, त्याग और सहनशीलता, सत्याग्रहके मंत्रदाताके रूपमें गांधीजीकी कुशलता, सत्यप्रियता, वीरता, त्यागवृत्ति, धर्म, श्रद्धा, निर्भयता और निश्चलता——ये सब भविष्यके गर्भमें छिपे हुअे महा अनलकी मूल चिनगारियां हैं। दक्षिण अफ्रीकाके डेढ़ लाख हिन्दुस्तानियों द्वारा सुलगाअी हुअी चिनगारियोंने पिछले पन्द्रह वर्षोंमें हिन्दुस्तानके पैंतीस करोड़ हृदयोंमें कैसा प्रचंड रूप धारण किया है और अुनकी ज्वालाका तेज कितनी दूर समुद्र-पारके देशोंमें पहुंच गया है, यह देखनेके बाद भविष्यकी कल्पना हमें आसानीसे हो सकती है।

अैसे भव्य महा अनलकी चिनगारी जिस साधनासे प्रकट हुअी, अुसका मैंने जितना मुझे मालूम था अुतना वर्णन अिन प्रकरणोंमें किया है। अुसमें कोअी कूटनीतिज्ञताके पाठ नहीं, राजनीतिज्ञोंकी कारस्तानियां नहीं, सेना या हत्यारे साधनोंकी संहार-लीला नहीं, घृणा और वैरका वातावरण नहीं, रक्तपात नहीं और खून-खच्चर भी नहीं है। परन्तु अुसमें जैसा शुद्ध हेतु है वैसे ही शुद्ध साधन हैं; और वैसा ही शुद्ध परिणाम भी नजर आता है।

हेतु: सत्यका पालन और अुससे प्राप्त होनेवाला मनुष्यमात्रका कल्याण।

साधन: अहिंसा-वृत्तिसे आत्मशुद्धि करके मानव-सेवा करनेमें जो भी दुःख आ पड़े अुसे प्रेमसे सहना; शरीर-बलसे अुसका प्रतिकार न करना, परन्तु प्रेमभाव, सहनशीलता तथा आत्मत्यागसे अुसका प्रतिकार करना।

परिणाम: शुभ तथा जालिमों और पीड़ितों दोनोंके लिअे कल्याणकारक। घृणा और वैरभाव मिट कर शांति स्थापित होती है, प्रेमभावकी वृद्धि होती है और लोगोंकी खुशहाली बढ़ती है।

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंने अुपरोक्त हेतुसे और शुद्ध साधनोंसे शुभ परिणाम प्राप्त किया। अिस लड़ाअीमें अुन्होंने स्वयं बड़े बड़े कष्ट

सहन किये। अुसमें कुछ लोगोंके बलिदान दिये गये, बहुतोंकी जमीन-जायदादको नुकसान पहुंचा। परन्तु अुन्होंने अैसा कोअी काम नहीं किया, जिससे विरोधी पक्षके जानमालकी हानि हो, और स्वयं अपने जानमालकी कमसे कम हानिसे अिच्छित वस्तु प्राप्त की। अुसके परिणामस्वरूप दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी आज तक वहां टिके हुअे हैं। अितना ही नहीं, दूसरे अुपनिवेशोंमें भी वे टिके हुअे हैं। यह अुस लड़ाअीका स्थूल परिणाम है। अुसका सूक्ष्म परिणाम अुसकी आध्यात्मिकता है, जिसके बल पर अिस समय हिन्दुस्तानकी जनता निर्भय होकर अुसी अहिंसाके रास्ते पैंतीस करोड़ मनुष्योंकी आजादी हासिल करनेके लिअे लड़ रही है। भगवान अुसे वीरतासे लड़नेकी शक्ति दे और विजयी बनाये!

१

सत्याग्रहकी अन्तिम लड़ाओका मेरा अनुभव

अन्तिम लड़ाओको बहुत अर्सा हो गया है। अुसके अनुभव लिखनेका मुझे समय ही नहीं मिला। अुसमें मिले हुअे अनुभवोंका लाभ 'अिंडियन ओपीनियन' के पाठकोंको देना था। पाठकोंको याद रखना चाहिये कि अन्तिम लड़ाअी अुस सत्याग्रहका तीसरा प्रकरण थी। पहला प्रकरण पूरा हुआ तब हमने — मैंने तो जरूर — अुसे अन्तिम समझा था। परन्तु जब दूसरा प्रकरण शुरू होनेका समय आया तब बहुतेरे लोग मुझसे कहने लगे कि अब कौन लड़ेगा? कौम बार-बार अितनी शक्ति नहीं दिखा सकेगी। जब मैंने यह सुना तो मैं हंसा था। सत्य पर मेरी अचल श्रद्धा थी। मैंने जवाब दिया: "लोगोंको अेक बार मजा आ गया है, अिसलिअे अब वे अधिक जोरसे लड़ेंगे।" हुआ भी वैसा ही। पहली बार सौ दो सौ हिन्दुस्तानी जेलमें गये। दूसरी बार सैकड़ों गये। अितना ही नहीं, नेटाल जाग गया और वहांके नेता सत्याग्रहमें भाग लेने आये। लड़ाअी खूब लम्बी चली, लेकिन जोर कम नहीं हुआ और हम आगे ही बढ़ते गये। अन्तिम लड़ाअीमें तो मैंने हारकी ही बातें सुनीं। "बार बार सरकार तुम्हें दगा दे, तुम धोखेमें आओ और बार बार लोग खड्डेमें गिरें, यह हो ही नहीं सकता।" — अैसी कड़वी बातें मुझे सुननी पड़ती थीं। मैं खूब समझता था कि सरकारके दगेके सामने मेरी या किसी औरकी चल नहीं सकती। हम प्रामिसरी नोट लिखवाते हैं, परन्तु हस्ताक्षर करनेवाला अिन-कार करे या दिवालिया हो जाय, तो अिसमें लिखवानेवालेका क्या दोष? मैं तो जानता था कि सरकार वचन-भंग करेगी तो जैसे हमें ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी वैसे ही अुसे ज्यादा देना पड़ेगा। कर्जदार कर्ज चुकानेमें जितना ज्यादा समय लगायेगा अुतना ही अुसे ज्यादा बोझा अुठाना पड़ेगा। यह अटल नियम सांसारिक और धार्मिक दोनों तरहके ॠण पर लागू होता है। मैंने यह भी जवाब दिया कि, "सत्याग्रहकी लड़ाअी अैसी है कि अुसमें हारने

या पछतानेकी बात ही नहीं रहती। वह लड़ाअी हमेशा मनुष्यको अधिक बलवान बनाती है। अुसमें थकान नहीं लगती और हर मंजिल पर आदमीकी ताकत बढ़ती है। अगर हममें सचाअी होगी तो हिन्दुस्तानी कौम अिस बार ज्यादा काम करेगी और अपना नाम ज्यादा रोशन करेगी।" जब मैंने यह जवाब दिया तब मुझे सपनेमें भी खयाल नहीं था कि बीस हजार दलित-पीड़ित हिन्दुस्तानी जाग अुठेंगे और अपना नाम तथा अपने देशका नाम अमर कर देंगे। जनरल बोथाने अपने अेक भाषणमें कहा है कि हिन्दुस्तानियोंने जैसी हड़ताल की और कायम रखी, वैसी गोरे न तो कर सके और न कायम रख सके। अन्तिम लड़ाअीमें स्त्रियां शामिल हुअीं, सोलह वर्षके जवान लड़के बड़ी संख्यामें सम्मिलित हुअे और लड़ाअीने बहुत बड़ा धार्मिक रूप ग्रहण किया। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी बात सारी दुनियामें फैल गअी और हिन्दुस्तानमें गरीब और अमीर, जवान और बूढ़े, पुरुष और स्त्री, राजा और प्रजा, हिन्दू, मुसलमान, पारसी और अीसाअी, बम्बअीवाले, मद्रासवाले, कलकत्तेवाले और लाहौरवाले सब जागे, सब हमारे अितिहाससे परिचित हुअे और सब हमें मदद देने लगे। बड़ी सरकार चौंकी और वाअिसरॉयने जनताका रुख देखकर जनताका पक्ष लिया। ये सब विश्वविदित बातें हैं। ये बातें मैं लड़ाअीका महत्त्व बतानेके लिअे लिख रहा हूं। यह लेख लिखनेका मेरा मुख्य हेतु यह है कि जिन बातोंसे मैं अधिक परिचित हूं, जिनका हिन्दुस्तानको पता नहीं है और जिनका दक्षिण अफ्रीकामें रहनेवाले हिन्दुस्तानी भाअियोंको भी पूरा भान नहीं है, अुन बातोंका मैं दर्शन करा दूं।

टॉल्स्टॉय फार्ममें जो तालीम ली गअी वह सब अिस अन्तिम लड़ाअीमें काम आअी। सत्याग्रहियोंने जो जीवन वहां बिताया, वह अिस लड़ाअीमें अमूल्य साबित हुआ। अुसी जीवनकी नकल अधिक अच्छे रूपमें फिनिक्समें की गअी। जब टॉल्स्टॉय फार्म बन्द किया गया तब अुसमें रहनेवाले जो विद्यार्थी आनेको तैयार थे वे फिनिक्समें आ गये। फिनिक्समें नियम कठोर बने। प्रत्येक विद्यार्थी और अुसके मां-बापके साथ यह शर्त थी कि जो विद्यार्थी फिनिक्समें रहेंगे वे यदि बालिग हों तो अुन्हें दुबारा लड़ाअी छिड़ने पर अुसमें शरीक होना पड़ेगा। सच पूछा जाय तो फिनिक्समें मुख्य शिक्षा ही सत्याग्रहकी हो गअी। फिनिक्समें रहनेवाले कुटुम्बों पर भी यह नियम लागू हो गया। अुससे सिर्फ अेक ही परिवार अलग रहा। अिसका

नतीजा यह हुआ कि फिनिक्सको चलानेके लिअे जितने आदमियोंकी जरूरत थी अुनके सिवा बाकी सब लड़ाओ छिड़ी तब अुसमें भाग लेनेको तैयार थे। अिसलिअे तीसरी लड़ाओकी शुरुआत फिनिक्सवालोंसे हुआी। जब स्त्रियां, पुरुष और बच्चे लड़ाओमें शामिल होनेको निकले अुस समयका दृश्य तो मैं भूल ही नहीं सकता। प्रत्येककी अेक ही भावना थी: यह लड़ाओ धर्मयुद्ध है और हम तीर्थयात्राके लिअे निकले हैं। चलते समय अुन्होंने जो भजन-कीर्तन किया अुसमेंका अेक प्रसिद्ध भजन है: "सुख-दुःख मनमां न आणीअे।"* अुस मौके पर जो आवाज बच्चों, स्त्रियों और पुरुषोंके मुंहसे निकल रही थी अुसकी गूंज अभी तक मेरे कानोंमें मौजूद है। अिस संघके साथ ही महान पारसी रुस्तमजी थे। बहुतोंका खयाल था कि मि० रुस्तमजीने पिछली बार अितना दुःख भोगा है कि वे अब लड़ाओमें शरीक नहीं होंगे। अैसा कहनेवाले मि० रुस्तमजीकी महत्ताको नहीं जानते थे। औरतें और बच्चे जायें और वे घर बैठे रहें, यह अुनसे बर्दाश्त ही नहीं हो सकता था। मुझे अुस समयकी दो और घटनाअें याद आ रही हैं। मि० रुस्तमजी और अुनके केसरी सिंह जैसे लड़के सोराबजीमें स्पर्धा हुआी। सोराबजी कहते थे कि "बाबा, मुझे जाना है; अपनी जगह मुझे जाने दो या मुझे भी साथ ले चलो।"

दूसरी घटना स्व० हुसैनमियांके साथ मि० रुस्तमजीकी मुलाकातकी थी। मि० रुस्तमजी अुनसे मिलने गये तब अुनकी आंखोंसे आंसुओंकी धारा बह चली और अुन्होंने कहा: "चाचाजी, मैं अच्छा होता तो आपके साथ जेल आता।" भाओी हुसैनका देशके प्रति बहुत अधिक प्रेम था। अुन्होंने बिस्तर पर पड़े पड़े भी लड़ाओको सहारा दिया और जो कोओी अुनसे मिलता अुसके साथ वे लड़ाओकी ही बातें करते थे।

फिनिक्समें जो लोग बचे रहे, अुनमें सोलह वर्षसे कम अुम्रके लड़के भी थे। अुन्होंने और कार्यकर्ताओंने जेलसे बाहर रह कर भी जेल जानेवालोंसे अधिक काम करके बता दिया। अुन्होंने रात-दिनका भेद मिटा दिया, अपने साथियों और बड़ोंके छूटने तक कड़े व्रत लिये, अलौने भोजन पर गुजर किया और जोखिमके काम भी बेधड़क होकर अपने सिर ले लिये। जब विक्टोरिया काअुण्टीमें हड़ताल हुआी, तब सैकड़ों गिरमिटियोंने फिनिक्समें आसरा लिया। अुनकी संभाल करना बड़ा भारी काम था। गिरमिटियोंके मालिकोंकी तरफसे

* मनमें सुख-दुःख न लायें।

धावा होनेका डर रहते हुअे भी निडरतापूर्वक काम करते रहना दूसरी बड़ी विशेषता थी। पुलिस वहां गअी और मि० वेस्टको पकड़ ले गअी; और लोगोंके पकड़े जानेकी भी संभावना थी। अिन सब बातोंकी तैयारी रखी, परन्तु अेक भी आदमी फिनिक्समें विचलित नहीं हुआ। मैं अूपर कह चुका हूं कि अिसमें सिर्फ अेक ही कुटुम्ब अपवाद रहा। अिस अवसर पर फिनिक्सके कार्यकर्ताओंने कौमकी जो सेवा की, अुसका अन्दाज हिन्दुस्तानी कौम लगा नहीं सकती। यह गुप्त अितिहास अभी तक लिखा नहीं गया है, अिसलिअे अुसका कुछ भाग मैं यहां दे देता हूं; वह अिस आशासे कि किसी दिन कोअी जिज्ञासु ज्यादा हकीकतें जानकर फिनिक्सके कार्यकर्ताओंके कार्यका मूल्य कुछ हद तक आंक सकेगा। मुझे अधिक लिखनेका लोभ होता है, परन्तु फिनिक्सको यहीं छोड़ देता हूं।

फिनिक्सका दल जेल चला गया तो जोहानिसबर्गसे नहीं रहा गया। वहां भी औरतें अधीर हो गअीं। अुनमें जेल जानेका बहुत ही अुत्साह था। मि० थंबी नायडूका सारा परिवार तैयार हो गया। अुनकी पत्नी, साली, सास, मि० मुरगनकी सम्बन्धी बहनें, श्रीमति पी० के० नायडू, अपना नाम अमर कर जानेवाली बहन वालियामा और दूसरी स्त्रियां तैयार हुअीं। वे गोदमें बच्चोंको लेकर निकल पड़ीं। मि० कैलनबैक अुन्हें लेकर फ्रीनीखन गये। वहां जानेमें यह आशा थी कि वे फ्री स्टेटकी सरहद पर जाकर लौटते समय पकड़ी जायंगी, लेकिन अुनकी अुम्मीद बर न आअी। अुन्होंने कुछ दिन दुःख-सुखमें फ्रीनीखनमें बिताये। वहां टोकरियोंमें सामान लेकर फेरी लगाते हुअे पकड़े जानेकी कोशिश की, लेकिन किसीने अुन्हें पकड़ा नहीं।

परन्तु अिस निराशामें अमर आशा छिपी हुअी थी। अगर अुन स्त्रियोंको सरकारने फ्रीनीखनमें ही पकड़ लिया होता तो शायद हड़ताल न होती। यह तो निश्चित है कि जिस पैमाने पर हड़ताल पड़ी अुस पैमाने पर तो वह हरगिज न पड़ती। लेकिन कौमके सिर पर अीश्वरका हाथ था। वह सदा सत्यका बेली है। अुन स्त्रियोंको न पकड़ा गया, अिसलिअे यह तय हुआ कि वे नेटालकी हदको पार करें। अगर वहां भी अुन्हें न पकड़ा जाय तो वे मि० थंबी नायडूके साथ न्यूकैसलको अपना केन्द्र बनायें। वे नेटालके लिअे रवाना हुअीं। सरहद पर भी पुलिसने अुन्हें नहीं पकड़ा। अब न्यूकैसलको अुन्होंने अपना घर बनाया। वहां मि० डी० लेजरसने अपना घर अुनको सौंप दिया और अुनकी

स्त्री और साली मिस थामसने अिन सत्याग्रही स्त्रियोंकी सेवा करनेकी जिम्मेदारी ले ली।

निश्चय यह था कि ये स्त्रियां न्यूकैसलमें गिरमिटियोंकी स्त्रियोंसे और गिरमिटियोंसे मिलें, अुन्हें अुनकी हालतका सच्चा चित्र बतायें और तीन पौण्डके करके बारेमें हड़ताल करनेको समझायें। फिर जब मैं न्यूकैसल पहुंचूं तब हड़ताल की जाय। परन्तु अिन स्त्रियोंकी अुपस्थिति तो सूखे ओंधनमें दियासलाओका काम कर गओ। गादी-तकियोंके बिना न सोनेवाली और शायद ही कभी मुंह खोलनेवाली अिन स्त्रियोंने गिरमिटियोंमें सार्वजनिक भाषण दिये। वे जागे और मेरे पहुंचनेसे पहले ही अुन्होंने हड़ताल करनेका आग्रह किया। काम बड़ा जोखिम भरा था। मुझे मि० नायडूका तार मिला। मि० कैलनबैक न्यूकैसल गये और हड़ताल शुरू हुआी। मैं न्यूकैसल पहुंचा तब तक तो दो कोयलेकी खानोंके हिन्दुस्तानी मजदूर काम बन्द भी कर चुके थे।

मि० हॉस्केनकी अध्यक्षतामें काम करनेवाली यूरोपियन सहायक समितिने मुझे बुलाया। मैं अुनसे मिला। अुन्होंने हमारे आन्दोलनको पसन्द करके प्रोत्साहन देनेका निश्चय किया। मैं अेक दिन जोहानिसबर्गमें रह कर न्यूकैसल पहुंचा और वहां ठहरा। मैंने देखा कि लोगोंमें अपार अुत्साह था। अिन स्त्रियोंकी मौजूदगी सरकार बरदाश्त न कर सकी और अुन्हें आवारा होनेके अभियोगमें जेल भेज दिया। अब मि० लेजरसका घर सत्याग्रहकी धर्मशाला बन गया। वहां सैकड़ों गिरमिटियोंके लिअे खाना पकानेका बन्दोबस्त करना पड़ा। अिससे मि० लेजरस घबराये नहीं। न्यूकैसलके हिन्दुस्तानियोंने अेक कमेटी बनाओ। मि० सिदात अुसके अध्यक्ष नियुक्त हुअे। काम धड़ल्लेसे चला। और भी खानोंके हिन्दुस्तानियोंने काम बन्द कर दिया। अिस प्रकार खानोंके हिन्दुस्तानी मजदूर जब काम बन्द करते चले गये, तो कोयलेके मालिकोंकी संस्थाकी बैठक हुआी। मुझे वहां बुलाया गया। अुनके साथ मेरी खूब बातचीत हुआी, परन्तु प्रश्नका निपटारा नहीं हुआ। अुनकी मांग यह थी कि हम हड़ताल बन्द कर दें तो वे सरकारको तीन पौण्डके करके बारेमें लिखें। अिसे कभी सत्याग्रही मंजूर कर सकते थे? हमारा मालिकोंके साथ वैर नहीं था। हड़तालका हेतु मालिकोंको दुःख देना नहीं था, बल्कि स्वयं दुःख अुठाना था। अिसलिअे कोयलेके मालिकोंकी सलाह मानने लायक नहीं थी। मैं न्यूकैसल वापस आया। अिस बैठकका परिणाम मैंने बताया तो मजदूरोंका अुत्साह और भी बढ़ा। और अधिक खानोंमें काम बन्द हुआ।

अब तक मजदूर अपनी अपनी खानोंमें रहते थे। न्यूकैसलकी कार्य-कारिणीने सोचा कि जब तक गिरमिटिये अपने मालिकोंकी जमीन पर रहेंगे, तब तक हड़तालका पूरा असर नहीं पड़ेगा। यह डर था कि वे लालच या डरमें आकर काम शुरू कर देंगे। और मालिकका काम न करते हुअे भी अुसके मकानमें रहना या अुसका नमक खाना अनीति होगी। अिस तरह गिरमिटियोंका खानों पर रहना दोषपूर्ण था। अन्तिम दोष सत्याग्रहके शुद्ध प्रयासको मलिन बनानेवाला मालूम हुआ। दूसरी तरफ, हजारों हिन्दुस्तानियोंको कहां रखा जाय और अुन्हें कैसे खाना खिलाया जाय, यह अेक बड़ा प्रश्न था। मि० लेजरसका मकान अब बहुत छोटा मालूम होने लगा। अैसा लगा कि बेचारी दो स्त्रियां रात-दिन मेहनत करके भी काम नहीं निपटा सकती थीं। फिर भी हर तरहकी जोखिम अुठाकर भी सही चीज ही करनेका निश्चय हुआ। गिरमिटियोंको अपनी खानें छोड़कर न्यूकैसल आ जानेके समाचार भेज दिये गये। यह खबर मिलते ही खानोंमें से कूच शुरू हो गअी। बेलंगीकी खानके हिन्दुस्तानी पहले आ पहुंचे। न्यूकैसलमें अैसा दृश्य खड़ा हो गया जैसे सदा यात्रियोंका संघ ही आता रहता हो। जवान, बूढ़े और औरतें। कोअी स्त्री अकेली और कोअी गोदमें बच्चोंवाली, परन्तु सब अपने सिरों पर गठरी लिये होती थीं। मर्दोंके सिर पर पेटियां होती थीं। कोअी दिनको आ पहुंचते तो कोअी रातको। अुनके लिअे भोजनका प्रबन्ध करना पड़ता था। अिन गरीब आदमियोंके संतोषका मैं क्या वर्णन करूं? जो मिल गया अुसीमें वे सुख मान लेते थे। शायद ही कोअी रोता देखा जाता था। सबके चेहरों पर हंसी खिली रहती थी। मेरी दृष्टिमें तो वे तैंतीस करोड़ देवताओंमें से थे। स्त्रियां देवीरूप थीं। अुन सबको आश्रय कहां दिया जाय? सोनेके लिअे जमीन पर घास और अूपर आकाशका छत था। अीश्वर अुनका रक्षक था। किसीने बीड़ी मांगी। मैंने समझाया कि वे गिरमिटियाके रूपमें नहीं निकले हैं, वे हिन्दुस्तानके सेवकोंके रूपमें निकले हैं। वे धार्मिक लड़ाअीमें शामिल हुअे हैं। अैसे समय अुन्हें शराब, तम्बाकू वगैरा व्यसन छोड़ने चाहिये। जो न छोड़ें अुन्हें सार्वजनिक रुपयेसे अपनी जरूरतें पूरी करनेकी आशा नहीं रखनी चाहिये। अुन साधु पुरुषोंने मेरी यह सलाह मान ली और अुसके बाद किसीने बीड़ीके लिअे पैसे खर्च करनेकी मुझसे मांग नहीं की। अिस प्रकार खानोंमें से मजदूरोंकी कतार पर कतार आनी शुरू हुअी। अिसमें अेक

स्त्रीको, जो गर्भवती थी, रास्तेमें गर्भपात हो गया। अैसे अनेक दुःख अुठाने पर भी कोअी थका नहीं, कोअी पीछे नहीं हटा।

न्यूकैसलमें हिन्दुस्तानियोंकी आबादी बहुत बढ़ गअी। हिन्दुस्तानियोंकी जगहें भर गअीं। अुनसे जितने मकान मिल सके अुतनोंमें स्त्रियों और बूढ़ोंका समावेश हो गया। यहां यह कहना चाहिये कि न्यूकैसलके गोरोंकी आबादीने बहुत विनय दिखाया। अुन्होंने सहानुभूति भी दिखाअी। किसी भी हिन्दुस्तानीको तंग नहीं किया। अेक भली महिलाने अपना मकान मुफ्त अिस्तेमाल करनेको दे दिया। और भी छोटी छोटी मदद बहुतसे गोरोंकी तरफसे मिलती रहती थी।

परन्तु अैसी स्थिति नहीं थी कि न्यूकैसलमें हजारों हिन्दुस्तानियोंको सदाके लिअे रखा जा सके। मेयर घबराये। न्यूकैसलकी आबादी आम तौर पर तीन हजारकी मानी जाती थी। अैसे गांवमें दूसरे दस हजार आदमी हरगिज नहीं समा सकते थे। दूसरी खानोंके मजदूर भी काम बन्द करने लगे। अिसलिअे यह सवाल अुठा कि अब क्या किया जाय। हड़तालका मकसद जेल जानेका था। सरकार चाहती तो मजदूरोंको पकड़ सकती थी। परन्तु हजारोंके लिअे अुसके पास जेल ही नहीं थी। अिसलिअे अभी तक अुसने मजदूरोंको पकड़ा नहीं था। तो अब सरल अुपाय यही रह गया था कि ट्रान्सवालकी हद लांघ कर पकड़े जायं। यह भी लगा कि अैसा करनेसे न्यूकैसलमें भीड़ कम हो जायगी और हड़तालियोंकी अधिक परीक्षा भी हो जायगी। न्यूकैसलमें खानोंके जासूस हड़तालियोंको प्रलोभन दे रहे थे। परन्तु अेक भी मजदूर नहीं टूटा। फिर भी अिस लालचसे अुन्हें दूर रखना कार्यकारिणीका फर्ज था। अिन कारणोंसे न्यूकैसलसे चार्ल्सटाअुन तक कूच करना ठीक मालूम हुआ। रास्ता लगभग ३५ मीलका था। हजारों आदमियोंके लिअे रेल-किराया खर्च नहीं किया जा सकता था। अिसलिअे निश्चय हुआ कि सब मजबूत पुरुष और स्त्रियां पैदल जायें। जो स्त्रियां न चल सकें अुन्हें रेलमें ले जाना तय हुआ। रास्तेमें पकड़ा-धकड़ी होनेकी संभावना थी। फिर यह अपने ढंगका पहला ही अनुभव था। अिसलिअे यह निश्चय हुआ कि पहला दल मैं ले जाअूं। पहले दलमें लगभग ५०० व्यक्ति थे। अुनमें लगभग ६० स्त्रियां अपने बच्चों सहित थीं। अिस दलका दृश्य मैं कभी भूल नहीं सकता। दल ‘द्वारकानाथकी जय’, ‘रामचन्द्रजीकी जय’, ‘वन्दे

मातरम्' आदि नारे लगाता हुआ चलता था। दो दिन चल सकने लायक दाल-चावल हरअेकके पल्लेमें बांध दिये गये। सब अपनी अपनी गठरियां बांधकर चल पड़े। अुन्हें नीचे लिखी शर्तें सुना दी गअी थीं:

(१) मैं पकड़ा जाअूं अैसी संभावना है। अगर अैसा हो जाय तो भी दलको कूच जारी रखनी चाहिये और जब तक वे खुद न पकड़े जायें तब तक चलते रहना चाहिये। रास्तेमें खाने-पीनेका बन्दोबस्त करनेकी पूरी कोशिश की जायगी। फिर भी किसी दिन खानेको न मिले तो भी संतोष रखना चाहिये।

(२) लड़ाअीमें शामिल रहने तक शराब वगैराका व्यसन छोड़ देना चाहिये।

(३) मरते दम तक पीछे न हटना चाहिये।

(४) रास्तेमें रात पड़ जाय तो मकानकी आशा न रखकर घास पर पड़े रहना चाहिये।

(५) रास्तेमें आनेवाले पेड़-पत्तोंको जरा भी नुकसान न पहुंचाना चाहिये और पराअी चीजको बिलकुल न छूना चाहिये।

(६) सरकारी पुलिस पकड़ने आये तो गिरफ्तार हो जाना चाहिये।

(७) पुलिसका या किसीका भी सामना नहीं करना चाहिये। मार पड़े तो अुसे सहन करना चाहिये और बदलेमें वार करके अपना बचाव नहीं करना चाहिये।

(८) जेलमें जो दुःख आयें अुन्हें सहन करना चाहिये। और जेलको महल समझकर अुसमें दिन बिताना चाहिये।

अिस संघमें सभी वर्णके लोग थे। हिन्दू थे, मुसलमान थे, ब्राह्मण थे, क्षत्रिय थे, वैश्य थे और शूद्र भी थे। कलकतिया थे और तामिल थे। कुछ पठानों और अुत्तरकी तरफके सिन्धियोंको मार खाकर भी अपना बचाव न करनेकी शर्त कड़ी लगी थी। परन्तु अुन्होंने यह शर्त खुशीसे मान ही नहीं ली, बल्कि परीक्षाका समय आने पर अपना बचाव भी नहीं किया।

पहले दलकी कूच अैसी स्थितिमें शुरू हुअी। पहली ही रातको जंगलमें घास पर सोनेका अनुभव हुआ। रास्तेमें लगभग डेढ़ सौ आदमियोंके लिअे वारंट मिले। वे खुशीसे गिरफ्तार हो गये। पकड़नेको अेक ही पुलिस अफसर आया था। अुसके साथ और कोअी मदद न थी। पकड़े हुअे लोगोंको किस

तरह ले जाय, यह सवाल असके सामने खड़ा हो गया। हम चार्ल्सटाअुनसे सिर्फ छह मील दूर थे। असलिअे मैंने पुलिस अफसरसे कहा कि पकड़े हुअे आदमी भले ही हमारे साथ कूच करें और अुन्हें चार्ल्सटाअुनमें पकड़ लिया जाय; या आप अपने अफसरसे पूछकर असके हुक्मके मुताबिक करें। अफसर मेरे सुझावको मानकर चला गया। हम चार्ल्सटाअुन पहुंचे। चार्ल्सटाअुन बहुत छोटा गांव है। असकी आबादी मुश्किलसे अेक हजार आदमियोंकी होगी। असमें अेक ही आम रास्ता है। हिन्दुस्तानियोंकी आबादी बहुत थोड़ी है। असलिअे हमारे संघको देखकर गोरोंको आश्चर्य हुआ। चार्ल्सटाअुनमें अितने हिन्दुस्तानी कभी आये नहीं थे। पकड़े गये लोगोंको न्यूकैसल ले जानेके लिअे गाड़ी तैयार नहीं थी। पुलिस अुन्हें कहां रखे? चार्ल्सटाअुनके थानेमें अितने कैदियोंको रखनेकी जगह नहीं थी। असलिअे पुलिसने गिरफ्तार किये हुओंको मुझे सौंप दिया और अुनके खानेके दाम चुका देना मंजूर किया। अैसे सत्याग्रहका थोड़ा सम्मान नहीं कहा जा सकता। साधारणतया हममें से पकड़े हुअे कैदियोंको हमें सौंपा ही कैसे जा सकता है? अुनमें से कोअी चला जाय तो हमारी जिम्मेदारी नहीं मानी जा सकती थी। लेकिन सब लोग यह समझने लग गये थे कि सत्याग्रहीका काम तो गिरफ्तार होना ही है। असलिअे हम पर अुनका विश्वास जम गया था। अिस प्रकार पकड़े हुअे लोग चार दिन तक हमारे साथ रहे। जब पुलिस अुन्हें ले जानेको तैयार हुअी, तब वे खुशीसे चले गये।

दलोंकी भरती होती रही। किसी रोज चार सौ तो किसी रोज असससे भी ज्यादा। बहुत लोग पैदल चलते और स्त्रियां मुख्यतः गाड़ीसे आतीं। चार्ल्सटाअुनके हिन्दुस्तानी व्यापारियोंके मकानोंमें जहां जगह थी वहां अुन्हें ठहराया गया। वहांके कार्पोरेशनने भी मकान दिये। गोरे बिलकुल तंग न करते थे; अितना ही नहीं, वे मदद भी देते थे। वहांके डॉक्टर ब्रिस्कोने मुफ्त अिलाज करनेकी जिम्मेदारी ली और हम जब चार्ल्सटाअुनसे आगे बढ़े तब अुन्होंने कीमती दवायें और कितने ही अपयोगी औजार हमें मुफ्त दिये। खाना मस्जिदके मकानमें बनता था। चूल्हा दिन-रात जलाना पड़ता था। खाना बनानेवाले हड़तालियोंमें से ही तैयार हो गये थे। अंतिम दिनोंमें चारसे पांच हजार मनुष्योंको खिलाना पड़ता था। फिर भी ये मजदूर कायर नहीं बने। सुबह मक्कीके आटेकी कांजी शक्कर डालकर दी जाती थी और असके साथ रोटी।

शामको चावल, दाल और शाक दिया जाता था। दक्षिण अफ्रीकामें लगभग सभी लोग तीन समय खानेवाले होते हैं। गिरमिटिये हमेशा तीन बार खाते हैं, परन्तु लड़ाअीमें अुन्होंने दो बारसे सन्तोष किया। वे सूक्ष्म स्वाद लेनेवाले भी होते हैं। परन्तु वह स्वाद भी अुन्होंने यहां छोड़ दिया।

अिन झुण्डके झुण्ड जमा हुअे लोगोंका क्या किया जाय, यह विचार करने लायक प्रश्न बन गया। चार्ल्संटाअुनमें सुविधा-असुविधा सहकर भी अितने ज्यादा मनुष्योंको लम्बे अर्से तक रखा जाय, तो रोगके फूट निकलनेकी संभावना थी। हमेशा काम करनेवाले हजारों मनुष्य बेकार बैठे रहें, यह भी ठीक नहीं था। यहां यह कह देना जरूरी है कि अितने गरीब आदमियोंके जमा होने पर भी चार्ल्संटाअुनमें अुनमें से किसीने चोरी नहीं की। पुलिसकी जरूरत किसी समय नहीं पड़ी। और न पुलिसको किसी समय ज्यादा काम करना पड़ा। तो भी अुत्तम मार्ग यही मालूम हुआ कि अब चार्ल्संटाअुनमें बैठे न रहें। अिसलिअे ट्रान्सवालमें घुसनेका और अगर अंत तक न पकड़े जायं तो टॉल्स्टॉय फार्म पहुंचनेका निश्चय किया गया। कूच करनेसे पहले हमने सरकारको खबर दी कि हम गिरफ्तार होनेके खातिर ट्रान्सवालमें घुसेंगे। हमें वहां रहना नहीं है, वहांके हकोंकी अिच्छा भी नहीं है; परन्तु जब तक सरकार हमें नहीं पकड़ेगी तब तक हम अपनी कूच जारी रखेंगे। अंतमें हम टॉल्स्टॉय फार्म पर डेरा डालेंगे। अगर सरकार तीन पौण्डका कर अुठा देनेका वचन दे, तो हम वापस जानेको तैयार रहेंगे। सरकारके मनकी अैसी स्थिति नहीं थी कि वह अिस नोटिस पर ध्यान देती। अुसके जासूस अुसे बहका रहे थे। वे यह समझा रहे थे कि लोग थक जायंगे। सरकारने सब भाषाओंमें नोटिस छपवाकर हड़तालियोंमें बांटे थे।

अंतमें चार्ल्संटाअुनसे भी आगे बढ़नेका समय आ पहुंचा। ६ नवम्बरको तड़के ही तीन हजार लोगोंका संघ रवाना हुआ। सारी कतार अेक मीलसे ज्यादा लंबी थी। मि० कैलनबैक और मैं पिछले हिस्सेमें थे। संघ सरहद पर पहुंचा तब पुलिस दल वहां मौजूद था। हम दोनों वहां जा पहुंचे और पुलिसके साथ हमारी बातचीत हुअी। अुसने हमें पकड़नेसे अिनकार कर दिया। अिसलिअे जुलूस अनुशासनके साथ और शान्तिपूर्वक फॉक्सरस्टके बीचसे निकला। शहरके बाहर स्टैण्डर्टन रोड पर जाकर सबने पड़ाव डाला। सबने भोजन किया। यह प्रबन्ध किया गया था कि स्त्रियां कूचमें

शामिल न हों, फिर भी अुनके जोशकी बाढ़को रोकना मुश्किल हो गया और कुछ स्त्रियां भी शामिल हो गओीं। परन्तु कुछ स्त्रियां और बच्चे अभी तक चार्ल्सटाअुनमें ही थे। अुनकी देखभाल करनेके लिअे मि० कैलनबैकको फॉक्सरस्टकी हद लांघनेके बाद वापस भेज दिया।

दूसरे दिन पामफर्डसे आगे पुलिसने मुझे पकड़ लिया। मुझ पर प्रवेशका अधिकार न रखनेवाले आदमियोंको ट्रान्सवालमें लानेका अिलजाम था। औरोंको पकड़नेका अुसे हुक्म नहीं था। अिसलिअे फॉक्सरस्ट पहुंचनेके बाद सरकारको मैंने नीचे लिखा तार दिया : "सत्याग्रहकी लड़ाओीके मुख्य प्रचारकको सरकारने पकड़ लिया, अिससे मुझे खुशी हुओी। परन्तु साथ ही मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि अिसके लिअे जो मौका चुना गया वह दयाकी दृष्टिसे देखते हुअे अत्यन्त विषम है। सरकार शायद जानती होगी कि अिस कूचमें १२२ स्त्रियां और ५० बच्चे हैं और सब अितनी ही खुराक पर गुजर कर रहे हैं कि ठिकाने पहुंचने तक जिन्दा रह सकें। ठंड और धूपसे अुनकी रक्षाके कोअी साधन नहीं हैं। अैसी हालतमें मुझे अुनसे अलग करना न्यायकी हत्या करना है। जब कल रातको मुझे पकड़ा गया तब अपने साथके आदमियोंको बताये बिना ही मैं अुन्हें छोड़ आया हूं। वे शायद क्रोधसे पागल हो जायें। अिसलिअे मैं चाहता हूं कि या तो मुझे अुनके साथ कूच करनेकी अिजाजत दी जाय या सरकार अुन्हें रेलगाड़ीसे टॉल्स्टॉय फार्म पहुंचा दे और खाना भी दे। जिन पर अुन लोगोंका विश्वास है अुन्हें अुनसे अलग कर देना और साथ ही अुनके लिअे भोजन वगैराका कोअी बन्दोबस्त न करना अनुचित माना जायगा। मैं आशा रखता हूं कि फिरसे विचार करनेके बाद सरकार अपना निश्चय बदल लेगी। अगर कूचके दरमियान कोअी अकल्पित घटना हो गअी और खास तौर पर दूधपीते बच्चोंवाली महिलाओंमें से किसीकी मृत्यु हो गअी, तो अिसकी जिम्मेदारी सरकारकी होगी।"

जुलूस आगे चला। मुझे वॉल्क्रस्टके न्यायाधीशके सामने खड़ा किया गया। मुझे सफाअी तो कुछ देनी ही नहीं थी। परन्तु जो लोग पामफर्डसे आगे गये थे और जो अुस समय चार्ल्सटाअुनमें पड़े थे अुनकी कुछ बातें सुनानी थीं। अिसलिअे मैंने मियाद मांगी। सरकारी वकीलने अिस पर अेतराज किया। न्यायाधीशने बताया कि जमानत सिर्फ हत्याके अभियोगमें ही नामंजूर की जा सकती है। अिसलिअे अुसने ५० पौण्डकी जमानत मांगी और अेक

हफ्तेकी मियाद दी। जमानत अुसी समय वॉल्क्रस्टके अेक व्यापारीने दे दी। मैं रिहा होकर सीधा कूच करनेवालोंसे जा मिला। अुनका अुत्साह दुगुना हो गया। अिस बीच प्रिटोरियासे तार आ गया कि मेरे साथके हिन्दुस्तानियोंको पकड़नेका सरकारका अिरादा नहीं है; नेताओंको ही गिरफ्तार किया जायगा। अिसका अर्थ यह नहीं था कि और सबको छोड़ दिया जायगा। परन्तु सरकार सबको पकड़ कर हमारे कामको सरल बनाना या हिन्दुस्तानमें खलबली पैदा करना नहीं चाहती थी।

पीछेसे दूसरी अेक बड़ी टोलीको लेकर मि० कैलनबैक आ रहे थे। हमारी दो हजारसे अधिककी टोली स्टैण्डर्टन आ पहुंची। वहां मुझे फिर पकड़ लिया गया और मुकदमेकी २१ तारीख रखी गअी। हम आगे बढ़े। परन्तु अब सरकारसे यह सब हजम नहीं हो सकता था। अिसलिअे अुसने पहले मुझे अिन सबसे बिलकुल अलग कर देनेकी कार्रवाअी की। अिस समय मि० पोलाकको डेप्युटेशन लेकर हिन्दुस्तान भेजनेकी तैयारी हो रही थी। अुसके लिअे रवाना होनेसे पहले वे मुझसे मिलने आये। परन्तु 'हरि करे सो होय' वाली बात हो गअी। मुझे रविवारको ग्रेलिगस्टाडमें फिर तीसरी बार पकड़ लिया गया। अिस बारका वारंट डंडीसे निकला हुआ था और अभियोग गिरमिटियोंसे काम छुड़वानेका था। यहांसे मुझे बहुत ही चुपकेसे डंडी ले जाया गया। अूपर मैं बता चुका हूं कि मि० पोलाक हमारे साथ कूचमें थे। अुन्होंने यह काम संभाल लिया। डंडीमें मंगलवारको मुकदमा चला। मेरे विरुद्ध लगाये गये तीनों अभियोग मुझे पढ़कर सुनाये गये। मैंने अुन्हें स्वीकार किया और अिजाजत लेकर बताया कि, "मेरे अपने प्रति और सभी लोगोंके प्रति न्यायके खातिर मुझे कहना चाहिये कि मुझ पर जो अभियोग लगाये गये हैं अुनकी सारी जिम्मेदारी अेक वकीलके नाते और नेटालके पुराने निवासीके नाते मैं अपने पर लेता हूं। मैं मानता हूं कि अिन लोगोंको कॉलोनीके बाहर ले जानेसे लोगोंके मन पर जो असर पड़ा है अुसका हेतु अच्छा था। खानवालोंके खिलाफ हमारी कोअी शिकायत नहीं है। अिस लड़ाअीसे अुन्हें भारी हानि हो रही है, अिसका मुझे अफसोस है। मैं हिन्दुस्तानी मजदूरोंको रखनेवाले मालिकोंसे भी विनती करता हूं कि तीन पौंडका कर मेरे देशभाअियों पर भार स्वरूप है और अिसलिअे वह रद होना चाहिये। मुझे लगता है कि माननीय श्री गोखले और जनरल स्मट्सके बीच जो स्थिति पैदा

हो गओ, अुसे देखते हुअे बहुत ज्यादा ध्यान खींचनेवाली लड़ाओ छेड़ना मेरा फर्ज था। स्त्रियोंको और दूधपीते बच्चोंको जो संकट सहने पड़े हैं अुन्हें मैं समझता हूं। फिर भी मेरा खयाल है कि लोगोंको सलाह देना मेरा फर्ज था और वह फर्ज मैंने अदा किया है। जब तक तीन पौंडका कर रद नहीं हो जाता, तब तक काम न करने और भीख मांगकर पेट भरनेकी सलाह अपने देशभाअियोंको बार-बार देना मैं अपना कर्तव्य समझूंगा। मुझे विश्वास है कि दुःख भोगे बिना अुन पर होनेवाले जुल्मोंका अंत नहीं आयेगा।"

मैं तो आरामसे जेलमें जाकर बैठ गया। बादमें वॉलक्रस्टमें मुझ पर मुकदमा चला और डंडीमें हुओ नौ मासकी जेलकी सजाके अलावा वहां तीन महीनेकी जेलकी सजा और हुओ।

अिसी अर्सेमें मुझे खबर मिली कि मि० पोलाक गिरफ्तार हो गये हैं और हिन्दुस्तान जानेके बजाय जेलमें जा बैठे हैं। मैं तो खुश ही हुआ, क्योंकि मेरे खयालसे अुस डेप्युटेशनसे यह डेप्युटेशन बड़ा था। अिसके बाद तुरन्त ही मि० कैलनबैक पकड़े गये। और वे भी मि० पोलाककी तरह तीन महीनेके लिअे जेलमें जा बैठे। यह मान कर कि नेताओंको पकड़ लेनेके बाद लोग झुक जायेंगे, सरकारने भूल ही की। सब हड़तालियोंको कोओ चार स्पेशल गाड़ियां भर कर डंडी और न्यूकैसलकी खानों पर वापस ले जाया गया। वहां अुन पर बड़ा जुल्म हुआ। अुन्हें बहुत कष्ट सहने पड़े। परन्तु कष्ट सहनेके लिअे तो सब निकले ही थे। सभी नेता थे। अुन्हें तथाकथित नेताओंके बिना अपनी शक्ति दिखानी थी और वह अुन्होंने अच्छी तरह दिखा दी। दुनिया जानती है कि वह शक्ति अुन्होंने किस तरह दिखाओ। कवि दयारामने* सच कहा है कि:

"महाकष्ट भोगे बिना कृष्ण भगवान किसे मिलते हैं? चारों युगके साधुओंको खोजकर देख लो। वैष्णवजनके प्रति बिरले ही लोगोंका प्रेम होता है। भक्तिके विरोधी लोग तो अुन्हें पीड़ा ही देते हैं। . . . पाप और पुण्य दो कहने भरको हैं; असलमें नन्दकुंवरका नचाया यह सारा जगत

* गुजरातीके अेक प्रसिद्ध प्राचीन कवि।

नाचता है। प्रभुकी अिच्छाके बिना पत्ता भी नहीं हिलता; परन्तु अपरिपक्व मनका भ्रम दूर नहीं होता — वह अपनेको ही कर्ता मानता है।"

मोहनदास करमचन्द गांधी

[अिस लेखका शेष भाग मि० गांधीकी तरफसे लिखा जानेवाला था, परन्तु यूरोपीय युद्धके कारण अुन्हें जरूरी अवकाश नहीं मिला। — अ. ओ. ओ.]

२

सत्याग्रह-युद्धके अितिहासकी नोंध

१९०६

४ अगस्त — ट्रान्सवाल लेजिस्लेटिव कौंसिलमें अेशियाटिक अमेण्डमेन्ट अेक्ट पेश करनेका मि० डंकनने प्रस्ताव रखा।

११ सितम्बर — जोहानिसबर्गके अेम्पायर थियेटरमें हिन्दुस्तानियोंकी खास सभा हुअी। यह हत्यारा कानून (खूनी कानून) पास हो जानेकी सूरतमें अुपस्थितोंमें से हरअेकने अुसे न मानकर जेल जानेकी शपथ ली। अिंग्लैण्ड डेप्युटेशन भेजनेका प्रस्ताव पास हुआ।

१२ सितम्बर — ट्रान्सवालकी धारासभामें हत्यारा कानून पास हुआ।

१ अक्तूबर — हिन्दुस्तानियोंका डेप्युटेशन जोहानिसबर्गसे रवाना हुआ।

८ नवम्बर — डेप्युटेशन औपनिवेशिक मंत्री लॉर्ड अेल्गिनसे मिला।

२९ नवम्बर — लंदनमें 'साअुथ अफ्रीका ब्रिटिश अिंडियन कमेटी' कायम हुअी। सर लेपेल ग्रिफिन अुसके पहले अध्यक्ष और मि० रीच मंत्री नियुक्त हुअे।

१ दिसम्बर — डेप्युटेशन विलायतसे रवाना हुआ।

३ दिसम्बर — हत्यारे कानूनको सम्राटने नामंजूर कर दिया।

१९०७

२२ मार्च — बड़ी सरकारके नामंजूर किये हुअे हत्यारे कानूनको ट्रान्सवालकी नअी पार्लियामेण्टने २४ घंटेमें पास कर दिया।

२ मअी — अिस कानूनको सम्राटकी मंजूरी मिल गअी।

१ जुलाअी — हत्यारे कानूनका अमल शुरू हुआ और अुसके अनुसार प्रिटोरियामें पहले-पहल नाम दर्ज करनेको रजिस्ट्रेशन आफिस खोला गया। आजसे यह आफिस चार महीने तक गांव-गांव घूमा, लेकिन लगभग सभी जगहों पर अुसका बहिष्कार हुआ। ८००० की आबादीमें से लगभग ४०० से भी कम लोगोंके नाम दर्ज हुअे। अिस मियादके बाद पकड़-धकड़ शुरू हो गअी।

१८ सितम्बर — माननीय श्री गोखलेका अेसोसियेशनको यह तार मिला: "आपकी लड़ाअीका मैं अच्छी तरह अवलोकन करता रहता हूं। चिन्तातुर होकर अुस पर ध्यान दे रहा हूं। अत्यंत सहानुभूति रखता हूं। लड़ाअीकी तारीफ करता हूं। अीश्वरकी अिच्छा पर दृढ़तासे आधार रखना।"

२५ अक्तूबर — हत्यारे कानूनके विरुद्ध ट्रान्सवालके ७ या ८ हजार हिन्दुस्तानियोंमें से ४५२२ हस्ताक्षरोंवाला अेक लम्बा प्रार्थनापत्र अेसोसियेशनकी तरफसे सरकारको भेजा गया।

३ नवम्बर — आजसे रजिस्ट्रेशनकी अर्जियां लेना बन्द हो गया।

११ नवम्बर — सत्याग्रहियोंकी धरपकड़ पहले-पहल शुरू हुअी।

२७ दिसम्बर — मि० गांधीको अदालतमें हाजिर होनेका नोटिस मिला।

२८ दिसम्बर — जोहानिसबर्गमें मजिस्ट्रेट मि० जोर्डनने मि० गांधीको ४८ घंटेमें ट्रान्सवाल छोड़नेका हुक्म दिया।

१९०८

१० जनवरी — जोहानिसबर्गमें मि० जोर्डनने मि० गांधीको दो मासकी सादी कैदकी सजा दी।

३० जनवरी — सत्याग्रही कैदियोंको छोड़ा गया। ट्रान्सवाल सरकारने हिन्दुस्तानियोंकी स्वेच्छापूर्वक नाम दर्ज करानेकी मांग मंजूर कर ली और हत्यारा कानून रद करनेका वचन दिया।

१० फरवरी — मि० गांधी, मि० थंबी नायडू और कुछ अन्य लोग रजिस्ट्रेशन आफिस जा रहे थे अुस समय मि० गांधी पर हमला हुआ।

२४ जून — सरकारने हत्यारा कानून रद करनेसे अिनकार कर दिया, अिसलिअे सत्याग्रहकी लड़ाअी फिर शुरू हुअी। मि० सोराबजी पहले-पहल

नेटालसे ट्रान्सवालमें घुसे। और २० जुलाअीको अुन्हें वॉलक्रस्टके मजिस्ट्रेटने अेक महीनेकी जेलकी सजा दी।

१२ जुलाअी —— स्वेच्छापूर्वक नाम दर्ज करानेके बाद मिले हुअे लगभग दो हजार परवाने जोहानिसबर्गकी विराट सभामें जलाये गये।

२२ जुलाअी —— लॉर्ड सेलबोर्नके नाम बड़ी सरकारका अैसा तार आया कि रोडेशियामें बने हुअे कड़े अेशियाअी कानूनको सम्राटकी मंजूरी नहीं दी जा सकती।

२२ अगस्त —— स्वेच्छापूर्वक दर्ज कराये गये नामोंको जायज मानने और दूसरे हिन्दुस्तानियोंके नाम दर्ज करनेके बारेमें ट्रान्सवाल पार्लियामेण्टके दोनों सदनोंमें कानून पास हो गया।

३० अगस्त —— प्रिटोरियाकी सार्वजनिक सभामें और २०० स्वेच्छापूर्वक लिये गये प्रमाणपत्र जलाये गये।

७ सितम्बर —— मि० गांधी वॉलक्रस्टमें गिरफ्तार हुअे और अेक सप्ताह बाद अुन पर मुकदमा चला। अुसमें अुन्हें दो महीनेकी सख्त कैदकी सजा मिली।

९ नवम्बर —— आजसे ५ दिनमें २२७ हिन्दुस्तानी जेल गये। अुनमें से ज्यादा तो हिन्दू और मुसलमान व्यापारी थे। अिस संख्यामें ६४ जोहानिसबर्गके, ७९ जर्मिस्टनके और ६० प्रिटोरियाके हिन्दुस्तानी थे।

१४ नवम्बर —— अिस सप्ताहमें २२७ हिन्दुस्तानी जेलमें गये। अिस संख्यामें ६४ जोहानिसबर्गसे, ९७ जर्मिस्टनसे, ६० प्रिटोरियासे और ६ दूसरे स्थानोंसे गये थे।

१७ नवम्बर —— ५३ तामिल लोग फेरी लगाते हुअे पकड़े गये और अुन्हें ७ दिनकी जेल मिली।

२२ नवम्बर —— कलकत्तेमें मि० अब्दुल जबरकी अध्यक्षतामें सत्याग्रहियोंके प्रति सहानुभूति दिखानेको अेक बड़ी सभा हुअी।

१३ दिसम्बर —— मि० गांधी दो मासकी दूसरी बारकी कैद पूरी करके छूटे।

१९०९

९ जनवरी — 'मरक्यूरी' के प्रतिनिधिने मि० गांधीसे मुलाकात की। अुसमें अुन्होंने बताया था कि ट्रान्सवालमें लगभग दो हजार हिन्दुस्तानी जेल हो आये हैं।

१५ जनवरी — मि० गांधी नेटालसे ट्रान्सवाल जाते हुअे वॉलक्रस्टमें तीसरी बार पकड़े गये। कुछ सप्ताह बाद मुकदमा चला। अुसमें अुन्हें तीन मासकी कैद हुअी। अुसी दिन हमीदिया सोसाअिटीके अध्यक्ष मि० अुमरजी साले, जिनकी अुम्र ६५ वर्षकी थी, और मि० डेविड अर्नेस्ट वगैरा प्रसिद्ध हिन्दुस्तानियोंको तीन तीन मासकी सजा हुअी थी।

२९ जनवरी — क्रूगर्स डोरपमें लुहार-परिषद हुअी। अुसमें प्रस्ताव पास हुआ कि किसी भी तरहके लाअिसेंस न लिये जायें और दुकानें बन्द करके फेरी लगाकर जेल जाया जाये।

६ फरवरी — ट्रान्सवालकी मि० हॉस्केनकी कमेटीने हिन्दुस्तानियोंको राहत पहुंचानेके बारेमें 'लंदनके टाअिम्स' को पत्र लिखा।

१० फरवरी — रोडेशियाका अेशियाअी कानून बड़ी सरकारने नामंजूर कर दिया।

१२ फरवरी — पारसी रुस्तमजी और कुछ और लोगोंको छह छह महीनेकी जेल हुअी।

६ मार्च — बॉक्सबर्ग, नॉरवुड, ब्लोमफोन्टीन, बारबर्टन और क्रूगर्स डोरपमें लोकेशन कायम करनेके लिअे गोरोंने हलचल शुरू की।

१० मार्च — डेलागोआ-बेके रास्तेसे सत्याग्रही कैदियोंको हिन्दुस्तानमें निर्वासित करना शुरू हुआ।

१२ मार्च — प्रिटोरियामें मिसेज पिल्लेके मुकदमेमें मि० गांधीको हाथोंमें हथकड़ियां डालकर अदालतमें ले जाया गया।

५ अप्रैल — १४ सितम्बरसे १७ मार्च तक हुअे पत्र-व्यवहार वगैराकी ब्ल्यूबुक बड़ी सरकारने प्रकाशित की।

३० अप्रैल — मि० काछलिया और दूसरे १८ सत्याग्रही कैद पूरी करके छूटे।

४ मअी — सत्याग्रही हिन्दुस्तानियोंको जेलमें घी देना शुरू हुआ।

२४ मअी — मि० गांधी तीसरी बार तीन मासकी कैदकी सजा पाकर जेल गये।

७ जून — जर्मिस्टनमें गोरोंकी लिटरेरी अेण्ड डिबेटिंग सोसाअिटीमें मि० गांधीने 'सत्याग्रहकी नीति' विषय पर मार्मिक भाषण दिया।

१६ जून — जोहानिसबर्गकी आम सभामें अे० अेम० काछलिया, हाजी हबीब, वी० अे० चेटियार और अेम० के० गांधीको विलायत तथा सर्वश्री अेम० अे० कामा, अेन० जी० नायडू, अी० अेस० कुवाड़िया तथा अेच० अेच० पोलाकको हिन्दुस्तान भेजनेका प्रस्ताव पास हुआ। अिस डेप्युटेशनके रवाना होनेसे पहले ही सर्वश्री काछलिया, कुवाड़िया, कामा और चेटियारको पकड़ लिया गया।

४ जुलाअी — जोहानिसबर्गकी जेलसे छूटनेके बाद जेलमें भोगे हुअे कष्टोंके कारण नागापनकी मृत्यु हो गअी।

१६ जुलाअी — मुजफ्फरी जहाजमें १४ हिन्दुस्तानियोंको हिन्दुस्तानमें निर्वासित किया गया।

१ सितम्बर — बम्बअीके शेरीफने दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहके बारेमें चर्चा करनेके लिअे जो सार्वजनिक सभा बुलाअी, अुस पर बम्बअी सरकारने रोक लगा दी। आखिर यह सभा १३ दिन बाद हुअी।

१६ सितम्बर — ट्रान्सवालके डेप्युटेशनने विलायतमें लॉर्ड क्रूसे मुलाकात की।

१३ नवम्बर — विलायत गया हुआ हिन्दुस्तानी डेप्युटेशन क्लीडोनन कैसल जहाजमें रवाना हुआ।

१ दिसम्बर — हिन्दुस्तानमें श्री रतन टाटाने २५ हजार रुपयेका जो दान दिया था अुसकी घोषणा हुअी।

१९१०

२५ फरवरी — हिन्दुस्तानकी बड़ी धारासभामें मि० गोखलेका गिरमिटकी प्रथा बन्द कर देनेका प्रस्ताव पास हुआ।

१ जून — दक्षिण अफ्रीकाका यूनियन बना। अुसी दिन मि० सोराबजी शापुरजी अडाजणिया सातवीं बार गिरफ्तार हुअे।

४ जून — मि० कैलनबैकने सत्याग्रहियोंके रहनेके लिअे लोलीमें अपना फार्म दिया।

१३ जून — २६ सत्याग्रही हिन्दुस्तानसे प्रेसिडेन्ट जहाजमें वापस आये।

२६ जुलाअी — पुर्तगाल सरकारकी मददसे हिन्दुस्तानियोंको जो निर्वासित किया गया था, अुसके विरुद्ध लॉर्ड अेम्पथीलने लॉर्डसभामें खूब चर्चा की।

३० जुलाअी — जिन हिन्दुस्तानी बच्चोंके नाम आज तक बालिग होने पर सरकारी रजिस्टरमें दर्ज हो सकते थे, अुनके नाम १९०८ का कानून बन जानेके बाद बालिग होने पर भी रजिस्टरमें दर्ज करनेसे अिनकार किया गया।

२२ अगस्त — छोटाभाअीके लड़केका मशहूर टेस्ट केस जोहानिसबर्गकी अदालतमें शुरू हुआ। अुसमें आखिर छोटाभाअीकी जीत हुअी।

२८ सितम्बर — मि० पोलाक ८५ निर्वासित हिन्दुस्तानियोंके साथ डरबन आये।

१६ अक्तूबर — स्व० नारायण स्वामी गरट्रूड वुरमन जहाजमें देशसे लौटते हुअे डेलागोआ-बेमें मर गये।

१९११

२५ फरवरी — यूनियन गजटमें अिमिग्रेशन रेस्ट्रिक्शन बिल प्रकाशित हुआ।

२५ अप्रैल — वह बिल पार्लियामेण्टके चालू अधिवेशनमें मुलतवी रखा गया।

२० मअी — शर्ती समझौता हुआ और सत्याग्रहकी लड़ाअी फिर मुलतवी हो गअी।

[अिसके बाद लगभग दो वर्ष तक थोड़ी शान्ति रही और १९१३ में फिर चौंकानेवाली घटनाअें हुअीं, जिनकी तफसील अिस प्रकार है :]

१९१३

२२ मार्च — हिन्दुस्तानियोंके धर्म पर हमला। न्यायाधीश सरलेने फैसला दिया, जिसमें मुसलमानी शरीअतके अनुसार विवाहित महिला मरियमका अपने पतिके साथ हुआ विवाह नाजायज ठहराया गया।

३ अप्रैल — यूनियन गजटमें नया अिमिग्रेशन-बिल प्रकाशित हुआ।

३ मअी — जोहानिसबर्गकी सार्वजनिक सभामें सत्याग्रह शुरू करनेका प्रस्ताव पास हुआ। अिसी हफ्तेमें स्त्रियोंकी तरफसे भी अैसा प्रस्ताव गृहमंत्रीको भेजा गया।

२४ मअी — ३० अप्रैलसे मि० गांधी और मि० फिशर (गृहमंत्री) के बीच हुआ पत्र-व्यवहार प्रकाशित हुआ।

७ जून — अुपरोक्त पत्र-व्यवहारका अधिक भाग प्रकाशित हुआ।

२१ जून — नये अिमिग्रेशन-कानूनको सम्राटकी मंजूरी मिल गअी।

१५ जुलाअी — यूनियन गजटमें नये कानूनकी धाराअें प्रकाशित हुअीं।

१ अगस्त — नये कानूनके अनुसार तीनों कॉलोनियोंमें अपील-बोर्ड स्थापित हुअे। अिन बोर्डोंमें अेक अेक अिमिग्रेशन अफसर भी सदस्य थे।

१३ सितम्बर — सत्याग्रहकी शुरुआत। सरकार और मि० गांधीके बीचका तमाम जरूरी मुद्दोंवाला पत्र-व्यवहार प्रकाशित हुआ।

२२ सितम्बरसे १५ अक्तूबर — नेटाल और ट्रान्सवाल दोनोंसे बड़ी संख्यामें सत्याग्रही पुरुष और स्त्रियां फेरी लगाकर या सरहद पार करके पकड़े गये और जेल गये।

१६ अक्तूबर — न्यूकैसलसे तीन पौण्डके करके विरुद्ध हड़ताल शुरू हुअी और सब जगह फैल गअी।

६ नवम्बर — मि० गांधी हड़तालियोंके साथ ट्रान्सवालमें घुसे।

११ नवम्बर — डंडीमें मि० गांधीको ९ महीनेकी सजा हुअी।

२८ नवम्बर — हिन्दुस्तानके वाअिसरॉयका भाषण हुआ

११ दिसम्बर — कमीशन नियुक्त हुआ।

१९ दिसम्बर — सर्वश्री गांधीजी, कैलनबैक तथा पोलाक छोड़ दिये गये।

१९१४

१६ फरवरी — समझौतेके अनुसार यूनियनकी जेलोंसे सारे सत्याग्रही कैदी छोड़ दिये गये।

१८ मार्च — कमीशनकी रिपोर्ट प्रकाशित हुअी।

३ जून — रिलीफ बिल प्रकाशित हुआ।

३० जून — अन्तिम समझौता हुआ।

३

सत्याग्रही कौन हो सकता है?

अिस प्रश्नका जो अुत्तर ५ वर्ष पहले 'अिंडियन ओपीनियन' में दिया गया था, अुस पर आज हम फिरसे विचार करें। विचार करने पर यह मालूम होता है कि वह अुत्तर यथार्थ था। अुस समय शायद ही कोअी जानता था कि यह लड़ाअी अितनी जग-प्रसिद्ध हो जायगी और आठ वर्ष तक चलेगी। परन्तु ज्यों ज्यों वह आगे बढ़ी त्यों त्यों हम ज्यादा मजबूत बने, ज्यादा समझ सके और ज्यादा सीख सके। अंतिम भागमें तो सैकड़ों और हजारोंने खुद अनुभव किया और अुससे सभीको मालूम हो गया होगा कि अिस लड़ाअीमें हार जैसी चीज तो है ही नहीं। कोअी चीज न मिले तो हम देख सकते हैं कि अुसमें सत्याग्रहीका दोष है, सत्याग्रहका दोष नहीं है। यह बात बड़े ध्यानसे समझने लायक है। शरीर-बलकी लड़ाअीमें अैसा नियम लागू नहीं होता। अुसमें दो सेनाअें मिलती हैं तब सिर्फ लड़नेवालोंकी कमजोरीसे ही हार नहीं होती; लड़नेवाले बहुत बहादुर हों तो भी दूसरे साधन कमजोर होने पर अुनकी हार हो जाती है। जैसे, विरोधियोंके पास अुनसे ज्यादा अच्छे हथियार हों, या अुन्हें अच्छी जगह मिल गअी हो, या अुनके पास युद्धकी कला अधिक हो तो अुनकी हार हो सकती है। अैसे बहुतसे बाहरी कारणोंसे शरीर-बलसे लड़नेवालोंकी हार-जीत होती है। परन्तु सत्याग्रहसे लड़नेवालोंके मार्गमें बाहरी कारण बिलकुल बाधक नहीं बन सकते। सिर्फ अुनकी कमजोरी ही अुनके लिअे बाधक होती है। फिर, साधारण लड़ाअीमें जो पक्ष हार जाता है अुसके सारे आदमी हारे हुअे माने जाते हैं और हारते भी हैं। सत्याग्रहमें अेकके जीतनेसे दूसरे भले ही जीते हुअे माने जायें, परन्तु सबके हारने पर भी जो खुद हारा न हो वह औरोंकी हारसे नहीं हारता।

तब अिस बातका विचार करना अत्यन्त जरूरी है कि जो अितनी बढ़िया — बिना हारकी — अेक ही परिणामवाली लड़ाअी है, अुसे कौन लड़ सकता है? अिससे हम ट्रान्सवालकी लड़ाअीके कुछ परिणामोंको समझ सकेंगे और यह देख सकेंगे कि और जगहों पर या दूसरे अवसरों पर यह लड़ाअी कैसे लड़ी जा सकती है और कौन लड़ सकता है?

सत्याग्रहका अर्थ समझते समय हम देखते हैं कि पहली शर्त तो यह है कि यह लड़ाअी लड़नेवालोंको सत्यका आग्रह —— सत्यका बल——रखना चाहिये। यानी अुस आदमीको केवल सत्य पर ही आधार रखना चाहिये; अेक पैर दहीमें और अेक पैर दूधमें अैसा नहीं चल सकता। अैसा मनुष्य बीचमें कुचल दिया जायगा। सत्याग्रह कोअी गाजरकी बांसुरी नहीं है कि जब तक बजी बजाते रहे, नहीं तो खा गये। अैसा माननेवाले कहींके नहीं रहते। शरीर-बलकी कमीवाले लोग या शरीर-बल काम न देनेके कारण लाचारीसे सत्याग्रही बनना पड़ता है अैसा माननेवाले लोग ही सत्याग्रहकी लड़ाअी लड़ते हैं, अैसा कहना बिलकुल निरर्थक है। यह कहा जा सकता है कि अैसा माननेवालोंको अिस लड़ाअीका कोअी ज्ञान नहीं है। सत्याग्रह शरीर-बलसे अधिक तेजस्वी है और शरीर बल अुसके सामने अेक तिनकेके समान है। शरीर-बलमें मुख्य बात यह है कि मनुष्य अपने शरीरकी परवाह न करके लड़ाअीमें जूझता है, यानी वह डरपोक नहीं होता। सत्याग्रही तो अपने शरीरको कुछ गिनता ही नहीं। अुसमें डर घुस ही नहीं सकता। अिसीलिअे वह बाहरके हथियार धारण नहीं करता और मौतका डर रखे बिना अंत तक लड़ता है। अतः सत्याग्रहीमें शरीर-बलवालेसे ज्यादा हिम्मत होनी चाहिये। अिस प्रकार सत्याग्रहीके लिअे पहले तो सत्यका सेवन और सत्य पर आस्था होना जरूरी है।

अुसमें पैसेके प्रति अुदासीनता होनी चाहिये। दौलत और सत्यमें सदा अनबन रही है और अंत तक रहेगी। जो दौलतको पकड़े रहता है वह सत्यका पालन नहीं कर सकता, यह हमने ट्रान्सवालमें बहुतसे हिन्दुस्तानियोंके अुदाहरणसे देख लिया। अिसका अर्थ यह नहीं कि सत्याग्रहीके पास धन हो ही नहीं सकता। अुसके पास धन हो सकता है, परन्तु पैसा अुसका परमेश्वर नहीं बन सकता। सत्यका पालन करते हुअे पैसा रहे तो ठीक है; नहीं तो अुसे हाथका मैल समझ कर छोड़ देनेमें पलभरके लिअे भी हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिये। जिसने मनको अैसा नहीं बना लिया है, अुससे सत्याग्रह हो ही नहीं सकता। और जिस देशके राजाके खिलाफ सत्याग्रही बनना पड़ता है, अुस देशमें सत्याग्रहीके पास धन होना मुश्किल बात है। राजाका जोर मनुष्य पर नहीं चलता, परन्तु अुसकी दौलत पर या अुसके डर पर चलता है। या तो खजाना लूट लेनेके डरसे या अुसके शरीरको नुकसान पहुंचानेके डरसे राजा प्रजासे जो भी कराना चाहे करा लेता है। अिसलिअे अन्यायी

राजाके राज्यमें ज्यादातर अन्यायमें भाग लेनेवाले मनुष्य ही पैसा जमा कर सकते हैं। सत्याग्रही तो अन्यायमें शरीक हो ही नहीं सकता। अिसलिअे अैसी स्थितिमें सत्याग्रहीको गरीबीमें ही अमीरी मानना चाहिये।

अिस सम्बन्धमें यह बात विचार करने योग्य है कि शरीर-बलको आजमाते हुअे भी अिनमें से बहुतसी बातें छोड़नी पड़ती हैं; भूख, प्यास, सरदी और गरमी सहनी पड़ती है; कुटुम्बका मोह छोड़ना पड़ता है; और रुपया-पैसा छोड़ना पड़ता है। बोअर लोगोंने शरीर-बलसे काम लेते हुअे यह सब छोड़ा। अुनके शरीर-बलके आग्रहमें और हमारे सत्याग्रहमें बड़ा फर्क यह है कि अुनकी बाजी जुअेका खेल थी। अिसके सिवा, शरीर-बलसे वे अभिमानी बन गये, आधे जीतकर ही वे अपनी पहलेकी दशाको भूल गये। अत्याचारियोंके खिलाफ अत्याचारी हथियारोंसे लड़कर वे हम पर अत्याचारी बन गये हैं। सत्याग्रही लड़कर जीतता है तो अुसकी जीतका परिणाम स्वयं अुसके लिअे और दूसरोंके लिअे भी अच्छा ही होता है। सत्याग्रही सत्यकी रक्षा करके कभी अत्याचारी बन ही नहीं सकता।

सत्याग्रहीको कुटुम्बका मोह छोड़ना पड़ता है। यह बहुत मुश्किल बात है। परन्तु सत्याग्रह अपने नामके अनुसार तलवारकी धार है। और अन्तमें अिसमें भी कुटुम्बको लाभ ही होता है, क्योंकि कुटुम्बियोंको सत्याग्रहकी लगन लगनेका समय आ जाता है; और जिसे यह लगन लग जाती है अुसे फिर और कोअी अिच्छा नहीं रहती। दुःख अुठाने, धन गंवाने और जेल जानेमें यह भय या शंका नहीं होनी चाहिये कि कुटुम्बका क्या होगा। जिसने दांत दिये हैं वह खानेको अन्न भी देगा। सांप, बिच्छू, बाघ और भेड़िये वगैरा भयानक पशुओं अथवा प्राणियोंको जो अुनका भोजन देता है, वह मनुष्य-जातिको नहीं भुला सकता। हम जो हाथ-पैर पीटते हैं वह सेरभर बाजरी या मुट्ठीभर चावलके लिअे नहीं, बल्कि खट्टे-मीठे स्वादके लिअे; ठंडसे बचने लायक कपड़ोंके लिअे नहीं, बल्कि रेशम और कीनखाबके लिअे। अगर हम अिस लोभको छोड़ दें तो कुटुम्बके भरण-पोषणकी चिन्ता बहुत थोड़ी रह जाती है।

अिस प्रकार यह विचार करते हुअे कि सत्याग्रही कौन हो सकता है, अन्तमें यह बात आती है कि जो धर्म पर —दीन पर— सच्ची आस्था रखता हो, वही सत्याग्रही हो सकता है। 'मुखमें राम बगलमें छूरी' यह आस्था नहीं है।

धर्मका नाम लेकर धर्मसे अुलटे काम करना धर्म नहीं है। परन्तु जो लोग धर्म, दीन या अीमानका हृदयसे पालन करते हैं, अुन्हींसे सत्याग्रह हो सकता है। यानी जो मनुष्य खुदा या अीश्वर पर ही सब कुछ छोड़ देता है, अुसके लिअे संसारमें हारनेकी बात रह ही नहीं जाती। लोग अुसे हारा हुआ कहें, अिससे वह हारा हुआ नहीं माना जा सकता। लोगों द्वारा जीता हुआ कहनेमें अुसकी जीत भी नहीं है। अिसे तो जो समझता है वही समझता है।

यह सत्याग्रहका सच्चा स्वरूप है। अुसे दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंने कुछ हद तक जाना है। जानकर अुसका थोड़ा-बहुत पालन भी किया है। अुतनेसे भी हम सत्याग्रहका अमूल्य रस चख सके हैं। जिसने सत्याग्रहके खातिर सब कुछ छोड़ा है, अुसने सब कुछ प्राप्त किया है। क्योंकि वह संतोष मानता है। संतोष ही सच्चा सुख है। दूसरा सुख किसने देखा है? दूसरा सुख तो मृगतृष्णाकी तरह है। जैसे-जैसे हम अुसके पास जाते हैं, वैसे-वैसे वह दूर ही दूर दिखाअी देता है।

हम चाहते हैं कि अिस तरह विचार करके प्रत्येक हिन्दुस्तानी सत्याग्रही बने। यह हथियार हाथ लग जायगा, तो अन्यायमात्रसे होनेवाले सारे दुःखोंको दूर करनेके काममें अुसका अुपयोग हो सकेगा। यह हथियार यहीं नहीं, हिन्दुस्तानमें भी अुपयोगी होगा। और वहां अधिक अुपयोगी होगा। सिर्फ अुसका सच्चा स्वरूप समझ लेना चाहिये। अुसे समझना आसान भी है और कठिन भी है। शरीरसे बलवान भी कुछ ही लोग होते हैं, और सत्यका बल रखनेवाले तो अुनसे भी कम होते हैं।

मो० क० गांधी

४

जेलमें कौन जा सकता है ?

थोड़ेमें हमने अिस प्रश्न पर विचार कर लिया कि सत्याग्रही कौन हो सकता है। परन्तु सत्याग्रह जेलमें जानेसे ही पूरा नहीं हो जाता। सत्याग्रहीको सूली पर चढ़ना पड़ा है, धधकते हुअे लोहेके खंभेका आलिंगन करना पड़ा है, पहाड़ परसे गिरना पड़ा है, अुबलते हुअे तेलकी कड़ाअीमें तैरना पड़ा है, जलते हुअे जंगलमें चलना पड़ा है, राजपाट बेचकर नीचके घर बिकना पड़ा है, और सिंहोंकी गुफाओंमें रहना पड़ा है। अिस तरह सत्याग्रहियोंकी परीक्षा दुनियाके जुदा जुदा हिस्सोंमें अलग अलग तरीकेसे हुअी है।

अिसी तरह दक्षिण अफ्रीकामें सत्याग्रहियोंकी परीक्षा जेल जानेमें ही सीमित हो गअी है। अिसलिअे यह प्रश्न अुपयोगी है कि जेल कौन जा सकता है? कुछ हिन्दुस्तानी जेल जानेके लिअे तैयार थे, फिर भी किसी न किसी कारणसे नहीं गये—नहीं जा सके। अैसे क्या कारण होंगे? अिस प्रश्नका अुत्तर जेल कौन जा सकता है अिस प्रश्नके पूछनेसे और अुसका अुत्तर जाननेसे मिल सकता है।

तो सत्याग्रहीमें जो गुण होने चाहिये और जिनका हम विचार कर चुके हैं, वे सब थोड़ी-बहुत मात्रामें जेल जानेवालेमें होने चाहिये। परन्तु नीचे लिखी शक्तियां भी अुसमें होना जरूरी है:

(१) व्यसनोंसे दूर रहना।
(२) शरीर अच्छा कसा हुआ होना।
(३) सोने-बैठनेमें आरामतलब न होना।
(४) खाने-पीनेमें बिलकुल सादगी होना।
(५) झूठा अभिमान न होना।
(६) धीरज होना।

ये छह गुण (अिन्हें मैं जेलकी षट्संपत्ति कहूंगा) खास तौर पर जेल जानेवालोंमें होने जरूरी हैं। अब हम अिन पर जरा गहरा विचार करें। अनुभव यह हुआ है कि बीड़ी, शराब, सुपारी या चाय तकके व्यसनसे जेल जानेवाले घबरा

गये हैं। अैसा होनेके कारण अुन्होंने जेलमें चोरियां की हैं; यानी सत्यको छोड़ा है या दूसरी बार जेल जानेका नाम नहीं लिया है। अिसलिअे सभी व्यसनोंसे दूर रहना चाहिये। जेलमें अेक ही व्यसनकी छूट हो सकती है और वह है अीश्वरके नामकी रटन।

सत्याग्रह नामर्दोंसे नहीं हो सकता। अिसी प्रकार कमजोर शरीरवाले जेलके कड़ी मेहनतके काम नहीं कर सकते। शारीरिक शक्ति न होने पर भी मनोबलसे अिने-गिने लोगोंने संकट झेले हैं। अैसे अुदाहरण असाधारण ही माने जा सकते हैं। साधारण नियम तो यही है कि शरीर नीरोग और दृढ़ होना चाहिये। अैसा न होनेसे कअी लोग घबरा गये हैं। सत्याग्रही समझता है कि अुसका शरीर अुसे किराये पर मिला है। अुसे साफ और तेजस्वी रखकर अच्छा किरायेदार साबित होना अुसका फर्ज है।

जिसे लचीले पलंग और नरम गद्दे वगैरा सोनेके लिअे चाहिये, वह आदमी अेकाअेक जमीन पर नहीं सो सकता, यह समझमें आ सकता है। अिसलिअे अैसी आरामतलबी भी छोड़नी चाहिये।

भोजनका सवाल लगभग बड़ेसे बड़ा सवाल बन गया दीखता है। परन्तु अिसमें आश्चर्यकी बात नहीं है। जिसने बोलनेमें और स्वादमें जीभको जीत लिया है, अुसने बहुत कुछ जीत लिया है। अैसे बहुत ही कम लोग होते हैं, जिन्हें स्वादिष्ट भोजन नहीं चाहिये। गरीब हब्शी तक खानेके लिअे मरे जाते हैं। यह छोटा-मोटा सवाल नहीं है। फिर भी जो परमार्थ करनेके लिअे जेल जाना चाहते हैं, अुन्हें स्वादेन्द्रियको जीतना ही पड़ेगा। जो मिल जाय अुसके लिअे अीश्वरका आभार मानना चाहिय। हर हिन्दुस्तानीको यह विचार करना है कि हिन्दुस्तानमें बीस करोड़ हिन्दुस्तानियोंको अेक ही बार खानेको मिलता है। और वह भी रोटीके अेक टुकड़े और नमकके सिवा दूसरा कुछ नहीं होता। तब जेलमें तीन तीन बार बदलनेवाला खाना मिले तो अुससे गुजर कर लेना कोअी बड़ी बात नहीं होनी चाहिये। भूखमें सब कुछ अच्छा लगता है। हो सकता है कि थोड़े दिन ठीक मालूम न हो, परन्तु बादमें जेलकी खुराक भाने लगती है। जो हिन्दुस्तानी सत्याग्रही बनना चाहता है, अुसे सादे भोजनकी आदत डालनी चाहिये।

झूठा अभिमान रखनेवाला जेलमें नहीं जा सकता। वहां दारोगोंके अधीन रहना पड़ता है। जो हलके माने जाते हैं, वे काम करने पड़ते हैं। अैसे काम

करनेमें अिज्जत चली जायगी, अुन्हें हमने कभी किया ही नहीं, अैसा सोचकर जेलमें भी अुन्हें न किया जाय तो नतीजा बुरा होता है। पराधीनता या अपराधीनता मनके कारण होती है। जिसका मन आजाद — स्वतंत्र — है, वह मैलेकी बालटी अुठाते हुअे भी राजाके समान है। बालटी अुठानेमें वह पराधीनताके बजाय जेलमें अपनी प्रतिष्ठा समझता है।

अन्तमें रही धीरजकी बात। जेलमें पहुंचते ही सब लोग दिन गिनने लग जाते हैं। अैसा करनेसे दिन लम्बे मालूम होते हैं। बाहर वर्षों बीत जाते हैं और हम अुन्हें नष्ट कर देते हैं, फिर भी वे भारी नहीं लगते। पर जेलके तीन दिन भी तीन साल जैसे लगते हैं। यह क्यों? जवाब यह है कि जेल जाना पसन्द नहीं आया। सत्य बात यह है कि जेल जानेमें सुख मानना चाहिये। जैसे मां बच्चेके लिअे दुःख अुठाकर सुख मानती है, वैसे ही हमें देशके खातिर — सत्यके खातिर — दुःख अुठा कर सुख मानना चाहिये। जैसे दिन जेलमें बीतेंगे वैसे बाहर नहीं बीत सकते थे, हमेशा अैसा विचार करके और धीरज रखकर जितनी जेल मिली हो अुसे भुगत लें और वहां समयका अच्छा अुपयोग करें — यानी अीश्वरके भजनमें, अच्छे विचारोंमें और अपनी कमियां ढूंढ़नेमें दिन बितायें। अिस प्रकार अेक पंथ दो काज हो जायंगे।

अिसलिअे ये छह गुण तो जेल जानेवालोंमें होने ही चाहिये। बादमें दूसरे गुण भी अपने-आप सूझ जायेंगे।

मो० क० गांधी

सूची

यरवडाके अनुभव

लेखक : **गांधीजी**; अनु० **रामनारायण चौधरी**

अिस छोटीसी पुस्तिकामें गांधीजीने भारतकी अपनी प्रथम जेलयात्रा (१९२२) के अनुभवोंका वर्णन किया है। यहां हम अेक आदर्श सत्याग्रही कैदीके रूपमें गांधीजीका दर्शन करते हैं। अिसमें अुन्होंने जेल-अधिकारियों, कैदी-वार्डरों, सत्याग्रही कैदियों तथा अपने अध्ययनके बारेमें दिलचस्प बातें बतायी हैं। पुस्तकके प्रास्ताविक विभागमें गांधीजी पर चलाये गये मुकदमेकी पूरी कार्रवाअी और अन्तमें अधिकारियोंके साथ हुआ अुनका पत्रव्यवहार भी दिया गया है।

कीमत १.०० डाकखर्च ०.२५

बापूकी छायामें

लेखक : **बलवन्तसिंह**

लेखक गांधीजीके निकटतम अन्तेवासियोंमें से अेक रहे हैं। अिसमें अुन्होंने गांधीजीके साथ अपने १७–१८ वर्षके संस्मरणोंका बड़ा ही सुन्दर, निखालिस, मौलिक और बोधप्रद वर्णन सरल और सुबोध भाषामें किया है। जिसने भी अिस पुस्तकको पढ़ा, अुसने अिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। हिन्दीमें बापूजीके संबंधमें अपने ढंगकी यह निराली पुस्तक है। बापूके हृदयकी विशालता और अुदारताका दर्शन करना चाहनेवालोंको यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये।

कीमत २.५० डाकखर्च ०.९४

सत्यके प्रयोग अथवा आत्मकथा

लेखक : **गांधीजी**; अनु० **काशिनाथ त्रिवेदी**

अिस पुस्तककी प्रस्तावनामें गांधीजीने लिखा है : "मेरी बिनती है कि कोअी मेरे लेखोंको प्रमाणभूत न समझें। मैं सिर्फ अितना ही कहना चाहता हूं कि अिनमें बताये गये प्रयोगोंको दृष्टान्तरूप मानकर सब अपने-अपने प्रयोग यथाशक्ति और यथामति करें। मेरा विश्वास है कि अिस संकुचित क्षेत्रमें आत्मकथाके मेरे लेखोंसे पाठकोंको बहुत कुछ मिल सकता है।" राष्ट्रपिता महात्मा गांधीके जीवन और कार्य-पद्धतिको समझनेकी अभिलाषा रखनेवाले प्रत्येक भारतीयको यह अमूल्य ग्रन्थ अवश्य पढ़ना चाहिये।

कीमत १.५० डाकखर्च ०.५०

बिहारकी कौमी आगमें

लेखिका : **मनुबहन गांधी**; अनु० **रामनारायण चौधरी**

लेखिकाने गांधीजीके साथके अपने दिसम्बर १९४६ से ३० जनवरी १९४८ तकके निवासकालमें गांधीजीकी दैनिक प्रवृत्तियोंके बारेमें जो डायरी लिखी थी, अुसमें से अिस पुस्तकमें ता० ५–३–'४७ से ता० २४–५–'४७ तकका भाग दिया गया है। राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद अिसके विषयमें लिखते हैं : "अिस डायरीमें मनु गांधीने महात्माजीकी ७८ वर्षकी अवस्थामें भी शारीरिक श्रमकी दिनचर्याके साथ अुनका आश्चर्यजनक साहस और सहिष्णुता तथा धीरज और स्थिरमतिको चित्रित किया है। गांधीजीके अिस कर्मयोगको मनु गांधीने साथ रहकर देखा और अुसका वर्णन किया। गांधी-साहित्यमें, विशेष करके अुस कालसे सम्बन्ध रखनेवाले साहित्यमें, अिसका अूंचा स्थान है।"

कीमत ३.०० डाकखर्च १.००